3.3.2 Number of research papers per teachers in the Journals notified on UGC website during the year

Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of journal	Year of publication	ISSN number	Link to the recognition in UGC enlistment of the Journal
Bhartiy Ved aur Paryawaran Sanrkchan	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Apani mati	June 2023	2322-0724	शोध आलेख : भारतीय वेद और पर्यावरण संरक्षण / डॉ. दयाशंकर सिंह यादव (apnimaati.com)
Sambidhan Ki atma mauilik adhikar	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Kanpur Philosophers	Mar 2023	2348-8301	https://portal.issn.org/resource/ISSN/2348-8301
समकालीन किसान जीवन की चुनौतियॉ और संभावनाएं	Mr. Jitendra Yadav	Hindi	Apani Mati	2022	2322-0724	समकालीन किसान केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में
आधुनिक ओलम्पिक में भारतीय हॉकी का स्वर्णीम युग और उसका पतनरू एक विवेचना	Mr. Shyam Lal Singh Yadav	Physical Education	Apani Mati	2022	2322-0724	https://www.apnimaati.com/2022/06/blog-post_76.html
Chhatra asantosh Naitik Shiksha ki avashyakta Pg 35-36	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Apani Mati	July 2021	23220724	नैतिक शिक्षा की आवश्यकता / डॉ. दयाशंकर सिंह यादव (apnimaati.com)
Yog Vishw ko bhartiya saskriti ke amulay den pg no 189-191	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Samsamayik Srijan	April-June 2021	2320-5733	https://portal.issn.org/resource/ISSN/2320-5733
Suchana Praudhyogiki se badalta gramin jeevan	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Drishticon	Mar-april 2021	0975119X	https://portal.issn.org/resource/ISSN/0975-119X
Majabut bharat ke majabur kisan pg no 3138-3141	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Drishtikon	Jan-feb 2021	0975-119X	https://portal.issn.org/resource/ISSN/0975-119X
Sanskritik Virasato ka Sanrakshan me Shiksha ka Yogdan vol 24 no 4 part 2-2021	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Kala Sarovar	2021	0975-4520	https://portal.issn.org/resource/ISSN/0975-4520
Paryawaran Sanrakchan bharat ke sanskritik muly me hai,PP Vol 24, No 4-2021 Impact Factor 4.015	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	kala sarovar	2021	0975-4520	https://portal.issn.org/resource/ISSN/0975-4520

Pitrisattatam samaj me loksanskriti ka prakarywadi drishtikon 2197-2199	Dr. Dayashankar Singh Yadav	Sociology	Drishtikod	Nov – dec 2020	0975119X	https://portal.issn.org/resource/ISSN/0975-119X

शोध आलेख : भारतीय वेद और पर्यावरण संरक्षण / डॉ. दयाशंकर सिंह यादव

Arjun Kumar शुक्रवार, जून 30, 2023 0

भारतीय वेद और पर्यावरण संरक्षण

- डॉ. दयाशंकर सिंह यादव

शोध सार : मानव जाति का आदि ग्रंथ भेजा है वेद का अर्थ ज्ञान होता है वेदों में पर्यावरण से सम्बन्धित अधिकतम ऋचाएँ यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में प्राप्त होती हैं। ऋग्वेद में भी पर्यावरण से सम्बन्धित सूक्तों की व्याख्या उपलब्ध है। अथर्ववेद में सभी पंचमहाभूतों की प्राकृतिक विशेषताओं और उनकी क्रियाशीलता का विशद् वर्णन है। आधुनिक विज्ञान भी प्रकृति के उन रहस्यों तक बहुत बाद में पहुँच सका है जिसे वैदिक ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व अनुभूत कर लिया था। इतना ही नहीं, वेदों में प्राकृतिक तत्वों से अनावश्यक और अमर्यादित छेड़छाड़ करने के दुष्परिणामों की ओर भी संकेत किया गया है तथा मानव को सीख भी दी गई है कि पर्यावरण सन्तुलन को नष्ट करने के दुष्परिणाम समस्त सृष्टि के लिए हानिकारक होंगे।वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर बल दिया गया है। ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण असन्तुलन की समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती। इनमें हुए अवांछनीय परिवर्तनों के कारण आज जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, मृदा-प्रदूषण की समस्याएँ चारों ओर व्याप्त हैं।

बीज शब्द : वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

मूल आलेख : वेद चार प्रमुख वेदों से मिलकर बने हुए हैं। इन चार वेदों का नाम इस प्रकार है:ऋग्वेद: यह वेद सबसे प्राचीन वेद में से एक है। इसमें मन्त्रों का संग्रह होता है, जो ईश्वर के प्रति समर्पण और प्रकृति की महत्ता के विषय में होते हैं।यजुर्वेद: इस वेद में वैदिक समीक्षा, वेदों के अनुष्टुभ छंद के साथ संबंधित सूक्त, मंत्र और ब्राह्मण होते हैं।सामवेद: इस वेद में वैदिक संगीत के मंत्र होते हैं जो संगीत, ताल, राग और उनके विविध रूपों को अध्ययन करते हैं।अथर्ववेद: इस वेद में भारतीय ज्योतिष, आयुर्वेद, तंत्र और भूत विज्ञान से संबंधित मंत्र होते हैं।वेद का शुभारम्भ ही 'अग्नितथव' के स्तवन से होता है, जो सफल जीवन का निर्माता अग्रणी नेता है। उसे स्वयं आगे आकर समस्त परिवेश का हित करनेवाला, सामाजिक संगठन का सच्चा संचालक तथा शुभदायक माना गया है।

'अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव ऋत्विजम्। [i]
होतारं रत्नघातमम्।।' (ऋग्वेद, 1.1.1.)

कल्याणकारी संकल्पना, शुद्ध आचरण, निर्मल वाणी एवं सुनिश्चित गति क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मूल विशेषताएँ मानी जाती हैं । वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। तत्त्वदर्शी ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण-असन्तुलन की समस्या ही उत्पन्न नहीं हो सकती। इनमें हुए अवांछनीय परिवर्तनों के कारण आज जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, मृदा-प्रदूषण की समस्याएँ चारों ओर व्याप्त हैं।

वेदों में प्राकृतिक संरक्षण पर कई श्लोक हैं। वेदों के चार विभागों में से प्रत्येक विभाग में प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को बताने वाले कई श्लोक हैं। इन श्लोकों में वेदों के ऋषियों ने प्रकृति के महत्व को बताया है और इसे संरक्षित रखने के उपायों का भी जिक्र किया है। वेदों में पर्यावरण संरक्षण की चर्चा कई स्थानों पर की गई है। वेदों के अनुसार पृथ्वी एक स्वर्ग है जो हमें दिया गया है, इसलिए हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए।

वेदों में पर्यावरण-सन्तुलन का महत्त्व अनेक प्रसंगों में व्यंजित है। महावेदश महर्षि यास्क ने अग्नि को पृथ्वी-स्थानीय, वायु को अन्तरिक्ष स्थानीय एवं सूर्य को द्युस्थानीय देवता के रूप में महत्त्वपूर्ण मानकर सम्पूर्ण पर्यावरण को स्वच्छ, विस्तृत तथा सन्तुलित रखने का भाव व्यक्त किया है।इन्द्र भी वायु का ही एक रूप है। इन दोनों का स्थान अन्तरिक्ष में अर्थात् पृथ्वी तथा अकाश के बीच है। द्युलोक से अभिप्राय आकाश से ही है। अन्तरिक्ष से ही वर्षा होती है और आँधी-तूफान

भी वहीं से आते हैं। सूर्य आकाश से प्रकाश देता है पृथ्वी और औषधियों के जल को वाष्प बनाता है, मेघ का निर्माण करता है। उद्देश्य होता है पृथ्वी को जीवों के अनुकूल बनाकर रखना। परन्तु, अग्नि केवल पृथ्वी पर नहीं है, वह अन्तरिक्ष और आकाश में भी है। अन्तरिक्ष में विद्युत के रूप में और द्युलोक-आकाश से सूर्य-रूप में भी अग्नि ही है। पृथ्वी पर तो वह है ही। अभिप्राय यह कि ये सब एकसूत्र में सम्बद्ध हैं- यही प्राकृतिक अनुकूलताहै पर्यावरण-सन्तुलन का अन्यतम निदर्शन है।

1. **ऋग्वेद -** ऋग्वेद में अग्नि को पिता के समान कल्याण करनेवाला कहा गया है।ऋग्वेद में प्रकृति का उल्लेख किया गया है और इसमें पृथ्वी, वायु, जल और आकाश जैसे प्राकृतिक तत्वों का वर्णन भी किया गया है। वेदों में उल्लेखित एक और महत्वपूर्ण बात है कि प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे से गहरी तरह संबद्ध हैं। ऋग्वेद में प्रकृति की चर्चा कई स्थानों पर की गई है। प्रकृति को वेदों में देवी और माता के रूप में समझा गया है।ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ही पृथ्वी माता का उल्लेख होता है और उसके बाद भी कई मंत्रों में पृथ्वी की महिमा का वर्णन किया गया है। वेदों में जल, हवा, वायु और आकाश जैसे प्राकृतिक तत्वों के बारे में भी बताया गया है।ऋग्वेद में प्रकृति के साथ हमारे संबंध को भी बताया गया है। हमारी आत्मा और प्रकृति एक दूसरे से गहरी तरह संबद्ध होती हैं। ऋग्वेद में वेदना, दुःख, रोग और अन्य समस्याओं के लिए प्रकृति को जड़ से जड़ नहीं माना गया है। उसे एक चेतन और सशक्त शक्ति के रूप में देखा गया है जो हमारी सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है। ऋग्वेद में वन, वृक्ष, जल, आकाश और अन्य प्राकृतिक तत्वों की महत्ता को भी बताया गया है। वृक्षों को अपने परिवार के सदस्यों के रूप में समझा गया है जो हमें ऑक्सीजन प्राण वायु प्रदान करते है। ऋग्वेद में पर्यावरण संरक्षण पर निम्नलिखित श्लोक हैं :

यत्किं च दृश्यते तत्सर्वं जगदेकं देवेश्वरैः। [ii]
एतस्माद्विरजं विश्वं परितः पश्यते नरः॥

इस श्लोक में कहा गया है कि प्रकृति के समस्त तत्व देवताओं द्वारा निर्मित हुए हैं और सभी मनुष्य इसे देखते हैं। श्लोक में विश्व का विराट स्वरूप बताया गया है और इससे इस बात का संदेश दिया गया है कि प्रकृति अत्यंत महत्वपूर्ण है और सभी लोगों को इसे संरक्षित रखना चाहिए।इस श्लोक का व्याख्यान करते हुए, हम यह समझ सकते हैं कि ऋषियों ने प्रकृति के संरक्षण के महत्त्व को समझा था और वे इसे अपने धर्म का महत्त्वपूर्ण हिस्सा मानते थे। इस श्लोक में प्रकृति को देवताओं के रूप में दिखाया गया है और इससे इस बात का संदेश दिया गया है कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए।

"पृथिवीमध्ये विश्वानि देव एको अद्भुतो बिभर्ति।" [iii]

जो एक देवता पृथ्वी में सभी अद्भुत प्राणियों को धारण करता है।पृथ्वी के मध्य में एक अद्भुत देव विश्व को संभालता हुआ है।"इस मंत्र में पृथ्वी के मध्य में एक अद्भुत देव या परमेश्वर की स्तुति की गई है। इस श्लोक से यह संदेश मिलता है कि समस्त विश्व का संरक्षण एक देवता द्वारा होता है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए।

"विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्म। असुव ॥" [iv]

"देवों के सभी दुर्गम कार्यों को दूर करने वाले सूर्य सविता के विश्वास से वह भद्र कार्य करें जो उसके अधीन हो। इसमें "सविता" यानी सूर्य देवता की स्तुति की गई है। इसमें दुरितों से मुक्ति के लिए भी प्रार्थना की गई है। इस श्लोक से हमें यह संदेश मिलता है कि सूर्य देवता दुरितों से हमेशा हमें सुरक्षित रखती हैं और हमें उसे सम्मान देना चाहिए।

समुद्रादर्शं दीवि सूर्यं दृश्यमानं तत्र विश्वमस्य भेषजम्। [v]

वेदों में प्रकृति का बहुत महत्व है जो हमारी सेहत और संतुलित विकास के लिए आवश्यक होता है। यह श्लोक प्रकृति के विशालता और उसके उपयोग को दर्शाता है। इसमें समुद्र, दिवा और सूर्य की तारीफ की गई है। इस श्लोक से हमें यह संदेश मिलता है कि समुद्र, दिवा और सूर्य देवता विश्व का भेषज हैं। इनका दर्शन करने से हमारी दृष्टि शुद्ध होती है और हमें नई ऊर्जा की प्राप्ति होती है।

यतो विश्वं भुवनानि सज्जन्ते स्वभावेन नित्यमस्ति यत्र। [vi]
तत्र सत्यं न विज्ञायते कश्चित् राजा तं देवमभिमन्यते॥"

इस श्लोक का अर्थ है कि वह स्थान जहां सभी भूत एवं भविष्य के समस्त सृष्टि कार्य होते हैं और जहां सत्य होता है, वह स्थान सबसे महत्वपूर्ण होता है। इस श्लोक में सत्य की महत्ता को बताया गया है। यह सत्य हमेशा अनुभव किया जाता है और वहां कोई राजा भी उस देवता को अभिमान करता है। इस श्लोक में प्रकृति की अनन्तता और उसकी स्वाभाविक गुणों के बारे में बताया गया है। ऋषि यहां प्रकृति को अनन्त और आश्रयदाता के रूप में बताते हैं जो हमें संरक्षित रखना चाहिए। जल जीवन का प्रमुख तत्त्व है। इसलिए, वेदों में अनेक सन्दर्भों में उसके महत्त्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

ऋग्वेद (1.23.248) में 'अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजं' [vii] के रूप में जल का वैशिष्ट्य बताया गया है। अर्थात्, जल में अमृत है, जल में औषधि-गुण विद्यमान रहते हैं। अस्तु, आवश्यकता है जल की शुद्धता-स्वच्छता को बनाए रखने की। ऋग्वेद में स्पष्टतया व्यंजित'उतो स मह्यं इंदुभिः युक्तान् षट् सेषिधत्।' वायु में जीवनदायिनी शक्ति है। इसलिए, इसकी स्वच्छता पर्यावरण की अनुकूलता के लिए परम अपेक्षित है। इसका अर्थ है कि जल मानवता के लिए अमृत की

तरह महत्वपूर्ण है और जल में चिकित्सा की शक्ति होती है। जल हमारे शरीर के लिए आवश्यक है और इसे उपयोग में लाने से हम अपने शरीर को शुद्ध और स्वस्थ रख सकते हैं। यह मंत्र हमें जल की महत्त्वपूर्णता और उपयोगिता को याद दिलाता है।

2. **अथर्ववेद -** अथर्ववेद में प्रकृति के संरक्षण के लिए उपायों का वर्णन किया गया है। इसमें वृक्षारोपण, जल संचय, और अन्य प्रकृतिक उपायों के बारे में बताया गया है। अथर्ववेद में प्रकृति के संरक्षण पर निम्नलिखित श्लोक हैं:

पृथिवीं दुहितरं कृष्णमध्यमा वसूनां विश्वरूपाणि द्यावापृथिवी देवीरुपस्थे। [viii]
उत संगच्छ यथासुखं गातुं यत्र नो अन्यः कस्यचित् प्रभूतोऽवताति॥

यह श्लोक ऋग्वेद के मण्डल १० सूक्त १३१ में है। इसमें पृथ्वी को दुहितर (पुत्री) और कृष्ण रंग का बताया गया है। यह श्लोक पृथ्वी की स्थिति के बारे में बताता है। द्यु और पृथ्वी को देवी की रूप में उपस्थित बताया गया है। यह श्लोक अन्य श्लोकों के साथ मिलकर पृथ्वी के महत्व को बताता है और संसार की एकता का संदेश देता है।इसका अनुवाद है:"पृथ्वी माता है जो वसुओं के बीच मध्य में है, जो देवी हैं, द्यु और पृथ्वी इनके साथ होते हुए। हम सभी वहाँ जाते हैं और जो कुछ होता है, उसमें कोई बदलाव नहीं होता। यहाँ कोई अन्य प्रभुता नहीं है।"

इस श्लोक में पृथ्वी देवी के रूप में उपस्थिति का उल्लेख किया गया है। पृथ्वी देवी हमारे परमेश्वर के समक्ष अपना सिर झुकाती है और हमें जीवन की देन में मदद करती है। इस श्लोक में इस बात का संदेश दिया गया है कि हमें प्रकृति को सम्मान देना चाहिए और उसे संरक्षित रखना चाहिए।श्लोक में विश्व के विविध रूपों का उल्लेख है और यह संदेश देता है कि प्रकृति हमें अनेक रूपों में दिखती है और हमें इसे संरक्षित रखना चाहिए। श्लोक में इस बात का भी संदेश है कि हमें अपने संगीत और वाद्य से एक दूसरे के साथ मिलकर बैठना चाहिए और साथ ही प्रकृति की संरक्षा करनी चाहिए।

"धर्ता पृथिवी रजसा समुद्रं रजो विवर्तते।" [ix]

(अथर्ववेद १२.१.६) अर्थात् "पृथ्वी के धारण करने वाले धर्ता से समुद्र की रज बह जाती है और समुद्र की रज पृथ्वी में विस्फोट का कारण बनती है।"

ये वनस्पतयो वृक्षासो जहि शून्येषु तदभ्ययाम्यहम्। [x]
इमां दुहानो अनु यातु स्वस्ति नो वस्तु वेदा इन्द्रियेषु।

यह श्लोक वनस्पतियों और वृक्षों के महत्व को दर्शाता है और उन्हें संरक्षित रखने की अपील करता है।'शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु'।-(अथर्ववेद, 12.1.30) अथर्ववेदीय पृथ्वीसूक्त में जलतत्व पर विचार करते हुए उसकी शुद्धता को स्वस्थ जीवन के लिए नितान्त आवश्यक माना गया है।निस्सन्देह, जल-सन्तुलन से ही भूमि में अपेक्षित सरसता रहती है, पृथ्वी पर हरीतिमा छायी रहती है, वातावरण में स्वाभाविक उत्साह दिखाई पड़ता है एवं समस्त प्राणियों का जीवन सुखमय तथा आनन्दमय बना रहता है:'वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सानो दधातु भद्रया प्रिये धामनि धामनि'-(अथर्ववेद, 12.1.52) जल के साथ-साथ सभी ऋतुओं को अनुकूल रखने का वर्णन भी वेदों में मिलता है।

3. **यजुर्वेद -** यजुर्वेद में पृथ्वी को ऊर्जा (उर्वरता) देने वाली तप्तायनी तथा धन-सम्पदा देने वाली वित्तायनी कहकर प्रार्थना की गई है कि वह हमें साधनहीनता/ दीनता की व्यथा और पीड़ा से बचाए 'तप्तायनी मेसि वित्तायनी मेस्यनतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात्।' (यजुर्वेद 5/9)। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में क्षिति-पृथ्वी तत्व का मानव जीवन में क्या महत्व है तथा वह किस प्रकार अन्य चार प्रकृति तत्वों के संग, समायोजनपूर्वक क्रियाशील रहकर, उन समस्त जड़-चेतन को जीवनी शक्ति प्रदान करती है, जिनको वह धारण किए हुए है, की विशद व्याख्या उपलब्ध है। अथर्ववेद में पृथ्वी को, अपने में सम्पूर्ण सम्पदा प्रतिष्ठित कर, विश्व के समस्त जीवों का भरण-पोषण करने वाली कहा गया है। जब हम पृथ्वी की सम्पदा (अन्न, वनस्पति, औषधि, खनिज आदि) प्राप्त करने हेतु प्रवास करें तो प्रार्थना की गई है कि हमें कई गुना फल प्राप्त हो परन्तु चेतावनी भी दी गई है कि हमारे अनुसंधान और पृथ्वी को क्षत-विक्षत (खोदने) करने के कारण पृथ्वी के मर्मस्थलों को चोट न पहुँचे। अथर्ववेद में पृथ्वी से प्रार्थना की गई है- 'वतते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदति रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम।।' -(अथर्ववेद 12/1/35) इसके गम्भीर घातक परिणाम हो सकते हैं। आधुनिक उत्पादन और उपभोग एवं अधिकतम धनार्जन की तकनीक ने पृथ्वी के वनों-पर्वतों को नष्ट कर दिया है। खनिज पदार्थों को प्राप्त करने हेतु अमर्यादित विच्छेदन कर पृथ्वी के मर्मस्थलों पर चोट पहुँचाने के कारण पृथ्वी से जलप्लावन और अग्नि प्रज्ज्वलन, धरती के जगह-जगह फटने और दरारें पड़ने के समाचार हमें प्राप्त होते रहते हैं। खानों में खनन करते समय इसी प्रकार की दुर्घटनाओं ने न जाने कितने लोगों की जानें ही नहीं ली अपितु उन क्षेत्रों के सम्पूर्ण पर्यावरण का विनाश कर उसे बंजर ही बना दिया है। हाल ही में मेघालय की संकरी लगभग 1200 फुट गहरी खदान में अचानक पानी आ जाने की घटना विश्व में घटित इसी प्रकार की तमाम त्रासदियों में से एक है।

यजुर्वेद में वनों की महत्वता और उनकी रक्षा के लिए उपायों के बारे में विस्तार से बताया गया है। यहां वन अपने आप में एक पूरा विश्व है जो हमें शांति, संतुलन और शक्ति प्रदान करता है। इसलिए हमें वनों को रक्षा करना चाहिए। अथर्ववेद में प्रकृति के संरक्षण के लिए कुछ उपायों का उल्लेख है। इनमें से कुछ उपाय निम्नलिखित हैं :

वनों की रक्षा करना : अथर्ववेद में वनों की महत्ता का वर्णन किया गया है। वनों को बचाने और उनकी संरक्षा करने के लिए उपाय बताए गए हैं। वनों के लिए प्रार्थनाएं करने और उन्हें संरक्षित रखने का संदेश दिया गया है।

जल संरक्षण : अथर्ववेद में जल की महत्ता का वर्णन किया गया है। जल को संरक्षित रखने और जल संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए उपाय बताए गए हैं। जल के उपयोग को संतुलित रखने के लिए भी अथर्ववेद में संदेश दिया गया है।

प्रदूषण कम करना : अथर्ववेद में प्रदूषण के विषय में बताया गया है। जल, वायु, मिट्टी और अन्य प्राकृतिक तत्वों के प्रदूषण से बचने के उपाय बताए गए हैं।

वृक्षारोपण : अथर्ववेद में वृक्षारोपण के महत्त्व का वर्णन किया गया है। वृक्षारोपण करने के उपाय बताए गए है ।**'मित्रस्याहं भक्षुसा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'** [xi] का संकल्प व्यक्त है। इस मंत्र के अनुसार, संकल्पकर्ता कहता है, "मैं मित्र के द्वारा सभी प्राणियों को भोजन के रूप में देखता हूँ।" इस संकल्प का अर्थ है कि संकल्पकर्ता सभी प्राणियों के भोजन की दृष्टि से समझने की इच्छा व्यक्त कर रहा है। इस संकल्प के माध्यम से व्यक्त किया जाता है कि सभी प्राणी एक-दूसरे के साथ सहयोग और भोजन के रूप में सम्बन्ध रखते हैं। यह संकल्प हमें प्राणियों के साथ सम्पर्क में आने और सहयोग करने की प्रेरणा देता है। अर्थात्, सभी प्राणियों के प्रति सहृदयता का परिचय देना ही जीवन का सही लक्षण है। आज जिसे पारिस्थितिकी-तन्त्र कहते हैं, उसमें भी तो रचना तथा कार्य की दृष्टि से विभिन्न जीवों और वातावरण की मिली-जुली इकाई का ही स्वरूप-विश्लेषण किया जाता है।लोकोक्ति है कि 'जब तक सांस, तब तक आस।' परन्तु जब सांस ही जहरीली हो जाए, तब उससे जीवन की आशा क्या की जा सकती है? वस्तुतः सांस की सार्थकता वातावरण की मुक्तता में निहित है। चूँकि पादप एवं जन्तु दोनों ही वातावरण-सन्तुलन के प्रमुख घटक हैं, इसलिए दोनों ही का सन्तुलित अनुपात में रहना परमावश्यक है। वेदों में वृक्ष-पूजन का विज्ञान है।

4. **सामवेद -** सामवेद में भी प्रकृति की महत्ता को बताया गया है। सामवेद वैदिक साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है जो रचनात्मक और धार्मिक संगीत को सम्मिलित करता है। सामवेद में प्रकृति को देवताओं के रूप में भी देखा जाता है।सामवेद में विभिन्न प्रकृति तत्वों जैसे वायु, जल, पृथ्वी आदि की महत्ता को बताया गया है। इन तत्वों को देवताओं के रूप में पूजा जाता है और उनसे संबंधित गीत और मंत्रों का वर्णन किया गया है।सामवेद में प्रकृति की महत्ता को समझाने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता बताई गई है। प्रकृति का सम्मान करने के लिए सामवेद में भक्ति और संगीत का महत्त्व बताया गया है। सामवेद में उत्तरदायित्व की बात भी कही गई है जिससे प्रकृति को संरक्षित रखने की जिम्मेदारी सभी व्यक्तियों को संभालनी चाहिए।सामवेद में प्रकृति के संरक्षण पर श्लोक की ब्याख्या

द्यौः पृथिवी अन्तरिक्षं त्रयस्त्रयस्ते नाभिर्व्युच्छन्ति बहुधा जगतीरपो जाता उत यज्ञं [xii]
चक्रतुमस्मभ्यं देवा जुष्टाः स्वर्गं लोकं विश्वा रूपाणि व्यचस्थिरे॥

इस श्लोक में द्यौः (आकाश), पृथ्वी और अन्तरिक्ष के उल्लेख के साथ-साथ पृथ्वी के उत्पत्ति का उल्लेख है। श्लोक में यह संदेश दिया जाता है कि इन तीनों महत्त्वपूर्ण प्रकृति तत्वों को संरक्षित रखना चाहिए।श्लोक में यह भी संदेश दिया गया है कि यज्ञ को एक तरह से प्रकृति की संरक्षा का एक माध्यम माना जा सकता है। यज्ञ अनुष्ठान के दौरान देवताओं को प्रसन्न करने के लिए प्राकृतिक तत्वों का उपयोग किया जाता है।इस श्लोक में विश्व के विभिन्न रूपों के उल्लेख के साथ-साथ देवताओं को स्वर्ग लोक में जुड़ा हुआ उल्लेख है। यह संदेश देता है कि प्रकृति और देवताओं का संरक्षण हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है ।

निष्कर्ष : आज विश्वपर्यावरण प्रदूषित हो रहा है, उससे कर्म में असन्तुलन उपस्थित हो गया है। इससे बचने के लिए वेद-प्रतिपादित सात्त्विक भाव अपनाना पड़ेगा। पर्यावरण को स्वच्छ-सुन्दर रखने का आग्रह सिर्फ भावनात्मक स्तर पर किया गया हो, ऐसी बात नहीं है।वैज्ञानिक अनुसन्धान के सन्दर्भ में भी सात्विकता की भावना से अनुप्राणित होकर गहरे मानवीय सम्बन्ध की स्थापना पर पर्याप्त बल दिया गया है। वेद का स्पष्ट निर्देश है कि लोग प्रकृति के प्रति सदा पूर्ण श्रद्धा रखें और आनन्दमय जीवन व्यतीत करने के निमित्त उससे पर्यावरण की अनुकूलता प्राप्त करते रहें। शुक्ल यजुर्वेद का शाश्वत सन्देश है – पवन मधुर, सरस व शुद्ध तथा गतिशील रहे, सागर मधुर वर्षण करे। ओज प्रदान करने वाली अन्नादि वस्तुएँ भोजन के बाद मधु के समान सुकोमल बन जाएँ। रात के साथ-साथ दिन भी मधुर रहे। पृथ्वी की धूल से लेकर अन्तरिक्ष तक मधुर हों। न केवल जीवित मनुष्यों का, अपितु पितरों का जीवन भी मधुमय रहे। सूर्य मधुमय रहें, गायें मधुर दूध देने वाली हों। निखिल ब्रह्माण्ड मधुमय रहे। यह श्लोक प्रकृति की सुंदरता और सामरस्य को बयान करता है और सभी प्राणियों के जीवन में मधुरता, प्रेम और सम्पूर्णता की आवश्यकता को संकेत करता है। यह हमें प्रकृति के संरक्षण, सजीवता की एकता और प्रेम के महत्त्व को समझने के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ :

[i] यह पद ऋग्वेद के पहले मंडल, प्रथम सूक्त, प्रथम मंत्र से लिया गया है।

[ii] यह पद श्रीमद् भगवद् गीता के योगशास्त्र अध्याय के बीसवें श्लोक से लिया गया है।

[iii] यह पद ऋग्वेद के द्वितीय मंडल, द्वितीय सूक्त, द्वितीय मंत्र से लिया गया है।

[iv] यह पद ऋग्वेद के पांचवें मंडल, पञ्चम सूक्त, पञ्चम मंत्र से लिया गया है।

[v] यह पद ऋग्वेद के द्वादश मंडल, प्रथम सूक्त, सप्तम मंत्र से लिया गया है।

[vi] यह पद श्रीमद् भगवद् गीता के योगशास्त्र अध्याय के पच्चीसवें श्लोक से लिया गया है।

[vii] ऋग्वेद के मण्डल 1, सूक्त 23, मंत्र 248 में पाया जाता है। इसमें जल के गुणों का वर्णन किया गया है।

[viii] यह पद ऋग्वेद के द्वितीय मंडल, प्रथम सूक्त, तृतीय मंत्र से लिया गया है।

[ix] यह पद ऋग्वेद के द्वितीय मंडल, पञ्चम सूक्त, पञ्चम मंत्र से लिया गया है।

[x] यह पद ऋग्वेद के पञ्चम मंडल, पञ्चम सूक्त, द्वादश मंत्र से लिया गया है। इस पद में कहा गया है कि इन वृक्षों को जो शून्य स्थानों में हूँडे हैं, मैं उन्हें बहुतायत से लदूंगा। यहां तक कि ये वेद वस्त्र मेरे इंद्रियों में व्याप्त हों और हमारे लिए भगवान् इन्द्रियों में सुखदायक वस्तुएं लेकर आएँ। यह पद प्रकृति की संबंधितता, पृथ्वी की महत्त्वपूर्णता, और प्रकृति के साथ एकता को प्रशंसा करता है। इसके माध्यम से हमें प्रकृति की रक्षा और संरक्षण की आवश्यकता का संकेत मिलता है।

[xi] यजुर्वेद के अध्याय 36, मंत्र 18 में पाया जाता है। इस मंत्र में एक संकल्प (संकल्पना) व्यक्त किया गया है।

[xii] सामवेद के प्रथम प्रपाठक में वर्णित यह श्लोक प्रकृति के संरक्षण की महत्वपूर्ण बातों को संक्षेप में व्यक्त करता है। इस श्लोक में कहा गया है कि द्यु (आकाश), पृथ्वी, अन्तरिक्ष और नाभि (ब्रह्मांड) विभिन्न तरीकों से व्युच्छित होते हैं और जगती (प्रकृति) उनके विभिन्न रूपों को प्रकट करती है।

डॉ. दयाशंकर सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर समाजशात्र, सकलडीहा पी. जी. कालेज चन्दौली
sambadindia@gmail.com, **9452302015**

अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati)

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) से प्रकाशित त्रैमासिक ई-पत्रिका

अंक-47, अप्रैल-जून 2023 **UGC Care Listed Issue**

सम्पादक-द्वय : माणिक व जितेन्द्र यादव चित्रांकन : संजय कुमार मोची (चित्तौड़गढ़)

Tags 47 डॉ. दयाशंकर सिंह यादव पर्यावरण भारतीय वेद शोध संरक्षण UGC Care Listed Issue

शेयर करें

LINKS TO THIS POST

सभी देखें

POST A COMMENT

टिप्पणी डालें

‹ और नया

पुराने ›

यह 'अपनी माटी संस्थान' चित्तौड़गढ़ (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013) द्वारा संचालित और UGC Care List Approved त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अपनी माटी' है जिसका ISSN नंबर 2322-0724 Apni Maati है। कला, साहित्य, रंगकर्म, सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार, आलेख सहित तमाम विधाओं में समाज-विज्ञान और साहित्य से सम्बद्ध रचनाएँ छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है। कथेतर साहित्य छापने में हमारी रूचि है। यहाँ साल में चार सामान्य अंक प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा कभी-कभी विशेषांक भी छपते हैं। यह गैर-व्यावसायिक और साहित्यिक प्रकृति का सामूहिक प्रयासों से किया जाने वाला कार्य है। हमारा पता 'कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड़, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान' है। अन्य जरूरी प्रश्न हो तो 9460711896 (Dr. Manik), 9001092806 (Dr. Jitendra Yadav) पर Only Watts App करके सम्पर्क कर सकते हैं, यहाँ कॉल पर बात नहीं होगी। हमारा ई-मेल पता apnimaati.com@gmail.com यह रहेगा। कुल जमा पत्रिका ठीकठाक है इसे बेहतर बनाने का जिम्मा लेखकों और पाठकों पर ही है।

Design by - Shekhar फॉण्ट कन्वर्टर भक्ति विशेषांक रेणु विशेषांक मीडिया विशेषांक किसान विशेषांक तुलसीदास विशेषांक शिक्षा विशेषांक प्रतिबंधित साहित्य विशेषांक

ISSN [illegible]

NEW ARCHAEOLOGICAL AND GENEALOGICAL SOCIETY KANPUR
A REGISTERED NON PROFIT ORGANISATION [illegible]
REGISTRATION NO. [illegible] UNDER SOCIETIES ACT 21, [illegible]

KANPUR PHILOSOPHERS

An internationally peer reviewed and Refereed journal
of Humanities & Social Sciences, Law, Modernity,
Gender Studies and allied disciplines

KANPUR PHILOSOPHERS

Volume Ten, Issue One (A) 2023

Proceeding of National Seminar on 75 years of Parliamentary Democracy in India: Traditions, Issues, Problems and Challenges

Chief Editor Atul Kumar Shukla

ISSN 2348 – 8301

Kanpur Philosophers

Volume X, Issue I(A), March 2023
DOI: 10.13140/RG.2.2.21942.16966

An internationally Peer Reviewed and Refereed Journal of History, Archaeology, Indology, Epigraphy, Numismatics, Law, Literature & allied disciplines of Arts, Humanities and Social Sciences

NEW ARCHAEOLOGICAL & GENOLOGICAL SOCIETY 125/L/89, FF104, GOVIND NAGAR, KANPUR U.P. INDIA 208006
https://sites.google.com/site/kanpurhistorian/
www.kanpurhistorians.org
dadajhansi@gmail.com
+91 941-555-7103

Index
Kanpur Philosophers
Volume X, Issue I(A), March 2023

1.	Public accountability in the Indian democratic perspective	**Mrs. Justice Jyotsna Sharma** The High Court of Judicature at Allahabad Prayagraj India	01
2/	Parliamentary democracy and Public administration in India	**Dr. Rajesh Singh** Principal Secretary, Vidhan Parishad Government of Uttar Pradesh Lucknow India	11
3.	75 Years of Indian Democracy : An Appraisal	**Prof. R. K. Pandey** Professor of Law V.S.S.D.College, Kanpur India	19
4.	Cascading role of governance in ensuring judicial activism in India	**Jivantika Gulati** Symbiosis Law School, Pune Symbiosis International Pune, Maharashtra India **Radha Ranjan** Central University of South Bihar, Gaya India	22
5.	a socio -legal study on reservation with special reference to creamy layer in india: a critical analysis	**Dhwani Mishra** **Dr. Kanchan Kishor Rawat** Law College Dehradun Uttaranchal University Dehradun India	29
	A revisit to the legislations and policies related to elderly people at both national & international level	**Muskan Srivastava** **Dr. Sandhya Verma** Law College Dehradun Uttaranchal University Dehradun India	37
7.	Indian penal code: issues and challenges	**Dr. Gurpreet Kaur** **Rajnish Bishnoi** Faculty of Law Guru Kashi University Talwandi Sabo, Bathinda	44
8,	Women Participation in Indian Politics: Inclusion and Challenges	**Dr. Bibekananda Nayak** Center for Study of Social Exclusion and Inclusive Policy B.B Ambedkar University, Lucknow India	49
9,	86^{th} Amendment of Indian Constitution: Right to	**Prof. Surendra Pal** D.A.V. (P.G.) College	57

	Education Act- 2009	Muzaffarnagar (U.P.) India **Dr. Chaman Kaur** Sri Lal Bahadur Shastri Degree College Gonda (U.P.) India	
10.	75 Years of Parliamentary Democracy and Role of Election Commission	**Dr. Shiv Kailash** Assistant Professor of Law Maharaj Balwant Singh P.G. College Gangapur, Varanasi	65
11.	Issue of Water Pollution in Furtherance of Co-operative Federalism in India	**Sandeep Kumar Suman** Assistant Professor of Law Assam University Silchar, Assam India	71
12.	Cyber crimes against women in cyberspace: a critical analysis of Indian legislations	**Radha Ranjan** **Dr. Pallavi Singh** School of Law and Governance Central University of South Bihar Gaya India	79
13.	Patent law in the age of artificial intelligence	**Abhimanyu Sharma** **Dr.Lakshmi Priya Vinjamuri** Law College Dehradun Uttaranchal University, Dehradun India	86
14.	A Brief Analysis of the Modern Perspective of Mental Cruelty in Domestic Affairs Against Women in India	**Gunjan Pathak** **Ujjwal Kumar Singh** Law College Dehradun Uttaranchal University Dehradun India	94
15.	A Critical Analysis of Criminal Law (Amendment) Act, 2013 in Combating Acid Attacks in India	**Mansi Bisht** **Dr. Mansi Sharma** Law College Dehradun Uttaranchal University Dehradun India	103
16.	Revamping the Indian Penal Code: Challenges and Suggestions	**Dr. Anju Beniwal** Assistant Professor of Sociology Government Meera Girls College Udaipur Rajasthan	110
17.	Reporting of cyber crime against women in new constitutional and legal regime	**Dr. Ajay Kumar Singh** K. S. Saket P. G. College Ayodhya India **Shailsuta** Dr. Ram Manohar Lohia, Avadh University Ayodhya	118
18.	Rights of victimunder	**Nawal Kishor Mishra** Assistant Professor	128

	criminal jurisprudence in India	Faculty of Law Banaras Hindu University, Varanasi,	
19.	need of electoral reform in parliamentary democracy	**Dr. Mrityunjay Kumar Rai** Assistant Professor of Law, M.B.S. PG College Gangapur (Raja Talab) Varanasi.India	142
20.	Social Change in Life of Kashmir after Article 370	**Nirmalika Singh** ISDC Allahabad Central University Prayagraj India	149
21.	Freedom of Press and Electronic Media in India	**Ashish Kumar Singh** Maharaj Balwant Singh P.G. College Gangapur, Varanasi	158
22.	Role of Media in Strengthening Democracy in India	**Dr. Raju Majhi** Banaras Hindu University, Varanasi	163
23.	Role of Constitutional Courts in Strengthening and Protecting the Parliamentary Democracy in India	**Dr. Pradeep Kumar** **Nitesh Kumar Chaturvedi** Research Scholar Department of Law SLS, BBAU Lucknow India	173
24.	People Participation in Parliamentary Democracy and Decentralized Governance	**Shiv Shankar Saroj** Maharaj Balwant Singh PG College Gangapur, Varanasi	182
25.	Constitutional Challenges in Contemporary India: Some Reflections	**Dr. Anis Ahmad** **Dr. Mujibur Rehman** Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Lucknow India	188
26.	Parliamentary Democracy: Role of Opposition	**Pratibha Malik** IIMT University Meerut India **Sarika Ujjwal**	194
27.	The Nexus of Casteism, Communalisms, and Religious Fundamentalism in Indian Democracy: Challenges and Prospects	**Dr. Rahul Tiwari** **Dr.Shashi Kant Tripathi** Atal Bihari Vajpayee School of Legal Studies C.S.J.M. University Kanpur India	201
28.	Impact of Constitutional Amendments on Indian Society	**Dr. Shiv Shankar Singh** University Department of Law Patna University, Patna India	207
29.	An analysis of the provisions of seizure and	**Aditya Singh** **Abhiranjan Dixit**	212

	arrest under ndps act, 1985	Law College Dehradun Uttaranchal University Dehradun India	
30.	निजता का अधिकार : लोकतन्त्रात्मक विधिक परिदृष्य	**डॉ0 दीपक कुमार श्रीवास्तव** विधि विभाग महाराज बलवन्त सिंह, पी0जी0 कॉलेज गंगापुर (राजातालाब) वाराणसी	220
31.	प्राचीन भारतीय शास्त्र परम्परा में सामाजिक विधि–व्यवस्था	**डा0 अभिषेक अग्निहोत्री** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग महाराज बलवन्त सिंह पी0जी0 कॉलेज गंगापुर–वाराणसी	228
32.	संविधान की आत्मा मौलिक अधिकार	**डॉ दयाशंकर सिंह यादव** एसोसिएट प्रोफेसर समाजशात्र सकलडीहा पी. जी. कालेज, सकलडीहा, चन्दौली	232
33.	संसदीय लोकतंत्र में महिलाओं की भूमिका	**डॉ समरेंद्र प्रताप आजाद** विधि विभाग महाराज बलवंत सिंह पीजी कॉलेज गंगापुर वाराणसी	239
34.	नागरिकों की शिक्षा का मौलिक अधिकार	**चंद्र प्रकाश शुक्ल** असिस्टेंट प्रोफेसर विधि विभाग महाराज बलवंत सिंह पी0जी0 कॉलेज गंगापुर वाराणसी	245

Kanpur Philosophers, ISSN 2348-8301
International Journal of humanities, Law and Social Sciences
Published biannually by New Archaeological & Genological Society
Kanpur India

Vol. X, Issue I(A), March 2023
DOI 10.13140/RG.2.2.21942.16966
www.kanpurhistorians.org

संविधान की आत्मा मौलिक अधिकार

डॉ दयाशंकर सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर समाजशात्र
सकलडीहा पी. जी. कालेज,
सकलडीहा, चन्दौली

सारांश

मौलिक अधिकार भारत के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त होता है। जिसने भारत की सदस्यता ली है वह इसका हकदार होता है और भारत सरकार इसे सामान्य परिस्थिति में सीमित नही कर सकती।संविधान सभी नागरिको के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से कुछ बुनियादी स्वतंत्रता देता है। जिन देशों के संविधान मे मौलिक अधिकार का वर्णन नही होता है अथवा मौलिक अधिकार को संविधान में जगह नही मिलती है तो वह देश जल्द ही तानाशाही देश हो जाता है। राज्य शक्ति को यदि संवैधानिक रूप से नियंत्रण मे रखना है और राज्य की जनता को उनके मौलिक अधिकार देना है तो संविधान मे मौलिक अधिकार महत्वपूर्ण होता है। यह व्यक्ति की मूलभूत स्वतंत्रता को निर्धारित करता है। संविधान के भाग III को भारत का मेग्नाकार्टा की संज्ञा दी गई है।

मुख्य शब्द– मौलिक अधिकार, संविधान, नागरिकों, समानता।

मौलिक अधिकार का अर्थ होता है वे अधिकार जो व्यक्ति के जीवन के मौलिक रूप से आवश्यक है। ये अधिकार किसी भी देश के संविधान के द्वारा वहा के नागरिकों को प्रदान किये जाते है, जो नागरिकों के जीवन–यापन व सुरक्षा के दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। मौलिक अधिकार की रक्षा देश की सर्वोच्च न्यायालय करता है। भारतीय संविधान के अंतर्गत मौलिक अधिकार एक महत्वपूर्ण भाग है। मौलिक अधिकार उन अधिकारों को कहा जाता है जो व्यक्ति के जीवन के लिये मौलिक होने के कारण संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किये जाते है और जिनमें राज्य द्वार हस्तक्षेप नही किया जा सकता। ये ऐसे अधिकार हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिये आवश्यक हैं और जिनके बिना मनुष्य अपना पूर्ण विकास नही कर सकता। ये अधिकार कई करणों से मौलिक है:–

1.इन अधिकारों को मौलिक इसलिये कहा जाता है क्योंकि इन्हे देश के संविधान में स्थान दिया गया है तथा संविधान मे संशोधन की प्रक्रिया के अतिरिक्त उनमें किसी प्रकार का संशोधन नही किया जा सकता।

2.ये अधिकार व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष के विकास हेतु मूल रूप मे आवश्यक है, इनके अभाव में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जायेगा।

3.इन अधिकारों का उल्लंघन नही किया जा सकता।

4.मौलिक अधिकार न्याय योग्य है तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से प्राप्त होते है।

मौलिक अधिकार का महत्व – मौलिक अधिकार देश के नागरिकों के जीवन यापन हेतु बेहद अनिवार्य होते हैं। यह व्यक्ति को मुख्य रूप से सुरक्षा प्रदान करते हैं। मौलिक अधिकार देश के नागरिकों के मानसिक एवं नैतिक विकास के लिए भी बेहद आवश्यक माने जाते हैं।

अल्पसंख्यकों को शिक्षा का अधिकार होता है। उन्हें समान रूप से शिक्षा के लिए सुविधाएं और अवसर प्रदान किए **(घ) वृद्धों के अधिकार**– वृद्धों को भी अपने अधिकारों का लाभ मिलना चाहिए। कुछ महत्वपूर्ण वृद्धावस्था सम्बंधी अधिकार निम्नलिखित हैं
जीवन का अधिकार – वृद्धों को सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार होता है। उन्हें खाने–पीने की सुविधा और चिकित्सीय सेवाओं का अधिकार होता है। **स्वतंत्रता का अधिकार** – वृद्धों को अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए स्वतंत्रता का अधिकार होता है। उन्हें स्वतंत्र रूप से अपने दोस्तों और परिवार से मिलने और उनसे बातचीत करने का अधिकार होता है। **सामाजिक सुरक्षा** – वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा के अधिकार होते हैं जैसे कि आवास, वित्तीय सहायता, तथा बुरी तरह से कुप्रबंधन से बचाने का अधिकार। **सम्मान का अधिकार** – वृद्धों को सम्मान का अधिकार होता है। उन्हें समाज के अन्य सदस्यों की तरह सम्मान दिया जाना चाहिए और उनकी सेवा करने का भी अधिकार होता है। **न्याय का अधिकार** – वृद्धों को न्याय का अधिक (ड) **गरीबों के अधिकार**–गरीबों के भी अधिकार होते हैं। कुछ मुख्य गरीबों के अधिकार निम्नलिखित हैं. **खान–पान के अधिकार** हर व्यक्ति को उचित खाने का अधिकार होता है। गरीबों के लिए उचित खाना, पानी और स्वच्छता के साथ भोजन उपलब्ध होना चाहिए। **आवास के अधिकार**: गरीबों के लिए उचित आवास की व्यवस्था की जानी चाहिए। उन्हें स्वस्थ रहने के लिए अपने परिवार के साथ उचित स्थान पर रहने का अधिकार होता है। **शिक्षा के अधिकार**: गरीब लोगों के बच्चों को उचित शिक्षा का अधिकार होता है। वे उच्च शिक्षा तक पहुंचने का सामर्थ्य देने वाली स्थानों से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार रखते हैं। **नौकरी के अधिकार**: गरीब लोगों को उचित रोजगार मिलना चाहिए। उन्हें अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार नौकरी मिलने का अधिकार होता है। **स्वास्थ्य के अधिकार**: गरीब लोगों को उचित स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए। (च) **स्वस्थ वातावरण का अधिकार**– स्वस्थ वातावरण का अधिकार एक मूलभूत मानव अधिकार है। यह अधिकार वातावरण, परिसर और जीवन के साथ संबंधित होता है। हर व्यक्ति को स्वच्छ और शुद्ध वातावरण और स्वस्थ परिसर का अधिकार होता है। इसके तहत, हर व्यक्ति को स्वच्छ और प्रदूषणमुक्त वातावरण, स्वस्थ वातावरण से जुड़े स्वास्थ्य सेवाओं और जीवन के लिए जरूरी सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं तक पहुंच का अधिकार होता है। यह अधिकार लोगों को एक स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण और समुदाय की खुशहाली के लिए जरूरी उपकरणों और संसाधनों के साथ प्रदान किया जाना चाहिए।

3.सामाजिक, सांस्कृतिक और अर्थनीतिक अधिकार –

(क) **शिक्षा का अधिकार**– शिक्षा का अधिकार हर मानव का मूलभूत अधिकार है। इसके तहत हर व्यक्ति को उचित शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा के लिए पहुंच का अधिकार होता है। इस अधिकार का उद्देश्य है कि हर व्यक्ति को समान अवसरों के साथ उचित शिक्षा मिले ताकि वह अपने आप को समृद्ध और स्वावलंबी बनाने में सक्षम हो सके।शिक्षा का अधिकार इस बात का संकेत करता है कि शिक्षा केवल एक सेवा नहीं है, बल्कि एक अधिकार है जो सभी लोगों को प्राप्त होना चाहिए। यह अधिकार लोगों को न केवल स्वतंत्र विचार करने की क्षमता प्रदान करता है, बल्कि उन्हें अपने जीवन में समाज के साथ बेहतर संवाद और समझदारी विकसित करने की भी सक्षमता प्रदान करता है।शिक्षा का अधिकार लोगों को शिक्षा के समूहों और विद्यालयों में प्रवेश के लिए भी पहुंच प्रदान करता है। इसके अलावा, शिक्षा का अधिकार उन लोगों के लिए भी होता है जो नियमित विद्यालय में नहीं जाते हैं

(ख) **संस्कृति का अधिकार**– संस्कृति का अधिकार भी एक महत्वपूर्ण मानव अधिकार है। संस्कृति एक व्यक्ति या समुदाय की अद्भुत धन सम्पदा है जो उसके इतिहास, भाषा, शैली, कला, साहित्य और संगीत में प्रकट होती है। संस्कृति के अंतर्गत जीवन के विभिन्न पहलुओं, दर्शनों और सांस्कृतिक गतिविधियों को समेटा जाता है। संस्कृति का अधिकार अर्थात संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन का अधिकार हर व्यक्ति और समुदाय को होना चाहिए। संस्कृति का संरक्षण न केवल उसे नए तकनीकी विकास से बचाने में मदद करता है, बल्कि उसे संसाधनों और उपकरणों की एक अच्छी विकसित नजर से देखने में भी मदद करता है। इसके अलावा, संस्कृति का अधिकार समृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें अपने इतिहास, भाषा, संस्कृति और परंपराओं के बारे में समझ और ज्ञान प्रदान करता है।

(ग) **मतदान का अधिकार**– मतदान का अधिकार एक महत्वपूर्ण नागरिक अधिकार है जो संवैधानिक रूप से सुरक्षित है। इस अधिकार के तहत हर नागरिक को स्वतंत्र रूप से अपनी मतदान करने का अधिकार होता है जिससे वह सरकार को चुन सकता है जो उसकी जरूरतों और मांगों को पूरा कर

अधिकार एक मुख, न्यायाधीशों द्वारा आवश्यकता के अनुसार दंड तथा सजा की सिफारिश करने के बाद दिया जाता है। यह अधिकार अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसकी बिना व्यक्ति का जीवन और स्वतंत्रता कभी भी खतरे में हो सकती है और समाज के विकास तथा मनुष्य के गुलामी के बिना ही सकता है। (ग)गुलामी और पराधीनता से मुक्त होने का अधिकार– गुलामी और पराधीनता से मुक्त होने का अधिकार मानव अधिकारों में से एक है, जो हर व्यक्ति को उसकी स्वतंत्रता और आजादी के लिए अधिकार प्रदान करता है। इस अधिकार के अंतर्गत हर व्यक्ति को अपने देश में या किसी अन्य देश में किसी भी प्रकार की गुलामी, बीच, या दासता से मुक्त होने का अधिकार होता है।यह अधिकार संवैधानिक रूप से संरक्षित होता है और किसी भी सरकार द्वारा इसे प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है। इस अधिकार के तहत, कोई भी व्यक्ति अपने जीवन और आजादी के लिए किस तरह का भी स्वतंत्र चयन कर सकता है, वह उसे चुन सकता है और अपने जीवन को स्वतंत्र तरीके से जी सकता है। गुलामी और पराधीनता से मुक्त होने का अधिकार अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारी आजादी और स्वतंत्रता के लिए जुड़ी हुई समस्याओं से निपटने में मदद करता है। (घ) स्वतंत्रता का अधिकार(ड) समानता का अधिकार–(च) उचित जीवनाधार का अधिकार– उचित जीवनाधार का अधिकार मानव अधिकारों का एक महत्वपूर्ण अधिकार है, जो हर व्यक्ति को उन्नत और स्वस्थ जीवन जीने के लिए अधिकार प्रदान करता है। इस अधिकार के अंतर्गत, हर व्यक्ति को स्वस्थ भोजन, पानी, स्वच्छता, निवास, स्वास्थ्य सेवाएं, वस्त्र, शिक्षा और प्रकाश के लिए अधिकार होता है।उचित जीवनाधार का अधिकार संवैधानिक रूप से संरक्षित होता है और किसी भी सरकार द्वारा इसे प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है। इस अधिकार के तहत, कोई भी व्यक्ति उन्नत जीवन जीने के लिए समान रहे बिना किसी भी रूप में उसकी आवश्यकताओं से वंचित नहीं हो सकता है।उचित जीवनाधार का अधिकार हमारी मानवीय विनम्रता का मूल बनता है। इस अधिकार के बिना, हम अपनी मौलिक आवश्यकताओं से वंचित हो सकते हैं और उन्नत जीवन जीने से वंचित हो सकते हैं। उचित जीवनाधार का अधिकार हमें एक आरामदायक, स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने का अधिकार

2.संरक्षण के अधिकार –

(क) बालकों के अधिकार– बालकों के अधिकार उन्हें सुरक्षित रखने, संरक्षित करने, समझाने और सम्मानित करने का अधिकार है। बालक वो होते हैं जो अभी बच्चे होते हैं, जिन्हें हम बच्चों के रूप में भी जानते हैं। यह अधिकार बच्चों को उनके संपूर्ण विकास के लिए सुरक्षा, स्वतंत्रता, शिक्षा, संभावनाएं, स्वास्थ्य देखभाल और खुशहाल जीवन जीने के लिए प्रदान करता है।बालकों के अधिकार के रूप में उन्हें निम्नलिखित अधिकार प्रदान किए जाते हैं:बालकों को समान अधिकार: सभी बालकों को समान अधिकार होते हैं और वे अपने अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं।बालकों की सुरक्षा: बालकों को हर स्तर पर सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी होती है। उन्हें फिजिकल, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से सुरक्षित रखना चाहिए। बालकों का शिक्षा अधिकार: सभी बालकों को शिक्षा का अधिकार होता है, जिससे उन्हें अपने भविष्य के लिए तैयारी करने में मदद मिलती है। **(ख) महिलाओं के अधिकार**– महिलाओं के अधिकार मुख्य रूप से वह समस्याएं हैं जो महिलाओं के सामने अधिकतर देशों में पाई जाती हैं। वे समानता, सुरक्षा, स्वतंत्रता, संज्ञान और स्वतंत्र फैसले का अधिकार जैसे अधिकारों की मांग करती हैं।इन अधिकारों में से कुछ मुख्य हैं: समानता: महिलाओं के अधिकार का पहला एवं मुख्य अधिकार समानता का है। वे सभी पुरुषों के समान होते हैं और समान अधिकारों के धनी होते हैं। सुरक्षा: महिलाओं को सुरक्षित रखने का अधिकार होता है। उन्हें हिंसा और अत्याचार से बचाना चाहिए। स्वतंत्रता: महिलाओं का अधिकार होता है कि वे अपने जीवन के फैसलों को स्वतंत्रता से ले सकें। संज्ञान अधिकार: महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होने का अधिकार होता है। उन्हें इन अधिकारों के बारे में जानकारी और संज्ञान होना चाहिए। स्वतंत्र फैसले का अधिकार: महिलाओं को अपने जीवन के सभी फैसलों के लिए स्वतंत्र फैसले करने का अधिकार (ग) **दलितों और अल्पसंख्यकों के अधिकार**– दलितों और अल्पसंख्यकों के अधिकार समानता, संरक्षण, समाजी आर्थिक स्थिति, शिक्षा और उनके धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारों के लिए लड़ाई करने जैसे अधिकारों की मांग करते हैं।इन अधिकारों में से कुछ मुख्य हैं: समानता: दलितों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों में समानता का होना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें सभी मूल अधिकारों के लिए समानता का अधिकार होता है। संरक्षण: दलितों और अल्पसंख्यकों को संरक्षण के अधिकार होते हैं। उन्हें हिंसा, शोषण और अत्याचार से बचाना चाहिए। समाजी आर्थिक स्थिति: दलितों और अल्पसंख्यकों का अधिकार होता है कि वे समाज के सभी अंगों के साथ समान रूप से जीवन जी सकें। उन्हें उचित मजदूरी, वित्तीय सहायता और अन्य समाजी लाभों का अधिकार होता है। शिक्षा: दलितों और

सकती है। इस अधिकार के माध्यम से नागरिक एक जागरूक और सक्रिय सार्वजनिक जीवन का हिस्सा बनते हुए राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेते है। मतदान का अधिकार एक लोकतांत्रिक राज्य की आधारभूत नीति है और इसके अभाव में न्यायालय इसे नागरिकों के लिए लागू करने के आदेश जारी कर सकता है।

(घ) व्यापार का अधिकार– व्यापार का अधिकार एक महत्वपूर्ण नागरिक अधिकार है जो संवैधानिक रूप से सुरक्षित है। यह अधिकार व्यक्ति को उसकी पसंद के अनुसार व्यापार करने का अधिकार देता है। इस अधिकार के तहत व्यक्ति अपनी खुद की उत्पादन और विपणन की व्यवस्था कर सकता है और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक संसाधनों का उपयोग कर सकता है।इस अधिकार के अंतर्गत व्यक्ति आवश्यकतानुसार अपने उत्पाद या सेवाओं के मूल्य निर्धारित कर सकता है और उन्हें विक्रय भी कर सकता है। यह अधिकार उचित नियमों और विधियों के अनुसार लागू होता है जो स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तरों पर विभिन्न होते है।व्यापार का अधिकार समृद्धि और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह अधिकार व्यक्ति को आर्थिक स्वतंत्रता देता है और समाज के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(ङ) कार्य करने का अधिकार– कार्य करने का अधिकार व्यक्ति को उसके काम को चुनने और उसे अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रित करने का अधिकार देता है। किसी भी व्यक्ति का अधिकार होता है कि वह अपने पसंद के अनुसार किसी भी काम को कर सके, जैसे कि किसी व्यापार को शुरू करना, किसी संस्थान या कंपनी में काम करना, अपना उद्योग शुरू करना, और इसी तरह के कार्य करना जो उसे चाहिए और जो कि उसकी अर्थात उसके जीवन में महत्वपूर्ण है।कार्य करने का अधिकार संवैधानिक हो सकता है या किसी समाज या संस्था के नियमों और विनियमों द्वारा प्रतिबंधित हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी भी राष्ट्र के सेना या पुलिस में काम करने के लिए आवेदन करने के लिए नागरिकता की जरूरत होती है और नियमों और विनियमों के अनुसार लोगों को इस काम को करने से रोका जा सकता है।

1.समानता का अधिकार–

समानता का अधिकार एक मौलिक मानवीय अधिकार है जो सभी लोगों को उनके अधिकारों और न्याय के समान अधिकारों के लिए संरक्षण प्रदान करता है। इस अधिकार के अनुसार, सभी व्यक्तियों को समान रूप से न्याय, समानता और अवसर का अधिकार है, अन्य लोगों के साथ समान तरीके से व्यवहार किया जाना चाहिए और भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।समानता का अधिकार संवैधानिक और मानवाधिकारों के मूल्यों पर आधारित है, जो भारत की संवैधानिक व्यवस्था में समानता और न्याय के मूलभूत सिद्धांतों को स्थापित करते हैं। इस अधिकार के अनुसार, सभी व्यक्तियों को धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से समान अधिकार होने चाहिए, और भेदभाव के आधार पर किसी व्यक्ति या समूह को अन्य से कम अधिकार नहीं होने चाहिए।समानता का अधिकार लोगों को उनके मौलिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने में मदद करता है और उन्हें समान अवसर और समान व्यवहार का अधिकार समानता का अधिकार भारत के संविधान ने मौलिक अधिकारों के तहत आता है। यह अधिकार हर व्यक्ति को भारत की संस्थाओं, सेवाओं और विकास के लाभों से समान रूप से लाभान्वित होने का अधिकार है।समानता का अधिकार सभी वर्गों और समुदायों को समान अवसर, समान वेतन, समान विचारों की सम्भावना और समान अधिकारों के साथ विकास की समान अवसर प्रदान करता है। समानता का अधिकार सभी लोगों के लिए स्थान, काम, उद्योग, और सार्वजनिक स्थानों जैसे शॉपिंग मॉल, पार्क, सिनेमाघर आदि का उपयोग करने का अधिकार भी शामिल है।इसके अलावा, समानता का अधिकार उन लोगों के लिए भी है जो दलित, अल्पसंख्यक, वंचित और सामाजिक रूप से पिछड़े हुए होते हैं। इस अधिकार के अंतर्गत, ऐसे लोगों को समान रूप से शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और समान सामाजिक अधिकारों के साथ स्थानीय सरकारों द्वारा विशेष सम्मान देने का अधिकार होता है।

2.भारत के संविधान में स्वतंत्रता का अधिकार–भारत के संविधान में स्वतंत्रता का अधिकार एक महत्वपूर्ण मौलिक अधिकार है जो हर व्यक्ति को स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के अधिकारों का अधिकार प्रदान करता है। यह अधिकार भारत की संविधान में अनुच्छेद 19 से अनुच्छेद 22 तक में संयुक्त रूप से दिया गया है।स्वतंत्रता का अधिकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता, विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म स्वतंत्रता, स्वतंत्र व्यापार और व्यवसाय के अधिकारों, जनसभा और संगठन के गठन के अधिकारों, समाज के साथ संघर्ष करने के अधिकारों और जाने जाने की स्वतंत्रता के अधिकारों को शामिल करता है।स्वतंत्रता का अधिकार सभी व्यक्तियों को अपनी विचारों, धर्म, संस्कृति और अभिव्यक्ति के

अधिकारों का उपयोग करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसके अलावा, यह अधिकार संघर्ष करने और न्याय के लिए आवाज उठाने की स्वतंत्रता भी प्रदान करता है।

3.भारत के संविधान में शोषण के विरुद्ध अधिकार –भारत के संविधान में शोषण के विरुद्ध अधिकार एक महत्वपूर्ण मौलिक अधिकार है जो भारत की संविधान में अनुच्छेद 23 और 24 में संयुक्त रूप से दिया गया है। इस अधिकार का उद्देश्य शोषित लोगों की रक्षा करना है जो सामाजिक, आर्थिक और शारीरिक रूप से शोषित किए जाते हैं।अनुच्छेद 23 में श्रमिकों और निम्न वर्ग के लोगों के खिलाफ विभिन्न प्रकार की शोषण जैसे बाल श्रम, बेगुल, और अन्य श्रमिकों के साथ शोषण, प्राथमिकता देने के अभाव में मजदूरी का शोषण आदि शामिल है।अनुच्छेद 24 में भारतीय संविधान ने शोषित वर्गों के लिए न्याय, सामाजिक आर्थिक सुरक्षा और दायित्व की व्यवस्था करने का अधिकार दिया है। इसमें नागरिकों को बेहतर जीवन की आशा है और उन्हें स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है।इस अधिकार के तहत, शोषित वर्गों को विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, सरकारी नौकरी विभागों में आरक्षण और

4.धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार–धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार एक महत्वपूर्ण मौलिक अधिकार है जो भारत के संविधान में अनुच्छेद 25 और 26 में दिया गया है। इस अधिकार के तहत, हर व्यक्ति के पास धर्म या धार्मिक उपदेश के अनुसार अपने विचारों, आचरण और धार्मिक अभिवृत्तियों का चयन करने का पूर्ण अधिकार होता है। धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार एक मौलिक मानवाधिकार है जो हर व्यक्ति को उसके धर्म या विश्वास को अपनी पसंद के अनुसार चुनने और उसके अनुसार अपने जीवन को जीने का अधिकार देता है। इस अधिकार के तहत, व्यक्ति को अपने धर्म या विश्वास को अभ्यास करने, अपने धार्मिक अनुष्ठानों को पालन करने और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार होता है।यह अधिकार संवैधानिक रूप से विभिन्न देशों और संस्थाओं द्वारा अनुसंधान किया जाता है और इसे अनेक मानवाधिकार संबंधी संबंधित अंतरराष्ट्रीय संवेदना पत्रों में उल्लेखित किया गया है। यह स्वतंत्रता के अधिकार का हिस्सा होता है जो हर व्यक्ति को उसके धर्म या विश्वास को चुनने और अपने जीवन को उसके अनुसार जीने का स्वतंत्रता देता है।इसलिए, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार महत्वपूर्ण होता है और यह हर व्यक्ति को उसके धर्म या विश्वास के अनुसार अपने जीवन को जीने का अधिकार देता है।

5.सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार– सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार मानवाधिकारों के एक महत्वपूर्ण समूह है।सांस्कृतिक अधिकार वह अधिकार है जो हर व्यक्ति को अपनी संस्कृति को बचाने, उसे प्रचारित करने और उसके सांस्कृतिक अधिकारों को संरक्षित रखने का अधिकार देता है। यह अधिकार संवैधानिक रूप से विभिन्न देशों और संस्थाओं द्वारा अनुसंधान किया जाता है। इसके तहत, व्यक्ति को उसकी संस्कृति को अपने अधिकार के तहत बचाने का अधिकार होता है।शैक्षिक अधिकार वह अधिकार है जो हर व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार देता है। यह अधिकार भी संवैधानिक रूप से विभिन्न देशों और संस्थाओं द्वारा अनुसंधान किया जाता है। इसके तहत, हर व्यक्ति को उसके अधिकार के तहत शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होता है।इन अधिकारों को संवैधानिक रूप से स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य है, हर व्यक्ति को उनकी संस्कृति और शिक्षा से जुड़े अधिकार है

अनुच्छेद 29 व 30 में दिए गए सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार, उन्हें अपनी विरासत का संरक्षण करने और उसे भेदभाव से बचाने के लिए सक्षम बनाते हुए सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के उपाय हैं। अनुच्छेद 29 अपनी विशिष्ट भाषा, लिपि और संस्कृति रखने वाले नागरिकों के किसी भी वर्ग को उनका संरक्षण और विकास करने का अधिकार प्रदान करता है, इस प्रकार राज्य को उन पर किसी बाह्य संस्कृति को थोपने से रोकता है। यह राज्य द्वारा चलाई जा रही या वित्तपोषित शैक्षिक संस्थाओं को, प्रवेश देते समय किसी भी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा या इनमें से किसी के आधार पर भेदभाव करने से भी रोकता है। हालांकि, यह सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए राज्य द्वारा उचित संख्या में सीटों के आरक्षण तथा साथ ही एक अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा चलाई जा रही शैक्षिक संस्था में उस समुदाय से संबंधित नागरिकों के लिए 50 प्रतिशत तक सीटों के आरक्षण के अधीन है।

6.संवैधानिक उपचारों का अधिकार–संवैधानिक उपचारों का अधिकार उन उपायों को संबोधित करता है जो एक व्यक्ति या समूह को उनके अधिकारों को संवैधानिक रूप से संरक्षित करने के लिए उपलब्ध होते हैं। यह अधिकार संवैधानिक रूप से उन उपायों को संबोधित करता है जो संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत संभव होते हैं।इस अधिकार का मुख्य उद्देश्य देश के लोगों को संवैधानिक रूप से उनके मौलिक अधिकारों के लिए संरक्षण प्रदान करना है। इस अधिकार के तहत, लोगों को संवैधानिक

उपायों का उपयोग करने की स्वतंत्रता मिलती है जैसे अदालत में याचिका करना, याचिका दाखिल करना या न्यायालय में अपील करना आदि। इस अधिकार का उपयोग लोगों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करता है और संवैधानिक व्यवस्था को भी सुधारने में मदद करता है। यह अधिकार देश में स्वतंत्रता और न्याय के आधार को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।संवैधानिक उपचारों का अधिकार नागरिकों को अपने मूल अधिकारों के प्रवर्तन या उल्लंघन के विरुद्ध सुरक्षा के लिए भारत के सर्वोच्च न्यायालय में जाने की शक्ति देता है। अनुच्छेद 32 स्वयं एक मूल अधिकार के रूप में, अन्य मूल अधिकारों के प्रवर्तन के लिए गारंटी प्रदान करता है, संविधान द्वारा सर्वोच्च न्यायालय को इन अधिकारों के रक्षक के रूप में नामित किया गया है।

मौलिक अधिकारों का निलंबन संविधान द्वारा प्रदत्त विशेष शर्तों के अधीन ही सकता है। संविधान में बताये गए उद्देश्यों के बिना और विशेष शर्तों के बिना, मौलिक अधिकारों का निलंबन नहीं हो सकता। इसके अलावा, निलंबन के लिए अधिकारी या न्यायाधीश की अनुमति भी आवश्यक होती है।भारत में, उदाहरण के लिए, आपातकाल के दौरान एक मुख्य निर्णय था, जिसके तहत संविधान के मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया था। इसके अलावा निलंबन के लिए संविधान में विशेष अधिकार भी बनाए गए हैं, जिनमें राष्ट्रपति को अधिकार होता है मौलिक अधिकारों को निलंबित करने के लिए या संविधान में संशोधन करने के लिए लाया जाए। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा स्वप्रेरणा से या जनहित याचिका के आधार पर अपने इस अधिकार का प्रयोग कर सकता है। अनुच्छेद 20व 21 के प्रावधानों जबकि आपातकाल लागू हो, को छोड़कर यह अधिकार कभी भी निलंबित नहीं किया जा सकता। साधारण कानूनी अधिकारों को राज्य द्वारा लागू किया जाता है तथा उनकी रक्षा की जाती है जबकि मौलिक अधिकारों को देश के संविधान द्वारा लागू किया जाता है तथा संविधान द्वारा ही सुरक्षित किया जाता है।साधारण कानूनी अधिकारों में विधानमंडल द्वारा परिवर्तन किये जा सकते हैं परन्तु मौलिक अधिकारों में परिवर्तन करने के लिये संविधान में परिवर्तन आवश्यक है।

निष्कर्ष– भारत के संविधान में मौलिक अधिकार के महत्वपूर्ण तत्व हैं जो नागरिकों को उनके मौलिक मानवाधिकारों का संरक्षण सुनिश्चित करते हैं। इन अधिकारों के माध्यम से संविधान ने भारत के नागरिकों को जीवन, स्वतंत्रता, सुरक्षा, अधिकारों की समानता, धर्म, विचार और समूह बनाने का अधिकार जैसे बुनियादी अधिकार प्रदान किए हैं। इन मौलिक अधिकारों के माध्यम से, संविधान ने नागरिकों को अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार दिया है जो उन्हें अन्य अधिकारों के लिए लड़ने की शक्ति देता है। ये अधिकार संविधान की मूल नीतियों को दर्शाते हैं जो नागरिकों को स्वतंत्र, समान और न्यायपूर्ण देश में जीवन जीने का अधिकार देते हैं।मौलिक अधिकार एक ऐसी शक्ति है जो नागरिकों को उनके मानवाधिकारों को संरक्षित करने के लिए देती है। इन अधिकारों का सम्पूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारत में नागरिकों को स्वतंत्र, समान और न्यायपूर्ण देश में जीवन सभी नागरिकों के बुनियादी मानवाधिकारों को मौलिक अधिकारों के रूप में

है। संविधान के भाग–III में यह कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति के लिंग, जाति, धर्म, पंथ या जन्म स्थान की स्थिति के आधार पर भेदभाव ना करके उन्हें ये अधिकार दिए जाते हैं। ये सटीक प्रतिबंधों के अधीन न्यायालयों द्वारा लागू होते हैं।

सन्दर्भ–

1. पाण्डेय, डॉ जय नारायण (2017) भारत का संविधान Central Law Agency पृ० 62
2. डा. विश्वनाथ अगस्त 2021 भारतीय संविधान के मूल तत्व को समझकर संप्रभुता की रक्षा करें छात्र सीएम कॉलेज में संविधान दिवस उत्सव पर व्याख्यान
3. "मौलिक अधिकार एवं उनका वर्गीकरण" मूल से 10 अगस्त 2018 को पुरालेखित
4. भारत का संविधान : सिद्धांत और व्यवहार, (कक्षा 11 के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्य पुस्तक) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, पृष्ठ– 41
5. भारत का संविधान : सिद्धांत और व्यवहार, (कक्षा 11 के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्य पुस्तक) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, पृष्ठ– 41

शोध आलेख : समकालीन किसान केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक स्वर / डॉ. जितेंद्र यादव

सम्पादक, अपनी माटी शनिवार, सितंबर 30, 2023

समकालीन किसान केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक स्वर

- डॉ. जितेंद्र यादव

शोध सार : अस्सी के दशक के बाद का किसान आधारित उपन्यास में किसान जीवन की विविध छबियाँ दिखाई पड़ती हैं। आज किसान की समस्याएँ और जीवन की जटिलताएँ भिन्न ढंग की हैं। खेती सिर्फ भरण -पोषण का जरिया ही नहीं है बल्कि उनकी आय का भी स्रोत है। किसान की भी जीवन-शैली में बदलाव आया है। आज किसान के सामने कई तरह की चुनौतियाँ हैं। अच्छी फसल और अच्छी आमदनी की उम्मीद में किसान कर्ज लेकर लागत लगाता है लेकिन आशाजनक परिणाम न मिल पाने के कारण तथा साथ ही कर्ज में डूबते जाने के कारण एक ऐसा भी वक्त आता है जब वह आत्महत्या कर लेता है। समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विकास के नाम पर किसानों का भूमि अधिग्रहण, जल स्तर घटने से पानी की समस्या, फसल की लागत बढ़ने और आमदनी घटने की समस्या, कर्ज की समस्या, आत्महत्या की समस्या, सरकारी नीतियों का किसानों के प्रति उदासीनता इत्यादि पहलुओं का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। कई समकालीन लेखकों ने समकालीन दौर में लिखते हुए भी आजादी पूर्व का विषय-वस्तु उठाया है। फिर भी हमारा लक्ष्य समकालीन लेखकों के लेखन का किसान संबन्धित विषय-क्षेत्र रहा है। भारत की करीब 69 फीसदी आबादी अभी भी गांवों में रहती है। गांवों का अनुभव संसार बड़ा है। अधिकांश कवि,लेखक का संबंध भी गांवों से ही रहा है। भले ही बाद में नौकरी इत्यादि के कारण पलायन कर शहरों में बस गए हों।

हमारे यहाँ 60 -70 फीसदी कृषि उत्पादन छोटे और सीमांत किसान ही करते हैं, इसके बावजूद कृषि क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश लगातार घटता जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व बैंक के मार्गदर्शन को अपनाकर चलने वाली जो भी सरकारें आई हैं, उन्होंने ग्रामीण विकास पर खर्च घटाएँ हैं। बीज,उर्वरक,सिंचाई और बिजली पर सब्सिडी में कटौती से उत्पादन लागत बढ़ती जा रही है। किन्तु इसके अनुपात में न पैदावार बढ़ रही है और न ही उपज का उचित मूल्य मिल रहा है। सरकार आए दिन न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा करती है परंतु उसका लाभ छोटे और सीमांत खेतिहरों को शायद ही मिल पाता है। आए दिन सूखे -बाढ़ की मार से फसल तबाह हो जाती है। फसल बीमा योजना को लागू करने की बात अक्सर सुनी जाती है मगर व्यवहार में कुछ नहीं हुआ है। पिछले डेढ़ दशकों से गांवों से लोगों का पलायन जारी है जिसके पीछे अनेक कारण हैं। गांवों के नाई ,तेली ,कुम्हार ,बढ़ई ,लुहार ,धोबी आदि बेरोजगार हैं। जुलाहों और धुनियों को काम नहीं मिलता। प्लास्टिक के बर्तनों ने कुम्हारों को बे
कर दिया है।

बीज शब्द: किसान,संस्कृति,शोषण, कर्ज,आत्महत्या, उपन्यास

मूल आलेख: समकालीन उपन्यासों में किसान के सामाजिक पहलू पर विस्तार से वर्णन मिलता है। किसान अपने सामाजिक सम्बन्धों से बंधा हुआ होता है । र
रहते हुए वह सभी तरह के रीति -रिवाजों का निर्वाह करता है। शादी -ब्याह,त्योहार,अनुष्ठान इत्यादि कार्यों को समय -समय पर करता रहता है। एक किसान
अपनी इज्जत और मर्यादा सबसे प्रिय होती है,उसी इज्जत और मर्यादा के लिए वह जीवन भर निरंतर संघर्ष करता है। वह अपनी इज्जत का मरते दम तक रक्ष
है। प्रेमाश्रम उपन्यास में जमींदार का कारिंदा गौस खाँ जब किसान मनोहर की पत्नी को धक्का देकर गिरा देता है और उसकी पत्नी मनोहर से उलाहना
मनोहर को यह बात बर्दास्त नहीं होती है और गौस खाँ की हत्या की योजना बनाकर उसी रात अपने बेटे के साथ मिलकर हत्या कर देता है। किसान अपने स्व
और आत्म-सम्मान के लिए हमेशा तत्पर रहता है। आजादी पूर्व इस आत्म-सम्मान की लड़ाई वह जमींदार और उनके कारिंदो से लड़ता था, जबकि आजादी
उसे यह लड़ाई सरकारी अमला से लड़ना पड़ता है। कर्ज के बोझ में दबे होने के कारण बैंक द्वारा बार -बार नोटिस देना, घर की कुर्की के भय से वह आत्म-स
लड़ाई में जब हार जाता है तो आत्महत्या कर लेता है। इस तरह की आत्महत्या का लंबा सिलसिला महाराष्ट्र,पंजाब,आंध्र प्रदेश,तमिलनाडु राज्य में देखा जा सक

भारतीय किसान का सबसे कमजोर पक्ष यह रहा है कि वह किसान होते हुए भी जाति,वर्ण और धर्म के कई सोपानों में बंटा हुआ है। किसानी पेशा होते हुए
ऊंच-नीच की भावना से ग्रस्त रहता है। उनके इस आंतरिक विघटन की वजह से ही एकजुटता नहीं आ पाती है, जिसके कारण वह शोषण के शिकार
शोषणकारी शक्तियाँ उन्हें बांटकर अपने शोषण के हथकंडे को जारी रखती हैं। 'बेदखल' उपन्यास में बाबा रामचन्द्र इस कमजोरी की पहचान करते हैं
किसानों की एकता पर बहुत ज्यादा ज़ोर देते हैं। वे जानते हैं कि यदि किसान एकजुट हो जाए तो जमींदार की बड़ी से बड़ी ताकत को उखाड़ देगा। "रर्ज
भगवान की बनाई हुई नहीं हैं। यह तो हमने -आपने बनाया है। बुनियादी तौर पर देखा जाए तो दुनिया के सब नर- नारी एक समान हैं। सुख -दुख,हानि -लाभ
एक है। जमीन,आसमान,हवा,पानी और आग में सबका बराबर का हिस्सा है। हिन्दू -मुसलमान में भी क्या फर्क है? सबको एक ही परमात्मा ने बनाया है।
और मजूरी करने वालों की सब जगह एक ही जाति है। यह सारा ढ़कोसला पैसे वालों और जुल्म करने वालों का है। जब तक लोग इस बात
समझेंगे,मिलजुलकर कोई बड़ा काम नहीं कर पाएंगे।"1

जमींदार के अलावा ऊंची जाति के किसान भी अपने से नीचे की जाति के किसान का हमेशा शोषण करते रहे हैं। अपने खेत में उनसे बेगार लेना, उनका हल
लेना, उनको कर्ज में फंसाकर उनका मानसिक-शारीरिक शोषण करना, यह उनके लिए सामान्य बात थी। इस वास्तविक सच्चाई को 'बेदखल' उपन्यास
ब्राह्मण पदारथ के माध्यम से समझा जा सकता है-"पदारथ का दबदबा इतना था कि कुर्मियान के लोग मौके पर अपना काम छोड़कर पहले उनका काम करत
मजूरी के नाम पर जो मिल जाता उसी से संतोष कर लेते थे। कातिक-आषाढ़ में हल- बैल भी देना पड़ता था। कुछ महाजनी से कुछ जिलेदार के साथ सांठ-गां
उन्होंने सारे कुर्मियान को नांथ रखा था।"2 गाँव की सामाजिक संरचना में जातिक्रम का सोपान खुले तौर पर दिखाई देता है। यह जाति व्यवस्था इतनी अंदर त
हुई है कि किसानों के साथ जातिगत अत्याचार की घटनाएँ भरी पड़ी हैं। जाति के आधार पर ही उन्हें मान-सम्मान मिलता है। ऊंची जाति के किसानों को लग
जाति के किसानों की अपेक्षा कम देना पड़ता था.......। खेती के संदर्भ में जमींदार एक प्रभावशाली वर्ग रहा है। कृषि की भूमि पर इसका अधिकार था

किसान से जमीन के बदले लगान वसूलता था। यह एक ऐसा वर्ग था जो सरकार और किसान के बीच बिचौलिया का कार्य करता था। यह अपनी सारी सुख और ऐय्याशी का भार किसान के कंधे पर डाल देता था। यानी किसान का खून चूसकर ही यह वर्ग अपने विलास की सामाग्री जुटाता था। इनकी क्रूरता और ऐ वर्णन आजादी पूर्व और बाद के उपन्यासों में भरे पड़े हैं।

किसान के लिए कुड़की उसके जीवन की सबसे अपमानजनक स्थिति होती है। कई बार पैदावार न होने के कारण किसान लगान चुकाने में देर कर देत जमींदार तहसील से मिलकर कुड़की की नोटिस दिखाकर कुर्की करवा देता था। किसानों का शोषण और बेदखल करने का यह सबसे क्रूर तरीका था। वैसे भी के घर टूटे -फूटे बर्तन,पुरानी झिलँगा चारपाइयों और खेती के लोहा -लक्कड़ के अलावा और होता क्या है, और इन सबकी कीमत ही क्या होती है। एकाक ज और एक- दो गायें -भैंसें निकलती हैं। लेकिन बेइज्जत करने के लिए कुड़कीवाले बर्तन -भांडा सब निकालकर बाहर कर देते हैं। गाय -गोरू कुड़क हो जाए तो -कलपता कुछ दूर उनके पीछे जाता है। कभी -कभी औरतें -बच्चे भी बिलखते हुए साथ हो लेते हैं। कुड़की का दिन किसान के लिए सबसे विपत्ति वाला दिन बेदखल उपन्यास में किसान झींगुरी सिंह के घर की कुड़की कुछ इसी प्रकार की होती है। "कुड़की !किसान के लिए सरकार की ओर से आने वाली सब बेइज्जती। अमरगढ़ की ठकुराइन ने सारी-सारी कार्रवाई बहुत गुप -चुप और होशियारी से की थी। अमरडीहा की जमीन पर जब बाजरे की फसल खड़ी थी, लगान की नोटिस देकर उसे बेदखली में निकाल लिया था और खड़ी फसल कटवा ली थी। फिर चुपचाप तहसील से कुड़की की नोटिस निकलवाई थी अ इंतजाम किया था कि बिना जानकारी के तामील दिखा दी जाए। फिर कुड़की का हुक्म। इलाके के जिलेदार और कुछ लट्ठबाज सिपाहियों को कुड़क अमीन कर दिया था ताकि कार्रवाई में कोई बाधा डाले तो वे वहीं निपट लें।"[3] जमींदार के आदमियों का लगान वसूलने का तरीका बहुत ही अमानवीय था। किसानों प बरसाना, धूप में मुर्गा बनाकर खड़ा करना, सुचित की दो किश्त बाकी थी, लेकिन जिलेदार ने सिपाहियों को हुक्म देकर सुचित को धूप में मुर्गा बनाकर ख दिया। उपन्यासकार ने सुचित के घर का दृश्य जिस प्रकार से खींचा है, उसे देखकर किसानों की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। "ले-देकर उसके पास एक बैल था, दूसरों के साथ हरसझा करके जोतता था। कुर्मियान के और लोगों की तरह उसके पास भी फूंस की झोपड़ी थी जिसे हर साल गन्ने की पट्टी मांगकर छाना प हांडी में खाना पकता था जिसे रोज धोकर रस्सी के सहारे छप्पर में टांग दिया जाता था। हांडी फूट जाती तो बड़ी मुश्किल से कुम्हार के यहाँ से दूसरी आती थ और कठौती में खाना खाया जाता था। जस्ते का एक लोटा था जिसमें रखने से मट्ठा-दही खराब हो जाता था। कुम्हार के यहाँ से आई मेटियाँ और भुरकों से कि काम चलता था माँ और बीबी के पास सिर्फ एक-एक मोटिया धोती थी। वे टुकड़े पहनकर नहाती थी और धोती सूखने के लिए डाल देती थी। जब तक सूखती पहने झोपड़े में घुसी बैठी रहती थीं। दिन-भर खेत में खटने के बाद अवध के अधिकांश किसानों को यही इतना मयस्सर था। अगर सुचित के घर का एक-एक कुड़क हो जाता तो भी लगान की भरपाई नहीं हो पाती।"[4] इसके अलावा अपने रियाया से कई प्रकार के कर वसूलते थे, जिसे सुनकर ही अजीब लगता है। उ किसान सबसे नरम चारा था। हाथी खरीदने के लिए हथियावन, घोड़ा के लिए घोड़ावन, मोटर के लिए मोटरावन इत्यादि का भार किसानों पर ही पड़ता जमींदारिन ने तो हद कर दिया था, किसानों के बीच संवाद के माध्यम से उनकी पीड़ा को समझा जा सकता है " रामगंज की ठकुराइन तो औरों हद कर दी हैं।

"वो का किन्हीं भइया?"

"अरे वो धुरियावन लगाए हैं।.... जिस खोरि से गाँव के मवेशी चरने जाते हैं न, वह कोट के बगल से गुजरती है। कहती हैं, धूल उड़ती है तो उन्हें परेशानी होती वे भी मवेशी सवा रुपया साल धुरियावन लेंगी। नहीं तो जानवर नहीं निकलने देंगी।"[5]

गांवों में सामाजिक स्तर पर दलित जातियों की स्थिति सबसे खराब थी। सबसे ज्यादा परिश्रम इन्हीं जातियों को करना पड़ता था। सुबह से लेकर शाम तक मजदूरी करते थे। फिर भी इनकी स्थिति बहुत दयनीय थी। जमींदार भी इनसे बंधुआ की तरह काम लेते थे। इन्हें दो जुन का भोजन और साफ-सुथरा कपड़ा मयस्सर नहीं होता था। इनकी स्त्रियों का भी शारीरिक शोषण करने से नहीं चूकते थे। स्त्रियों के श्रम और शरीर दोनों का शोषण होता था। इनके पास खुद क नहीं होने के कारण एक तरह से यह भू-दास थे। जिस जमीन पर छप्पर डालकर रहते थे उस पर भी जमींदार का मालिकाना हक होता था। इसलिए उसकी बिना यह कुछ भी नहीं कर सकते थे। जमींदार वर्ग भी मजदूरी, पैसा नहीं बल्कि वस्तु के रूप में देता था। वह इतना ही अनाज देता था जिससे की वह जिंदा और सुबह से लेकर शाम तक उनके खेतों और घरों का काम कर सके। 'जमीन' उपन्यास का महकू इसी तरह का खेतिहर मजूदर है। इन्हें मजदूरी के रू अनाज मिलता था, वह भी पर्याप्त नहीं होता था। इसलिए अपनी भूख को मिटाने के लिए इन्हें तरह-तरह से व्यवस्था करनी पड़ती थी। "दँवरी में चलते समय बै करने लगते तो भूसे और ढाक के पत्ते पर उसे रोपकर एक ओर फेंक दिया जाता जहां पड़ा -पड़ा वह सूखता रहता। बाद में चमाइन आकर उसे बटोरत पछोरकर दाना अलग करती और टोकरी में भरकर ले जाती। उसे फरवार देते समय गोबर से कितना दाना निकला इसको लेकर हमेशा चख-चख होती।"[6] के गोबर से निकले अनाज को खाना उनकी बेतहाशा गरीबी को दर्शाता है। पेट भरने के लिए कितना अपमानजनक कृत्य करने पड़ते थे।

'जमीन' उपन्यास का गणेशपुर महज एक गाँव न होकर देश के लघु प्रतिरूप सरीखा है,जहां देश की राजनीति की प्रत्येक हलचल और समाज का हर रंग रेश है। आजादी का आना,विभाजन,गांधी की हत्या, प्रथम एवं द्वितीय आम चुनाव, भारत -चीन युद्ध और नेहरू की मृत्यु यह सारा घटनाक्रम उपन्यास के नेपथ्य में है। एक जमींदार की विलासतापूर्ण ज़िंदगी का वर्णन कुछ इस प्रकार मिलता है-"ठाकुर रौनक सिंह के नौकर-चाकर सुबह ही खेतों पर चले जाते हैं और ठाकु बादाम के हलुवे और छुहारों के दूध का नाश्ता करके ड्योढ़ी में दीवान पर ऊँघने लगते हैं। कोई दोस्त अहबाब या फिर कोई फरियादी आ जाता है तो थोड़ा व जाता है। दोपहर के खाने के बाद वह सोने के लिए आरामगाह में चले जाते हैं। तीसरे पहर आँख खुलती है तो हाथ-मुंह धोकर तरोताजा होते हैं और खस या वे शरबत लेते हैं। उसके बाद सिकटरी लताफ़त के अली के साथ बहली में बैठकर कस्बे मवाना का रुख करते हैं। कस्बे की सैर उनका खास शौक है। आस गांवों के सैर के शौकीन दीगर अमीर-उमरा भी आते हैं। उनसे थोड़ी गपशप हो जाती है,ताश या शतरंज की बाजी जमती है और फिर मयखाने में दारू का दौ है। हर शाम उनकी रंगीन ज़िंदगी को और रंगीन बना देती है।"[7] जमींदार एक अनावश्यक वर्ग था, वह सिर्फ किसानों के शोषण के लिए बना था। उसके खेती-किसानी होती। किसान लगान भी देता लेकिन अंग्रेजों ने भारत पर अपनी मजबूत पकड़ बनाने के लिए जमींदारों का एक ऐसा वर्ग तैयार कर दिया था, ही देश के किसानों का शोषण करके अंग्रेजों के प्रति वफ़ादार बना रहा। जमींदारों ने अंग्रेजी सत्ता के लिए ढ़ाल बनकर अपनी निष्ठा और वफ़ादारी उनके प्रति दिखाते रहे। जब स्वतन्त्रता आंदोलन ज़ोर पकड़ा तो इन्हें लगने लगा कि अब हवा का रुख बदल रहा है इसलिए उसमें से कुछ जमींदार वर्ग कांग्रेस से भी और देश आजाद होने के बाद सभी जमींदार कांग्रेसी हो गए। इतना ही नहीं बल्कि वे सीधे सत्ता के हिस्सेदार बन गए। 'जमीन' उपन्यास के भजन लाल जो क जमीनी कार्यकर्ता और गांधीवादी थे, आजादी के लिए पुलिस की लाठियाँ खाई, जमींदारों के जुल्म सहे। किन्तु जब देश आजाद हुआ तो वही जमींदार देश के बन गए। भजन लाल जैसे ईमानदार और निष्ठावान कार्यकर्ता हासिए पर चले जाते हैं। अत्याचार करने वाली शक्तियाँ आजादी के बाद भी अपना चोला ब मुख्यधारा में बनी रहीं । 'जमीन' उपन्यास में आजादी के बाद किसान और जमींदार के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है। जमींदारों को लगा कि अब जमींद वाली है तो उन्होंने एक चाल चली और अपने काश्तकारों को 'दमामी पट्टे' के नाम पर पैसा वसूलकर काश्तकारों को जमीन पट्टा करने लगे। किसान भी ज लालच में यहाँ-वहाँ से किसी तरह कर्ज लेकर जमींदारों से जमीन पट्टा करवाते हैं। चन्दन सिंह और रौनक सिंह जैसे जमींदार किसानों को मूर्ख बनाकर उन्मूलन से पहले ही ठग लेते हैं। जमींदार वर्ग कितना शातिर वर्ग था, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। "गाँव में आते ही रौनक सिंह ने ऐलान कर दिया अपने काश्तकारों के दमामी पट्टे करेंगे। या तो पट्टा कराओ, नहीं तो जमीन से इस्तीफा दे दो"[8] जमींदारों के इस षडयंत्र को रतनू जैसे सामान्य किसान समझ हैं और ठग लिए जाते हैं। जब जमींदारी उन्मूलन की खबर मिलती है तो किसान खुश भी होते हैं लेकिन जमींदारों की धूर्तता के बारे में सोचकर मायूस भी हो "रतनू जमींदारी ख़ात्मे की खबर सुनकर जितना खुश था,उतना ही उदास हो गया। खुश इसलिए कि वह हमेशा -हमेशा के रौनक सिंह के फंदे से निकल जा उदास इसलिए कि उसे पता होता कि सरकार कानून बना रही है तो वह दमामी पट्टा क्यों कराता। ..... बड़ी कुत्ती जात है जमींदार की। इन्होंने पहले ही सूंघ कि जमींदारी खत्म होने वाली है। बस,रगड़ दिये बेचारे काश्तकारों को। लूट -लूटकर घर भर लिए।"[9]

भूमि पर वर्चस्व और अधिकार ऊंची जातियों का ही था इसलिए वे पिछड़ी और दलित जातियों का निरंकुश और मनमाने तरीके से शोषण करते थे। जमींदार और खेतिहर मजदूरों का शोषण तो करते ही थे लेकिन उनकी मजबूरी का फायदा उठाते हुए उनकी स्त्रियों का भी शारीरिक शोषण करते थे। वे अपने शोषण में इस कदर जकड़ लेते थे कि लाचारी और बेबसी में समर्पण के अलावा कोई चारा नहीं बचता था। जमींदार ने रिवाज बना दिया था कि उसके किसी रैयत व होती है तो पहली रात जमींदार के यहाँ गुजारनी पड़ती है। ठाकुर चन्दन सिंह को गाँव के लोग सांड कहते हैं-छुट्टा सांड! चाहे जिसके घर में मुंह मार दिया उ सामने आया तो घुसेड़ दिया पेट में। उसके मारे न जाने कितने तड़प रहे हैं। औरत को देखते ही लटपटा जाता है चन्दन। पता नहीं क्या इलम ले रहा है जालि भी पानी वाली औरत हो,चन्दन की निगाह चढ़ी तो गई। लोभ-लालच,खुशामद-दरामद, धमकी -चमकी कुछ भी करना पड़े चुकता नहीं। आधे गाँव को कुरेल दिया है।"[10] चन्दन सिंह का खेतिहर मजदूर जब शादी करके अपनी पत्नी के साथ मालिक चन्दन सिंह का आशीर्वाद लेने हवेली में आता है तो वह कहता है

तुम दोनों मेरे मेहमान हो। महकू से कहता है कि आज रात तुम और तेरी बहू हमारे मेहमान रहेंगे। महकू को दूसरी कोठरी में भेज देता है फिर उसकी पत्नी अ
कमरे में ले जाकर ज़ोर-जबर्दस्ती करने लगता है। कोशिश के बावजूद भी जब चन्दन सिंह के हाथ नहीं चढ़ती है तो ठाकुर चन्दन सिंह आग-बबूला हो जात
उसके पति महकू को बुलाकर डांटता है। "क्यों बे,तूने अपनी जोरू को समझाया नहीं था?

"गलती हो गई, सरकार!"

"गलती के बच्चे! पता है -इसने हमारी तौहीन की है!"

महकू चन्दन सिंह के पैरो पर गिर गया, "यह तो बेकूप है, माफ कर दो, सरकार!"

"माफ कर दूँ – इस हरामजादी को?"

"हुजूर! जो सजा देना चाहें, मुझे दे लीजिये!"

चन्दन सिंह थोड़ा नरम पड़ा, "जा ले जा इसे हमारी आँखों के सामने से। शाम को अच्छी तरह समझा कर लाना"।

"अच्छा, मालिक!"[11]

काश्तकारों और खेतिहर मजदूरों की औरतों को जमींदार अपनी निजी संपत्ति समझते थे। उन पर अपना अधिकार जमाते थे। अपनी ताकत के बल एक ऐस
की शुरुआत कर दिये थे, जिससे की उनकी यौन इच्छाओं की पूर्ति हो सके। आश्चर्यजनक बात यह है कि लोग भी इसका विरोध करने के बजाय उसे स्व
परंपरा मानकर स्वीकार कर लेते हैं। महकू की बातों से स्पष्ट पता चलता है कि जमींदार के यहाँ अपनी पत्नी को भेजने में उसे किसी भी तरह की ग्लानि या अप
नहीं होता है।

"ओहो! तू तो एकदम पगली है। किसी रैयत की शादी होती है तो वह अपनी जोरू को लेकर मालिक के पैर छुवाने ले जाता है। वे दोनों एक रात मालिक यहाँ
बहू की वह पहली रात मालिक की होती है।"

अनारो तिलमिला उठी, "इन जमींदारों ने जैसे जमीन आपस में बाँट रखी है, वैसे ही रैयत -रियाया भी। ये रैयत की जोरू को अपनी जियादाद सिमझै! तूने प
नहीं बताया था। बता देता तो मैं वहाँ कभी न जाती।"

"जाती कैसो नहीं! यह तो गाँव की रीत है।" [12]

जमींदार समाज में हर प्रगतिशील बदलाव के विरोधी थे। ये कोई ऐसा अवसर नहीं देना चाहते थे कि समाज में जागरूकता बढ़े और उनकी पकड़ काश्त
कमजोर पड़ जाए। लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा के लिए समाज-सेविका हरदेवी जी कन्या पाठशाला खोलने का आह्वान करती हैं तो जमींदार चंदन सिंह को सब
परेशानी होती है। वह अपने कारिंदों के माध्यम से लोगों के बीच कन्या पाठशाला के खिलाफ भड़काने की कोशिश करने लगता है। वह सोचता है कि हर
पाठशाला खोल देंगी तो मेरा कद घट जाएगा। जमींदार वर्ग कितना काइयां होता है वह अपने आगे किसी को सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक रूप से अ
नहीं देता है। वह कहता है कि "किसी भी सूरत में यह पाठशाला नहीं बननी चाहिए।" मिरची ने कहा, "अब तो गाँव की लड़कियां पढ़ -लिखकर मेम बनेगी
-फैट बोलकर मरदों पर हुकम चलावेंगी।" जमींदार के कारिंदा ने भी कहा कि "अगर लड़कियां को तालीम दी गई तो उन्हें पर लग जाएंगे। वे मर्दों का जीना ह
देंगी!"[13] वे सब गाँव में घूम-घूमकर कन्या पाठशाला के खिलाफ लोगों को भड़काने लगे। उन्हें यह बर्दाश्त नहीं है कि हरदेवी जैसी अनपढ़ समाज-सेविका ल
के लिए पाठशाला खोले। यह पितृसत्तात्मक समाज के लिए असहनीय बात है।

जमींदार वर्ग अपनी रैयत से बेगार लेने के लिए शोषण के कई तरीके निकाल रखे थे। थोड़े से कर्ज देकर फिर ब्याज पर ब्याज जोड़ते जाना। उसकी
उससे बेगार लेना। एक तरह से बंधुआ मजदूर बनाकर पीढ़ी दर पीढ़ी मजदूरी कराना जमींदारों का बहुत बड़ा हथकंडा होता था। महकू भी कुछ इसी प्र
खेतिहर मजदूर है। ठाकुर चन्दन सिंह हर साल दशहरे पर उससे अंगूठे का निशान ले लेता है। महकू को इसके बारे में कुछ ज्यादा समझ नहीं है। वह ब
जानता है कि उसके दादा ने चन्दन सिंह के दादा से दो बिस्सी और दस रुपए लिए थे। महकू कुल जमा बीस तक गिनती जानता है। लंबा -चौड़ा हिसाब उसक
में नहीं आता। सूद दर सूद कर्ज पहाड़ बन चुका है। महकू को मालूम है कि वह अपनी खाल बेचकर भी ठाकुर का कर्ज नहीं चुका सकता। तो फिर इसके अल
चारा है कि वह और उसका कुनबा ठाकुर की बेगार करता रहे। इस तरह के जुल्म और अत्याचार सामान्य बात हो गई थी। प्रेमचंद ने भी अपनी कहानी 'सवा
में बंधुआ मजदूर बनने की घटना का वर्णन किया है। कर्ज देकर हमेशा-हमेशा के लिए अपने शिकंजे में रखने की चालाकी जमींदारों के लिए बहुत मुफीद थी।
और खेतिहर मजदूरों की स्थिति दिन पर दिन बदतर होती चली जाती है। पीढ़ी दर पीढ़ी की गुलामी, जमींदारों के लिए मुफ्त में श्रम मिल जाता है और वे भी श
चक्र से बाहर नहीं निकल पाते हैं।

सामाजिक स्तर पर स्त्रियों को पुरुषों से कमतर आँका जाता है जबकि सच्चाई यह है कि वे पुरुषों से किसी स्तर से कम नहीं हैं। खेती -किसानी में महिल
बराबर की भागीदारी दिखती है। कई बार पुरुष की अनुपस्थिति में पूरी खेती वही संभालती हैं। चम्पा के पति रतनू को जब जमींदारों ने झूठे मामले में फंसा
भेजवा देते हैं तो उसके सामने सबसे विकट समस्या खेती की आती है। आखिर उसकी खेती कैसे होगी, खेती के बाकी काम तो वह कर लेगी किन्तु हल कैसे
हल चलाना ही ऐसा कार्य है, जिसे पुरुष ही करता है। किन्तु अब घर में पुरुष नहीं है तो हल चलाने की बड़ी समस्या चम्पा के सामने खड़ी हो जाती है। जमींदा
सिंह सोचता है कि अब कैसे इसकी खेती होगी। बिना खेती के चम्पा दाने-दाने को मोहताज हो जाएगी। चम्पा यहाँ बहुत धैर्य से काम लेती है। महकू को बुलाव
की गुहार करती है। महकू भी जमींदार का बंधुआ मजदूर है लेकिन वह मानवता के कारण एक अकेली स्त्री की सहायता के लिए आगे आता है और सुझाव
रबी की फसल हैं, एक पहर बाद सारा गाँव सो जाएगा,चाँदनी रात में हल चलाकर बीज बो देंगे। रात में तय समय पर महकू अपनी पत्नी अनारो को लेकर भी
है ताकि कोई अंगुली न उठाए और चम्पा भी खेत पर आ जाती है। चम्पा साहसी महिला है,कुछ देर बाद वह खुद महकू से हल लेकर जोतने का अनुरोध क
महकू मना करता है कि तुमसे नहीं हो पाएगा। बैल को हल का फाल लग जाएगा लेकिन आत्मनिर्भर बनने की ललक चम्पा को देखकर महकू भी रोक नहीं प
"महकू ने हल चम्पा को दे दिया है चम्पा का हाथ पूरी तरह सध गया है और खूड़ एकदम सीधा आने लगा है... कभी चम्पा हल चलाती तो कभी महकू। एक
तड़के तक उन्होंने पूरा खेत बो दिया।"[14] सुबह सब जगह शोर हो जाता है कि चम्पा के खेत की जुताई और बुआई हो गई। यह बात जमींदार तक पहुँचती
और अवाक हो जाता है। अपने स्तर से पता लगवाने में लग जाता है कि आखिर उसकी खेती हुई कैसे। अगले दिन चम्पा दूसरे खेत में हल चला रही थी तो इ
से पर्दा उठ गया कि उसके खेत को बोने कौन से भूत आए थे। गाँव वालों ने आज तक किसी औरत को हल चलाते हुये नहीं देखा था। यह खबर पूरे गाँव में
तरह फैल गई। लोग हल चलाती हुई चम्पा को देखने के लिए आने लगे। चम्पा किसी तरफ ध्यान नहीं दिया। वह अपने काम में लगी रही जब तक कि पूरा
नहीं दिया।

जमींदार को भला यह बात कैसे हजम हो सकती है। उसने लोगों के बीच तरह-तरह का अफवाह फैलाकर लोगों को भड़काने लगा और पंचायत बुलाकर सज
चक्कर में पड़ जाता है। उसको चम्पा के खिलाफ एक बड़ा मुद्दा मिल जाता है। सामाजिक रूप से पुरुष प्रधान समाज भी यह कैसे बर्दाश्त कर सकता है कि
हल चलाकर खेती कर ले। उन्हें अबला नारी का रूप ही पसंद है जिसमें असहाय और बेचारी का भाव दिखे। सबला नारी उनके पुरुषत्व के लिए चुनौती है। पं

चन्दन सिंह ने कहा, “पंचो, आज हमारे गाँव में एक अधर्म का काम हुआ है। रतनू की बहू चम्पा सरेआम हल चलाते देखी गयी है। सारा गाँव इसका गवाह
चलाना धरती माता के पेट को फाड़ना है। पाप है। यह भले आदमियों का नहीं, चांडालों का काम है। चम्पा हल चलाकर चांडालिनी बन गई है। इसके पाप
सजा पूरे गाँव को भुगतनी होगी! इंदर देवता नाराज हो जाएंगे। बरखा नहीं होगी। सूखा पड़ेगा और महामारी फैलेगी! इस सबकी जिम्मेदार सिर्फ चम्पा हो
चांडालिनी औरत को सजा जरूर मिलनी चाहिए। क्या सजा दी जाए, यह पंच तय करें।”[15] जमींदार सामाजिक अशिक्षा और अंधविश्वास का सहारा लेकर
महिला को सजा देने के लिए प्रयासरत है जिसने अपने हिम्मत और मेहनत के बल पर खुद हल चलाकर खेती की है। उसके इस साहसी कदम के लिए स
पुरस्कृत करना चाहिए लेकिन जमींदार समेत पूरा समाज दंड देने पर तुला हुआ है। एक महिला जब खेती का सभी कार्य कर सकती है तो हल चलाने में स
क्या समस्या है। दरअसल जमींदार ग्रामीणों की मूर्खता,कायरता और अशिक्षा के कारण ही शोषण और अत्याचार करते रहते हैं। समाज के ठेकेदारों को चम्पा
में मुंहतोड़ जवाब देती है। पंचायत में जब उसे बोलने का अवसर मिलता है तो लोगों को अपने तर्क से बोलती बंद कर देती है। चम्पा ने खड़े होकर कहना शुरू
“धरती हमारी माता है, यह सही है। लेकिन वह माता क्यों है! धरती से अनाज पैदा होता है और उससे हमारा पेट भरता है। धरती हमारी पालना करती है,
माता है। लेकिन धरती में हल नहीं चलाया जाएगा तो क्या अनाज पैदा हो जाएगा? और अनाज नहीं पैदा होगा तो धरती माता कैसे बनेगी? हल चलाना धरती
फाड़ना नहीं,उसकी सेवा करना है। और यही सेवा मैंने की है। हल चलाना पाप नहीं,पाप तो बिना मेहनत किए दूसरों की कमाई खाना है।”[16]

जगदीश चंद्र का ‘घास गोदाम’ उपन्यास 1985 में प्रकाशित हुआ था। दिल्ली महानगर के सटे गाँव और उनके किसानों की दारुण कथा का वर्णन इस उप
मिलता है। दिल्ली महानगर का विस्तार उसके आस-पास के गांवों की जमीन को अधिग्रहित करके किया गया है। मुख्यतः वहाँ जाट किसान ही रहते हैं। प्रहल
इस उपन्यास का नायक है, जिसके इर्द -गिर्द कथा बुनी गई है। किसान के पास उसकी जमीन ही पूंजी होती है। यदि जमीन सरकार द्वारा अधिग्रहित हो जा
उसे जमीन के बदले कुछ मुआवजा मिलता है। वह राशि कुछ दिन तक भले ही किसान को चकाचौंध की दुनिया में डाल दे लेकिन जमीन जाने की भरपाई सं
हो पाती है। पैसे आने के बाद किसान किस तरह अपने पैसे को इधर-उधर लगाकर खर्च कर देता है। उसके साथ ही फिजूलखर्ची की आदत पनप जाने के क
उस पैसे को खत्म होते देर नहीं लगती है। किसान प्रहलाद सिंह को उसकी जमीन के बदले जो पैसा मिलता है उस पैसे को अपने घर बनाने में लगा देता है
पूरा नहीं होता है और पैसा सब खर्च हो जाता है। उसकी पत्नी उसे कोई काम-धंधा के लिए कहती रहती है किन्तु हर बार काम तलाश करने का आश्वासन दे
देता है। “मुझे तो हर समय चिंता घेरे रहती है। खेती खत्म हो गई है। बिना कमाए कब तक खाएँगे ... पानी पाताल से न आए तो कुएं भी सूख जाते हैं। बिन
खाओ तो कुबेर का भंडार भी खाली हो जाता है। नूं कहूँ कि कुछ न कुछ काम धंधा शुरू कर ही दे”[17] जमीन चले जाने के बाद दिन-भर निकम्मा की तरह म
फिरता है। शराब और जुआ की लत लग जाती है। एक ऐसी भी स्थिति आती है कि घर में खाने के लिए दाने तक नहीं होते हैं। बनिया से किसी तरह उधार लेक
है तब जाकर घर के चूल्हे जलते हैं। किसान के पास जमीन होती है तो वह उसका खुद का रोजगार है। किसान अनाज के लिए कभी मोहताज नहीं होता है। कृ
में लगे होने के कारण उसे बेरोजगार होने की अनुभूति नहीं होती है।

किसान की जमीन ही उसकी ताकत होती है। जिस किसान के पास जितनी जमीन होती है उसका उतना सम्मान भी होता है। लोग कर्ज या उधार भी इसी
देते हैं कि अगली फसल होगी तो किसान अपना कर्ज चुका देगा। जमीन ही उसके विश्वास की पूंजी होती है। गाँव का दुकानदार दुनीचन्द भी अब किसानों क
देने से डरने लगा है। अपने मन का भाव दुकानदार दुनीचन्द कुछ इस तरह प्रकट करता है- “आप तो जानते ही हैं कि गाँव की दुकानदारी उधार के बिना नही
मुझे और मेरे पुरखों को भी गाँव की दूकानदारी का यह नियम निभाना पड़ा है। गाँव में शायद ही कोई घर होगा जो मेरा कर्जदार नहीं है। जमीन थी तो पता था
बार नहीं तो अगली फसल पर पैसे निकल आएंगे। आसामी के मुकरने का भी डर नहीं था, क्योंकि उधार के बिना उसका भी निर्वाह नहीं था लेकिन अब जमा
गया है....... जमीनें बिक गई हैं...... इनकी नियत भी बदल सकती है।”[18]

किसानों की जमीनें जा रही हैं, किसान अपनी जमीन को लेकर परेशान है। उन्हें जमीन की रेट को लेकर शिकायत है। जमीने जाने से उनके मन में बेचैनी
बहती गंगा में हाथ धोने में दुकानदार से लेकर पटवारी तक सभी लगे हुए हैं। पटवारी मुखिया की कुछ जमीन षडयंत्र करके मंदिर के नाम करवा देता है। पु
साथ मिलकर मंदिर के ट्रस्ट का सदस्य बन जाता है। उसे पता है कि आने वाले समय में यह जगह बहुत कीमती होगी, “अगर यह काम हो जाए तो सड़क
आठ दुकानें बन सकती हैं। चार तुम्हारी और चार मेरी। वक्त आने पर यही दुकानें पुश्तों की रोटी पक्की कर देंगी। तुम भी इत्मीनान से रहना और मैं भी
दिन काटूँगा।”[19] पटवारी गाँव को बदलते हुए बहुत करीब से देख रहा है। किसानों के बारे में उसके पास पूरी जानकारी रहती है। गांवों में आ रहे सामाजिक
की शिनाख्त करते हुए दुनीचन्द से कहता है कि “दुनीचन्द, गाँव बहुत तेजी से बदलने लगा है। कपड़ा-लत्ता देख कोई कह सकता है कि यह किसानों का गाँव

“ हाँ पटवारी जी, इनका कपड़ा-लत्ता, खाना-पीना और उठना-बैठना तो बदल ही रहा है, दिल-दिमाग भी बदल रहा है। परसों मैंने रणसिंह को बुलाया कि अप
खाता देखने .... उसने सवेरे ही शराब पी रखी थी ..... मेरी बात सुन वह भड़क उठा और गाली देकर बोला कि वह यहीं खड़ा-खड़ा पूरी दुकान खरीद
किसानों की जमीनें बिकने के बाद उनकी जीवन-शैली में अचानक बदलाव आ गया है। रहने का तौर-तरीका खर्चीला हो जाता है लेकिन पैसे का सही इस्तेम
हो पाने के कारण पैसा धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है, फिर वहीं से उनकी आर्थिक दिक्कतें शुरू हो जाती हैं। कर्ज और शराब की लत में डूबे किसान प्रहलाद
एक ऐसी स्थिति आती है कि रामदयाल के खोखे पर जहां उसका अड्डा जमता था। मनचले और मनबढ़ लड़कों से जुआ में हार-जीत को लेकर लड़ाई कर
आवेश और क्रोध में आकर लड़ाई मौत में बदल जाती है। गुस्से में प्रहलाद ने लड़के को उठाकर ईंट पर पटक देता है और वहीं उसकी मृत्यु हो जाती है। फि
एक किसान परिवार का त्रासद अंत हो जाता है। उसकी पत्नी अंगूरी बेटे को गोद में लेकर कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगाने लगती है। प्रहलाद ने मकान को
रखकर कर्ज लिया था। अब अकेली औरत, एक बच्चे का गुजारा कैसे होगा, यह समस्या खड़ी हो जाती है। खेत बिकने का सिलसिला शुरू होकर उसके घ
और उसके जेल जाने तक चला जाता है। अंगूरी जब अदालत से सुनी आँखों से झाकती हुई बाहर आई तो रामदयाल ने अफसोस प्रकट करते हुए कहा, “इ
को तो दोहरी मार पड़ी है। .....आदमी चौदह साल के लिए जेल में बंद हो गया और ऊपर से घर भी गिरवी रख गया। सिर पर आदमी का हाथ और छत का स
तो जीना बहुत कठिन हो जाता है।” [21]

राजू शर्मा का उपन्यास ‘हलफनामे’ 2007 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में किसान आत्महत्या के कारणों की पड़ताल करने का प्रयास किया गया है।
का मुख्य पात्र मकई राम पेशे से बिजली मिस्त्री है। उसका पिता स्वामीराम एक किसान है। पानी खेती का वजूद है बिना पानी की व्यवस्था के खेती की क
नहीं की जा सकती है। पानी का संकट किसान के लिए जीवन का खतरा बन जाता है। स्वामीराम एक के बाद एक कई बोरिंग कराया लेकिन बोरिंग सफल
पाती है। इस कारण से उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। सरकार की तरफ से भी कोई मदद नहीं मिलने के कारण उसकी मनोस्थिति अवसाद में च
है। इसलिए वह आत्महत्या को जीवन का अंतिम विकल्प के रूप में चुन लेता है। जीवन का अंत करके जहां स्वामीराम का जीवन संघर्ष खत्म होता है वहीं
राम का संघर्ष शुरू होता है। शासनतंत्र की निर्दयता और असंवेदनशीलता का वृतांत इस उपन्यास की धुरी है। “किसान जब आत्महत्या करता है तो वह ज़िं
मौत के बीच अवसाद पूर्ण चुनाव नहीं है, बल्कि ज़िंदगी के लिए संघर्ष की आजादी का लोप है। मौत का चुनाव किसान नहीं करता बल्कि तंत्र उसका
अधिकार छीन लेता है।” [22] पिता के आत्महत्या के बाद मकई राम अपनी ज़िंदगी में अलग-थलग पड़ जाता है। उस कठिन स्थिति में उसका दोस्त सुदर्श
समझदारी और ज्ञान से मकई राम को किसानों के संघर्ष से परिचित कराता है। पत्रकार पी. साईनाथ समेत अर्थशास्त्रियों के वक्तव्यों को लेकर चर्चा करता है
और मायूस मकई राम के जीवन में सुदर्शन अपने ज्ञान से बाहरी दुनिया से परिचित कराता है।

वीरेंद्र जैन का उपन्यास ‘डूब’ विकास के नाम पर अपनी जमीन से किसान के उखड़ने का दर्द और पीड़ा समेटे हुए है। ‘राजघाट नदी परियोजना’ जहां कुछ
लिए खुशहाली का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर कई गाँव को उजाड़ने के लिए शोक का प्रतीक भी है। लड़ैई गाँव इस उपन्यास का केंद्र बिन्दु है। माते इसका मु
है। ग्रामीण समाज के विस्थापन की चिंता और उससे उपजी त्रासदी का चित्रांकन यथार्थवादी ढंग से हुआ है। ‘डूब’ उपन्यास क्षेत्र विशेष की जनता का सुख-
विस्थापन की समस्या को जीवंत कर दिया है। एक ऐसे जन-जीवन का चित्रण है जो बेतवा नदी पर बन रही राजघाट बांध परियोजना से डूब क्षेत्र में आए हुए
परिवारों की मानसिक स्थिति का चित्रण है। एक समाज जो बहुत दिनों तक एक साथ रह रहा है। एक साथ खेती कर रहा है। उसे अचानक यह पता चले कि
घर,खेती, बाग-बगीचा,स्कूल सब छोड़कर जाना होगा। कहाँ जाना होगा, उसे यह भी नहीं पता है। “जगह के बदले जगह नहीं दे सकी उन्हें सरकार। सरका
दिया कि फिर से बसने के लिए दो हजार रुपया हमसे लो और जहां जगह मिले जा बसो। हमारे पास जगह नहीं है तुम्हें बसाने की।”[23] मुआवजा के
अधिकारियों की खानापूर्ति और असंवेदनशीलता सीधे-सादे किसानों के लिए कठिनाई को बढ़ाने वाली हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न बनिया वर्ग धीरे -धीरे शहरों
लगता है। हीरा साव, मोती साव,अट्टू साव इसके उदाहरण हैं किन्तु किसान के लिए एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना किसी मुसीबत से कम नहीं
गाय,भैंस,बकरी, खेत -खलिहान, बाग -बगीचा को छोड़कर जाना संभव नहीं है। “जिनका कहीं और ठिकाना नहीं बैठा, वे सब जा बसे ललितपुर में। जितनी

कभी भेंस तक न बांधी थी,उतनी जगह में मय भेंस के रहते हाँ वे।"24 विस्थापन की पीड़ा को महज कुछ मुआवजा से नहीं चुकाया जा सकता। अपनी विस्थापित होने का दर्द उस किसान को ही पता होता है। मुआवजा के नाम पर दफ्तर का चक्कर लगवाना, उन्हें तरह-तरह से मानसिक रूप से परेशान उपन्यासकर ने बड़ी संवेदना और अनुभूति के साथ चित्रित किया है। अब भी हमारा घर बार भले ही देश की खातिर छूटेगा, देश का विकास आवश्यक है इ हमें अपनी जमीन से उखड़ना होगा।, मगर हमारा मन कहता है कि इसे कुर्बानी कोई नहीं मानेगा। जब सरकार तक मानने को तैयार नहीं!

वह कहती है कि हम खरीद-फरोख्त कर रहे हैं। पैसा लो और जाओ। जब ऋण ही नहीं तो उऋण होने का प्रश्न ही कहाँ?

नहीं नहीं पैसे से हर वस्तु का मोल नहीं लगाया जा सकता। अगर पैसे से सब संभव है तो दे दें यही पैसा उन शहरातियों को,उन कल -कारखाने वालों को,जिन्हे की जरूरत है! कह दे उनसे की लो भाई, इतनी रकम खर्च करने पर बांध बनता, उससे बिजली बनती। अब यह पैसा तुम रखो और समझ लो कि यह बिजली

किसानों के सीधेपन का फायदा अधिकारी और बनिया वर्ग कैसे उठाता है, उपन्यास में भली-भांति पता चलता है। मुआवजा के नाम पर शहर में ले जाकर किसानों का नसबंदी करवा देना ताकि अधिकारी चलाई जा रही नसबंदी योजना के लक्ष्य को पूरा कर सकें। बड़ी चालाकी से गाँव के बनिया के माध्यम से का लालच देकर किसानों के साथ विश्वासघात कर दिया गया। हीरा साव सभी किसानों को एकजुट करते हैं और कहते हैं कि चंदैई में एक कलक्टर है वही तय कर रहा है। जो खेत को जोतता -बोता है वही उसका मालिक है उसकी निगाह में। हीरा साव गाँव वालों समझाते हैं, "उसने कहा है हमसे कि आप अपन सोलह बरस से पचास बरस के बीच के जो-जो आदमी-बच्चे खेत में काम करते हैं, उन सबको लेकर चंदैई आना। हम उनके नाम जमीन का पट्टा लिखे मालिकाना हक देंगे। उस जमीन की कीमत का कागज देंगे। उस कागज के मुताबिक सरकार के खजाने से मुआवजा मिलेगा। कहीं अंत रहने को जगह मिले

सरकार को किसानों के बच्चों की शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं है। उनके मदरसे से शिक्षक को हटा दिया गया है। क्योंकि वह जगह डूब क्षेत्र में आ रही है। को कह दिया गया है अब आपका ट्रांसफर कहीं और कर दिया जाएगा। वहीं दूसरी तरफ सरकार ने राजघाट बांध पर काम के लिए आए हुये सरकारी कर्मच बच्चों हेतु एक केंद्रीय विद्यालय खोल रखा है ताकि तबादला होने के बाद भी उनके बच्चों की शिक्षा में किसी तरह का रुकावट न हो। इसके अलावा राजघाट काम करने के लिए आए सरकारी कर्मचारियों की गृहणियों के लिए कुटीर-उद्योग तथा उनके लड़कों के लिए जिनका पढ़ाई में मन नहीं लगता है उन हस्तकला,काष्ठकला, तकनीकी शिक्षा का केंद्र स्थापित कर दिया गया है ताकि वे भी आत्मनिर्भर बन सकें। सरकार अपने कर्मचारियों की चिंता में दुबली ह उनके लिए एक-एक पल की चिंता है। माते ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें अपने गाँव के लोगों की चिंता बराबर रहती है। वह एक-एक घटना पर बारीक नज़र उम्र के अंतिम पड़ाव में भी जिस तरह का सूझ -बुझ रखते हैं। वाकई यह अद्भुत लगता है। माते जानते हैं कि मुआवजा मिलते ही ये सीधे-सादे किसान कुछ लिए अपना दुख भूल जाएंगे। उन्हें अपने भविष्य की चिंता नहीं दिखेगी। "ये तो यही सोचकर खुश हो जाते हैं कि अब ये भी रेडुआ खरीद सकेंगे..... बैंक मूरख तो इस सोच के चलते खुश हो रहे हैं कि ये भी अब साइकल खरीद सकेंगे। ताकि उस पर बैठकर छिन -छिन पीछे राजघाट जा सकें। ...... पांडे बाबू! ये में इतने खुश हैं कि ये भी पंगत दे सकेंगे। उस पंगत में जीमने को बुला सकेंगे उन तमाम लोगों को, जो जा बसे हैं ललतपुर कि रेलपटरी के इस तरफ। ज छोड़कर दड़्बे में रहते हैं अब। हल की जगह फावड़ा आ गया है जिनके हाथों में। ..... बामन महराज! ये यही सोच सोचकर खुश हो रहे हैं! ये नहीं सोचना च तब ये उस रेडुआ को बजाएँगे कहाँ, साइकल को चलाएँगे कहाँ, पंगत को जिमाएंगे कहाँ? इनके खयाल में तो यह भी नहीं आ रहा इस समय कि मुआवजा बाद ये जिएंगे क्योंकर, कब तक, और कैसे?" 27

किसानों की मजबूरी का फायदा बनिया वर्ग उठाता है। पहले से ही कर्ज देकर उन्हें अपने चंगुल में फंसा रखा है। बस उन्हें किसानों का मुआवजा मिलने का है। कितने तो अधिकारी से मिलकर मुआवजा के समय तुरंत अपना कर्जा वसूल लेते हैं। सावों की साहूकारी चलती रही। हर मौके पर साहूकार हाजिर रहते है सूद पर ले लो जब आ जाए तो दे देना। यदि सूद पर नहीं लेना है तो जमीन ही बेच दीजिये, साव लोग सरकार से वसूल कर लेंगे। ललितपुर के साहूकारों के मज हैं। हीरा साव को खुद शुरू -शुरू में हैरानी होती थी कि जिस ललितपुर में कोई उद्योग और व्यापार नहीं,कल-कारख़ाना नहीं,मंडी नहीं, सरकारी दफ्तर- तामझाम नहीं, वहाँ के लोग इतने सम्पन्न कैसे हैं? हीरा साव जैसे ही इस रहस्य को समझते गए वह भी अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण होते गए। "इसी ललितपुर से रुपया उठाकर हीरा साव ने गाँव छोड़कर भागने वालों की जमीनें खरीदी हैं। सूद बढ़ रहा है तो क्या हुआ! कोई साहूकार नहीं कहता कि रकम चुकाओ ललितपुर के साहूकारों में। जीतने घर उतने साहूकार,यानी ललितपुर। ललितपुर कि जैसी बैठक वैसा ब्याज"। 28

'डूब' उपन्यास में किसानों के सामाजिक सहजीवन की बहुत मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। किसी मसले पर पंचायत की बैठक में माते जिस तरह से अपने सु निर्णय देते थे, वह सभी के लिए स्वीकार्य होता था। लड़ेई गाँव के एक-एक पात्र अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान के साथ उपस्थित हैं।

फांस – यह उपन्यास 2015 में अपने प्रकाशन के साथ ही चर्चा में आ गया था। लेखक संजीव ने विदर्भ के किसानों का जीवंत दस्तावेज़ लिखा है। कि आत्महत्या देश के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। यह समस्या विकराल बन चुकी है। उपन्यास विदर्भ के किसानों के सामाजिक जीवन का परत-दर-परत करता है। एक किसान को सिर्फ आर्थिक समस्याओं से ही नहीं जूझना पड़ता है बल्कि अपने आसपास की सभी समस्याओं से लड़ना पड़ता है। संजीव ने मह यवतमाल जिले के बनगाँव का चित्रण किया है,जो विदर्भ क्षेत्र का हिस्सा है। लेखक ने उपन्यास में किसी एक को नायक नहीं बनाया है बल्कि अलग-अलग परि ही नायकत्व प्रदान करती हैं। उपन्यास की रचनाशीलता उपन्यास के किसी तय मापदण्डों पर नहीं हुई है। लेखक विदर्भ के किसानों के जीवन की त्रासदी चाहा है,वह त्रासदी ही मिलकर उपन्यास की संरचना को निर्मित करते हैं। कोई भी मनुष्य बिना सामाजिक गतिविधियों के संचालित नहीं होता है। जिस तरह क रहेगा उसी तरह का सामाजिक दबाव भी उसे झेलना पड़ता है। 'गोदान' का होरी अपने समय के सामाजिक दबावों को बड़ी धैर्यता के साथ झेलता है लेकि धनिया और गोबर के अंदर आक्रोश है। वे पंचायत और समाज के ठेकेदारों को चुनौती देते रहते हैं लेकिन होरी तथाकथित 'मरजाद' की रक्षा के लिए अपना गंवाने को तैयार रहता है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष ही सामाजिक नैतिकता को तय करता है और उसी मापदंड पर महिलाओं को भी चलने के लिए मजबू है। उस मापदंड पर महिलाओं या समाज का न चलना ही उसके लिए सामाजिक और नैतिक पतन जान पड़ता है। अमूमन लड़कियों को लेकर जिस तरह उत्तर भारत के प्रान्तों में है, उसी प्रकार की सोच विदर्भ के गांवों में भी दिखाई देती है। स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम होने के कारण जब शिबू की छोटी लड़क घर नहीं लौटती है तो पूरे गाँव में आग की तरह बात फैल जाती है। मंदिर का पुजारी भी आग में घी डालने का काम करता है। हर कोई से खुद पूछता है फि है-" हमें तो पहले से ही पता था कि एक दिन यह होकर रहेगा। और पढ़ाओ मुलगियों को,जैसे पढ़-लिखकर बैरिस्टर बनेंगी। "29 शिबू इस वाक़या से एकदम हो जाता है। गाँव के लोग जिस तरह कानाफूसी करते हैं वह व्यथित और बेचैन हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि घर में लड़की को लेकर पति महाभारत मच जाता है। बाप इस बात पर अड़ जाता है कि अब दोनों बेटियों का स्कूल जाना बंद होगा। इस तरह की छोटी-छोटी बातों से लड़कियों व छोड़वाने की घटनाएँ हमेशा घटित होती रही हैं। लेखक ने समाज की दकियानूस सोच को बहुत गहराई से पकड़ा है। भारतीय समाज की यह बहुत बड़ी सच्चा

उपन्यासकार ने उपन्यास की शुरुआत में ही ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का विवरण दिया है। भारतीय गांवों में सवर्ण जातियाँ अवर्ण जातियों से दूरी बनाकर उनकी बस्ती अलग रहती है। अधिकांश खेत भी उन्हीं के पास होते हैं,दलित जातियाँ उनके खेतों पर काम करके अपना जीविकोपार्जन क "मराठों,महारों,चमारों,कुनबियों,माँग,मछुआरों और आदिवासी की मिश्रित आबादी है। ब्राह्मणों ने गाँव से हटकर एक किलोमीटर उत्तर बांध के नजदीक अलग बसा लिया है-शायद छुआ जाने के भय से। बोले तो,बांध,बाग,उर्वर खेत सब उनके या सम्पन्न मराठों के मगर मजदूर इस बनगाँव के।" 30 दलित जातियों के का खेत बहुत कम होता है। वह ऊंची जाति के किसानों के खेत पर मज़दूरी करते हैं या उनका बटाई पर खेत लेकर खेती करते हैं। बटाई पर खेती क किसानों को और भी मुश्किल होता है क्योंकि उनके नाम से जमीन न होने के कारण उन्हें बैंक लोन भी नहीं देता है और फ़सल बर्बाद होने के कारण यदि आत्महत्या करता है तो सरकार मुआवज़ा भी नहीं देती है। यही समस्या महिला किसानों के साथ भी आता है और पुरुष के साथ दिन-रात खेतों में काम करती सरकार की परिभाषा में महिला किसान की श्रेणी में नहीं आती। उपन्यास का एक पात्र आशा, जिसका कपास पानी में भींग जाने के कारण बर्बाद हो जाता है वह अवसाद और हताशा में चली जाती है। "सोचा था, भगवान एक बार सुन लेगा तो ठीक-ठाक घरों में पार-घाट लग जाएंगी मुलगियाँ (लड़कियाँ)। लेकिन मेरे जी का जंजाल हो गई और ज़िंदगी भी। धत् तेरी ज़िंदगी की! बोरे से ढ़ककर रखा था कीटनाशक सल्फास-फसल के कीड़े मारने के लिए आया था। जरू पड़ी। आज जरूरत है, इसी की जरूरत!" 31 आशा की आत्महत्या के बाद निरीक्षण के लिए आए हुए सरकारी अमला उसके पति सुरेश से तरह-तरह के प्रश्न मसलन- तुम दोनों के बीच कोई झगड़ा तो नहीं हुआ था?.....तुम दारू पीते हो?....तुम्हारे या तुम्हारी बीवी के किसी गैर से संबंध थे? इस तरह के सवाल

अधिकारी खानापूर्ति कर लेते हैं और अंततः महिला किसान आशा वानखेड़े की आत्महत्या को किसान मुआवजा के लिए अपात्र घोषित कर दिया जाता है किसान की आत्महत्या को घरेलू झगड़े से जोड़कर देखा जाता है। यह एक बहुत बड़ी सामाजिक विडम्बना है।

उपन्यासकार ने समाज में फैली मृत्यु भोज की कुरीति को भी चित्रित किया है। समाज में मृत्यु के बाद भोज खिलाने की परंपरा समाज का अभिन्न हिस्सा बन मृतक चाहे जवान हो या वृद्ध श्राद्ध खिलाना अनिवार्य है। सामाजिक दबाव एवं लोक-लाज के भय से गरीब से गरीब व्यक्ति कर्ज लेकर इस क्रिया को पूर्ण व कई बार यह भी देखा गया है कि परिवार का सदस्य गंभीर बीमारी या दुर्घटना में मौत का शिकार होता है और परिवार शोक में डूबा रहता है, कर्ज लेक कराता है, ऐसी दुखद परिस्थिति में भी समाज के ठेकेदारों को भोज खिलाना पड़ता है। इस सामाजिक बुराई को धर्म से संबद्ध करके चिरस्थायी और अनि दिया गया है। ब्राह्मण को भोज खिलाने और दान देने से मृतक व्यक्ति को मुक्ति मिलेगी, यह लालच धर्म की आड़ में दिखाया गया है। इसलिए आशा की उसका पति सुरेश अपने मित्रों से मृत्यु भोज के बारे में सलाह-मशविरा करता है। उसके दोस्त कहते हैं कि घर का सारा पैसा और संपत्ति उसी का बनाया हुअ भी उसी का खरीदा हुआ है, बेच दो दो-तीन एकड़ लेकिन उसका श्राद्ध कायदे से होना चाहिए। वह कहता है- “श्राद्ध तो कायदे से होगा ही, नहीं तो हम बिरा दोस्तों में मूँ कैसे दिखाएगा?”32 साधारण आदमी के लिए बिरादरी का भय बहुत बड़ा होता है। सामाजिक मर्यादा का बोझ उसके ऊपर ही सबसे अधिक ‘गोदान’ का होरी भी इसी बिरादरी के भय में जीता है, पंचायत द्वारा लगाया गया डांड के रूप में अपनी अनाज को अपने ही हाथ पंचों के घर पहुंचा देता है। स कुरीतियाँ मनुष्य के जीवन को इस तरह जकड़ रखी हैं कि सामान्य मनुष्य उसे चुनौती नहीं दे पाता है।

उपन्यासकार संजीव ने विदर्भ क्षेत्र का रिपोर्ताज पेश किया है, वहाँ हो रहे सामाजिक बदलावों को बारीक नजर से पकड़ा है। दलित जातियों में हिन्दू धर्म को बौद्ध धर्म अपनाने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। डॉ॰ भीमराव आंबेडकर द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने के कारण और उनका कर्मक्षेत्र महाराष्ट्र होने के कारण दलित जातियों में बौद्ध धर्म के प्रति रुचि बढ़ी है। हिन्दू वर्ण व्यवस्था में छुआछूत का भेदभाव अत्यधिक होने की वजह से ये लोग दिन-प्रतिदिन जातिगत श शिकार होते रहे हैं। किन्तु अब उनके अंदर आंबेडकर के प्रभाव से सामाजिक चेतना पैदा हो रही है। इसलिए वे हिन्दू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म की तरफ ब उपन्यास की प्रमुख पात्र शकुन जो दलित महिला है वह पहले हिन्दू थी, गाँव के मंदिर की साफ-सफाई भी करती थी। लेकिन उसने बौद्ध धर्म अपना लिया। अ शिबू को भी बौद्ध धर्म अपनाने के लिए कहती रहती है। “तुम कैसे भूल जाते हो कि हमारे पुरखे कभी पीछे झाड़ बाँधकर और हाथ में डुब्बा लेकर चलते, ता की अपनी छुई जमीन अपवित्र न हो जाए। बाबा साहब के लाख बुलाने पर भी जो न आ पाए, उन्हें तुम आदमी कहते हो? केंचुए हैं केंचुए...... मैंने कि समझाया दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो मगर तुम.......? आज भी उसी मंदिर में मत्था टेकने जाते हो, जिसका पुजारी पहले बाग के संतरों की लालच दे-देकर मुझे प कोशिश करता था। और अब बगुला भगत की तरह मंदिर के ऊँचे चबूतरे पर बैठकर नहाती औरतों और स्कूल जाती मुलगियों को घूरता रहता है।”33 अंततः वह भी बौद्ध धर्म अपना लेता है। अपनी लड़कियों के लिए रिश्ता हिन्दू धर्म में खोज रहा था किन्तु अब वह बौद्ध लड़का शादी के लिए खोजने लगा। जहाँ द कर्ज का झंझट नहीं है। एक निम्न वर्ग के किसान के लिए खेती के बल पर लड़की की शादी करना, कठिनाई भरा रहता है। दहेज के रूप में पैसे की माँग त खर्चे का भार उठाना, बहुत मुश्किल होता है। शकुन का पति शिबू दो लड़कियों की शादी के लिए दहेज की माँग सुनकर चिंतित और बेचैन हो जाता है। वह व “इसलिए तो शादी.......। अगर लाख रुपए की डिमांड न होती। कहाँ से लाऊं? अब इस शेती में और बरक्कत तो होने से रही।”34

उपन्यासकार ने विदर्भ के किसानों के बीच शराब की लत को व्यापक समस्या के रूप में दिखाया है। कर्ज के तले दबे किसान अपने अवसाद और हताशा करने के लिए शराब की लत में डूब जाते हैं किन्तु घर की आर्थिक स्थिति और भी कमजोर होती जाती है। इसके कारण घर में कलह भी बढ़ता जाता है। विद वर्धा में गांधी जी की कर्मभूमि होने के कारण शराब बंद है फिर भी धड़ल्ले से बिकती है। महिलाओं ने शराब बंद कराने के लिए मुहिम छेड़ा हुआ है। शकुन भट्ठी भंजक दल का हिस्सा है। जो शराब का धंधा पुलिस -प्रशासन और कारोबारियों के मिलीभगत से फल-फूल रहा हो, उसे भला महिलाओं का एक छोट कैसे रोक पाता। महिलाओं का दल एक जगह शराब बंद कराने के लिए जाता है जहां के लोग गैरकानूनी ढंग से बेचते हैं। वे लोग उलटे महिलाओं से उलझ बात इतनी बिगड़ जाती है कि लाठी-डंडा लेकर दौड़ा लेते हैं,पुलिस बल भी उनके गिरोह के आगे नहीं टिकता है। “महिला मण्डल के सदस्यों में किसी को चोट लगी,किसी के पीठ पर। शकुन की भौहों पर चोट लगी। खून टपकने लगा। बच गई आँख नहीं तो ....!”35 ये लोग दारू पीने वाले परिवार से भी प्रार्थना कि आप लोग दारू पीना बंद कर दीजिए। शकुन कहती है - “आपको मालूम है कि इस दारू ने कितने घर उजाड़े हैं और कितने किसानों की जानें ली हैं। ये म शराब बेचने वाले साहूकार नारायण सेठ की दुकान पर हल्ला बोल देती हैं। ये साहूकार किसानों को सूद पर कर्ज भी देता है और वही दारू का कारोबार भी व उसकी दुकान को घेरने के बाद शकुन फोन पर पुलिस को सूचना देती है, कुछ ही देर में पुलिस, आबकारी विभाग और सरपंच पहुँच जाते हैं, नारायण सेठ क जीप में बैठाकर थाने ले जाती है। महिला मण्डल विजयी सेना की तरह उत्साह से भर जाती है और पीछे-पीछे महिला मण्डल भी थाने पहुंचता है। थानेदा मण्डल की प्रशंसा करता है। “इसे कहते हैं नारी शक्ति! शाबाश! मैं तो कहता हूँ आप लोगों ने एक मिसाल कायम की है देश के एक-चौथाई लोग भी अ जागरूक हो जाएं तो दारू, हर तरह का नशा और करप्शन छू मंतर हो जाए। गाँधी जी के रास्ते काम हुआ- यह और बड़ी बात है, वरना उस दिन तो..... अपना काम कर दिया है, अब हमें अपना काम करने दें।”36 उसके कुछ ही देर बाद महिलाएं लौटकर घर की ओर आती हैं तो देखती हैं जिस नारायण सेठ क थाने में बंद करवाया था, वह अपनी दुकान पर खड़ा होकर शराब का कैन अंदर रखवा रहा था। इस वाकया से पुलिस और शराब कारोबारी की मिली पर्दाफांस हो जाता है।

निष्कर्ष : समकालीन हिन्दी उपन्यासों में किसानों के विविध स्वर सुनाई पड़ते हैं। महंगाई, कर्ज, आत्महत्या, लागत इत्यादि सभी समस्याओं की आकृति इन में दिखाई पड़ती है। किसान अन्नदाता के रूप में महिमामंडित किया जाता रहा है। किन्तु उसकी वास्तविक समस्या से सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग अनजान आजादी के बाद उद्योग इत्यादि पर जितना ध्यान दिया गया है,उतना कृषि पर नहीं दिया गया। इस कारण से कृषि का जीडीपी में योगदान घटता गया। कि उसके उपज का उचित दाम नहीं मिलने के कारण कर्ज का फंदे में फँसता चला जाता है। कृषि को केंद्रबिन्दु बनाकर नीति बनाने की जरूरत है। सिर्फ आनन में कर्ज माफी से किसानों का भला होने वाला नहीं है।

संदर्भ :

1. कमला कांत त्रिपाठी, बेदखल, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण 2000, पृष्ठ 42
2. वही, पृष्ठ 123
3. वही, पृष्ठ 129
4. वही, पृष्ठ 22
5. वही, पृष्ठ 16
6. वही, पृष्ठ 160
7. भीमसेन त्यागी, जमीन, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 176
8. वही, पृष्ठ 154
9. वही, पृष्ठ 185
10. वही, पृष्ठ 53
11. वही, पृष्ठ 57
12. वही, पृष्ठ 57
13. वही, पृष्ठ
14. वही, पृष्ठ 296
15. वही, पृष्ठ 297
16. वही, पृष्ठ 298
17. जगदीश चंद्र, घास गोदाम, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, संस्करण 2017, पृष्ठ 22
18. वही, पृष्ठ 28
19. वही, पृष्ठ 129

20. वही, पृष्ठ 30
21. वही, पृष्ठ 268
22. राजू शर्मा, हलफनामे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2007, पृष्ठ 50
23. वीरेंद्र जैन,डूब, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ 218
24. वही, पृष्ठ 218
25. वही, पृष्ठ 116
26. वही, पृष्ठ 209
27. वही, पृष्ठ 255
28. वही, पृष्ठ 196
29. संजीव,फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ 11
30. वही, पृष्ठ 10
31. वही, पृष्ठ 114
32. वही, पृष्ठ 149
33. वही, पृष्ठ 90
34. वही, पृष्ठ 89
35. वही, पृष्ठ 153
36. वही, पृष्ठ 154

डॉ. जितेंद्र यादव
सहायक प्रोफेसर,हिन्दी विभाग, सकलडीहा पी.जी. कालेज,सकलडीहा चंदौली
jitendrayadav.bhu@gmail.com, 9001092806

अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati)

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) से प्रकाशित त्रैमासिक ई-पत्रिका

अंक-48, जुलाई-सितम्बर 2023 **UGC Care Listed Issue**

सम्पादक-द्वय : डॉ. माणिक व डॉ. जितेन्द्र यादव चित्रांकन : सौमिक नन्दी

Tags **48** किसान विमर्श जितेंद्र यादव शोध आलेख **UGC care list issue**

शेयर करें

LINKS TO THIS POST

POST A COMMENT

टिप्पणी डालें

‹ और नया

यह 'अपनी माटी संस्थान' चित्तौड़गढ़ (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013) द्वारा संचालित और UGC Care List Approved त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अपनी माटी' है जिसका ISSN नंब 2322-0724 Apni Maati है। कला, साहित्य, रंगकर्म, सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार, आलेख सहित तमाम विधाओं में समाज-विज्ञान और साहित्य से सम्बद्ध रचनाएँ छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है। कथेतर साहित्य छापने में हमारी रूचि है। यहाँ साल में चार सामान्य अंक प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा कभी-कभी विशेषांक भी छप हैं। यह गैर-व्यावसायिक और साहित्यिक प्रकृति का सामूहिक प्रयासों से किया जाने वाला कार्य है। हमारा पता 'कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड़, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान' है। अन्य जरूरी प्रश्न हो तो 9460711896 (Dr. Manik), 9001092806 (Dr. Jitendra Yadav) पर Only Watts App करके सम्पर्क कर सकते हैं, यहाँ कॉल पर बात नहीं होगी। हमारा ई-मेल पता apnimaati.com@gmail.com यह रहेगा। कुल जमा पत्रिका ठीकठाक है इसे बेहतर बनाने का जिम्मा लेखकों और पाठकों पर ही है।

Design by - Shekhar फॉण्ट कन्वर्टर भक्ति विशेषांक रेणु विशेषांक मीडिया विशेषांक किसान विशेषांक तुलसीदास विशेषांक शिक्षा विशेषांक प्रतिबंधित साहित्य

शोध आलेख :- आधुनिक ओलम्पिक में भारतीय हॉकी का स्वर्णिम युग और उसका पतन : एक विवेचना / श्याम ल सिंह यादव

Gunwant गुरुवार, जून 30, 2022

आधुनिक ओलम्पिक में भारतीय हॉकी का स्वर्णिम युग और उसका पतन : एक विवेचना

- श्याम लाल सिंह यादव

शोध सार :ओलम्पिक खेल दुनिया के सबसे बड़े खेल आयोजनों में से एक है। ओलं शामिल होना ही खिलाड़ियों का सपना होता है, वे इसके लिए कई वर्षों तक कड़ा परि ट्रेनिंग करते हैं। उस देश की सरकारें भी हर संभव सुविधा खिलाडियों को देती हैं। दु के सैकड़ों देशों के खिलाड़ी प्रत्येक चार साल में विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पद पदक और कांस्य पदक के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा करते दिखाई देते हैं। आज ओलम्पि एक ऐसा माध्यम स्थापित हो गया है जिससे एक देश दूसरे देश पर अपना वर्चस्व स्थापि की कोशिश करता है। पदक तालिका में सर्वोच्च स्थान दर्शाता है कि वह देश आर्थिक कितना मजबूत और सशक्त है। वहां के लोग खेल को कितना महत्त्व देते हैं और सर खेल के प्रति कितनी जागरूक हैं। इस शोध आलेख में भारतीय हॉकी के अतीत और के विभिन्न पहलू को समझने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : ओलम्पिक , खेल, मेडल, हॉकी, ध्यानचंद्र, खिलाड़ी, स्वर्ण पदक, सरकार।

मूल आलेख : ओलम्पिक का संक्षिप्त इतिहास- ओलम्पिक खेल का इतिहास बहुत ही पुराना है पर माना जाता है कि ओलम्पिक खेल की शुरुआत र देवता जीयुस के सम्मान में 776 ईसा पूर्व यूनान के ओलंपिया शहर में की गई थी। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार प्राचीन ओलम्पिक खेल प्रत्येक चार आयोजित होकर 394 ईसवी (लगभग 1200 वर्षों) तक चला। बाद में यूनान पर रोम का साम्राज्य स्थापित हो गया। रोम के राजा थियोडोसिस द्वितीय के आदेश खेलों का आयोजन बंद कर दिया गया। सैकड़ों वर्ष बंद रहने के बाद 19वीं शताब्दी में आधुनिक ओलम्पिक खेलों के पुनरुत्थान का प्रयास शुरु किया गया। शिक्षाशास्त्री और इतिहासकार बैरन पियरे डी कुबर्टिन ने कई देशो की यात्रा कर एवं विभिन्न संगठनो के साथ सम्मेलन कर ओलम्पिक के प्रति जागरूकता अन्तरराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति (IOC) की स्थापना पियरे डी कुबर्टिन ने 23 जून 1894 में की थी। आधुनिक ओलम्पिक के जन्मदाता पियरे डी कुबर्टिन के प्रयास और लगन के परिणामस्वरूप 6 अप्रैल, 1896 को ग्रीस की राजधानी एथेंस में आधुनिक ओलम्पिक की शुरूआत संभव हो पाई। 1896 से 19 ओलम्पिक दुनिया के विभिन्न शहरों में होते रहे। भारत की तरफ से नार्मन पिचार्ड जो एंग्लो इंडियन थे और पेरिस में छुट्टियाँ मना रहे थे, वे पहली बार 1900 के ओलम्पिक में एथलेटिक्स में भाग लिया एवं दो रजत पदक प्राप्त किए। बाद में 1920, एंटवर्प एवं 1924, पेरिस ओलम्पिक में भी भारतीय टीम ने एथले प्रतिभाग किया पर कोई पदक नहीं प्राप्त हुआ। भारतीय ओलम्पिक संघ (IOA) की स्थापना 1927 में हुई इसके प्रथम अध्यक्ष दोराबजी टाटा और सेक्रेटरी ड नेहरन को बनाया गया।

ओलम्पिक खेलों में हॉकी का प्रवेश - 'हॉकी का प्रवेश ओलम्पिक खेलों में सन् 1908 में हुआ था। उस दौरान चौथे ओलम्पिक खेल का आयोजन हुआ थ इंग्लैंड ने आयरलैंड को फाइनल में हराकर ओलम्पिक में हॉकी का प्रथम विजेता होने का गौरव प्राप्त किया था। जहाँ तक भारतीय हॉकी टीम के ओलम्पिक करने की बात है तो यह 1928 में संभव हो सका, जब भारत ने एमस्टर्डम (हॉलैंड) में आयोजित नौवें ओलम्पिक खेलों में भाग लिया'।[1]

एम्सटर्डम ओलम्पिक (1928) : पहला स्वर्ण पदक

भारत का ओलम्पिक में स्वर्णिम आगाज - भारतीय हॉकी टीम 1928 में एमस्टर्डम ओलम्पिक में भाग लेने के लिए बॉम्बे बंदरगाह से रवाना हो रही थी, त तीन लोग उसे विदा करने आए थे। इसके उलट जब टीम स्वर्ण पदक जीतकर भारत लौटी, तब हजारों लोग विजेता टीम का स्वागत करने के लिए '1928 ओलम्पिक के हॉकी इवेंट में कुल 9 टीमों ने भाग लिया था। टीमों को दो ग्रुप में बांटा गया था जिसमे ग्रुप 'ए' में भारत, बेल्जियम, डेनमार्क, स्विट्जर ऑस्ट्रिया थे तथा ग्रुप 'बी' में मेजबान नीदरलैंड्स, जर्मनी, फ्रांस और स्पेन थे। दोनों ग्रुप की टॉप टीम ने स्वर्ण पदक के लिए एक-दूसरे का सामना किया, जब स्थान पर रहने वाली टीमों ने कांस्य पदक के लिए मैच खेले। 17 मई को टूर्नामेंट के अपने शुरुआती मुकाबले में भारत ने ऑस्ट्रिया को 6-0 से हरा दिया। इस भारत ने बेल्जियम को 9-0 और डेनमार्क को 5-0 से मात दी। स्विट्जरलैंड को 6-0 से हराने के साथ ही भारतीय टीम फाइनल में पहुंच गई'।(2)

हॉकी के जादूगर का चला जादू : फाइनल मैच - 26 मई को टूर्नामेंट के फाइनल में भारत के सामने कई परेशानियां खड़ी थीं। फिरोज खान चोट और शौक बुखार के चलते फाइनल मुकाबले से बाहर हो गए थे। वहीं, कप्तान जयपाल सिंह भी कुछ मैच पहले ही स्वदेश लौट चुके थे। इसके बावजूद भारत ने 23 हज के सामने नीदरलैंड्स को 3-0 से मात दे दी। ध्यानचंद ने दो और जॉर्ज मार्टिंस ने एक गोल दागकर भारतीय हॉकी के स्वर्ण युग की शुरुआत की। पूरे टूर्नामेंट ने कुल 29 गोल किए थे, जिसमें से 14 गोल तो अकेले ध्यानचंद ने किए। भारतीय टीम के विजयी अभियान की एक खास बात यह रही थी कि उसने पूरे टूर्नामें भी गोल नहीं खाया। इसमें सबसे बड़ा योगदान भारतीय गोलकीपर रिचर्ड एलन का था। एलन गोलपोस्ट के सामने दीवार बनकर खड़े हो गए थे और विपक्षी कोई भी खिलाड़ी इस दीवार को भेद नहीं सका।

लॉस एंजेलिस ओलम्पिक (1932) : दूसरा स्वर्ण पदक

मंदी के बीच अमेरिका पर लगाई गोलों की झड़ी और जीता स्वर्ण - 1929 की आर्थिक मंदी का असर लॉस एंजेलिस ओलम्पिक खेलों पर भी पड़ा था नतीजा ये हुआ कि हॉकी स्पर्धा में भारत, जापान और अमेरिका ने ही हिस्सा लिय। भारत टीम का पहला मुकाबला जापान से हुआ, जिसे भारत ने 11-1 से अ किया था। इस मुकाबले में ध्यानचंद ने चार गोल किए। ध्यानचंद के छोटे भाई रूप सिंह और गुरमीत सिंह ने तीन-तीन गोल गोल किए। रिचर्ड कैर ने भी फायदा उठाते हुए एक गोल किया। वहीं, जापानी टीम की ओर से इकलौता गोल जुन्जो इनोहारा ने किया। भारत का अगला मुकाबला मेजबान अमेरिका से ह इस मुकाबले में भारतीय टीम के जीत की उम्मीद सबको थी, लेकिन शायद ही किसी ने ये कल्पना की होगी कि भारत औसतन हर एक तीन मिनट पर गोल भारत ने इस मुकाबले में गोलों की झड़ी लगाते हुए अमेरिका को 24-1 के विशाल अंतर से हराया था। रूप सिंह ने सबसे ज्यादा 10 और ध्यानचंद ने 8 गोल कि दोनों के अलावा गुरमीत सिंह ने 5 गोल और एरिक पिनिगर ने एक गोल किया था।

एक गोल का आटोग्राफ : 'अमेरिका की ओर से इकलौता गोल विलियम बोडिंगटन ने किया। लेकिन उनके गोल करने की कहानी भी काफी दिलचस्प है। टीम के आक्रमण से अमेरिकी टीम के हौसले पस्त हो चुके थे। ऐसे में एक मौके पर अमेरिकी खिलाड़ियों को भारतीय रक्षापंक्ति ने अपने घेरे में प्रवेश कर लेकिन जब खिलाड़ियों ने पीछे मुड़कर देखा तो पता चला कि गोलकीपर रिचर्ड एलन गोल पोस्ट पर मौजूद नहीं हैं। वह तो गोल पोस्ट के पीछे ऑटोग्राफ दे रहे तरह गोलकीपर की दरियादिली से अमेरिका एक गोल करने में सफल रहा। अमेरिका के खिलाफ इस जीत के साथ ही भारतीय हॉकी टीम ने ओलम्पिक में दूसरा स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया। भारत ने दो मुकाबलों में कुल 35 गोल किये, जिसमें से 25 गोल दो भाइयों (रूप सिंह और ध्यानचंद) के नाम रहे। र ने 13 और बड़े भाई ध्यानचंद ने 12 गोल थे'।[3]

बर्लिन ओलम्पिक (1936) : गोल्डन हैट्रिक

ध्यानचंद के कप्तानी में स्वर्ण पदक की हैट्रिक- बर्लिन में भारतीय हॉकी टीम की कमान ध्यानचंद के हाथों में थी। भारत को जापान, हंगरी और अमेरिका ग्रुप 'ए' में रखा गया था। वहीं, ग्रुप 'बी' में जर्मनी, अफगानिस्तान और डेनमार्क की टीमें थीं। जबकि ग्रुप 'सी' में नीदरलैंड्स, फ्रांस, बेल्जियम और स्विट्जरलैंड गया था। भारत ने शानदार आगाज करते हुए लीग प्रतियोगिता में अपने पहले मैच में हंगरी को 4-0 से शिकस्त दी। इसके बाद भारत ने अमेरिका को 7-0 जापान को 9-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल में भारत ने फ्रांस को 10-0 से मात दी। इस मैच में ध्यानचंद ने सबसे ज्यादा 4 और र ने 3 गोल किये। वहीं, इक्तिदार अली ने 2 और कार्ली टेपसेल ने एक गोल किए।

फाइनल मुकाबले में जर्मनी से लिया हार बदला : फाइनल मुकाबले में भारत का मुकाबला जर्मनी से हुआ। उस फाइनल में भारत ने अभ्यास मैच में मिली बदला लेते हुए जर्मनी को 8-1 से मात दी। इस जीत के साथ ही भारतीय हॉकी टीम ने लगातार तीसरी बार स्वर्ण पदक पर कब्जा कर लिया। फाइनल मु कप्तान ध्यानचंद ने सबसे ज़्यादा 3 गोल किए। इक्तिदार ने 2, जबकि टेपसेल, जफर और रूप सिंह ने 1-1 गोल किए। गौरतलब है कि 1936 के ओलम्पिक ख होने से पहले एक अभ्यास मैच में भारतीय टीम को जर्मनी ने 4-1 से हरा दिया था। ध्यानचंद ने अपनी आत्मकथा 'गोल' में लिखा, 'मैं जब तक जीवित रहूंगा इस कभी नहीं भूलूंगा। इस हार ने हमें इतना हिलाकर रख दिया कि हम पूरी रात सो नहीं पाए।

हिटलर के प्रलोभन पर भारी पड़ा ध्यानचंद का देश प्रेम- 'कहा जाता है कि इस शानदार प्रदर्शन से खुश होकर हिटलर ने ध्यानचंद को खाने पर बुलाया अ जर्मनी की ओर से खेलने को कहा। हिटलर ने इसके बदले उन्हें मजबूत जर्मन सेना में कर्नल पद का प्रलोभन भी दिया। लेकिन ध्यानचंद ने कहा, 'हिंदुस्तान मे है और मैं वहां खुश हूं। मैंने भारत का नमक खाया है, मैं भारत के लिए ही खेलूंगा। 'हॉकी के जादूगर' ध्यानचंद ने अपने इस आखिरी ओलम्पिक में कुल 13 गं थे। इस तरह एम्स्टर्डम, लॉस एंजेलिस और बर्लिन ओलम्पिक को मिलाकर ध्यानचंद ने कुल 39 गोल किए, जो उनकी बादशाहत को बयां करती है'।(4)

लंदन ओलम्पिक (1948) : चौथा स्वर्ण पदक

भारत का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्वर्ण पदक - 1948 के लंदन ओलम्पिक में पहली बार भारत ने एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भाग लिया था। 1947 में हुए बंटवारे के बाद भारतीय हॉकी टीम बिखर गई थी। इक्तिदार अली दारा जैसे कई खिलाड़ी पाकिस्तान चले गए थे। जिसके चलते भारतीय हॉकी महासंघ (IHF) चुनने में काफी मुश्किलें आईं। अंततः किशन लाल के नेतृत्व में नई नवेली भारतीय टीम लंदन पहुंची। भारत को ग्रुप 'ए' में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रिया और स्पेन के स गया था। वहीं ग्रुप 'बी' में ग्रेट ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड, अफगानिस्तान और अमेरिका की टीमें थीं। जबकि पाकिस्तान ग्रुप 'सी' में नीदरलैंड्स, बेल्जियम, फ्रांस और के साथ था। भारतीय टीम ने अपने पहले ही मैच में ऑस्ट्रिया को 8-0 से हराकर अपने इरादे जाहिर कर दिए। इसके बाद भारत ने अर्जेंटीना को 9-1 और स्पे 0 मात देकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। सेमीफाइनल में भारत ने नीदरलैंड्स को रोमांचक मुकाबले 2-1 से मात दी। उस मैच में भारत के लिए केडी सिंह 'ब गेराल्ड ग्लाकेन ने एक-एक गोल गोल किए थे।

फाइनल में भारतीय टीम के सामने ग्रेट ब्रिटेन की टीम थी। भारत के लिए यह मैच बेहद खास था क्योंकि इस मुकाबले के ठीक तीन दिन बाद आजादी की पहली वर्षगांठ मनाने जा रहा था। भारत ने फाइनल में ग्रेट ब्रिटेन को 4-0 से मात देकर लगातार चौथा स्वर्ण पदक जीत लिया। फाइनल मुक बलबीर सिंह सीनियर ने 2, त्रिलोचन सिंह और पैट्रिक जेनसन ने एक-एक गोल किए। इस जीत के बाद पूरा देश अंग्रेजों के खिलाफ मिली इस जीत के बाद झूम उठा था।

हेलसिंकी ओलम्पिक (1952) : पंचवा स्वर्ण पदक

बलबीर सिंह सीनियर ने लगाई हैट्रिक - हेलसिंकी ओलम्पिक में फील्ड हॉकी इवेंट नॉकआउट मुकाबले की तर्ज पर खेले गए थे। 1948 के लंदन ओलम्पि टॉप चार टीमों को क्वार्टर फाइनल में सीधे प्रवेश दिया गया। भारत के अलावा इन टीमों में पाकिस्तान, नीदरलैंड्स और ग्रेट ब्रिटेन शामिल थे। केडी सिंह कप्तानी वाली भारतीय टीम ने क्वार्टर फाइनल मुकाबले में ऑस्ट्रिया को 4-0 से शिकस्त दी। भारत की ओर से बलवीर सिंह सीनियर, केडी सिंह बाबू, रण जेंटल और रघबीर लाल ने एक-एक गोल किये। सेमीफाइनल में भारत का सामना ग्रेट ब्रिटेन से होना था, जिसका डिफेंस काफी बेहतर मानी जा रही थी भारतीय टीम के सामने अंग्रेजों की एक नहीं चली और उसने 3-1 से मुकाबला अपने नाम कर लिया। बलबीर सिंह सीनियर ने भारत की ओर से सभी तीन गो हुए हैट्रिक जमाई थी।

फाइनल में बलवीर का कमाल- अब भारतीय टीम को फाइनल में नीदरलैंड्स का सामना करना था। उम्मीदों के मुताबिक भारत ने इस मुकाबले को 6-1 कर लगातार 5वीं बार स्वर्ण पदक जीत लिया। भारत की ओर से बलबीर सिंह सीनियर ने सबसे ज्यादा 5 गोल किए। ओलम्पिक के फाइनल मुकाबले में सब गोल करने का उनका यह रिकॉर्ड आज भी कायम है। भारत ने इस जीत से एकबार फिर हॉकी पर अपनी बादशाहत साबित की। पूरी भारतीय टीम ने तीन कुल 13 गोल किए, जिसमें से बलबीर सिंह सीनियर ने अकेले 9 गोल किये थे। बलबीर सिंह के अलावा टीम के कप्तान केडी सिंह 'बाबू' ने भी इस ओलम्पिक छाप छोड़ी। उन्हें 1953 में हेल्म्स ट्रॉफी (Helms Trophy) से नवाजा गया था, जो कि दुनिया के बेस्ट हॉकी खिलाड़ी को दी जाती थी। यह पहला मौका था, ज भारतीय खिलाड़ी को यह ट्रॉफी दी गई थी।

मेलबर्न ओलम्पिक (1956) : छठा स्वर्ण पदक- मेलबर्न ओलम्पिक के हॉकी प्रतियोगिता में 12 देशों की टीमों ने हिस्सा लिया था। इन टीमों को तीन-तीन चार ग्रुप में बांटा गया था। भारत को ग्रुप 'ए' में सिंगापुर, अफगानिस्तान और अमेरिका के साथ रखा गया था। भारत ने अफगानिस्तान को 14-0 से मात देकर अभियान का शानदार आगाज किया। कप्तान बलवीर सिंह सीनियर ने 5 और उधम सिंह ने 4 गोल किये थे। हालांकि अफगानिस्तान के खिलाफ मुक बलवीर सिंह की उंगली में फ्रैक्चर हो गया था, जिसकी वजह से उन्हें कुछ मैचों में बाहर बैठना पड़ा था। भारतीय टीम ने अमेरिका को 16-0 के बड़ अंत

डाला। उस मुकाबले में भारत की ओर से उधम सिंह ने अकेले 7 गोल किए। अपने लीग प्रतियोगिता के आखिरी मैच में भारत ने सिंगापुर को 6-0 से हरा अंतिम जगह बनाई। सेमीफाइनल में भारत का सामना यूनाइटेड टीम ऑफ जर्मनी से हुआ। लीग प्रतियोगिता में गोलों की झड़ी लगाने वाली भारतीय टीम इस मैच एक गोल कर सकी। यह गोल उधम सिंह ने मैच के 48वें मिनट में किया था, जिसकी बदौलत भारतीय टीम फाइनल में पहुंच सकी। दूसरी तरफ पाकिस्तान ने ब्रिटेन को 3-2 से हरा फाइनल का टिकट हासिल कर लिया था।

दीवार को तोड़ नहीं पाई पाक टीम- 'भारत और पाकिस्तान की टीम पहली बार एक-दूसरे के आमने-सामने थी, वो भी ओलम्पिक फाइनल जैसे बड़े मुक उम्मीदों के मुताबिक फाइनल मुकाबला काफी रोमांचक रहा। मैच के 38वें पेनल्टी कॉर्नर पर रणधीर सिंह जेंटल ने गोल कर भारत को बढ़त दिला दी। पाकि गोल करने के कई प्रयास किए, लेकिन वह भारतीय गोलकीपर शंकर लक्ष्मण की दीवार को भेद नहीं पाए। अंततः भारत ने पाकिस्तान को 1-0 से हराकर छठी बार स्वर्ण पदक पर कब्जा कर लिया। भारतीय टीम का डिफेंस इतना सशक्त था कि पूरी प्रतियोगिता में विपक्षी टीम उसके खिलाफ एक भी गोल पाई'।(5)

रोम ओलम्पिक (1960) : रजत पदक-
लगातार सातवें स्वर्ण पदक का सपना टूटा- रोम ओलम्पिक में भारतीय हॉकी टीम की जीत का सिलसिला थम गया था। इस ओलम्पिक में खिताब दावेदार भारत को न्यूजीलैंड, नीदरलैंड्स और डेनमार्क के साथ ग्रुप 'ए' में रखा गया। भारत ने अपने पहले मुकाबले में डेनमार्क को 10-0 से हराकर शानदार किया। इसके बाद उसने नीदरलैंड्स को 4-1 और न्यूजीलैंड को 3-0 से हराकर अंतिम आठ में जगह पक्की की। क्वार्टर फाइनल में भारत का मुकाबला ऑस्ट्रे हुआ, जिसे भारत ने एक्स्ट्रा टाइम में 1-0 से अपने नाम किया था। मैच के 92वें मिनट में रघबीर सिंह भोला ने उस मैच का इकलौता गोल किया। इसके बाद सेमीफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन को 1-0 से हराया। भारतीय टीम की ओर से उधम सिंह ने मैच के 16वें मिनट में निर्णायक गोल दागा था।

पड़ोसी (पाकिस्तान) ने तोड़ा भारतीयों का दिल- 'फाइनल में भारत के सामने पाकिस्तानी टीम थी, जिसने स्पेन को मात देकर फाइनल का टिकट कट मुकाबले के छठे मिनट में ही अहमद नासीर ने गोल करके पाक टीम को बढ़त दिला दी। इसके बाद भारत ने बराबरी करने की पूरी कोशिश की, लेकिन पा के डिफेंस को भेद नहीं पाई। अंततः भारत यह मुकाबला 0-1 से हार गया था। इस हार के साथ ही भारत का लगातार 7वीं बार स्वर्ण पदक जीतने का सपना था'।[6]

टोक्यो ओलम्पिक (1964) : सातवां स्वर्ण पदक
टोक्यो में भारत ने पाकिस्तान से लिया बदला- पाकिस्तान से लिया बदला टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय हॉकी टीम की साख दांव पर लगी थी। करोड़ों प्रशंसकों की यही ख्वाहिश थी कि टीम इंडिया पाकिस्तान को मात देकर स्वर्ण पदक जीत कर आए। जिसे पूरा करने में भारतीय टीम पूरी तरह सफल भी रही में भारतीय टीम की कमान चरणजीत सिंह के हाथों में थी। भारत को ग्रुप 'बी' में स्पेन, नीदरलैंड्स, यूनाइटेड टीम ऑफ जर्मनी, मलेशिया, बेल्जियम, कन हॉन्कॉन्ग के साथ रखा गया था। भारत ने अपने पहले पहला मैच में बेल्जियम को 2-0 से मात देकर बेहतरीन आगाज किया। इस जीत के बाद भारत ने यूनाइ ऑफ जर्मनी और स्पेन से 1-1 के ड्रॉ खेले। इसके बाद भारत ने लीग चरण के बाकी चार मैचों जीत हासिल कर सेमीफाइनल में कदम रखा। भारतीय टी दौरान हॉन्कॉन्ग को 6-0, मलेशिया को 3-1, कनाडा को 3-0, जबकि नीदरलैंड्स को 2-1 से शिकस्त दी थी। इसके बाद भारतीय टीम ने सेमीफाइनल में अ को 3-1 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। सेमीफाइनल में भारत के लिए पृथीपाल ने दो और मोहिंदर ने एक गोल किए। उधर पाकिस्तान ने भी स्पेन को 3-0 देकर फाइनल का टिकट कटा लिया।

फाइनल मुकाबले में भारतीय टीम का लक्ष्य रोम ओलम्पिक की हार का बदला चुकता करना था। पहले हाफ में दोनों टीमों की तमाम कोशिशों के कोई गोल नहीं हो सका। दूसरे हाफ में भारत को पेनल्टी कॉर्नर मिला, जिसे पृथीपाल सिंह ने लिया। लेकिन उनका शॉट पाकिस्तानी गोलकीपर के पैड से ट मुनीर अहमद डार के पैर पर जा लगा, जिसके चलते भारत को पेनल्टी स्ट्रोक मिला। जिसके बाद मोहिंदर लाल ने इस बेहतरीन मौके को गोल में तब्दील क को बढ़त दिला दी। पाकिस्तानी टीम ने इसके बाद गोल करने के भरसक प्रयास किए, लेकिन वह भारतीय गोलकीपर शंकर लक्ष्मण की दीवार को भेद नह अंततः भारत ने इस मुकाबले को 1-0 से जीतकर रोम ओलम्पिक के फाइनल में मिली हार का बदला ले लिया। पाकिस्तान को मात देकर भारतीय टीम के स्वर्ण पदक जीतने पर पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। वैसे तो फाइनल मुकाबले में जीत के हीरो मोहिंदर लाल और शंकर लक्ष्मण रहे थे। लेकिन भ फाइनल में पहुंचाने में पृथीपाल सिंह की सबसे अहम भूमिका थी। पृथीपाल ने टोक्यो ओलम्पिक में कुल 10 गोल किए थे।

मैक्सिको ओलम्पिक (1968) : कांस्य पदक
पहली बार फाइनल का सफ़र रुका- मेक्सिको ओलम्पिक से पहले भारतीय हॉकी टीम का विवाद सतह पर आ चुका था। गुरबख्श सिंह और पृथीप कप्तानी को लेकर आपस में ही उलझ बैठे थे। आखिरकार एक समझौते के तहत दोनों को संयुक्त रूप से मेक्सिको ओलम्पिक के टीम का कप्तान नियुक्त गया। इस ओलम्पिक में भारत को ग्रुप 'ए' में पश्चिम जर्मनी, बेल्जियम, स्पेन, पूर्वी जर्मनी, जापान और मेजबान मेक्सिको के साथ रखा गया था। भारतीय शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसे पहले मैच में न्यूजीलैंड के हाथों 2-1 से अप्रत्याशित हार झेलनी पड़ी। इसके बाद भारत ने शानदार वापसी करते हुए पश्चि (2-1), मेक्सिको (8-0) स्पेन (1-0), बेल्जियम (2-1), जापान (5-0) और पूर्वी जर्मनी (1-0) को शिकस्त दिया। टीम इंडिया ग्रुप'ए' में 18 अंकों के साथ टॉप पर उसने सेमीफाइनल में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया था।

सेमीफाइनल में भारत का सामना ऑस्ट्रेलिया से हुआ। पहले हाफ में बलबीर सिंह के गोल की बदौलत भारत ने 1-0 की बढ़त ले ली। दूसरे हाफ ग्लेनक्रॉस ने गोल दागकर ऑस्ट्रेलिया को बराबरी पर ला दिया। निर्धारित समय तक दोनों टीमें 1-1 की बराबरी पर रहीं, जिसके चलते मैच एक्स्ट्रा टाइम में ग ब्रायन ग्लेनक्रॉस ने एकबार फिर गोल दागकर ऑस्ट्रेलिया को 2-1 से जीत दिला दी। इस हार के साथ ही भारतीय टीम पहली बार ओलम्पिक के फाइनल में न पाई। सेमीफाइनल में हार के बाद भारत के पास अब कांस्य पदक जीतने का मौका था। इस मौके को भुनाते हुए भारत ने पश्चिम जर्मनी को 2-1 से हराक पदक पर कब्जा कर लिया। भारत के लिए पृथीपाल सिंह और बलबीर सिंह ने गोल किए। वहीं, पश्चिम जर्मनी की ओर से नॉरबर्ट शूलेर ने इकलौता गोल किया।

म्यूनिख ओलम्पिक (1972) : दूसरा कांस्य पदक
ओलम्पिक में लगातार 10वां पदक- म्यूनिख ओलम्पिक के लिए भारतीय हॉकी टीम की कमान हरमेक सिंह के हाथों में थी। 'हॉकी के जादूगर' ध्यानचंद अशोक कुमार, फॉरवर्ड बी.पी.गोविंदा जैसे युवा सितारों को टीम में जगह मिली थी। भारत को ग्रुप 'बी' में नीदरलैंड्स, ग्रेट ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, पोलैं और मैक्सिको के साथ रखा गया था। भारत की शुरुआत उतनी अच्छी नहीं रही और उसे पहले मैच में नीदरलैंड्स ने 1-1 की बराबरी पर रोक दिया। इसके बा ने ग्रेट ब्रिटेन को 5-0 और ऑस्ट्रेलिया को 3-1 से शिकस्त देकर लय हासिल कर ली। भारत को अगले मुकाबले में पोलैंड ने 2-2 की बराबरी पर रोक आश्चर्यचकित कर दिया। फिर भारत ने केन्या को 3-2, मैक्सिको को 8-0 से और न्यूजीलैंड को 3-2 से मात दी। भारतीय टीम सात मैचों में 12 अंकों के साथ अप टॉप पर रहते हुए सेमीफ़ाइनल में पहुँच चुकी थी। वही दूसरी ओर पाकिस्तान ग्रुप 'ए' में दूसरा स्थान हासिल किया जिसके चलते सेमीफानल में भारत को पा का सामना करना पड़ा।

भुना नहीं पाए पेनाल्टी कार्नर- 'सेमीफाइनल मुकाबले से पहले आतंकवादियों ने खूनी वारदात को अंजाम देते हुए 11 इजरायली खिलाड़ियों की हत्या कर सेमीफाइनल में भारतीय टीम अपनी लय में नहीं दिखी। पाकिस्तान ने 11वें और 34वें मिनट में गोल दागकर भारत पर 2-0 की बढ़त ले ली। भार टीम मैच 18 पेनल्टी कॉर्नर मिले, लेकिन वह एक भी गोल दाग नहीं पाई। अंतत: पाकिस्तान ने भारत को 2-0 से मात देकर उसे खिताबी मुकाबले से बाहर कर।देया

अब कांस्य पदक के मुकाबले में भारत का सामना नीदरलैंड्स से हुआ। छठे मिनट में ही नीदरलैंड्स के टाइ क्रूज ने गोल दागकर डच टीम को बढ़ दी। इसके बाद 15वें मिनट में बीपी गोविंदा ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील कर स्कोर 1-1 कर दिया। फिर मुकाबले के आखिरी मिनट में मुखबेन सिंह दागकर भारत को 2-1 से जीत दिला दी। कांस्य पदक जीतने के साथ ही टीम इंडिया ओलम्पिक में लगातार 10वां पदक अपने नाम कर चुकी थी।

मॉस्को ओलम्पिक (1980) :आठवाँ स्वर्ण पदक

ओलम्पिक का बहिष्कार और भारत का स्वर्ण पदक- 1976 के मॉन्ट्रियल ओलम्पिक में भारतीय टीम पदक जीतने से महरूम रह गई थी। ऐसा पहली ब जब भारत के हिस्से हॉकी में कोई ओलम्पिक पदक नहीं आया था। हालांकि मॉस्को में भारत ने स्वर्ण पदक जीतकर जरूर इसकी भरपाई कर दी थी। लेकि बाद से भारत हॉकी में एक भी ओलम्पिक पदक जीत नहीं पाया है। मॉस्को ओलम्पिक में सिर्फ छह टीमों ने पुरुष हॉकी इवेंट में भाग लिया। न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों ने अमेरिका के नेतृत्व में ओलम्पिक का बहिष्कार किया था। वासुदेव भास्करन की कप्तानी वाली टीम इंडिया ने त को 18-0 से धोकर शानदार शुरुआत की। इससे बाद भारत को पोलैंड और स्पेन दोनों ने ही 2-2 की बराबरी पर रोक दिया। दो ड्रॉ खेलने के बाद भारत को 13-0 और मेजबान सोवियत संघ को 4-2 से हराकर फाइनल में प्रवेश कर लिया। फाइनल में भारत का मुकाबला पूल में टॉप पर रहने वाली स्पेनिश टीम टीम इंडिया ने बेहद रोमांचक फाइनल मुकाबले में स्पेन को 4-3 से हराकर रिकॉर्ड 8वीं बार स्वर्ण पदक जीत लिया।

टोक्यो ओलम्पिक (2020) : तीसरा कांस्य पदक

41 वर्षों के पदक का सूखा ख़त्म- 'टीम इंडिया का सफर ग्रुप-ए में गत चैम्पियन अर्जेंटीना व ऑस्ट्रेलिया, जापान, न्यूजीलैंड और स्पेन के साथ रखा गया थ ग्रुप-बी में बेल्जियम, कनाडा, जर्मनी, ब्रिटेन, नीदरलैंड और दक्षिण अफ्रीका की टीमें थीं । सभी टीमें एक-दूसरे से खेलीं और दोनों ग्रुप से शीर्ष चार टीमें सेमीफ पहुंचीं। भारत कुल चार जीत और एक हार के साथ अपने ग्रुप में दूसरे नंबर पर रहकर क्वार्टर फाइनल में पहुंचा था। फिर क्वार्टर फाइनल में भारत ने ग्रेट ब्रिटे 1 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। हालांकि सेमीफाइनल में भारत को बेल्जियम के हाथों 5-2 से हार झेलनी पड़ी। भारतीय टीम ने मनप्रीत सिंह की क शानदार प्रदर्शन करते हुए टोक्यो में कांस्य पदक जीता। कांस्य पदक मैच में भारत ने जर्मनी को 5-4 से हरा दिया। टीम 41 साल बाद ओलम्पिक में पदक कामयाब रही। इससे पहले भारत को आखिरी पदक 1980 में मॉस्को में मिला था'।[8]

स्वर्णिम युग का पतन और उसके कारण- इतने साल तक ओलम्पिक में अपना दबदबा कायम रखने वाली भारतीय हॉकी टीम आखिरकार अपने सर्वोच पर कायम नहीं रह सकी। 1968 में मैक्सिको और 1972 में म्यूनिख ओलम्पिक में भारत को कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा। इसके चार साल बाद कनाडा के मॉन्ट्रियल में हुए ओलम्पिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम सातवें स्थान पर रही। इसके चार साल बाद 1980 में मास्को में ओलम्पिक खेल आयोजि इस दौरान भारतीय हॉकी टीम ने एकबार फिर स्वर्ण पदक हासिल किया। इसके बाद भारतीय हॉकी टीम के लिए ओलम्पिक का सफर मुश्किलों भरा हो गया। दरअसल, भारतीय हॉकी टीम के खिलाड़ियों के लिए एस्ट्रो टर्फ पर हॉकी खेलना परेशानी का सबब बन गया जबकि इससे पहले तक भारतीय हॉकी ट के मैदान पर ही खेलने उतरती रही थी। मैदान में हुए इस बदलाव के कारण हॉकी अब परंपरागत शैली का न होकर पावर और स्पीड के गेम में बदल ग कारण रहा कि भारतीय हॉकी उस दौर में अचानक किए गए इस बदलाव से तालमेल नहीं बैठा सकी। एक समय जो हिंदुस्तान, हॉकी के खेल पर राज करता लगातार कई बार विश्व विजेता बना, वह देश 1980 के बाद इस खेल में पीछे छूट गया।

भारतीय हॉकी की शर्मनाक हार - 'भारतीय हॉकी के इतिहास में एक बड़ी शर्मनाक हार का सामना उस समय करना पड़ा, जब सन् 2008 के मार्च में आयोजित मैच के फाइनल में भारतीय टीम इंग्लैंड के हाथों पराजित होकर बीजिंग ओलंपिक्स के लिए क्वॉलीफाई तक नहीं कर सकी। तब से भारत में इस दुर्दशा बढ़ती जा रही है। इस शर्मनाक हार के बाद कई भारतीय खिलाड़ियों ने यहाँ तक कि अपने प्रोफेशन भी बदल लिए हैं। सरकारी उपेक्षा व हॉकी खिला उचित सम्मान न देने के कारण यह खेल एक तरह से हाशिए पर आ गया है'।[9]

टर्फ पर लड़खड़ाती भारतीय टीम- भारतीय हॉकी के मामले में, 1975 में एस्ट्रो-टर्फ की शुरुआत ने ख़राब प्रदर्शन के उत्प्रेरक के रूप में काम किया। अ हॉकी महासंघ (एफआईएच) का निर्णय भले ही खेल के स्तर में गिरावट के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार न हो, लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि भारत जमीन खो रहा था। भारत ने अपना एकमात्र विश्व कप 1975 में मलेशिया में जीता था। हालांकि 1980 के ओलम्पिक स्वर्ण पदक और 1998 के एशियाई स्वर्ण पदक जैसे कुछ उज्ज्वल क्षणों को छोड़कर उसके कुछ साल बाद परिणाम सूख गए, यह साबित करता है कि देश एस्ट्रो-टर्फ के अनुकूल होने में विफल र

अंतर्राष्ट्रीय खिलाडी जफर कहते हैं, "टर्फ की शुरुआत से हॉकी खेलने के तरीके में भारी बदलाव आया। भारत और पाकिस्तान पीछे रह गए क्योंकि की कमी के कारण टर्फ को जल्दी स्थापित नहीं कर सके।" महासंघ ने भी मैदान पाने के लिए केवल आधे-अधूरे प्रयास किए और भारत 80 के दशक में अप सिंथेटिक सतह (एस्ट्रोटर्फ) स्थापित कर सका।

अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ी जगबीर सिंह का कहना है कि जब तक भारतीय खिलाडियों ने एस्ट्रो-टर्फ पर खेलने की कला में महारत हासिल की, तब तव बहुत आगे बढ़ चुकी थी। "100 मीटर दौड़ में अगर आप 10 मीटर पीछे से शुरू करते हैं तो आप प्रथम आने की उम्मीद नहीं कर सकते। यह अंतर इतना बड़ इसे तुरंत नहीं भरा जा सकता था।" यह एक नया खेल है, आज हॉकी व्यक्तिगत कौशल के बजाय तेज, और अधिक फिटनेस और रणनीति-उन्मुख हो गई है। नियमों में बदलाव के साथ, खेल आज इस स्तर पर है कि अगर ध्यानचंद जी मैदान पर कदम रखते, तो वो इसे पहचान नहीं पाते'।[10]

जफर, जिन्होंने खुद घास के मैदान से एस्ट्रो-टर्फ तक जाने के संघर्ष का अनुभव किया, कहते हैं कि भारतीयों के लिए बदलाव मुश्किल था। "एस्ट्रो-टर्फ आपको वास्तव में घास की तुलना में 2-3 गुना अधिक सहनशक्ति की आवश्यकता होती है, " वे कहते हैं "हॉकी स्टिक्स को भी बदलना पड़ा, खासकर उसर (कर्व) को। निश्चित रूप से यूरोपीय लोगों को भी इसी तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा था, लेकिन उन्होंने पहले ही एस्ट्रो-टर्फ का इस्तेमाल शुरु क था। उनके पास बेहतर शोध और विकास के साधन उपलब्ध थे। हालांकि भारतीय कुछ समय के लिए अपनी पकड़ बनाने में कामयाब रहे, लेकिन वे महत्त्वपूर्ण तकनीकी रूप से कमजोर दिखाई दिए और यूरोपीय टीमों से हारते चले गए। हालांकि शुरुआत में फिटनेस की कमी मुख्य समस्या थी। जगबीर कहते हैं कि हमारे खिलाड़ी यूरोपियनों की तरह फिट हैं। हालांकि, वे कम सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं क्योंकि वे गेंद के साथ बहुत अधिक दौड़ते हैं और ऑफ-द-बॉल रा वन-टच पासिंग नहीं करते हैं"।[11]

जगबीर का कहना है "व्यक्तिगत रूप से, हमारे खिलाड़ियों के पास किसी भी यूरोपीय टीम में जगह बनाने का कौशल है। लेकिन जब रणनीति की ब है तो हमारे खिलाड़ी पिछड़ जाते हैं। हमें उस पर काम करने की जरूरत है" आज भी प्रारंभिक स्तर के कोच, गेंद से ड्रिब्लिंग और बाल के साथ दौड़ने प केंद्रित करते हैं। ट्रैपिंग, पासिंग और फिटनेस को कम महत्त्व देते हैं। यही कारण है कि हम देखते हैं कि खिलाड़ी सब-जूनियर स्तर पर भी विरोधियों की भीड़ ड्रिबल करने की कोशिश करते हैं।

प्रसिद्ध कोच पी.ए. राफेल कहते हैं- "हम युवाओं को आक्रामक हॉकी खेलना सीखाते हैं, लेकिन आक्रमण की योजना नहीं बनाई जाती है। लड़के गेंद करने से कतराते हैं। खिलाड़ी कम उम्र में बुनियादी खामियां विकसित कर लेते हैं, जिन्हें राष्ट्रीय शिविर में ठीक नहीं किया जा सकता है।"[12]

सिस्टम के पुनर्निर्माण से भारतीय हॉकी टीम का उत्थान संभव - भूतपूर्व भारतीय हॉकी कोच राफेल ने कोचिंग सिस्टम में बदलाव और कम उम्र से प्रशिक्षण, खिलाड़ियों को ऐसी तकनीकें सीखाने की सलाह दी है जो उन्हें आधुनिक हॉकी में जीवित रहने में मदद करेगी। वे कहते हैं, हम अभी भी एक ऐसे प्र कायम हैं, जो एस्ट्रो-टर्फ के लिए बहुत अनुकूल नहीं है, हमें एक नई प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है जो एशियाई कौशल को यूरोपीय हार्ड रनिंग जोड़ती है।" अन्य प्रसिद्ध कोच भी एक बेहतर कोचिंग संरचना, एक नियमित घरेलू कैलेंडर, बेहतर स्पोर्ट्स मेडिसिन बैकअप और अधिक एस्ट्रो-टर्फ की करते हैं'।(13)

'इन परिवर्तनों को लाने के बजाय, जिन लोगों को खेल चलाने का काम सौंपा गया है, वे एक लंगड़े घोड़े को कोड़े मार रहे हैं, इस उम्मीद में कि यह कि ठीक हो जाएगा और दौड़ना शुरू कर देगा'।(14)

इस बार टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय हॉकी टीम मनप्रीत सिंह की कप्तानी में खेलने उतरी और जिस जज्बे से खेली उसको देख कर लगा की भारत की गौरव गाथा फिर से लिखी जाएगी। भारतीय हॉकी टीम के स्वर्णिम इतिहास और खिलाड़ियों के जोश को देखकर लगता है कि भारत एक बार फिर हॉकी में उम्मीद पर खरा उतरेगा और ओलम्पिक में स्वर्ण पदक लाएगा।

सन्दर्भ :

1.अजमेर सिंह, जगदीश बैस आदि, *शारीरिक शिक्षा तथा ऑलम्पिक अभियान* कल्याणी पब्लिकेशन-नई दिल्ली-2018, पृ. 920

2.वही, पृ. 923

3.सुरेन्द्र श्रीवास्तव, *हॉकी खेल और नियम* प्रभात प्रकाशन-2015, पृ. 217

4. https://www.aajtak.in/interactive/immersive/indian-hockey-olympics-gold-medals-history/

5. वही, https://www.aajtak.in

6.वही, https://www.aajtak.in

7. वही, https://www.olympic.com/hi/featured-news

8.वही, https://www.aajtak.in

9. सुरेन्द्र श्रीवास्तव, *हॉकी खेल और नियम* प्रभात प्रकाशन-2015, पृ. 228

10. B Shrikant, How we lost the turf war, Hindustan Times Aug 30, 2007(हिंदी अनुवाद)

11. वही, B Shrikant, How we lost the turf war (हिंदी अनुवाद)

12. वही, B Shrikant, How we lost the turf war (हिंदी अनुवाद)

13. वही, B Shrikant, How we lost the turf war (हिंदी अनुवाद)

14 वही, B Shrikant, How we lost the turf war (हिंदी अनुवाद)

श्याम लाल सिंह यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
शारीरिक शिक्षा, सकलडीहा पी.जी. कालेज, सकलडीहा
yshyam87@gmail.com, 9455223520

अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati) अंक-41, अप्रैल-जून 2022 **UGC Care Listed Issue**

सम्पादक-द्वय : माणिक एवं जितेन्द्र यादव, चित्रांकन : सत्या सार्थ (पटना)

Tags 41 इतिहास खेल शोध श्याम लाल सिंह यादव UGC Care Listed Issue

शेयर करें

LINKS TO THIS POST

POST A COMMENT

टिप्पणी डालें

‹ और नया

यह 'अपनी माटी संस्थान' चित्तौड़गढ़ (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013) द्वारा संचालित और UGC Care List Approved त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अपनी माटी' है जिसका ISSN नंब 2322-0724 Apni Maati है। कला, साहित्य, रंगकर्म, सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार, आलेख सहित तमाम विधाओं में समाज-विज्ञान और साहित्य सं सम्बद्ध रचनाएँ छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है। कथेतर साहित्य छापने में हमारी रूचि है। यहाँ साल में चार सामान्य अंक प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा कभी-कभी विशेषांक भी छप हैं। यह गैर-व्यावसायिक और साहित्यिक प्रकृति का सामूहिक प्रयासों से किया जाने वाला कार्य है। हमारा पता 'कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड़, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान' है। अन्य जरूरी प्रश्न हो तो 9460711896 (Dr. Manik), 9001092806 (Dr. Jitendra Yadav) पर Only Watts App करके सम्पर्क कर सकते हैं, यहाँ कॉल पर बात नहीं होगी। हमारा ई-मेल पता apnimaati.com@gmail.com यह रहेगा। कुल जमा पत्रिका ठीकठाक है इसे बेहतर बनाने का जिम्मा लेखकों और पाठकों पर ही है।

Design by - Shekhar

आलेख : छात्र असन्तोष : नैतिक शिक्षा की आवश्यकता / डॉ. दयाशंकर सिंह यादव

Arjun Kumar शनिवार, जुलाई 31, 2021 0

अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati) अंक-35-36, जनवरी-जून 2021, चित्रांकन : सुरेन्द्र सिंह चुण्डावत

UGC Care Listed Issue 'समकक्ष व्यक्ति समीक्षित जर्नल' (PEER REVIEWED/REFEREED JOURNAL)

छात्र असन्तोष : नैतिक शिक्षा की आवश्यकता / डॉ. दयाशंकर सिंह यादव

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भारत में जितने भी परिवर्तनकारी सामाजिक आंदोलन हुए, उनमें छात्रों की भूमिका प्रमुख रही है। महात्मा गांधी के आह्वान पर लाखों छात्रों ने अंग्रेजी सरकार द्वारा स्थापित स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को छोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। भारत में छात्र-असन्तोष दो चरणों में देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद का छात्र असंतोष। भारत में छात्र आंदोलन का प्रारम्भ 1848 में दादाभाई नौरोजी के स्टूडेंट्स साइंटिफिक एंड हिस्टोरिक सोसाइटी की स्थापना से माना जाता है। भारतीय इतिहास में पहली बार 1913 में छात्रों ने किंग एडवर्ड मेडिकल कॉलेज, लाहौर में अंग्रेजी छात्रों और भारतीयों के बीच अकादमिक भेदभाव के विरोध में हड़ताल की थी। असहयोग आंदोलन में भारतीय छात्रों ने प्रतिभाग किया। हिंदू छात्र संघ (एचएसएफ) 1936 में आरएसएस की विचारधारा के साथ शुरू हुआ था। मुस्लिम लीग ने 1937 में मुस्लिम छात्रों की शिकायतों को हल करने के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम छात्र संघ की स्थापना की थी। दोनों छात्र संगठनों ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना उचित नहीं समझा। असहयोग आंदोलन के बाद, भारत छोड़ो आंदोलन को भारतीय छात्रों का समर्थन मिला। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना 1949 में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य की दिशा में छात्र शक्ति को जुटाने के लिए की गयी थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की छात्र सक्रियता एआईसीसी की युवा शाखा द्वारा की जाती थी।

स्वतंत्रता के बाद **छात्र आंदोलनों की पड़ताल**

स्वतंत्रता के बाद अधिकांश छात्र आंदोलन स्थानीय स्तर पर राजनेताओं के राजनीतिक हथियार बन कर रह गए है। आचार्य नरेन्द्र देव ने लिखा था कि जब कोई राजनैतिक दल सत्ता प्राप्त कर लेता है तो सबसे पहले वह उन संघर्षशील तत्वों को समाप्त करने का प्रयास करता है जिन्होंने उसकी सत्ता प्राप्ति में सहायता की हो। लेकिन कुछ मामलो में छात्रों की उपस्थिति ने सामाजिक परिवर्तन को गति दी जैसे- आपातकाल के दौरान हुए आन्दोलन इत्यादि।

अखिल भारतीय युवा संघ की स्थापना-

1959 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने युवा पीढ़ी के प्रगतिशील और लोकतांत्रिक खंड के लिए एकजुट मंच के रूप में की थी। छात्रों की एकरूपता ने इसे और भी क्रांतिकारी बना दिया था। **भारतीय छात्र संघ (S.F.I.)** 1970 में सीपीआई (एम) ने छात्रों को एक लोकतांत्रिक और प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली से लड़ने के लिए, छात्र समुदाय के उन्नति और सुधार के लिए स्थापना की। **नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया (NSUI)** की स्थापना 9 अप्रैल 1971 को एक राष्ट्रीय छात्र संगठन बनाने के लिए केरल स्टूडेंट्स यूनियन और पश्चिम बंगाल राज्य छत्र परिषद के विलय के बाद इंदिरा गांधी ने की थी।

आपातकाल के दौरान-

1974 में छात्र आन्दोलन आपातकाल के विरोध में शुरू हुआ। इसी दौरान अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और समाजवादी छात्रों ने पहली बार एकजुट हो कर **छात्र संघर्ष समिति** का गठन कर आपातकाल का विरोध किया। जिसके लालू प्रसाद यादव अध्यक्ष चुने गए थे और सुशील कुमार मोदी महासचिव चुने गए थे। आपातकाल के विरोध प्रदर्शन के दौरान बहुत से छात्रों को बेरहमी से पीटा गया और उनको जेल में बंद कर दिया गया था। नेतृत्व विहीन आपातकाल आन्दोलन को नई ऊर्जा देने के लिए जय प्रकाश नारायण को छात्रों द्वारा आमंत्रित किया गया और उसके बाद उन्होंने 'सम्पूर्ण क्रांति' का नारा दिया। 18 मार्च 1974 को जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में पटना में छात्र आंदोलन की शुरूआत हुई थी। जो देश भर में जेपी आंदोलन के रूप में जाना गया।

वर्तमान दौर का आन्दोलन-

वर्तमान दौर में छात्र राजनीति विचारधाराओं में सिमट कर रह गयी है। छात्र राजनीती छात्रों के कल्याण के लिए नहीं बल्कि राजनीतिक संगठनों के गुलाम होते जा रहे है। **वर्तमान दौर** की छात्र राजनीति में धार कुंद हो गयी है। **अखिल भारतीय छात्रसंघ** की स्थापना सीपीआई (एमएल) ने 1990 में की थी। बदलते वक़्त ने छात्रों की राजनीति और आन्दोलन के स्वरुप को ही बदल डाला। शुरूआती छात्र आंदोलन स्कूलों, पाठ्यक्रमों और शैक्षिक धन पर केंद्रित था; फिर उनका झुकाव भारत की आजादी के संघर्ष की ओर स्थानांतरित हुआ और अब ये केवल राजनैतिक संगठनो के हाथो की कठपुतली बन कर रह गए है। रिक वेइसबोरड ने अपने 'मोरल टीचर्स, मॉरल स्टूडेंट्स' लेख में लिखा है कि "शिक्षक छात्रों के नैतिक विकास को केवल अच्छे रोल मॉडल होने से प्रभावित करते हैं लेकिन यह भी कि वे दिन-प्रतिदिन छात्रों के साथ अपने रिश्तों में क्या प्रोग्राम लाते हैं।" देश के नवयुवक राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते हैं। स्वस्थ नवयुवक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इन युवकों से ही देश की वास्तविक पहचान होती है। यदि देश के नवयुवकों में चारित्रिक दृढ़ता व नैतिक मूल्यों का समावेश है तथा वे बौद्धिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण हैं तो निस्संदेह हम एक स्वस्थ एवं विकसित राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं परंतु यदि हमारे युवकों की मानसिकता रुग्ण है अथवा उनमें नैतिक मूल्यों का अभाव है।

युवा वर्ग की मानसिकता, उनकी मन:स्थिति व उनकी वर्तमान परिस्थितियों का आकलन करें तो हम पाते हैं कि उनमें से अधिकांश अपनी वर्तमान परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं हैं। अधिकतर छात्र जीविका पाने के उद्देश्य से शिक्षा प्राप्त करते हैं, इसलिए जब उन्हें अनुकूल शिक्षा नहीं मिल पाती या उचित शिक्षा नहीं मिल पाती तो उनमें आक्रोश पनपने लगता है जिसे वह अपने अपने तरीके से व्यक्त करने लगते हैं। आज विद्यार्थी बिना सोचे-समझे शिक्षा लेकर महाविद्यालय विश्वविद्यालय से बाहर आकर बेरोजगारों की पंक्ति में खड़े हैं। छात्रों को अपने अनिश्चित भविष्य को लेकर असंतोष फैल रहा है। छात्र असंतोष एक ऐसी परिस्थिति है जिनका सामना अधिकतर विद्यार्थी अपने शैक्षणिक सत्र के दौरान करते रहते है। कभी विद्यार्थी अपने शिक्षकों के असहनीय बर्ताव का शिकार होते है, तो कभी पाठ्यक्रम को ऐसा तैयार किया जाता है जो विद्यार्थी अनुकूल नहीं होता है। जिनके कारण आए दिन विद्यार्थियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई बार शिक्षक अपने ज्ञान के प्रभाव में विद्यार्थियों के विचारों को अनसुना कर देते हैं, साथ ही उनका तिरस्कार किया जाता है। यही तिरस्कार धीरे-धीरे विद्यार्थियों में विरोध पैदा करता है जिसका परिणाम हड़ताल, प्रदर्शन, हिंसात्मक घटनाएँ, परीक्षाओं का बहिष्कार, में बदल जाता है ।

देश के युवा वर्ग में बढ़ते असंतोष के अनेक कारक हैं। जब युवाओं के हुनर का कोई राष्ट्र समुचित उपयोग नहीं कर पाता है तब युवा असंतोष मुखर हो उठता है। कुछ तो हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियाँ इसके लिए उत्तरदायी हैं तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटिपूर्ण राष्ट्रीय नीतियों एवं दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का भी है। कुछ अध्यापक जो जुगाड़ से या गलती से अध्यापक बन जाते हैं अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते जिससे छात्रों का मार्गदर्शन सही तरीके से नहीं हो पाता। स्कूलों में शिक्षक और विद्यार्थी का अनुपात में भी बड़ा अंतर दिखता है। परीक्षा पद्धति असफल हो रही है। ईजी नोट्स पढ़कर छात्र किसी तरह पास हो जाते हैं । छात्रों के असंतुष्ट रहने के कई कारण हो सकते है। सबसे प्रमुख कारण हमारे देश में भाषा, धर्म, जाति, वंश, लिंग, आयु आधारित भेदभाव एवं अनेक अन्धविश्वास अभी भी विद्यमान हैं। छात्र आजकल की राजनीति, फैशन, ग्लैमर, फिल्म, मनोरंजन, अपराध के प्रति आकर्षण इत्यादि में अधिक है। साथ ही जब सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त विरोधाभास, राजनीति से उत्पन्न भ्रष्टाचार व आर्थिक असमानताओं के कारण सभी व्यक्तियों में देश एवं समाज के प्रति मोहभंग हो जाता है तो वह किसी न किसी रूप में विद्रोही हो ही जाता है, तो ऐसी स्थिति में युवाओं से ही क्यों आशा की जाती है कि वे ही पारम्परिक नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुसार चलें।

युवाओं की छवि हमेशा से आक्रामक रही है। उन्हें उत्तेजक, फुर्तीला, बागी मिजाज माना जाता रहा है। प्रत्येक गलत अथवा सही कार्य के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में असन्तोष है तो उसे छात्र-आन्दोलन की समस्या के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है अपितु जब सम्पूर्ण देश में शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश, पाठ्यक्रमों, परीक्षा-प्रणाली और शैक्षिक-समितियों में प्रतिनिधित्व आदि सामूहिक मामलों पर कुंठित होते हैं कि युवाओं में असन्तोष की समस्या है। युवाओं द्वारा व्यक्त किये जाने वाले असन्तोष एवं आन्दोलन के पीछे भी अनेक कारण हैं। युवाओं के आन्दोलनों को नियन्त्रित किया जा सकता है। परस्पर सहयोग, सद्भावना, सहिष्णुता, आदर, प्रेम, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों को युवाओं में पैदा करने की आवश्यकता है, तभी देश का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास समन्वित रूप से हो सकता है। छात्र-असंतोष के जिम्मेदार न केवल छात्र बल्कि अध्यापक व अधिकारी एवं सरकार भी हैं। अत: युवाओं में इन उत्तेजनापूर्ण आन्दोलनों को नियन्त्रित एवं कम करने के लिए माता-पिताओं, शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षकों, नीति निर्माताओं और शैक्षिक-प्रशासन व्यवस्था आदि सभी का पर्याप्त सहयोग अति आवश्यक है ताकि उनके अन्दर आशा, विश्वास, उत्साह, साहस की भावना पैदा हो सके। उनकी कक्षाओं में मूल्य शिक्षा का समावेश किया जाए। आज उच्च शिक्षा में नवाचार आधारित कक्षा-शिक्षण का अभाव पाया जा रहा है, नैतिक और मूल्य शिक्षा आधारित अध्यापन-विज्ञान का समावेश रूढ़िवादी मान लिया गया है, जबकि उच्च शिक्षा की कक्षाओं में मूल्य शिक्षा आधारित अध्यापन का समावेश किया जाना नितांत आवश्यक है, डगलस सुप्रका ने मूल्य शिक्षा के लिए आठ अलग-अलग दृष्टिकोणों की व्याख्या की है-

1. निकासी दृष्टिकोण-

छात्रों को बिना सोचे-समझे या बिना किसी हिचकिचाहट के स्वतंत्र रूप से, गैर तर्कसंगत विकल्प बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह एक ऐसा वातावरण प्रदान करता है जो छात्रों के लिए अधिकतम स्वतंत्रता की अनुमति देता है और एक उत्तेजक स्थिति प्रदान करता है, जिसके लिए सहज प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती हैं।

2. उत्थान दृष्टिकोण-

छात्रों को विशिष्ट वांछित मूल्यों के अनुसार कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता है । शिक्षक द्वारा एक सकारात्मक और नकारात्मक सुदृढीकरण मूल्य वृद्धि में मदद करता है। यह एक शिक्षक के प्राकृतिक कार्यों और प्रतिक्रियाओं द्वारा किया जा सकता है।

3. जागरूकता दृष्टिकोण-

यह दृष्टिकोण छात्रों को जागरूक होने और अपने स्वयं के मूल्यों की पहचान करने में मदद करता है। इस प्रकार छात्र खुद को और दूसरों के विचारों, भावनाओं, विश्वासों या व्यवहार से मूल्यों के बारे में अनुमान लगाने की प्रक्रिया में खुद को संलग्न करते हैं ।

4. नैतिक तर्क दृष्टिकोण-

कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के छह चरणों का सिद्धांत इस दृष्टिकोण में सबसे अधिक बार उपयोग किया जाने वाला ढांचा है। शिक्षकों ने सीखने के अनुभवों को स्थापित किया जो नैतिक विकास की सुविधा प्रदान करेगा। ये अनुभव कोहलबर्ग की भूमिका की सामान्य श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। भूमिका लेने में महत्वपूर्ण कारक सहानुभूति है। खुद को एक भूमिका में रखने और निर्णय लेने की प्रक्रिया का अनुभव करने के माध्यम से, छात्र अपने एकल दृष्टिकोण की तुलना में एक बड़े ढांचे में नैतिक निर्णय देखना शुरू कर सकते हैं। इसमें एक दुविधा की चर्चा करने वाले छात्र होते हैं और तर्क के द्वारा वे उच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

5. विश्लेषण दृष्टिकोण-

समूह या व्यक्तियों को सामाजिक मूल्य समस्याओं का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्हें मूल्य प्रश्नों को स्पष्ट करने और संघर्ष में मूल्यों की पहचान करने के लिए कहा जाता है।

6. मूल्य स्पष्टीकरण-

यह छात्रों को व्यक्तिगत व्यवहार पैटर्न की जांच करने और मूल्यों को वर्गीकृत करने और वास्तविक बनाने के लिए तर्कसंगत सोच और भावनात्मक जागरूकता दोनों का उपयोग करने में मदद करता है।

7. प्रतिबद्धता दृष्टिकोण-

यह छात्रों को न केवल निष्क्रिय रिएक्टरों के रूप में या स्वतंत्र व्यक्तियों के रूप में बल्कि एक सामाजिक समूह और प्रणाली के आंतरिक-सापेक्ष सदस्यों के रूप में खुद को महसूस करने में सक्षम बनाता है।

8. केंद्रीकृत दृष्टिकोण-

इसका उद्देश्य छात्रों को स्वयं को समझने और अलग-अलग अहंकार के रूप में नहीं बल्कि एक बड़े अंतर-संबंधित मानव-जाति, दुनिया, ब्रह्मांड के हिस्से के रूप में कार्य करना है।

जॉन सी॰ डाल्टन और पामेला सी॰ क्रॉस्बी ने नैतिक और मूल्य शिक्षा के लिए दस गतिविधियाँ दी हैं, जो निम्नलिखित हैं:-

1. सामुदायिक सेवा और सेवा सीखना-

कुछ कक्षा की गतिविधियाँ छात्रों को दूसरों की समझ और स्वयं को गहरा करने और सामुदायिक सेवा गतिविधियों में भागीदारी के रूप में नैतिक प्रतिबिंब को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत सारे समृद्ध अवसर प्रदान करती हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं और चुनौतियों के संपर्क में लाती हैं। बहुत सारी सामुदायिक सेवा गतिविधियाँ हैं; जिनमें कुछ निम्न हैं:- चैरिटी में हिस्सा लें, स्थानीय गैर-लाभार्थी संगठन में स्वयंसेवक, एक कपड़े/ड्राइव का आयोजन, एक राष्ट्रीय दिवस में भाग लें, जन्मदिन या दीवाली, ईद या क्रिसमस में उपहार के बजाय धर्मार्थ दान के लिए पूछें, पैसे दान करें, आपके पास उपलब्ध एक कौशल को अन्य में विकसित करने के लिए कक्षायें सिखाएं, अपने खेल के मैदान को साफ करें, पेड़, फूल या अन्य पौधे लगाएं, अपने स्थानीय पुस्तकालय में स्वयंसेवक बनें, राजमार्ग के एक खंड को अपनाएं और इसे नियमित रूप से साफ करें आदि।

2. आध्यात्मिक गतिविधियाँ-

अधिकांश स्नातक छात्रों के लिए कॉलेज का समय स्वयं की खोज, पहचान विकास और निर्णय लेने का समय होता है। छात्रों द्वारा अर्थ और उद्देश्य की यह आवक खोज अक्सर आध्यात्मिक संदर्भ में तैयार की जाती है। आध्यात्मिक गतिविधियाँ छात्रों को उनके आंतरिक जीवन का पता लगाने और पूर्णता और एकीकृत जीवन की भावना का पता लगाने में मदद कर सकती हैं।

3. नेतृत्व शिक्षा-

कॉलेज के छात्रों के बीच नेतृत्व कार्यक्रमों की लोकप्रियता और नेतृत्व की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के लिए नैतिक विचारों के आंतरिक कनेक्शन, नेतृत्व शिक्षा को नैतिक और चरित्र विकास के लिए एक शक्तिशाली मंच बनाते हैं।

4. विविधता शिक्षा-

विविधता शिक्षा मानव अंतर की समझ और सराहना को बढ़ावा देने के लिए कॉलेजों और विश्वविद्यालयों द्वारा उपयोग की जाने वाली एक बहुत ही लोकप्रिय शैक्षिक रणनीति का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी शिक्षा के केंद्र में नैतिक मूल्यों और व्यवहारों का विकास होता है जैसे कि दूसरों के लिए सम्मान, सहिष्णुता, निष्पक्षता और सहानुभूति और समुदाय और समाज के सकारात्मक पहलू के रूप में बहुलवाद की स्वीकृति।

5. सहकर्मी सलाह और नेतृत्व-

कुछ चीजें छात्रों को जिम्मेदारी, दूसरों की समझ और स्वयं-जागरूकता को सलाह देने और अग्रणी लोगों की जिम्मेदारी के रूप में सिखाती हैं। कॉलेज की स्थापना में, छात्रों को सहकर्मी सलाहकार और नेता के रूप में काम करने के लिए कई अवसर उपलब्ध हैं और ये भूमिकाएं शक्तिशाली नैतिक विकास के अनुभव प्रदान कर सकती हैं, खासकर यदि वे चर्चा के अवसर शामिल करते हैं। सहकर्मी सलाह, बहुमुखी प्रतिभा सहित कई फायदे प्रदान करता है, पहले से मौजूद शैक्षणिक सलाह देने वाले कार्यक्रमों के साथ संगतता, छात्र की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशीलता और समय और स्थानों को सलाह देने की सीमा और दायरे का विस्तार करने की क्षमता जब आमतौर पर सलाह उपलब्ध नहीं होती है।

6. अनुशासनात्मक और न्यायिक कार्यक्रम-

कई कॉलेज के छात्र संस्थागत नियमों और विनियमों के उल्लंघन के परिणामस्वरूप कॉलेज की अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं में भाग लेंगे। नए छात्र कॉलेज के नियमों के सबसे अक्सर उल्लंघन करने वालों में से हैं, जो व्यवहार के कारण उन्हें छात्र आचरण नियमों के साथ संघर्ष में लाते हैं। जब शैक्षिक उद्देश्यों के लिए संगठित और प्रशासित किया जाता है, तो कॉलेज के अनुशासनात्मक प्रक्रिया कॉलेज के छात्रों को उनके व्यवहार के नैतिक और सामाजिक परिणामों को प्रतिबिंबित करने और उनके द्वारा किए जाने वाले निर्णयों के लिए अधिक व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने में मदद करने में बहुत उपयोगी हो सकती है।

7. छात्र शासन संगठनों और गतिविधियों में भागीदारी-

छात्र अक्सर स्वयं कर के सीखते हैं, और परिसर के जीवन के कुछ क्षेत्र हैं जहां छात्रों को स्वतंत्रता और स्व-शासन के लिए अधिक जिम्मेदारी दी जाती है जैसे कि छात्र सरकार, निवास हॉल सरकार, छात्र क्लब और संगठन और अन्य छात्र गतिविधियों जैसी गतिविधियों में। इन नेतृत्व भूमिकाओं में छात्रों के पास संस्थागत शासन में साझा करने के लिए कार्यक्रम, नीतियां और प्रक्रियाएँ बनाने के कई अवसर हैं।

8. आनंदप्रद कोचिंग

मनोरंजन आज के कॉलेज के छात्रों की सबसे लोकप्रिय गतिविधियों में से एक है। हजारों छात्र कोच, रेफरी, व्यक्तिगत प्रशिक्षक, न्यायाधीश और छात्र मनोरंजक गतिविधियों और खेलों की एक विशाल सरणी के नेताओं के रूप में कार्य करते हैं। इन भूमिकाओं में छात्र संघर्षों की मध्यस्थता करते हैं, निष्पक्ष खेलने की सुविधा देते हैं, प्रतिक्रिया और सलाह प्रदान करते हैं और अपने साथियों की सहायता और मार्गदर्शन करते हैं ।

9. छात्र गतिविधियाँ

छात्र गतिविधियों को अक्सर छात्र मनोरंजन के रूप में माना जाता है, इन कैंपस गतिविधियों के बारे में बहुत कुछ है जो नैतिक और नागरिक शिक्षा को प्रोत्साहित करते हैं। कला, राजनीति और मनोरंजन के कार्यक्रम में महत्वपूर्ण नेताओं को परिसर में लाते हैं। छात्र दीर्घाएं छात्रों, शिक्षकों, पूर्व छात्रों और पेशेवर कलाकारों की कलात्मक कृतियों को प्रदर्शित करती हैं। शिल्प कार्यक्रम छात्रों को प्रतिभा विकसित करने और रचनात्मक प्रक्रिया का पता लगाने के अवसर प्रदान करते हैं। कॉफी हाउस, खुले माइक कार्यक्रम, और चर्चा राउंड-टेबल्स छात्रों को वर्तमान विषयों और मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के अवसर प्रदान करते हैं।

10. घुमक्कड़ जिज्ञासा-

यात्रा कैंपस रूटीन और दायित्वों से एक अस्थायी राहत प्रदान करती है और मस्ती और दोस्ती के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। कॉलेज के छात्र लंबी पैदल यात्रा, कैंपस कैनोइंग, पर्वतारोहण जैसी ऑफ-कैंपस साहसिक यात्राओं में भाग लेते हैं। कुछ प्रकार की यात्रा में छात्रों को नए अनुभव प्रदान करने की क्षमता होती है जो आत्म-परीक्षा को उत्तेजित करते हैं और उन्हें उन तरीकों से खुद को चुनौती देने का कारण बनते हैं जो वे परिसर स्थापना के अन्तर्गत में नहीं कर सकते हैं। यात्रा का हमेशा मानवीय मूल्यों और समझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

निष्कर्ष-

आज शिक्षा में छात्र-असन्तोष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, हम समस्या का समाधान अधिकतर लोग बाहर से ही खोजते हैं साथ ही नैतिक और मूल्य प्रेरित शिक्षा के स्थान पर भौतिक सामग्री आधारित कक्षा-शिक्षण को प्राथमिकता देते हैं, जो छात्र-असन्तोष को पूर्ण समाधान करने में असक्षम रहा है। आवश्यकता है जो बाहर से छात्रों पर न थोपी जाए बल्कि उनके अन्दर से प्रस्फुटित करते हुये, उसे पल्लवित व पुष्पित किया जाए। यह तभी सम्भव है जब नैतिक शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा आधारित पाठ्यक्रम सम्मिलित किया जाए। यही नैतिक और मूल्य परक शिक्षा का समावेश उच्च शिक्षा में छात्र-असन्तोष का उचित व पूर्ण समाधान करने में सक्षम होगा एवं छात्र अपने अन्दर सर्वांगीण विकास कर, राष्ट्र को महत्वपूर्ण योगदान दे पाएगा। तभी युवा-शक्ति, राष्ट्र-शक्ति। छात्र-शक्ति, राष्ट्र-शक्ति चरितार्थ हो पायेगा।

सन्दर्भ-

1 सिंह, डॉ. देवी प्रसाद (1984): ''हिन्दू समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया (700 ई. से 1200 ई. तक)''; पूर्वा संस्थान, गोरखपुर।

2 मित्तल, डॉ. ए. के. (1980): ''भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1526 ई. से 1950 ई. तक)''; साहित्य भवन, आगरा।

3 रोकेयाच, एम. (1973). द नेचर ऑफ ह्यूमन वैल्यूस, न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस

4 कोहलबेर्ग, एल. (1981). एसेस ऑन मॉरल डेवेलोपमेंट, सन फ्रान्सिस्को: हार्पर एंड रो

5 कुर्टिन्स, डब्ल्यू. और ग्रीफ, ई.बी. (1974). द डेवोलोपमेंट ऑफ मॉरल थॉट: रिवियू एंड इवैल्यूएशन ऑफ कोहलबेर्ग अप्रोच, साइकोलॉजिकल बुलेटिन 81.,453 -470

6 गावन्दे, ई. एन. (2004). वैल्यू ओरिएंटेड़ एडुकेशन, न्यू डेलही: सरूप एंड संस

7 सुपरका, डगलस और अन्य (1976). वैल्यूज एजुकेशन सोर्सबुक: कॉन्सेप्चुअल अप्रोच, मैटेरियल्स एनालिसिस, एंड एन एनोटेटेड बिब्लियोग्राफी, वाशिंगटन, डी.सी.: नेशनल इंस्टीट्यूट, शिक्षा विभाग (डीएचईडब्ल्यू)।

8 योगिनी, एस बाराहते (2014). रोल ऑफ ए टीचर इन इंपार्टिंग वैल्यू, आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आईओएसआर-जेएचएसएस), पीपी 13-15। 10

डॉ दयाशंकर सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर - समाजशास्त्र

सकलडीहा पी. जी. कालेज, सकलडीहा, चंदौली

sambadindia@gmail.com 9452302015

Tags छात्र असन्तोष डॉ. दयाशंकर सिंह यादव नैतिक शिक्षा की आवश्यकता शिक्षा UGC Care Listed Issue

शेयर करें

LINKS TO THIS POST

सभी देखें

POST A COMMENT

टिप्पणी डालें

‹ और नया

पुराने ›

यह 'अपनी माटी संस्थान' चित्तौड़गढ़ (पंजीयन संख्या 50 /चित्तौड़गढ़/2013) द्वारा संचालित और UGC Care List Approved त्रैमासिक ई-पत्रिका 'अपनी माटी' है जिसका ISSN नंबर 2322-0724 Apni Maati है। कला, साहित्य, रंगकर्म, सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार, आलेख सहित तमाम विधाओं में समाज-विज्ञान और साहित्य से सम्बद्ध रचनाएँ छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है। कथेतर साहित्य छापने में हमारी रुचि है। यहाँ साल में चार सामान्य अंक प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा कभी-कभी विशेषांक भी छपते हैं। यह गैर-व्यावसायिक और साहित्यिक प्रकृति का सामूहिक प्रयासों से किया जाने वाला कार्य है। हमारा पता 'कंचन-मोहन हाऊस,1, उदय विहार, महेशपुरम रोड़, चित्तौड़गढ़-312001,राजस्थान' है। अन्य जरूरी प्रश्न हो तो 9460711896 (Dr. Manik), 9001092806 (Dr. Jitendra Yadav) पर Only Watts App करके सम्पर्क कर सकते हैं, यहाँ कॉल पर बात नहीं होगी। हमारा ई-मेल पता apnimaati.com@gmail.com यह रहेगा। कुल जमा पत्रिका ठीकठाक है इसे बेहतर बनाने का जिम्मा लेखकों और पाठकों पर ही है।

Design by - Shekhar फॉण्ट कन्वर्टर भक्ति विशेषांक रेणु विशेषांक मीडिया विशेषांक किसान विशेषांक तुलसीदास विशेषांक शिक्षा विशेषांक प्रतिबंधित साहित्य विशेषांक

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक

डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श

डॉ. रमा

संपादक

डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग

रीमा प्रजापति

आवरण चित्र

अंकीता चौहान

ले-आउट

हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय

मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार

एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता

आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण

हरिन्द्र तिवारी

हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
बेवसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- **'कब होगी वह भोर... :** *डॉ. जी. वी. रत्नाकर* 3
- **अभिशप्त जीवन–'दोहरा... :** *वंदना एस.* 6
- **शिक्षक शिक्षा का विकास... :** *संजय यादव* 13
- **गोरख पांडेय की कविता में जनचेतना :** *प्रीति प्रसाद* 16
- **ज्ञान प्रकाश विवेक के उपन्यास... :** *इंदु रानी* 19
- **हिंदी दलित कथा साहित्य... :** *एल. अनिल* 22
- **'स्वर्ग की अदालत' का नाटक... :** *तितिक्षा जी वसावा* 25
- **'कुमारजीव' : जीवन के ध्येय... :** *कुमार सौरभ* 28
- **भारतीय समाज में तृतीय लिंगी... :** *हेमंत यादव* 31
- **'रागदरबारी' की भाषा में... :** *डॉ. शिप्रा श्रीवास्तव 'सागर'* 34
- **मितभाषण : भावनाओं के... :** *मुनि कुमार श्रमण* 37
- **एक बहुआयामी व्यक्तित्व... :** *डॉ. सुमन फुलारा* 45
- **साहित्य और विभाजन : संदर्भ... :** *निधि वर्मा* 47
- **नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में... :** *अजय कुमार* 51
- **मृणाल पाण्डे के सांस्कृतिक... :** *आलोक कुमार तिवारी* 55
- **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के... :** *अमित कुमार दूबे* 58
- **मीनाक्षी स्वामी के उपन्यासों... :** *विजय कुमार पाल* 61
- **'हरित मानव की तलाश' :** *बिजीना टी.* 65
- **विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की साहित्य... :** *डॉ. जगदीश* 68
- **महादेवी वर्मा का नारी चिंतन :... :** *डॉ. सुनीता शर्मा* 74
- **अज्ञेय के कथा-साहित्य में... :** *डॉ. सुरेंद्र शर्मा* 77
- **एकांत के आख्यान को रचती... :** *कार्तिक राय* 81
- **विनोबा भावे जी... :** *डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी* 84
- **मुंशी प्रेमचंद : आदर्शवाद से... :** *जितेंद्र शर्मा* 87
- **उषा प्रियंवदा के कथा... :** *कृपा शंकर* 91
- **हिंदी साहित्य में रसानुभूति... :** *कृपा शंकर* 95
- **चित्रा मुद्गल की कहानियों... :** *कृपा शंकर* 98
- **अमरकांत के कथा साहित्य में... :** *कृपा शंकर* 101
- **काशीनाथ सिंह की उपन्यासिक... :** *कृपा शंकर* 104
- **सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य... :** *ललिता देवी* 108
- **प्राथमिक शिक्षा में शिक्षा के ... :** *पीयूष कांती* 111
- **समाज के उन्नयन में अल्पसंख्यक... :** *अजीत कुमार मिश्र* 115
- **मंगलेश डबराल के काव्य... :** *सुरेश कुमार मिश्र* 117
- **बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की... :** *डॉ. सरोज राय* 120
- **रामनरेश त्रिपाठीजी के सृजन... :** *डॉ. अवनीश कुमार* 124
- **ललित निबंधों में समाज की... :** *प्रदीप कुमार तिवारी* 127
- **'थर्ड जेंडर' एवं उनका वर्गीकरण... :** *प्रियंका कलिता* 131
- **बद्री सिंह भाटिया के उपन्यास... :** *कुसुम देवी* 133
- **मध्यवर्ग के परिप्रेक्ष्य में तरसेम... :** *बलजिंदर कुमार* 136
- **धार्मिक शोषण का शिकार... :** *एन आर सेतु लक्ष्मी* 140

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

- पति-पत्नी के अहं के... : *स्नेहा शर्मा* 143
- नागार्जुन के साहित्यिक... : *संदीप कुमार* 146
- बाँसवाड़ा जिले... : *डॉ. सौरभ त्यागी-सुरभी दोषी* 148
- सम्मेलन पत्रिका... : *त्रिभुवन गिरि* 153
- बाणभट्ट की आत्मकथा... : *चंदन कुमार* 157
- अमरकांत की... : *अजीत कुमार पटेल* 160
- रामविलास शर्मा ... : *डॉ. अजीत सिंह* 163
- चित्रा मुद्‌गल के ... : *डॉ. अमिता तिवारी* 167
- विवेकी राय का... : *अनुपमा तिवारी* 170
- वर्तमान समय में हिंदी... : *डॉ. आशीष यादव* 173
- भारतेंदुयुगीन कविता... : *डॉ. भास्कर लाल कर्ण* 176
- भोजपुरी बारहमासा... : *भव्या कुमारी* 185
- नारी मुक्ति का छद्‌म : *डॉ. बीना जैन* 188
- हिंदी पत्रकारिता... : *डॉ. चयनिका उनियाल पंडा* 191
- लोकमानस के अनूठे... : *डॉ. छोटू राम मीणा* 194
- महामारी कोविड-19 के... : *डॉ. ऋषिपाल डॉ. ज्योति श्योराण, डॉ. जयपाल मेहरा डॉ. निधि जैन, सुश्री पल्लवी* 199
- योग : विश्व को... : *डॉ. दयाशंकर सिंह यादव* 203
- पूना पैक्ट की... : *डॉ. दीपक कुमार गुप्ता* 206
- लोकमान्य तिलक... : *डॉ. राजेश कुमार शर्मा* 209
- मानवतावादी व ... : *डॉ. संगीता शर्मा* 214
- वर्तमान परिपेक्ष्य में ... : *डॉ. शारदा देवी* 218
- संस्कृति के वाहक... : *डॉ. भारती बतरा* 222
- हरियाणवी सिनेमा... : *डॉ. जयपाल मेहरा* 226
- महादेवी वर्मा की... : *डॉ. गीता पांडेय* 229
- 'मानस' में उपलब्ध... : *डॉ. गीता कौशिक* 233
- साहित्य संबंधी प्रेमचंद... : *ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह* 236
- सावित्री बाई फुले... : *डॉ. हंसराज 'सुमन'* 241
- हिंदू धर्मशास्त्र और... : *डॉ. अमिष वर्मा* 244
- भूमंडलीकरण और... : *हुलासी राम मीना* 249
- हिंदी की आदिवासी... : *डॉ. जसपाल कौर* 253
- रामधारी सिंह... : *डॉ. जायदासिकंदर शेख* 256
- डॉ. रामविलास... : *डॉ. जितेश कुमार* 260
- वर्तमान पत्रकारिता... : *कामरान वासे* 263
- 'पद्‌मावत' में प्रेम... : *केदार मंडल* 267
- आदिवासी कविताओं... : *प्रो. खेमसिंह डहेरिया* 270
- क्षेत्रीय मौखिक परंपराओं... : *रंजन कुमार* 273
- अपने स्वत्व को खोजती... : *लक्ष्मी विश्नोई* 276
- श्रीलाल शुक्ल एक... : *सुधीर कुमार जोशी* 279
- आत्मनिर्भर महिलाओं के... : *डॉ. बिजेंद्र कुमार* 284
- श्यौराज सिंह बैचेन की... : *डॉ. मणिबेन पटेल* 287
- भारतीय समाज में... : *मनीष कुमार सिंह* 290
- आधुनिक इतिहास में... : *डॉ. मेघना शर्मा* 293
- राष्ट्रीय काव्यधारा में... : *निधि मिश्रा* 297
- निर्गुण संतों की... : *डॉ. प्रदीप कुमार'* 299
- दलित और दलित... : *डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह* 302
- भारत में भाषाई... : *ओमप्रकाश यादव* 305
- वैश्वीकरण और... : *प्रशांत कुमार सिंह* 309
- मानवीय संस्कृति को... : *डॉ. प्रवीण कुमार* 313
- कामाख्या शक्तिपीठ... : *डॉ. प्रीति बैश्य* 321
- 'मोहन राकेश की... : *प्रिया पाण्डेय* 324
- हिंदी गजल... : *डॉ. जियाउर रहमान जाफरी* 328
- भीष्म साहनी... : *डॉ. राम किंकर पाण्डेय* 331
- भारत की नई... : *डॉ. रमेश कुमार* 336
- श्रीलाल शुक्ल... : *रवीश कुमार यादव* 339
- ''स्मृतियों का... : *समर* 341
- शैलेंद्र के भोजपुरी... : *डॉ. संगीता राय* 345
- रामनरेश त्रिपाठी... : *संजीव कुमार पाण्डेय* 349
- सूर्यकांत त्रिपाठी... : *सरिता कुमारी* 352
- मृदुला गर्ग के... : *डॉ. सविता डहेरिया* 355
- परंपरा और... : *शिवानी सक्सेना* 365
- मोहन राकेश की... : *डॉ. सुनील कुमार सुधांशु* 368
- मीडिया में दलितों... : *डॉ. स्वर्ण सुमन* 371
- डॉ. कुँअर बेचैन... : *तेज प्रताप* 377
- जनजातीय संस्कृति... : *डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय* 382
- हिंदी दलित कविता... : *विजय कुमार* 386
- आधुनिक हिंदी... : *विकास कुमार सिंह* 389
- हिंदी साहित्य में... : *विनय कुमार पाठक* 392

योग : विश्व को भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन

डॉ. दयाशंकर सिंह यादव

''योग से हमें वह आत्मविश्वास और मनोबल मिलता है जिससे हम संकटों से जूझ सकें जीत सकें। योग से हमें मानसिक शांति संयम और सहनशक्ति मिलती है। 'समत्वत योग उच्यते' अर्थात् अनुकूलता-प्रतिकूलतासफलता–विफलता सुख-संकट हर परिस्थिति में समान रहने अडिग रहने का नाम ही योग है''।

नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री

(दैनिक जागरण, 21जूनपृष्ठ 2)

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के उक्त सारगर्भित कथन से योग की महत्ता स्पष्ट हो होती है। योग करने की परंपरा भारत में पौराणिक काल से ही चली आ रही है। योग का हमारे जीवन में बहुत अहम स्थान है। जो भी व्यक्ति नित्य प्रतिदिन योग करता है, उसे कोई भी रोग नहीं पकड़ता है। योग एक प्रकार की ऐसी ऊर्जा है जिसको अपनाने से लोग पूरी उम्र सेहतमंद और बीमारियों से बचे रहते हैं। योग करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज शब्द से हुई है जिसका अर्थ है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलना। योग लगभग 10000 वर्षो से भी अधिक समय से अपनाया जा रहा है। वैदिक संहिताओं के अध्ययन से विदित होता है कि तपस्वियों के संबंध में प्राचीन काल से ही वेदों में इसका उल्लेख प्राप्त होता है। सिंधु घाटी की सभ्यता से भी योग और समाधि को प्रदर्शित करती हुई मूर्तियाँ मिली हैं। हिंदू धर्म में साधु-संन्यासी और योगियों द्वारा योग विद्या को आरंभ से ही अपनाया जाता रहा है। वर्तमान में जीवन के व्यस्त तनावपूर्ण और अस्वस्थ दिनचर्या में इसके सकारात्मक प्रभाव को देखते हुए योग की महिमा और उसकी मनुष्य जीवन में बढ़ती महत्ता को जानकर इसे स्वस्थ जीवन शैली हेतु बड़े पैमाने पर अपनाया जाने लगा है।[1]

वस्तुतः योग अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित एक आध्यात्मिक अनुशासन हैजो मन और शरीर के बीच समरसता केंद्रित करने पर बल देता है। योग को स्वस्थ जीवन जीने की कला और विज्ञान–दोनों माना जाता है। मनुष्य जीवन में योग की समग्रता को भलीभाँति अपनाया गया है और जीवन के सभी क्षेत्रों में सामंजस्य लाने में सहायक सिद्ध होता है। योग द्वारा हम मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृति के मध्य पूरी तारतम्यता का अनुभव करते हैं। योग का अभ्यास करने का प्रमुख लक्ष्य यह होता है कि मनुष्य अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्र, स्वस्थ और समरसता पूर्वक अग्रसर हो सके।

वैसे तो योग विज्ञान का जन्म सहस्त्रों वर्ष पूर्व हुआ था जब कोई धर्म या आस्था की पद्धति का चलन नहीं था। ऐसा माना जाता है कि योग के अभ्यास आरंभ सिंधु घाटी सभ्यता से ही है जिसे इस सभ्यता की एक अमिट सांस्कृतिक विरासत के रूप में देखा जा सकता है। योग शास्त्र के अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि शिव ही प्रथम आदियोगी थे। ऐसा माना जाता है कि योग के प्रथम गुरु भगवान शिव ने अनेक सहस्त्र वर्ष पूर्व हिमालय की गोद में कांतिसरोवर के तट पर यह परम ज्ञान सप्तर्षियों को प्रदान किया, जिन्होंने इसे अनेक स्थानों पर प्रचारित–प्रसारित किया। भारत में यह योग पद्धति अपने पूर्ण अभिव्यक्ति में पाया जाता है।[2]

भारतीय संस्कृति में योग की उपस्थिति की बात करें तो यह विदित होता है कि सिंधु-सरस्वती घाटी की सभ्यता से प्राप्त मुहरों और जीवाश्म के अवशेषों में योग साधना को प्रमाणित करते हुए चित्रों एवं आकृतियों की संख्या पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है जिनमें मात देवी की मूर्तियाँ युक्त मुहरें उल्लेखनीय हैं। भारतीय संस्कृति में योग का उल्लेख लोक परंपराओं वेद उपनिषदों बौद्ध-जैन परंपराओं रामायण एवं भगवद्गीता जैसे महाकाव्यों शैव वैष्णव एवं अन्य तांत्रिक साधनाओं में भी देखा जा सकता है। पूर्व वैदिक काल में महर्षि पतंजलि ने अपने योग सूत्रों के माध्यम से योग इसके अर्थ और इससे संबंधित ज्ञान को व्यवस्थित रूप से संहिताबद्ध किया। महर्षि पतंजलि के पश्चात भारत में अनेक ऋषियों और योगाचार्यो ने अपनी पद्धतियों और लेखनी से योग के संरक्षण और विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया जो आने वाले दिनों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य को देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि अपने स्वास्थ्य समस्या के समाधान, शरीर के संरक्षण और संवर्धन में योग का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। योग से संबंधित भारत की महान विभूतियों और योगगुरुओं ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से इसे विश्व

भर में प्रसारित करने का अद्वितीय कार्य किया है जिससे विश्व के लोग भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन योग को जान सकें और उसे आत्मसात करने के लिए आगे आए जो भारतीय जनमानस के लिए गौरव की बात है।

प्राचीन काल से अब तक प्रसिद्ध योगाचार्यों द्वारा संरक्षित एवं निरंतर विकास की ओर अग्रसर योग पद्धति से अनेक लोग अपने जीवन में लाभ प्राप्त कर रहे हैं और सामाजिक एवं व्यक्तिगत रूप से स्वस्थ जीवन का आनंद उठा रहे हैं। वैसे भी योग भूमि भारत के अनेक सामाजिक रीति-रिवाजों अनुष्ठानों का जो आयोजन होता है उनका पारिस्थितिकीय संतुलन के प्रति प्रेम या लगाव परिलक्षित होता है। भारतीय संस्कृति में योग को मानने वाले अन्य वैचारिक पद्धतियों के सहिष्णुता एवं समस्त जीवों के लिए करुणा का भाव रखते हैं जो वसुधैवकुटुंबकम् की भावना को ही उजागर करती है। स्वास्थ्य और कल्याण के निमित्त जो योग क्रियाएँ व्यापक रूप से की जाती हैं उनमें प्रमुख योग साधनाएँ यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि मुद्राएँ सत्कर्म युक्ताहार मंत्रजाप आदि प्रमुख आचरण हैं। विस्तृत रूप से इसे देखें तो यह ज्ञात होता है कि यम का आशय संयम से है और इसमें नियम का अनुपालन किया जाता है। इसे योग साधना का प्रथम सोपान माना जाता है। यह आसन शरीर एवं मन को स्थिरता प्रदान करने में सहायक होता है। इससे व्यक्ति अधिक समय तक शरीर की भलीभाँति स्थिति को बनाए रखता है इसी के अनंतर प्राणायाम स्वसन क्रिया के प्रति जागरुक करती है। प्राणायाम के विभिन्न क्रियाओं द्वारा स्वास्थ्य की गति को नियमित करने का प्रयास किया जाता है।

इसी प्रकार प्रत्याहार व्यक्ति को बाहर की वस्तुओं के साथ जोड़ने में सहायक होता है। धारणा, ध्यान के व्यापक आधार को बताता है जिसे सामान्यतः एकाग्रता के रूप में लोग जानते हैं। ध्यान का अर्थ है—शरीर और मन के अंदर केंद्रित ध्यान जो मनन और समाधि के योग से ही संभव है। योग में जिन मुद्राओं की क्रियाएँ की जाती हैं वे सब प्राणायाम से ही संबंधित हैं। यह शारीरिक अनुकूलन के साथ संयुक्त होकर मनुष्य की स्वसन क्रिया को नियंत्रित करने का कार्य करती हैं। इसके माध्यम से मनुष्य अपने मन को नियंत्रित करता है और उच्च स्तर की योग सिद्धियों को प्राप्त करने में सफल होता है। इस क्रिया के माध्यम से शरीर में एकत्र नकारात्मक विचारों को दूर किया जाता है। शरीर को नैसर्गिक रूप से सहज प्रवृत्ति का बनाने का प्रयास किया जाता है। इन सभी क्रियाओं को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए मनुष्य को ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो युक्ताहार से ही संभव है। युक्ताहार से आशय उचित भोजन एवं अन्य खाद्य सामग्रियों से है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए उचित भोजन और खानपान पर ध्यान देना अत्यंत जरूरी होता है। योग में ध्यान के माध्यम से हम आत्मसाक्षात्कार की ओर अग्रसर होते हैं जिसे योग साधना का सर्वप्रमुख लक्ष्य माना गया है। इसके साथ ही यदि व्यक्ति प्रतिदिन आसन, प्राणायाम एवं ध्यान क्रियाओं का नियमित अभ्यास करें तो वह स्वस्थ रहने में भी सहायक होता है।

एक प्रकार से देखा जाए तो आज के परिवेश में विश्व के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों की जीवनशैली विविधता से परिपूर्ण है। मनुष्य की जीवन शैली उसकी बीमारी या स्वास्थ्य पर भी व्यापक प्रभाव डालती है। मनुष्य की जीवन शैली को उसकी आर्थिक स्थिति भी प्रभावित करती है। हालाँकि बचपन से ही लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए कहा जाता है फिर भी आर्थिक रूप से कमजोर लोगों में कुपोषण देखने को मिलता है। ऐसी परिस्थिति में यदि हम योग को अपनाकर अपनी जीवन शैली को स्वास्थ्यपरक बनाए तो यह स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक परिणाम देता है। विभिन्न योग क्रियाओं के माध्यम से व्यक्ति नियमित अभ्यास द्वारा तनाव को दूर कर सकता है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दृढ़ता के साथ खड़ा रह सकता है।

वर्तमान में योग विश्व भर में अपने चिकित्सकीय प्रभावों के कारण दिनों दिन लोकप्रिय होता जा रहा है। वैश्विक परिवेश के व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन को सुव्यवस्थित और सहज बनाने में योग की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो सकती है। अब चिकित्सकीय क्षेत्र में भी योग का सहारा लिया जा रहा है जिससे स्वास्थ्य संबंधी नकारात्मक विकारों को दूर किया जा सके। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले योग को योग चिकित्सा का नाम दिया गया है। मनुष्य के उपचारात्मक उद्देश्य हेतु योग पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। ये योग पद्धतियाँ मन केंद्रित मानी जाती हैं। प्राचीन ग्रंथों, यथा—उपनिषद्, गीता, योगसूत्र आदि अनेक योग ग्रंथों में मन और इसकी विभिन्न तत्वों की स्वतंत्रता को बनाए रखने में योग एक अनुशासन के रूप में नियंत्रित करता है। योग चिकित्सा में विभिन्न योगों के माध्यम से विविध प्रकार के रोगों को ठीक किया जाता रहा है और अब भी किया जा सकता है। इसके लिए आसनों, प्राणायाम एवं योग मुद्राओं का विशेष महत्त्व है। योग चिकित्सा मुख्यतः चित्तवृत्ति निरोध, क्रियायोग, अष्टांग के सिद्धांत शुद्धि-सिद्धांत प्राणायाम मुद्राओं मन के साथ कर्म-ज्ञान-भक्ति के अनुरूप कार्य करना आदि पर निर्भर होती है।

आज भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में योग चिकित्सा को आत्मसात किया जा रहा है। दिन-प्रतिदिन योग करने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है जो योग के महत्त्व को व्यक्त करती है। योग व्यक्ति के रक्तचाप एवं हृदय संबंधी विकारों पर भी सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है। यह श्वसन संबंधी एवं फेफड़े के कार्यों में भी

सकारात्मक परिवर्तन करता है। मधुमेह रोगियों को भी योग करने से लाभ होता है और उनकी औषधि की मात्रा भी कम हो जाती है। आज विश्व के लोग एलोपैथिक दवाओं की अपेक्षा आयुर्वेदिक दवाओं की ओर ज्यादा रुचि ले रहे हैं। क्योंकि एलोपैथिक दवाएँ रोगों का तुरंत उपचार तो करती हैं लेकिन कुछ न कुछ अपना दुष्प्रभाव भी मनुष्य शरीर पर डालती हैं जिससे वर्तमान में अधिकांश लोग आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आयुर्वेद पद्धति पर हम विचार करें तो पाते हैं कि योग और आयुर्वेद–दोनों के सम्मिलन से आयुर्वेद औषधियों का सकारात्मक प्रभाव और भी बढ़ जाता है तथा रोगी शीघ्र ठीक होने लगता है। योग और आयुर्वेद से व्यक्ति के शरीर साँस बोध मन और प्राण की गुप्त शक्तियों का ज्ञान होता है क्योंकि आध्यात्मिक शारीरिक रचना में बताया गया है कि व्यक्ति के शरीर में 72000 नाडिय्यां7 मुख्य चक्र पंचकोश और कुंडलिनी शक्ति विद्यमान हैं। आयुर्वेद पद्धति में योग की तत्वमीमांसा और रोगी के समग्र उपचार हेतु योग पद्धतियों का उत्तम प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में शारीरिक एवं मानसिक रोगों के उपचार में जड़ी-बूटियों, शरीर की शुद्धि प्रक्रिया संतुलित आहार, मंत्रजाप के साथ-साथ आसन प्राणायाम एवं ध्यान क्रियाओं का अभ्यास किया जाता है जिससे मन और शरीर के बीच निरंतर तारतम्यता बनी रहे और शरीर निरोग एवं स्वस्थ रह सके।[3]

वर्तमान समय में आधुनिक चिकित्सा पद्धति का अत्यधिक बोलबाला है क्योंकि एलोपैथिक दवाओं से रोगियों को तुरंत आराम मिलता है, जबकि आयुर्वेद एवं अन्य पद्धतियों के इलाज में रोग का उपचार होने में समय लगता है। दुनिया के इस भाग दौड़ में हर व्यक्ति तुरंत रोगों से मुक्ति चाहता है लेकिन एलोपैथिक दवाओं की कीमतें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं जिससे गरीब एवं मध्यम वर्ग की जनसंख्या अपना इलाज कराने में अक्षम पा रही है क्योंकि उनके पास इन दवाओं की कीमत को वहन करने की क्षमता नगण्य है। ऐसी स्थिति में इन गरीब एवं मध्यम वर्ग के लोगों के लिए आयुर्वेद एक वरदान के रूप में उभर कर सामने आया है। आज व्यक्ति योग और आयुर्वेद जैसी प्राचीन चिकित्सा पद्धति के माध्यम से अपना उपचार कराने में ज्यादा रुचि ले रहा है। विश्व में दिनोंदिन आयुर्वेद के प्रति लोगों की अभिरुचि में वृद्धि हो रही है जिससे आज धनी वर्ग के लोग भी आयुर्वेद की ओर आकर्षित हो रहे हैं, क्योंकि आयुर्वेदिक औषधि में किसी भी प्रकार का कोई दुष्प्रभाव नहीं है। लोग योग एवं आयुर्वेद की मदद से दीर्घ जीवन की ओर अग्रसर होने का सफल प्रयास करने के लिए तत्पर हो रहे हैं जिससे आधुनिक जीवन शैली में आयुर्वेद एवं योग की महत्ता को बढ़ावा मिल रहा है।[4]

इस प्रकार देखा जाय तो योग को संपूर्ण स्वास्थ्य का विज्ञान कहा जा सकता है। यह विश्व को भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन है। योग विश्व की मानवता के लिए एक अनुपम उपहार है। गीता में योग के बारे में अर्जुन को बताते हुए कृष्ण कहते हैं कि अस्थिर मन जहाँ-जहाँ भागता है, उसे वहाँ-वहाँ से लौटा कर अपने भीतर लाना चाहिए। योग में साधक के मन में कंपन नहीं रहना चाहिए अर्थात् मन की एकाग्रता होनी चाहिए। योग की सिद्धि के लिए मन की चंचलता को रोकना अत्यंत आवश्यक है।[5]

आज समस्त विश्व को आनंद से परिपूरित करने का साधन योग है। योग के नियमित अभ्यास से लोग पूरी तरह स्वस्थ रहकर आनंद पूर्वक दीर्घायु जीवन व्यतीत कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के योग विषयक प्रस्ताव को लगभग 170 से भी अधिक राष्ट्रों ने समर्थन दिया था। उसी समय से प्रत्येक 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाता है। योग के द्वारा व्यक्ति, समाज, विश्व स्वयं को स्वस्थ बनाए रख सकता है। आज हम विश्व योग दिवस के रूप में योग की महत्ता को बताते हुए यह गर्व का अनुभव करते हैं कि योग के रूप में भारतीय संस्कृति ने जो अमूल्य उपहार विश्व को दिया है वह अत्यंत अनुपम और अद्वितीय है। इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ का यह कथन महत्त्वपूर्ण है कि हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले योग के महत्त्व को समझा और इसे जीवन का आधार बनाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से योग को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली। कोरोना से लड़ाई में योग के महत्त्व को आज पूरा विश्व मान रहा है।[6]

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. दैनिक जागरण 21 जून 2021 पृ. 4
2. योजना 2015 पृ. 10
3. योजना 2015 पृ. 12
4. योजना 2015 पृ. 44
5. दैनिक जागरण 21 जून 2021 पृ. 12
6. दैनिक जागरण 21 जून 2021 पृ. 2

एसोसिएट प्रोफेसर, समजाशास्त्र
सकलडीहा (पी0जी0) कॉलेज सकलडीहा,
चंदौली

OUR PUBLICATIONS

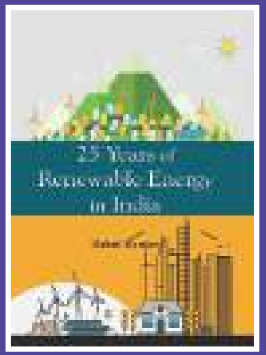

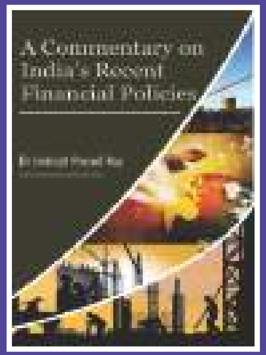

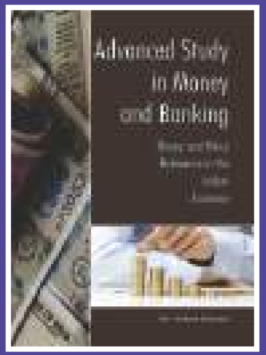

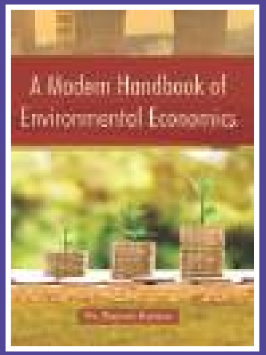

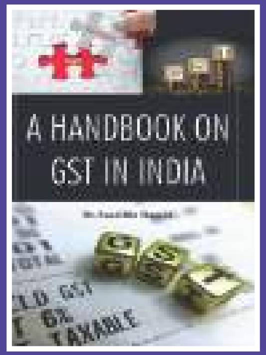

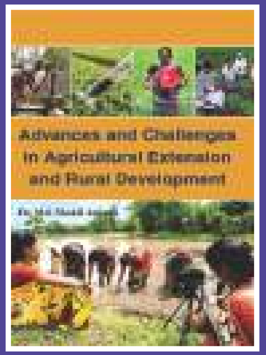

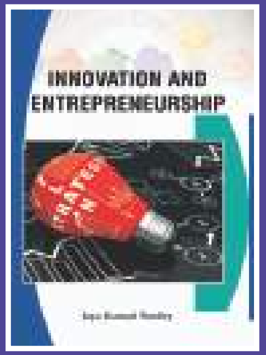

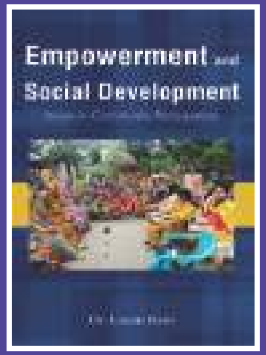

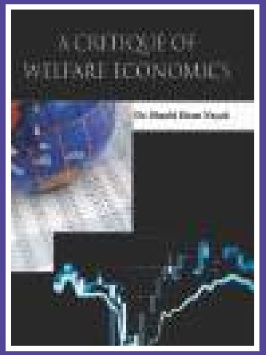

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 2 ❑ मार्च-अप्रैल, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्कः

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोटः पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

आज कोरोना वायरस, जिसे चीनी या वुहान वायरस भी कहा जा रहा है, ने लगभग पूरी मानवता को अपनी चपेट में ले लिया है। इस महामारी के कारण मरने वालों की भारी संख्या के कारण इस वायरस से संक्रमित लोगों में ही नहीं, जो लोग संक्रमित नहीं है, उनमें भी खतरा बढ़ता जा रहा है। स्वास्थ्य सुविधाएं, महामारी के सामने बौनी पड़ती दिखाई दे रही है। ऐसे में अस्पतालों में बेड, आईसीयू, वेंटीलेटर का तो अभाव है ही, सामान्य स्वास्थ्य उपकरणों जैसे ऑक्सीजन, दवाइयों, स्वास्थ्य कर्मियों आदि की भी भारी किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि सरकार ने बेड, दवाइयों, ऑक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु प्रयास किए हैं, लेकिन वर्तमान त्रासदी के समक्ष वे प्रयास बहुत कम है। कम ज्यादा मात्रा में इसी प्रकार की स्थिति का सामना अमेरिका, इंग्लैंड, इटली, ब्राजील जैसे देश पहले से ही कर चुके हैं या कर रहें हैं।

भारत में भी इस प्रकार की त्रासदी में लोगों की मजबूरी का लाभ उठाकर मुनाफा कमाने वाले लोगों की कमी नहीं है। हम सुनते हैं कि दवाइयों, ऑक्सीजन, ऑक्सीमीटर आदि के विक्रेता ही नहीं, बल्कि अस्पताल भी मुनाफा कमाने की इस होड़ में शामिल हो चुके हैं। जनता के संकट, इस मुनाफाखोरी के कारण कई गुना बढ़ चुके हैं। इन संकटों से समाधान का एक ही रास्ता है कि जल्द से जल्द इन स्वास्थ्य सुविधाओं को पुख्ता किया जाए और इलाज हेतु साजो-सामान और दवायों को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जाए।

जहां तक दवाइयों की कमी, उनकी ऊंची कीमतों और उससे ज्यादा मुनाफाखोरी का सवाल है, उसके पीछे देश के व्यापारियों की जमाखोरी से कहीं ज्यादा वैश्विक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार है। पेटेंट और अन्य बौद्धिक संपदा अधिकारों के कानूनों के कारण दवाइयों और यहां तक कि स्वास्थ्य उपकरणों आदि में भी इन कंपनियों का एकाधिकार स्थापित है। इन कानूनों के चलते इन दवाइयों और उपकरणों का उत्पादन कुछ हाथों में ही केंद्रित रहता है, जिससे इनकी ऊंची कीमतें यह कंपनियां वसूलती है। हाल ही में हमने देखा कि रमदेसिविर नाम के टीके की कीमत 3000 रुपए से 5400 रुपए थी जिसे भारत सरकार ने नियंत्रित तो किया, लेकिन उसके साथ ही उसकी भारी कमी भी हो गई। इसके चलते इन इंजेक्शनों की कालाबाजारी हो रही है और मरीजों से इंजेक्शन के लिए 20 हजार से 50 हजार रू. की कीमत वसूली जा रही है। यही हालत अन्य दवाइयों की है, जिसकी भारी कमी और कालाबाजारी चल रही है।

ऐसा नहीं है कि भारतीय कंपनियां इन दवाइयों को बनाने में असमर्थ है, लेकिन चूँकि वैश्विक कंपनियों के पास इन दवाइयों का पेटेंट है, वे अपनी मर्जी से अन्य कंपनियों (भारतीय या विदेशी) को लाइसेंस लेकर इन दवाइयों का उत्पादन करवाती है और इस कारण इन दवाइयों की भारी कीमत वसूली जाती है।

क्या है समाधान?

यह सही है कि इन दवाइयों के पेटेंट इन कंपनियों के पास है लेकिन फिर भी भारत सरकार वर्तमान महामारी से निपटने हेतु प्रयास कर न केवल इन दवाइयों के उत्पादन को बढ़ा सकती है, बल्कि कीमतों में भी भारी कमी कर लोगों को राहत दे सकती है। गौरतलब है कि पेटेंट से जुड़ी इस प्रकार की समस्या डब्ल्यूटीओ बनने से पहले नहीं थी। देश में सरकार किसी भी दवाई के उत्पादन हेतु लाइसेंस जारी कर उसके उत्पादन को सुनिश्चित कर सकती थी। इस कारण भारत का दवा उद्योग न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में सस्ती दवाइयां उपलब्ध करा रहा था। 1995 में विश्व व्यापार संगठन के बनने के साथ ही ट्रिप्स (व्यापार सम्बन्धी बौद्धिक सम्पदा अधिकार) समझौता लागू हो गया था। इस समझौते में सदस्य देशों पर यह शर्त लगाई गई थी कि वह पेटेंट समेत अपने सभी बौद्धिक संपदा कानूनों को बदलेंगे और उन्हें सख्त बनाएंगे (यानी पेटेंट धारकों कंपनियों के पक्ष में बनाएंगे)। इस समझौते से पहले भी इसका भारी विरोध हुआ था, क्योंकि यह तय था कि इस समझौते के बाद दवाइयां महंगी होगी और जन स्वास्थ्य पर खतरे में पड़ जाएगा।

ऐसे में जागरूक जन संगठनों और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राजनेताओं के प्रयासों से विश्व व्यापार संगठन और अमीर मुल्कों के दबाव को दरकिनार करते हुए भारत ने पेटेंट कानूनों में संशोधन करते हुए जन स्वास्थ्य से जुड़ी चिंताओं का काफी हद तक निराकरण कर लिया था। हालांकि प्रक्रिया पेटेंट के स्थान पर उत्पाद पेटेंट लागू किया गया और पेटेंट की अवधि भी 14 वर्ष से बढ़ाकर 20 वर्ष कर दी गई थी, लेकिन उसके बावजूद जेनेरिक दवाइयों के उत्पादन की छूट पुनःपेटेंट की मनाही, अनिवार्य पेटेंट का प्रावधान, अनुमति पूर्व विरोध आदि कुछ ऐसे प्रावधान भारतीय पेटेंट कानून में रखे गए थे, जिससे काफी हद तक जन स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों का समाधान हो सका। लेकिन इन सबके बावजूद अमेरिका समेत अन्य देशों की सरकारों ने भारत पर यह दबाव बनाए रखा कि भारत अपने पेटेंट कानूनों में ढील दे और अपने पास उपलब्ध प्रावधानों का न्यूनतम उपयोग करे।

अनिवार्य लाइसेंस

संशोधित भारतीय पेटेंट अधिनियम (1970) के अध्याय 16 और ट्रिप्स प्रावधानों के अनुसार अनिवार्य लाइसेंस दिए जाने का प्रावधान है। अनिवार्य लाइसेंस से अभिप्राय है सरकार द्वारा जारी लाइसेंस यानी अनुमति जिसके अनुसार किसी उत्पादक को भी पेटेंट धारक की अनुमति के बिना पेटेंट उत्पादन को बनाने, उपयोग करने और बेचने का अधिकार दिया जाता है। इसका मतलब यह है कि वर्तमान में कोविड-19 से संक्रमित व्यक्तियों के लिए उपयोग की जाने वाली

दवाइयों यानी रमदेसिविर और अन्य दवाओं के संदर्भ में यदि सरकार अनिवार्य लाइसेंस जारी कर दे तो भारत का कोई भी फार्मा निर्माता सरकार द्वारा निधारित राशि (जो अत्यंत कम होती है) पेटेंट धारक को देकर उन दवाइयों का उत्पादन देश में करके। उनको इस्तेमाल और बेच सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि पेटेंट कानून की धारायें 92 और 100 वैक्सीन हेतु अनिवार्य लाइसेंस जारी करने के लिए उपयुक्त है। सरकार स्वेच्छा (सूओमोटो) से 'राष्ट्रीय आपदा' अथवा 'अत्यधिक तात्कालिकता' के मद्देनजर गैर व्यवसायिक सरकारी उपयोग के लिए इन धाराओं का उपयोग करते हुए अनिवार्य लाइसेंस जारी कर सकती है।

गौरतलब है कि ये कंपनियां महामारी के बढ़ते प्रकोप से मुनाफा कमाने की फिराक में है और अमेरिका सरीखे देशों की सरकारें इन दवाओं और वैक्सीन की जमाखोरी के माध्यम से विकासशील और गरीब देशों के शोषण की तैयारी कर रही है। हाल ही में भारत में वैक्सीन उत्पादन हेतु आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति में अमेरिका सरकार ने अड़ंगा लगाया था और अपने पास जमा की वैक्सीन को भारत समेत दूसरे देशों को भेजने पर रोक लगा दी थी। बाद में अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दबाव के कारण उन्हें यह रोक हटानी पड़ी।गिलिर्ड कंपनी द्वारा रमदेसिविर टीके की भारी जमाखोरी के समाचार भी आ रहे हैं। ऐसे में भारत में इन दवाओं और वैक्सीन उत्पादन हेतु अनिवार्य लाइसेंस लागू करना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

हालांकि भारत सरकार ने दक्षिणी अफ्रीका के साथ मिलकर विश्व व्यापार संगठन में भी ट्रिप्स प्रावधानों में छूट हेतु गुहार लगाई है, लेकिन अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे देशों ने उसमें भी अड़ंगा लगा दिया है। ऐसे में सरकार को अपने सार्वभौम अधिकारों का उपयोग करते हुए ये अनिवार्य लाइसेंस तुरंत देने चाहिए, ताकि महामारी से त्रस्त जनता को कंपनियों के शोषण से बचाया जा सके। गौरतलब है कि विश्व व्यापार संगठन के दोहा मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में बौद्धिक सम्पदा (ट्रिप्स) एवं जन स्वास्थ्य से संबंधित एक राजनीतिक घोषणा स्वीकृत की गयी जिसमें सरकारों के इस सार्वभौम अधिकार को मान्य किया गया कि किसी भी आपातकाल अथवा अत्यधिक तत्कालिकता की स्थिति में सदस्य देशों को अधिकार है कि वह ट्रिप्स के प्रदत्त बौद्धिक संपदा अधिकारों को दरकिनार करते हुए जन स्वास्थ्य की रक्षा कर सकें। इस घोषणा द्वारा सदस्य देशों को "राष्ट्रीय आपातकाल या अत्यधिक तात्कालिकता की अन्य परिस्थितियों का निर्धारण करने के लिए अनुमति दी गयी है, कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है"। दिनांक 30 अप्रैल 2021 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी केंद्र सरकार से पूछा है कि कोरोना से संबंधित दवाओं के लिए अनिवार्य लाइसेंस लागू करने हेतु सरकार क्यों नहीं सोच रही?

संपादक

इस अंक में

जयशंकर प्रसाद जी का जीवन दर्शन–शशि कपूर; डॉ० अजय मिश्र 1

नागार्जुन के काव्य में सामाजिक वर्ग चेतना का स्वरूप–विनोद कुमार; डॉ० अजय मिश्र 4

हिन्दी साहित्य में गीतों का संवेदना पक्ष–मोहन बैरागी; डॉ० अवनिश अस्थाना 8

प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020–अभिषेक सिंह; डॉ० श्रीप्रकाश मिश्र 13

आधुनिक समाज-दृष्टि और निर्गुण काव्य–हेमंत कुमार 16

'दृश्य से अदृश्य का सफर में व्यक्त मनोवैज्ञानिकता'–प्रो० शर्मिला सक्सेना 19

प्राचीन भारत में दण्ड-व्यवस्था का स्वरूप–कुंवर विक्रम सूर्यवंश 23

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–डॉ० राम किशोर यादव 27

भारत में पंचायती राज व्यवस्था: एक समीक्षात्मक अध्ययन–अरूण कुमार 31

संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में किशोरावस्था के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–डॉ० अविनाश पाण्डेय 35

भारतीय शिक्षा में वेदों का महत्व–डॉ० भगवानदास जोशी 40

भारतीय स्वतंत्रता क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं का योगदान–डॉ० वाय. एम. साळुंके 44

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और महात्मा गांधी–मुकेश चन्द्र 47

भारत में दिव्यांगकता का सामाजिक अध्ययन–डॉ० खोमन लाल साहु; डॉ० अश्वनी महाजन 50

द्विवर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन रायपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में –प्रियंका तिवारी; डॉ० प्रियंका रमेशराव डफरे 55

ओटीटी प्लेटफार्म की विषय वस्तु का उपयोग एवं संतुष्टि- सिरसा शहर के सन्दर्भ में एक अध्ययन–बेअंत सिंह; डॉ० रविंद्र ढिल्लो 57

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन–ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा 65

साहित्य के बदलते परिदृश्य एवं संस्कृत-रचना–डॉ० उषा नागर 69

चन्द्रप्रकाश जगप्रिय रों कहानी-साहित्य: कथ्य आरो शिल्प–श्वेता भारती 72

फुर्सत, रचनात्मकता और उत्पादन संबंध–डॉ० ज्योति कुमारी 76

हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार–डॉ० ममता 79

कक्षा-8वीं के गणित पाठ्यपुस्तक का अधिगम प्रतिफल के संदर्भ में अध्ययन–डॉ० ए० के० पोद्दार; सोनम तम्बोली 83

गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व–पिंकी दहिया 90

पंचायती राज एवं ग्राम विकास–केदार साहु; प्रोफेसर अश्वनी महाजन 93

नारदीय पुराण और पाणिनीय शिक्षा में वेदांग स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन–कुमुद कुमार पाण्डेय 97

विकास और राष्ट्रीय एकता में युवा समूह की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 103

विश्वगुरु के रूप में भारत और नई सदी–डॉ० रामलाल शर्मा 106

कोविड-19 के संदर्भ में उच्च शिक्षा की चुनौतियां–डॉ० श्रीमती गीता शुक्ला 108

आधुनिक काल में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व–रघुनंदन हजाम 112

हमारे लोकप्रिय गीतकार कवि गिरिजा कुमार माथुर–डॉ० आर० के० पाण्डेय; चोवाराम यदु 115

मिथिलांचल की खास पहचान मखाना–डौली कुमारी; सुदीप कुमार 118

महात्मा बुद्ध कालीन भारत में जाति एवं वर्ण व्यवस्था एवं महात्मा बुद्ध का दृष्टिकोण–अमरीश कुमार 123

कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य में अभिव्यक्त गाँधीवादी दर्शन–कुशल महंत 126

मुगल काल में पशु-पक्षी चित्रण : अकबर कालीन चित्रकला के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 129
निराला के काव्य में भारतीय संस्कृति–डॉ० भंवर लाल प्रजापत 132
संदेशकाव्य-परम्परा में 'मेघदूतम्' और 'संदेशरासक' : एक तुलनात्मक विवेचन–नर्मदा 138
तत्त्वार्थसूत्र में वर्णित जैन जीवन शैली द्वारा युगीन समस्याओं के समाधान–विकास जैन 141
भारतीय संस्कृति की रीढ़ जनक की बेटियां–डॉ० सविता डहेरिया 144
हरिसुमन बिष्ट के कथा-साहित्य में चित्रित दलित वर्ग–डॉ० नवीन चन्द्र 147
सूचना के अधिकार के क्रियान्वयन की प्रभावशीलता का स्तर: (रीवा के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० अमरजीत कुमार सिंह; गोकरण प्रसाद कुशवाहा 151
दलित साहित्य और साहित्यिकता–कमल किशोर कण्डावरिया 157
मृदुला सिन्हा के कथा-साहित्य में वर्णित सामाजिक समस्याएँ–डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा; डॉ० सुमेधा शर्मा 159
रामनगर क्षेत्र का व्यापारिक महत्व: एक ऐतिहासिक अध्ययन–कु० सीमा 162
आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में कपिलधारा कूप योजना का हितग्राहियों के आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन
(सरदारपुर तहसील के विशेष सन्द्रर्भ में)–डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 164
स्नातक स्तर पर सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली प्राथमिकताओं एवं
व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन–डॉ० पूर्णिमा नराणियां 174
छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं नगरीय लिंगानुपात में असमानता–डॉ० आर०एन० यादव; प्रो. ए. श्रीराम 182
समकालीन लोकतांत्रिक समस्याओं के विभिन्न स्वरूप व समाधान–डॉ० आरती यादव 188
कोशी क्षेत्र में तालाब, चौर और मोईन की उपयोगिता एवं महत्व–डॉ० मो० रफत परवेज 191
अपना मोर्चा उपन्यास में वर्णित छात्र आन्दोलन–सुखबीर कौर 195
मुरिया जनजाति का परम्परागत शिक्षा केन्द्र: घोटुल–डॉ० बन्सो नुरूटी; पुरोहित कुमार सोरी 197
बुद्धकालीन स्त्रियों की राजनीति में भूमिका–डॉ० अजय कुमार सिंह 202
विजय दान देथा के कथा साहित्य में नारी–डॉ० विदुषी आमेटा; भूमिका 204
उच्च शिक्षा में छात्राओं की खेलों में सहभागिता की स्थिति का अध्ययन (छिन्दवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)
–कु० सायमा सरदेशमुख; डॉ० रवि कुमार 207
नागरिकों को लेकर राष्ट्रीय मुद्दों व नए मीडिया का अध्ययन (गुरूग्राम लोकसभा क्षेत्र के संदर्भ में)–हिमांशु छाबड़ा 211
माध्यमिक स्तर के विकासात्मक शिक्षा में समस्याएँ एवं संभावनाएँ
–डॉ० शोभना झा; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० राकेश कुमार डेविड 216
आदिवासी जीवन संघर्ष और साहित्य–डॉ० ओम प्रकाश सैनी 219
कारावास की समस्या बनाम पीछे छूटे बच्चे–डॉ० रेखा ओझा 224
कृषि विकास एवं वित्तीय समावेशन में किसान क्रेडिट कार्ड की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० रतन लाल; डॉ० विवेक सिंह 229
दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते कदमों के बीच भारत की बदलती-पड़ोस की नीति–हिमांशु यादव 236
असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त ''साम्प्रदायिकता''–माया देवी; डॉ० मृदुल जोशी 240
निजता एंव वर्तमान सूचना क्रांति: एक विश्लेषण–रूबीना; डॉ० कैलाश चन्द्र 244
झुग्गी झोपड़ी में निवासरत महिलाओं की समस्या (बिलासपुर शहर के विशेष संदर्भ में)–कु० आरती तिर्की; डॉ० ऋचा यादव 247
आर्यसमाज की हिंदी पत्रकारिता और स्वदेशी जागरण–विरेन्द्र कुमार 251
मौलाना अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचार–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 256
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना–डॉ० विभा मिश्रा 259
अशिक्षा का जनजातीय जीवन पर प्रभाव और उसकी औपन्यासिक अभिव्यक्ति–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 262
आज भी शोषित है नारी–डॉ० आंचल श्रीवास्तव; सौ० प्रभा दुबे 265

बागेश्वर जनपद के ग्राम पुरड़ा की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–राखी किशोर 268
मूल्य शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता–डॉ० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी; बिपिन कुमार 274
अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बालकों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन–शक्ति सिंह 277
परास्नातक स्तर के नगरीय एंव ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन –डॉ० प्रेमचन्द्र यादव; शिवाश्रेय यादव 280
बनते-बिगड़ते दाम्पत्य जीवन का दस्तावेज : एक पत्नी के नोट्स–डॉ० संजय भाऊसाहेब दवंगे 284
भावी व सेवारत शिक्षकों के जीवन मूल्य: एक अध्ययन–डॉ० चन्द्रावती जोशी 286
''अहिंसात्मक सत्याग्रह की सफल तकनीक और महात्मा गांधी''–डॉ० भूपेश मणि त्रिपाठी 292
ग्रामीण महिलाओं द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रयोग–अनुराधा शर्मा 295
प्राचीन संस्कृत साहित्य में मूलाधार चक्र का निरूपण–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु. संजू नागर 299
छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उद्योग का रोजगार में योगदान: एक अध्ययन (कोरबा जिले के विशेष संदर्भ में)–होत्री देवी 302
मस्तिष्क गोलार्द्ध प्रबलता का पुरूष जिमनास्टिक खिलाड़ियों के मध्य वॉल्टिंग टेबल उपकरण पर प्रदर्शन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –डॉ० मिलिन्द भान्देव 307
भूमि उपयोग एवं भूमि आवरण में परिवर्तन: मकराना शहर, राजस्थान का एक स्थानिक कालिक अध्ययन–निशा चौधरी; डॉ० रश्मि शर्मा 311
प्रेमचंद के कथा-साहित्य में सामाजिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति–डॉ० के० आशा 320
नारी अस्मिता का वैश्विक स्वरूप–मधु गुप्ता 324
मुगल काल में व्यवसायिक शिक्षा (1526-1707)–नेहा सिंह; डॉ० शशि सिंह 329
'रेणु' के नाम बड़ी बहुरिया का पत्र–गायत्री कुमारी 332
लोक साहित्य में अभिव्यक्त लोक संस्कृति (आदी जनजाति के संदर्भ में)–सुश्री उसुम जोडके 335
भारत में महिला कैदियों के अधिकारों का उल्लंघन: एक सामाजिक और वैधानिक विश्लेषण–फरजीन बानो; प्रो० सबीहा हुसैन 339
पश्चिमी कोशी मैदान और पर्यावरणीय संकट–डॉ० नवनीत 344
खाद्य पदार्थों के अपमिश्रण से मानव स्वास्थ पर असर–डॉ० प्रतिभा प्रिया 347
मौर्यकालीन राजनीतिक जीवन में धर्मनिरपेक्षता का वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० रूबी कुमारी 349
कौटिल्य के शैक्षिक विचार का वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० सरिता कुमारी 352
महात्मा गाँधी और ग्राम स्वराज की अवधारणा - वर्तमान संदर्भ में–डॉ० शारदा कुमारी 355
बिहारीगंज के स्थानीय स्वशासन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–श्रिया सुमन; डॉ० कल्पना मिश्रा 358
भारत में संविद सरकार की स्थिति - वर्तमान संदर्भ में–मधु कुमारी 361
बिहार में कृषि का आर्थिक परिदृश्य–ज्योति कुमारी 364
कोरोना काल में बीमा का महत्व–डॉ० प्रवीण कुमारी 367
महिला सशक्तिकरण और आरक्षण - एक अध्ययन–डॉ० स्वाति कुमारी 370
शिक्षा के क्षेत्र में दृष्टिबाधित छात्र-छात्राओं की स्थिति का अध्ययन–धीरज कुमार भारती; डॉ० आर० एन० शर्मा 372
छपरा नगर में साक्षरता का क्षेत्रीय वितरण: एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० संजय कुमार; शैलेन्द्र मालाकार 377
डॉ० शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में वर्णव्यवस्था के आर्थिक पक्ष का अनुशीलन–डॉ० उर्विजा शर्मा 380
ज्ञानरंजन की कहानियों में मानवीय संवेदनाओं की मौलिकता–अर्जुन यादव 383
मुगल साम्राज्य पर नादिरशाह के आक्रमण के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० मनोज सिंह यादव 386
हस्तकशीदाकारी: संस्कृति एवं परम्पराओं का संवाहक–डॉ० अवधेश मिश्र; अनीता वर्मा 390
एकादश एक रस राष्ट्र रस की कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान–डॉ० संजय कुमार सिंह 392
साम्प्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता–सुमन देवी 396

कुमाऊँनी संस्कृति के उल्लेखनीय तत्व–मो० नाजिम; डॉ० सेराज मोहम्मद 399

'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' 'तस्मादित्युत्तरस्य' 'स्वं रूपं शब्दस्याऽशब्दसंज्ञा' च त्रिषु सूत्रेषु विचारः–अंकित मनोड़ी 403

महाभारते वर्णित-राजधर्मस्य अनुशीलनंशान्तिपर्वणः परिप्रेक्ष्ये–डॉ० निवेदिता बैनर्जी 406

बिहार राज्य के ग्रामीण बेरोजगार युवकों को आर्थिक रूप से सबल बनाने में कौशल विकास योजना की भूमिका–मनोज कुमार साह 410

हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों की परम्परा–डॉ० चिम्मन 413

भाषिक संवेदना के कवि रघुवीर सहाय–प्रतिभा देवी 416

'मुन्नी मोबाइल' में चित्रित लोकल और ग्लोबल परिदृष्य की उद्देश्यता–डॉ० सचिन मदन जाधव 420

महादेवी वर्मा: स्त्री-मुक्ति का स्वर–जागृति 423

शिव के विविध स्वरूपों का वर्णन–सीलू सिंह 426

कोरोना महामारी और बच्चों की शिक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में - एक अध्ययन–डॉ० रंजना कुमारी झा 431

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र का व्यापारिक महत्व का एक ऐतिहासिक अध्ययन: रामनगर के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० नीरज रुवाली; कु० सीमा 434

हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी चरित्र–रोहित कुमार मिश्र 437

भारतीय सामाजिक सुधार आन्दोलन में ज्योतिवा फुले का योगदान–रितेश कुमार 440

कुंठा का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० यतीन कुमार चौबीसा 444

बाल श्रमिकों का बाल श्रम के प्रति बोध–डॉ० वीरेन्द्र सिंह 448

अन्तर्राष्ट्रीय शांति के अनुरक्षण में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की भूमिका–सोमेश गुंजन 452

वर्तमान परिदृश्य में श्रीलाल शुक्ल का साहित्यिक यथार्थ–डॉ० प्रमोद कुमार सिंह; कैलाश नाथ यादव 456

दलित चेतना की अवधारणा–संगीता; डॉ० यशवन्त वीरोदय 459

शेक्सपीयर के नाटको का जयशंकर प्रसाद पर प्रभाव–डॉ० मनोज विद्यासागर 464

हिन्दी सिनेमा का बदलता स्वरूप–डॉ० नमिता जैसल 467

प्रेमचन्द की कहानी कला की समीक्षा–डॉ० प्रीति राय 470

हिन्दी के विकास में पं. माधवराव सप्रे का योगदान–डॉ० गौकरण प्रसाद जायसवाल 472

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री-चेतना–एस कुमार गौर; डॉ० (श्रीमती) बी०एन० जागृत 476

छत्तीसगढ़ी लोकगीत ''पंथी'' में सामाजिक चेतना (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)–मनीष कुमार कुर्रे; डॉ० चन्द्रकुमार जैन 479

प्राचीन भारत मुद्रा की उत्पत्ति, विकास एवं महत्व–पिंकी कुमारी 484

कक्षा 11-वीं के छात्रों की अध्ययन आदत का उनके शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सम्बन्ध में शोध
–श्रद्धा श्रीवास; आनंद कश्यप 486

सिनेमा एवं पत्रकारिता का साहित्यिक योगदान–पूजा यादव 489

मथुरा स्थल का सांस्कृतिक अध्ययन: बौद्ध धर्म के विशेष संदर्भ में–मनीष कुमार 493

विज्ञानामृतभाष्यदिशा ब्रह्मणः स्वरूपविमर्शः–संदीप उनियाल 498

''बघेली भाषा एवं साहित्य'': एक अनुशीलन–डॉ० बृजेस धर दुबे 501

हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में आगमन चिंतन प्रतिमान की
प्रभावशीलता का अध्ययन–डॉ० सरोज जैन; विन्देश्वरी प्रसाद सिंह 504

भारत में महिला सशक्तिकरण: मुद्दे एवं चुनौतियाँ–डॉ० गिर्राज प्रसाद बैरवा 509

दलित साहित्य और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ० सुषमा गौडियाल 512

श्री आयंगर का योग से स्वास्थ्य लाभ के प्रति दृष्टिकोण–डॉ० प्रियंका शुक्ला 515

ग्रामीण और शहरी महिलाओं के पोषण (बॉडी मास इण्डेक्स) का तुलनात्मक का अध्ययन–सरिता सोनकर; डॉ० जयप्रकाश सिंह 517

राष्ट्रवादी साहित्यकार आचार्य नीरज शास्त्री का हिंदी साहित्य को प्रदेय–डॉ० प्रेमचंद चव्हाण 521

संचार माध्यमों की भाषा–डॉ० रेणु गुप्ता 524
भारत की बहुलवादी संस्कृति के प्राचीन मूल–डा० पार्थ सारथी 527
वैज्ञानिक सोच: भारत की तात्कालिक आवश्यकता–डॉ० देवेन्द्र कुमार साहू 530
वर्तमान में ब्रिक्स की प्रासंगिकता–डॉ० मनीष कुमार साव 532
छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव परिणाम -2018 का राजनीतिक विश्लेषण–अमृतेष शुक्ला; राहुल सिंह 534
डॉ० अम्बेडकर के बौद्ध धर्म सम्बन्धी विचार–डॉ० पूरण मल बैरवा; रमेश चन्द 538
शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन शैली का उनकी शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन –निशा बोहने; प्रोफेसर सिद्धार्थ जैन; डॉ० लखन बोहने 543
स्वयं सहायता समूह (SHG): ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान–नंदिता राय 547
उच्च शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की प्रासंगिकता–डॉ० नीरज कुमार सिंह 551
वर्तमान समय में राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियाँ–डॉ० रूपम मिश्रा 554
समकालीन महिला कथा-लेखन में मैत्रेयी पुष्पा की उपलब्धियाँ–डॉ० कंचन यादव 558
सोशल मीडिया से उपजता मानवीय मूल्यों का संक्रातिकाल–प्रो० माला मिश्र 563
लोकमंगल की पत्रकारिता और वर्तमान चुनौतियां–डॉ० राकेश कुमार दुबे 568
ज्ञान युग के संदर्भ में अब्दुल कलाम का शैक्षिक चिंतन–कुमारी प्रिती भारती 571
बिहार राज्य में मधुबनी जिला के अंतर्गत राजनगर ब्लॉक में सन 2021 में अलग अलग कक्षा में विभिन्न श्रेणियों के नामंकित बच्चे का भौगोलिक अध्ययन–जुली कुमारी 574
भारतीय सुरक्षा दृष्टि में भूटान की भू - रणनीतिक स्थिति का महत्व–सतीश कुमार 579
आधुनिक भारत के निर्माण में राजाराम मोहन राय का योगदान–डॉ० प्रियंका सिंह 583
छ०ग० के कोरबा जिले में कोयला खनन से प्रभावित ग्रामीण समुदाय के समाजिक विकास का अध्ययन –डॉ० ऋचा यादव; सुनील कुमार 587
साहित्य दर्पण में वर्णित काव्य एवं काव्यपुरुष का स्वरूप कि प्रसांगिकता–डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य 593
समकालीन हिन्दी कविता–डॉ० बलराम गुप्ता 596
साठोत्तरी उपन्यासों में वैवाहिक जीवन–प्रो० रमेश के पर्वती 600
किन्नर केन्द्रित प्रमुख हिन्दी उपन्यासों की भाषिक सरंचना–ज्योति; डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव 605
नागार्जुन के कथा-साहित्य में अछूतोद्धार के प्रसंग–डॉ० मनोज कुमार 610
छपरा स्थित डच समाधि स्थल से प्राप्त मध्य कालीन स्थापत्यों का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक सर्वेक्षण–डॉ० श्याम प्रकाश 612
प्रौढ़ व्यक्तियों के दबाव स्तर परप्रेक्षाध्यान के प्रभाव का अध्ययन–डॉ० निर्मला भास्कर; अनिल विश्नोई; डॉ० अशोक भास्कर 617
सरगुजा जिले के उराँव महिलाओं तथा बच्चों में कुपोषण एवं स्वास्थ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन (छ०ग० राज्य के सरगुजा जिले के विशेष संदर्भ में)–शबाना परवीन; श्रीमती डॉ० रीचा यादव 621
सूचना का अधिकार और सुशासन (भारतीय परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन)–आदित्य चतुर्वेदी 625
'पीढ़ियाँ' उपन्यास में साम्प्रदायिक अलगावाद और राष्ट्रवाद–संतोष कुमार भारद्वाज 628
छत्तीसगढ़ राज्य में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का एक प्रशासनिक अध्ययन–डॉ० श्रीमती रीना मजूमदार; डॉ० प्रमोद यादव; बिसनाथ कुमार 632
भारत में किन्नरों की सामाजिक स्थिति–डॉ० नसरीन जान 636
पंचास्तिकाय समयसार : एक अनुशीलन–डॉ० पूजा राठी 638
असमीया ग्रामीण समाज में नामघर का स्थान–डॉ० जिनाक्षी चुतीया 642
प्रेमाख्यानक काव्यों की कथा के माध्यम से सूफी साधना की अभिव्यक्ति–डॉ० रंजय कुमार सिंह 645
लघु आवश्यकता, लघु ऋण व लघु उद्यम के माध्यम से गरीब महिलाओं का आर्थिक विकास–डॉ० रूबी सिन्हा 647

गाँधी दर्शन में तत्त्वमीमांसीय विचार: एक दार्शनिक अध्ययन–डॉ० रीतु कुमारी 651
आधुनिक युग में संगीत का स्वरूप–प्रीति सिंह 654
तिरूपति बालाजी मंदिर चित्तूर, आंध्र प्रदेश की सामुदायिक सहभागिता–आशुतोष पाण्डेय 656
चित्तौड़ का तीसरा साका (जौहर) और इसमें जयमल की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० भगवान सिंह शेखावत 659
हवेली अथवा देवालय संगीत–प्रमोद कुमार 663
राजस्थानी भणतगीत और उसका माहात्म्य–डॉ० श्रवण राम 666
ऑनलाइन माध्यमों में सूचनाओं को खोजने की प्रक्रिया: एक विहंगावलोकन–डॉ० गौरीशंकर कर्मकार; डॉ० वर्षा रानी 671
क्षेत्रीय विकास में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों का योगदान (जनपद बागेश्वर के विशेष संदर्भ में)–चन्द्र प्रकाश सिंह 675
लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना–डॉ० प्रवीण देशमुख 680
चम्पारण में नील उत्पादन एवं किसानों की व्यथा–पिंकी कुमारी 685
माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के सफल शैक्षणिक अभ्यास : एक अध्ययन–डॉ० सरोज शर्मा; डॉ० प्रमोद जोशी 688
राजकपूर की फिल्मों में भारतीय समाज का चित्रण : 'जागते रहो' फिल्म के विशेष संदर्भ में–डॉ० आदित्य कुमार मिश्रा 693
समाजिक समावेशन और सतत् विकास के लिए गुणवता शिक्षा–रोहताश कुमार 698
महात्मा गाँधी और भारतीय राष्ट्रवाद:- एक समीक्षात्मक अध्ययन–संजय कुमार पासवान 703
संस्कृत छन्द रचना विधान में प्रयुक्त होने वाले सहायक तत्त्वों का विवेचन–पंकज शर्मा 706
उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन–डॉ० वंदना; मिथिलेश कुमार जैमिनी 710
भारत में रक्षा बजट की निर्धारण प्रक्रिया एवं आवंटन–राहुल कुमार 715
कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन–श्रीमती नूतन दूबे; डॉ० तृषा शर्मा 718
छत्तीसगढ़ में कृषि विपणन: समस्या व समाधान–डॉ० गिरजा शंकर गुप्ता 722
संसदीय प्रजातंत्र और गांधीय अवधारणा–डॉ० विकास यादव 726
भूमण्डलीकरण के युग में भारतीय नारी–डॉ० कमलेश कुमार सिंह 729
मुगल स्थापत्य कला: एक विशुद्ध प्रतिमान–प्रभात वर्मा 731
हिन्दी का वैश्विक विस्तार: रामकथा के संदर्भ में–डॉ० कृष्ण चंद रल्हाण 734
मैत्रेयी पुष्पा के औपन्यासिक रचनाओं में बुन्देलखण्डी संस्कृति का प्रभाव–हरिश्चन्द्र यादव; डॉ० वन्दना शर्मा 739
सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गो के मानव अधिकारों के संरक्षण के लिये राज्य मानवाधिकार आयोग, उत्तर प्रदेश की भूमिका : एक सामाजिक विधिक अध्ययन–कमल किशोर 742
नरेश मेहता की काव्य-भाषा दृष्टि–डॉ० कामना पण्ड्या 746
शीर्षक-परदेशी राम वर्मा के उपन्यास 'सूतक' में सामाजिक जागृति–डॉ० अभिनेष सुराना; कमल कुमार बोदले 750
प्रेमचंद के कथा-साहित्य में सामाजिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति–अनिल कुमार पाण्डेय 753
भारत में स्कूली शिक्षा: असमान पहूँच एवं सामाजिक असमानता का पुनरुत्पादन–अभ्यानंद 757
श्रीमद्भगवद्गीता में योगत्रयसमन्वय–डॉ० मधु बाला सिन्हा 760
समकालीन वैश्विक सुरक्षा और सामरिक परिदृश्य : भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में–डॉ० सुधीर कुमार 764
'कार्य संतुष्टि और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षक की प्रभावशीलता का अध्ययन'–डॉ० अमित कुमार 768
पाण्डुलिपिविज्ञानस्य संरचनात्मकं स्वरूपम्–डॉ० अनिल प्रताप गिरि 773
देश की आजादी में सतपुड़ा अचंल की जनजातियों की भूमिका–अरूण कुमार गोंडाने; डॉ० महेन्द्र गिरी 776
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में लालित्य–डॉ० राधा भारद्वाज 782
जयपुर जिले में गिरते भूजल स्तर का कृषि उत्पादकता पर प्रभाव (2011 से 2020 के सन्दर्भ में)–अजीत सिंह; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 788
मध्यकालीन कवियों द्वारा भक्ति एवं संगीत का प्रचार–प्रमोद कुमार; डॉ० ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय 795

राजनैतिक स्थितियाँ एवं सामन्तवाद के बदलते चेहरे; 'ढाई घर'–डॉ० ममता पन्त 798
पूज्य आचार्यप्रवर पं० बलवन्तराय भट्ट 'भावरंग जी' की महान् कृति 'भावरंग-लहरी' की उपादेयता–प्रीति सिंह; डॉ० ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय 801
भारत विभाजन की त्रासदी और हिन्दी कथा साहित्य–प्रीति देवी मौर्या 804
पुराने गया जिला के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि और हिंसा: एक ऐतिहासिक अध्ययन–सचिन कुमार 806
'सागर सीमांत' की महाकाव्यात्मकता–प्रो० दामोदर मिश्र 811
महिलाएं, उनके मानवाधिकार एवं विडम्बनाएं–तारा राम 816
भारतीय अर्थव्यवस्था में डिजिटल भुगतान का महत्व–डॉ० गुलाब फलाहारी 819
सहरसा जिला में लिंगानुपात सामयिक एवं स्थानिक वितरण का भौगोलिक अध्ययन–डॉ० धनंजय कुमार 822
कामकाजी तथा गैरकामकाजी महिला उपभोक्ताओं में प्रोसेक्ड पैकेज्ड भोज्य पदार्थों के क्रय पैटर्न का अध्ययन: पटना शहर के संदर्भ में–कुमारी सुषमा श्रीवास्तव; प्रो० (डॉ०) अंजु श्रीवास्तव 828
रीतिकालीन साहित्य में ब्रज भाषा का योगदान–सुरेश चन्द्र पाल 831
मीरा बाई के काव्य में आध्यात्मिक चेतना का सौंदर्यीकरण–कृपा शंकर; डॉ० स्मृति शुक्ला 834
वर्तमान समय में सूचना – क्रांति की चुनौतियाँ–डॉ० आभा लता चौधरी 837
ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में स्वयं सहायता समूह की भूमिका- एक दृष्टि–अतिबला सिंह; प्रो० (डॉ०) अजय कुमार सिंह 839
वर्तमान समय मे शिक्षक की स्थिति–सुरक्षा गर्ग; डॉ० चंद्रकांत शर्मा 842
भारत में असंगठित क्षेत्रों के मजदूर एवं उनकी समस्याएं–बंकेश कुमार शर्मा; प्रोफेसर (डॉ०) एन०एल० गुर्जर 848
हिरासत में मौत एवं कैदियों के मानवाधिकार–राजेश कुमार त्रिपाठी; प्रोफेसर (डॉ०) एन०एल० गुर्जर 852
भारतीय प्रशासन और महिला अधिकार: एक नीति एवं विधि शास्त्रीय अवलोकन–डॉ० राजीव सागर; डॉ० अशोक कुमार 857
रंजना जायस्वाल की कविता में स्त्री संवेदना–डॉ० अनंत केदारे 863
मरण एवं गुणस्थान का अन्त: सम्बन्ध–श्रीमति अलका डागा 870
गिरमिटिया जीवन का संघर्ष सन्दर्भ 'लाल पसीना'–कोशिका शर्मा 875
प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष के उदात्त प्रेम का चरित्र-चित्रण–विनोद कुमार; डॉ० विजय कुमार पटीर 879
भारत में महिला सशक्तिकरण के दिशा में किये गये प्रयास की दशा व दिशा–डॉ० भूपेन्द्र कुमार 883
भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली में सुशासन में चुनौतियाँ–डॉ० राम नरेश टण्डन 886
ई-गवर्नेन्स: अवधारणा और महत्त्व–डॉ० अरूणा ठाकुर 889
विकास की अवधारणा व प्रशासनिक व्यवस्था महत्व–डॉ० (श्रीमती) अलकामेश्राम; डॉ० डी.एन. सूर्यवंशी; रामकृष्ण साहू 893
पूर्व मध्यकालीन भारत में दास प्रथा–डॉ० सुम्बुला फिरदौस 898
माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के आत्मबोध के विकास में सांस्कृतिक एवं आध्यत्मिक मूल्यों की भूमिका –डॉ० प्रेमपाल सिंह; नवदीप कुमार मौर्य 901
संगीत गायन के परिप्रेक्ष्य में आसन एवं प्राणायाम का सांगीतिक अवदान–डॉ० ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय 904
बढ़ता नगरीकरण एवं बदलता भू-उपयोग कोटपूतली नगर के संदर्भ में–संजय कुमार चौधरी; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 907
दर्शन शास्त्र के स्तम्भत्रय (ज्ञानयोग तथा ज्ञानोपलब्धि के विशेष सन्दर्भ में)–उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 912
अरुणाचल प्रदेश की लोक कला : गोदना कला–डॉ० जमुना बीनी 917
दर्शनशास्त्र का समकालिक प्रकार्यात्मक संदर्भ–डॉ० मो० जियाउल हसन 922
नगरीयकरण का ग्रामीण अधिवासों पर प्रभाव (अलवर नगरीय क्षेत्र के सन्दर्भ में, 1981 से 2011) –ऋषि प्रकाश शर्मा; डॉ० विजय कुमार गुप्ता 925
महाभारते वनपारिस्थितिक्या: मानवजीवने प्रभाव:–गौतम: 929
बेनीपुरी के ललित निबन्धों में लोक व समाज–मीनू पारीक 932

दलित चेतना एवं मोहनदास नैमिशराय : कहानियों के विशेष सन्दर्भ में–दाऊद अहमद परे; प्रो० दिलशाद जीलानी 936
रामदरश मिश्र कृत उपन्यास 'थकी हुई सुबह' का समीक्षात्मक अनुशीलन–डॉ० सायरा बानो 939
'वर्षा का संग्रहीत जल': लीलधर मंडलोई की कविता में प्रकृति की नैसर्गिक छवि–रंजीत सिंह 942
महिला कैदियों हेतु लिंग-विशिष्ट दृष्टिकोण एवं उपचार की आवश्यकता–डॉ० सुमन लता चौधरी 946
हठप्रदीपिका व धेरण्ड संहिता में प्राणायाम का स्वरूप–ज्योति शर्मा, प्रो० गणेश शंकर गिरी 949
रीतिकाव्य: एक पुनरावलोकन–डॉ० मुदिता तिवारी 953
आहत स्वर के दस्तावेज: दलित कहानियाँ (संदर्भ: हिन्दी साहित्य)–डॉ० कृपा किन्जल्कम् 957
वर्तमान भारत में किसानों की दशा और दिशा–डॉ० स्मिता 960
महात्मा गांधी के प्रेरणा स्त्रोत–डॉ० अखिलेश पाल 966
प्रतिरोध की राजनीति–प्रवीण कुमार यादव; डॉ० प्रभात रंजन 969
गाँधी दर्शन–डॉ० संजीत कुमार सिंह 972
भारतीय दर्शन में अस्तित्ववाद और मानवतावाद : राधाकृष्णन के विचारों की प्रासंगिकता–डॉ॰ रेशमा सुलताना 975
स्वतंत्रता कालीन भारत की राजनैतिक स्थिति और पत्रकारिता–डॉ॰ शंकर जी 978
राजस्थान में मतदाता व्यवहार एवं जाति–डॉ० शीतल मीणा; जगदीश प्रसाद मीणा 982
महात्मा बुद्ध के जीवन एवं बौद्ध धर्म के दर्शन -सिद्धांतों के विविध आयाम–रामेन्द्र कुमार 985
गाँधी का पर्यावरण दर्शन–डॉ० वर्षा रानी 990
उपभोक्ता आधारित अर्थव्यवस्था बनाम निवेश आधारित अर्थव्यवस्था–डॉ० संजीव कुमार सिंह 992
महाप्राण ध्वनि का किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन–मोनिका सेठिया; डॉ० युवराज सिंह खँगारोत 996
उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन –अमरजीत सिंह; डॉ० डी० एस० सिंह बघेल 1002
मानवाधिकार और न्यायिक निर्णय–जितेन्द्र भारती 1009
धर्मनिरपेक्षता के भारतीय पहलू और भारतीय संविधान–डॉ० नागेन्द्र सिंह भाटी 1016
प्राचीनयन्त्रविज्ञानम्–मनु आर्या 1019
वरिवस्यारहस्यालोके निगमागमसाहित्यस्य आगमपरम्परया आलोचनम्–रविदत्त शर्मा 1024
शिक्षा के अधिकार को साकार करती शिक्षा नीति–अमित कुमार पाण्डेय; डॉ० राघवेंन्द्र सिंह 1029
पंचायती राज व्यवस्था के विकास में केन्द्र व राज्य सरकार की योजना की भूमिका–डॉ० डी०एन० सूर्यवंशी; संजय कुमार ध्रुव 1033
नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण के विकास की विभिन्न योजनाओं का अध्ययन–डॉ० (श्रीमती) रीना मजूमदार; डॉ० प्रमोद यादव; फैसल कुरैशी 1036
राज्य में प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा का अध्ययन–डॉ० (श्रीमती) अलकामेश्राम; डॉ०डी.एन. सूर्यवंशी; दीपा 1039
अलवर जिले में महिला साक्षरता की दशा व दिशा–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1043
योग और प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा–डॉ० प्रदीप कुमार; डॉ० सुरेन्द्रपाल सिंह 1047
तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित शिक्षाध्यायवल्ली का स्वरूप–डॉ० योगिता मकवाना 1052
दलित महिलाओं के सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा की भूमिका–आरती 1056
तकनीकी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन–दिव्या मिश्रा; डॉ० तृषा शर्मा 1059
नारीवादी चिंतन एवं भारतीय दर्शन–डॉ० उपासना सिंह 1061
प्रभा खेतान का काव्य-संसार–नम्रता 1065
सिरमौरी लोक संगीत की परम्परा–सुनील कुमार 1069
भारत की जाति व्यवस्था और अंबेडकर के विचार–तबस्सुम प्रवीण 1072

विधि एवं दर्शन: एक अध्ययन–डॉ० आलोक कुमार यादव 1074

तर्कशास्त्र के विचार के नियमों का आलोचनात्मक अनुशीलन–डॉक्टर अमित कुमार शुक्ल 1079

सामाजिकविकास योजनाओं की गति एवं विस्तार के प्रति अनुसूचित जातियों का दृष्टिकोण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० राजेश कुमार 1081

वैदिक कालीन नारी शिक्षा व्यवस्था के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन–प्रज्ञा सिंह 1087

विद्यालयी पाठ्यक्रम में भूगोल शिक्षण का महत्व नई शिक्षा नीति: 2020 के संदर्भ में–दीपक कुमार; वन्दना सिंह 1092

पंचायती राज संस्थाएं एवं दलित महिलाएं: समस्याएं और चुनौतियां–श्वेता कुमारी 1096

सत्यकामाचार्य प्रणीत पद्यकृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० पटेल सिंह; मनीष शर्मा 1099

कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी जाति के प्रति संवेदना–शिक्षा रानी; डॉ० राजेश कुमार 1104

विद्याभारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का अध्ययन–डॉ० अरविन्द कुमार 1108

भारतीय इतिहास-लेखन में एकात्म मानववाद का बोध: एक नवीन दृष्टिकोण–डॉ० माया नन्द 1113

उत्तराखण्ड में पर्यटन व कोविड-19 से उत्पन्न चुनौतियां–कु० बबीता आर्या 1118

पं० दीनदयाल उपाध्याय का शिक्षा दर्शन एवं समसामयिक संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता–श्याम; डॉ० राजशरण शाही 1122

घरेलू हिंसा के विविध रूप–डॉ० कमलेश कुमार 1131

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सृजनात्मकता का अध्ययन–कल्याण कुमार; डॉ० (श्रीमति) रेखा गुप्ता 1133

लोकधर्मी परंपरा में केदारनाथ सिंह–सुधांशु बाजपेयी 1138

भारतीय राष्ट्रवाद के परिप्रेक्ष्य में कुमाऊँनी शिल्पकार, सम्मान, हिस्सेदारी व प्रतिनिधित्व के लिए एक आंदोलन (1930 से 1935 ई0 तक) –गौरव कुमार 1143

उदय प्रकाश की कहानी मोहन दास में संकट ग्रस्त अस्तित्व–नेहा सिंह 1146

औपनिषदिक चिन्तन में परमतत्व की संकल्पना–डॉ० रश्मि यादव 1149

वर्तमान परिवेश में विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन–बृजेश सिंह 1153

कोविद-19 और प्रवासी महिला मजदूर : एक नारीवादी विश्लेषण–प्रोफेसर सबीहा हुसैन; डॉक्टर कोमल कुरील 1159

शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन की चुनौतियां–अनिल कुमार 1165

वायुपुराण में दर्शन-तत्त्व–डॉ० गंगेश गुंजन 1168

भारतीय महिला उद्यमिता का विकास : स्थिती एवं संभावनाएं–डॉ० मदन जी. प्रधान 1171

संत रैदास की दृष्टि में हिन्दू राष्ट्र–राजेश कुमार यादव 1174

महिला सशक्तिकरण: दशा एवं दिशा–जितेन्द्र कुमार 1178

भारत-चीन सम्बंध के बदलते आयाम: एक विष्लेषणात्मक अध्ययन–इन्द्रजीत कुमार 1181

हिन्द महासागर में चीन की उपस्थिति एवं भारत की चुनौतियाँ–डॉ० रजनीश कुमार 1184

कौटिल्य के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता भारत के विदेश नीति के सन्दर्भ में : (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ० मो० इर्शाद अली 1189

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन –रोहित तिवारी; डॉ० अस्मिता हट्टी 1192

हिन्दी महिला कथाकार सामान्य प्रवृतियां–डॉ० ईश्वर सिंह 1196

नाथ परम्परा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य–प्रमोद; डॉ० रीतेश साह 1199

महाराष्ट्र में वीरशैव संप्रदाय का प्रचार–डॉ० अंबादास धर्मा केत 1202

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की प्रासंगिकता: एक अनुशीलन–प्रा. डॉ० संगिता उप्पे 1206

भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यासों में सामाजिक जीवन–अविनाश यादव 1211

अमेरिका में महिला श्रमिक की समस्या–डॉ० रवि प्रकाश यादव; निशित रंजन 1214

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यो का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रमोद कुमार; सीमा कुमारी 1218

संचार माध्यमों में अभिव्यक्त विशिष्ट भाषाई पक्ष–डॉ० संदीप कुमार वर्मा 1221

शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन–डॉ० पंकज कुमार यादव 1224

दृष्टिकोण

प्राचीन भारत में गुप्तयुगीन सिंचाई व्यवस्था–डॉ० दीपा गुप्ता 1228
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का विद्यालय एवं विद्यालय परिसर की स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन –डॉ० विजय शंकर यादव 1232
माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम की छात्र-छात्राओं की मानसिक सजगता एवं तार्किक योग्यता का अध्ययन–मनोज कुमार यादव 1236
जैव विविधता, संरक्षण और सतत विकास का समामेलन–भारतेन्दु चौधरी 1240
किशोरावस्था के समय आने वाली कुछ समकालीन विशेषताएं व विकास–प्रियंका; डॉ० निधि अवस्थी; डॉ० विक्रांत शर्मा 1242
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालकों एवं बालिकाओं की जीवन शैली का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० भोपाल सिंह रावत; सुमन चौहान 1248
संविधान में संशोधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डी० डी० मिश्रा 1253
महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम: उत्तर प्रदेश राज्य के विशेष सन्दर्भ में–डॉँ० सुशीला; कु० आरती 1256
बच्चों के विकास के वैयक्तिक, नैतिक, शैक्षिक, सामाजिक आदि आयामों पर पालन-पोषण की शैलियों के प्रभावों का विश्लेषण –डॉ० महमूद खान; मो० सैफ 1266
भारतीय सन्दर्भ में संसदीय शासन प्रणाली की सार्थकता-एक विवेचन–शार्दूल सिंह 1280
श्रमण परम्परा में ध्यान का स्वरूप–चन्द्रप्रभा कुमारी 1282
जैन धर्म का सांस्कृतिक विवेचन–डॉ० कुमारी उदिता 1285
भारतीय इतिहास में भगवान महावीर–डॉ० अरबिन्द कुमार सिंह 1287
वैदिक विचारग्रन्थि का उद्भेदन: भक्तिकुसुमांजलि–डॉ० विष्णुकान्त त्रिपाठी 1290
श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता–डॉ० मंजू मिश्रा 1297
गांधीवादी मूल्य दृष्टि और हिंदी साहित्य–डॉ० हनुमत लाल मीना 1299
इस्लाम में सामाजिक और आर्थिक न्याय की अवधारणा–डॉ० नसरीन बेगम 1302
रेडियो की स्वर्णिम यात्रा का सफर–हर्षवर्धन पाण्डे 1309
सामाजिक अभिप्रेरक का बाल अपराध पर प्रभाव: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–कुमार सौरभ 1315
द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्रीय चेतना–डॉ. बाबूलाल धनदे 1317
बर्कले के दर्शन में नामवादी मत-एक विवेचनात्मक दृष्टिकोण–श्रुति शर्मा 1321
आश्रम व्यवस्था और पुरुषार्थ का सामाजिक महत्त्व–डॉ० पवन पाठक 1325
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना व महिला उद्यमिता : एक समीक्षात्मक विश्लेषण–डॉ० महेंद्र त्रिपाठी 1330
उत्तराखण्ड की संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण में शिल्पकार जाति का योगदान: एक ऐतिहासिक अध्ययन–महेश चन्द्र 1335
बौद्ध धर्म का शिक्षा में योगदान–राजीव त्रिपाठी 1338
कमलेश बख्शी की कहानियों में चित्रित धार्मिक चिंतन के विविध आयाम–डॉ० संजय विक्रम ढोडरे 1340
पारदर्शी सामाजिक निर्माण में ई-प्रशासन–अभय कुमार 1343
भारत में केंद्र राज्य संबंध: तनाव के कारण व सुझाव–डॉ० देवेन्द्र कुमार साहू 1348
दक्षिण-एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–स्वीटी कुमारी 1351
ममता कालिया के कहानी साहित्य में नारी चेतना–प्रा० राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे 1355
कुरुक्षेत्र : मानवता का मूलमंत्र–डॉ० सुषमा चौबे 1359
भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंध: एक ऐतिहासिक विवेचन–डॉ० विनय कुमार पिंजानी 1363
शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों में श्रीमद्भगवद्गीता का उपयोग–विश्वजीत भारद्वाज 1366
दलित नारीवाद–डॉ० विशेष कुमार राय 1371
आदिवासी साहित्य के विविध विमर्श–रेनुका सरोज 1376
बैकिंग सेवाओं का ग्रामीण विकास पर प्रभाव–विकास मौर्य; प्रो० विनोद कुमार पाण्डेय 1379
संघर्ष की राह पर आदिवासी साहित्य–डॉ० सुनील दत्त 1383

पंचायती राज व्यवस्था में महिला नेतृत्व-एक विमर्श–डॉ० के०एल० टाण्डेकर; डॉ० प्रदीप कुमार जाम्बुलकर; डॉ० आशा चौधरी 1386

विपणन व्यवस्था की प्रवृतियां-चुनौतिंया एंव समाधान–डॉ० के० एल० टांडेकर; डॉ० ई० व्ही० रेवती; कु० महिमा जोगनपुत्र 1390

चरित्र का समाज में योगदान तथा साहित्य के माध्यम से अमृतलाल नागर जी के कथा चरित्रों के प्रमुख पात्र एवं उनकी चारित्रिक विशेषता–रचना त्रिपाठी 1393

पी. बी. शेली के काव्य में प्रेम और सौंदर्य–प्रणीता किरण 1396

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में हिन्दू-मुस्लिम समस्या–रोशन कुमार सिंह 1398

पंजाब के पटियाला जिले में फूलों की खेती में उत्पादन की समस्या–जसप्रीत कौर 1401

ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा चलाये गये सिक्कों का सामाजिक एवं धार्मिक तथा राजनैतिक अध्ययन–शैलेश गाँधी; प्रो० (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल 1404

अपभ्रंश साहित्य के चरित काव्यों में जम्बूसामिचरिउ का स्थान–राजीव कुमार; डॉ० दुधनाथ चौधरी 1408

पर्यावरण विमर्श : दशा और दिशा–बिजिना. टी 1411

राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्रवाद की चेतना जागृत करने में रंगमंच और क्रांतिकारी साहित्य की भूमिका–भगत नारायण महतो 1414

हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक संवेदना–गोविंदराज के० 1416

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता: लिंगभेद के संदर्भ में एक वर्णनात्मक अध्ययन–रेखा रानी; डॉ० सुनीता चौहान 1419

पंचायतीराज एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण–कुमार राजीव रंजन 1426

किसानी विद्रोह का आरंभ -1875-76 (महाराष्ट्र के शिरूर परिवेश के संदर्भ में)–प्रा. हरिदास शंकर जाधव 1429

महिलाओं के खिलाफ अपराध की जांच में फॉरेंसिक वैज्ञानिक की भूमिका–रीना रानी जाट 1433

गठबंधन के दौर में स्थायित्व, क्षेत्रवाद, जातिवाद और दल-बदल की राजनीति एक अध्ययन–प्रिय रंजन 1437

भारत में उच्च शिक्षा–डॉ० बबिता बी० शुक्ला 1439

स्त्री दृष्टि का आलोचनात्मक अध्ययन–सुषमा रानी 1442

ममता कालिया के कहानी साहित्य में नारी चेतना–प्रा० राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे 1445

कमलेश बख्शी की कहानियों में चित्रित धार्मिक चिंतन के विविध आयाम–डॉ० संजय विक्रम ढोडरे 1449

पं.दीनदयाल आवास योजना का हितग्राहियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान (छत्तीसगढ़ के राजनांदगॉव जिलें के विशेष संदर्भ में)–रागिनी; डॉ० टाण्डेकर के०एल०; डॉ० भाटिया एच० एस० 1452

ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य समस्यायें : एक समाज शास्त्रीय अध्ययन (ग्राम चिराना जनपद कानपुर देहात के विशेष सन्दर्भ में)–दीपक कुमार गौतम; डॉ० महा लक्ष्मी जोहरी 1457

गुट-निरपेक्ष आन्दोलन तथा भारतीय विदेश नीति–प्रेरणा जैन 1461

अज्ञेय के कथा-साहित्य में वैज्ञानिक भाव-बोध–डॉ० सुरेन्द्र शर्मा 1464

महिला सशक्तिकरण-समस्या एवं निराकरण–डॉ० डी०एन० सूर्यवंशी; खेम प्रभा 1468

लंढ़ौर स्वास्थ्यगाह का ऐतिहासिक विकास सन् 1827 से 1950 ई. तक–अर्जुन सिंह; डॉ० राजपाल सिंह नेगी 1472

हिमाचल प्रदेश का जनजातीय समाज और स्त्री–डॉ० ललिता कौशल 1480

आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठयक्रमों के प्रति विद्यार्थी प्रत्यिक्षीकरण का अध्ययन–शिवानी सिंह; प्रोफेसर चारू व्यास 1483

विद्या और कर्म प्रवाह शिक्षा–डॉ० दिनेश कुमार 1490

राजनांदगांव जिले में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का हितग्राहियों के आर्थिक विकास पर प्रभाव –छन्नी साहू; डॉ० टाण्डेकर के.एल.; डॉ. भाटिया एच.एस. 1493

स्वपाठी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन–संजीव कुमार; डॉ० सुनीता मुर्डिया 1498

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छोटानागपुर का योगदान–डॉ० मिथिलेश कुमार 1505

औपनिवेशिक बिहार का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन–रश्मि कुमारी 1508

स्वातंत्र्योत्तर काल में सिंगापुर के विकास में भारतीयों का योगदान–आशा कुमारी सिन्हा 1512

जनजातियों के धार्मिक जीवन का ऐतिहासिक अध्ययन: बिहार के संदर्भ में–मोनी कुमारी 1516

द्वाराहाट के मन्दिरों की वास्तुकला शैली एवं निर्माण सामग्री का एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० संतोष कुमार; सुधीर नैनवाल 1520

वित्तीय समावेशन और डिजिटल साक्षरता: बिहार राज्य के संदर्भ में–नीरज कुमार; डॉ० अमरकान्त चौधरी 1528

भारत में स्त्री शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ: एक दृष्टि—डॉ० श्वेता रस्तोगी 1533
ग्रामीण समाज में जातियों के सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन—प्रियंका दीक्षित; डॉ० राकेश प्रताप सिंह 1536
पंचायत स्तर पर नीति निर्णयन प्रक्रिया में ग्रामीण अल्पसंख्यक महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण: "उधमसिंह नगर जिले के विशेष संदर्भ में"—डॉ. भुवन तिवारी; शुभांकर शुक्ला 1540
संस्कृतसाहित्ये पारिस्थितिकतन्त्रम्—सौरभ कण्डवाल: 1546
ज्ञानप्रकाश विवेक के कहानी संग्रह में 'सेवानगर कहाँ है' में चित्रित सामाजिक ययार्थबोध—बिन्दर कुमारी 1549
हिन्दी रुबाई परम्परा में डॉ० हरिवंश राय बच्चन का स्थान—अनिग्धा श्रीवास्तव; प्रो० चन्द्रभानु प्रसाद सिंह 1552
नासिरा शर्मा के उपन्यास 'अक्षयवट' में भ्रष्टाचार की समस्या—पूनम 1556
पूर्व स्वाधीनताकालीन असम : एक अवलोकन—प्रशांत लस्कर 1559
हिन्दी समाचार चौनलों के प्राइम टाइम में खेल बुलेटिनों/खेल कार्यक्रमों में पुरुष व महिला खिलाड़ियों सम्बन्धी खेल समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन—प्रोफेसर (डॉ०) बिन्दु शर्मा; पूजा चौहान 1564
हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की संवेदना ('यमदीप' और 'तीसरी ताली' के विशेष संदर्भ में)—मधु सिंह 1570
भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में महिला सहभागिता—मोनिका विजय 1574
जौनसार-बावर में प्रचलित खत की सामाजिक व्यवस्था का ऐतिहासिक अध्ययन—धीरपाल सिंह; प्रो० राजपाल सिंह नेगी 1578
शिक्षा की नवीन अवधारणा: ओशो की दृष्टि—डॉ० साधना 1587
पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर: ऐतिहासिक परिपेक्ष्य—रूबी कुमारी 1591
नूरपुर (जिला-बिजनौर, उ०प्र०) शहादत काण्ड: १६ अगस्त, १९४२—डॉ० सुरेश चन्द 1596
दुर्ग जिले के शासकीय उच्च प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के बर्नआऊट का तुलनात्मक अध्ययन —वर्षा हरिहरनो; डॉ० (श्रीमती) वी. सुजाता; डॉ० अर्निबन चौधरी 1598
विस्थापन और महिला घरेलू कामगार—डॉ० सुधा एम देशपांडे 1602
भोजपुरी लोकगीतों में क्रांति के स्वर—सुशीला शर्मा 1606
बाल श्रम की स्थिति—डॉ० प्रतिष्ठा 1610
समकालीन हिन्दी कविता और नारी—डॉ० आर०पी० वर्मा 1613
इक्कीसवीं सदी में वृद्ध विमर्श—महेन्द्र कौर 1616
कौशाम्बी का पुरातात्विक महत्व—डॉ० शिवांगी राव 1619
राजभाषा हिंदी की संवैधानिक पृष्ठभूमि—विनीत कुमार वर्मा 1623
उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के किशोर छात्र-छात्राओं की शैक्षिक रूचि के अन्तर्गत कृषि सम्बन्धी रूचि का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० ठाकुर प्रसाद 1627
रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन एवं इसकी वर्तमान संदर्भ में प्रांसगिकता—राजेश गुप्ता 1630
भारतीय राजनीति में नैतिकता और मूल्य—कौशल कुमार सेन 1633
COVID-19 महामारी के दौरान लॉकडाउन और दूरस्थ शिक्षा से सामाजिक वर्ग की उपलब्धि का अंतर बढ़ने की संभावना का एक अध्ययन—डॉ० कालिंदी लालचंदानी 1637
संगीत विषय का ज्ञान प्राप्त भावी शिक्षकों के वैयक्तिक मूल्य की स्थिति का अध्ययन—वीना लोहार; डॉ० अंजना गौतम 1640
पारिवारिक विघटन को रोकने में भारतीय समाज की महिलाओं की सकारात्मक भूमिका; एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—ज्योति पांचाल मिस्त्री
विधिक एवं सामाजिक अध्ययन बाल विवाह: विधिक प्रावधान—श्रीमती नीति निपुण सक्सेना 1648
नंदुरबार जिले में महाविद्यालयीन छात्रो के बीच उपभोक्ता अधिकार एवं उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का अध्ययन—डॉ० गौतम म० मोरे 1652
धारणीय विकास में महिलाओं की भूमिका—डॉ० रवी आहुजा 1658
भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह—प्रा० सचिन करभारी जाधव 1661
भारत में महिला उद्यमियों पर एक अध्ययन: देश में आर्थिक स्वतंत्रता और विकास को बढ़ावा देना—प्रा० डॉ० परशराम रतन सोहनी 1665
राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व: स्थिति और समस्याएं—डॉ० जितेन्द्र दोतानिया 1668

बुजुर्ग पीढ़ी की विडम्बना को रेखांकित करता चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'गिलिगडु'–डॉ० सुषमा पाल 1672

स्वामी विवेकानंद की दार्शनिक विचारधारा में सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों का समावेशन एक अध्ययन–मनोज कुमार शर्मा 1676

भारतीय सिनेमा की समानता और असमानता बॉलीवुड के लिए भोजपुरी और बंगाली उद्योग का एक केस अध्ययन –प्रतिमा; प्रो० गोविंद पाण्डेय 1678

अन्य पिछड़ा वर्ग के सामाजिक, आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ राज्य अंत्याव्यवसायी वित्त एवं विकास निगम का योगदान (राजनांदगांव जिले के विशेष संदर्भ में)–डॉ० के०एल० टाण्डेकरत; डॉ० मुन्नालाल नंदेश्वर; डॉ० दिनेश कुमार नामदेव 1684

श्रम, श्रमिक, समस्याएं एवं समाज कल्याण–डॉ० पुष्पराज गौतम 1688

ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा के अवरोधन में अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन–डॉ० बृजेश चन्द्र त्रिपाठी 1692

कालिदास के काव्य में वैदिक ऋचाओं की प्रसांगिकता–डॉ० नरेन्द्र कुमार वेदालंकार 1696

साहित्येतिहास की यवनिका के पीछे छिपा स्त्री सच–कविता भाटिया 1699

आयशा अल-तैमूरिया: मिस्र के नारीवाद की जननी–आस्मा अहमद 1702

कुली बेगार आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–रेखा आर्या 1705

यौगिक परम्परा में योगी स्वात्माराम–उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 1709

उच्च, वरिष्ठ एवं माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन–ज्योति सिंह; डॉ० अनुज 1712

कोरोना महामारी में तनाव प्रबंधन के लिए योग एवं प्रेक्षाध्यान–डॉ० विनोद कस्वां; अनीता हिरण 1717

भिंड जिले का भौगोलिक परिवेश–डॉ० शालिनी गुप्ता 1722

शिक्षा-निष्णात स्तरीय विद्यार्थियों की हिंदी व्याकरणिक दक्षता का अध्ययन–डॉ० फरजाना ईरफान; जगदीश चंद्र आमेटा 1725

बाल अपराध का समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य : एक अध्ययन–डॉ० विवेक कुमार सिंह; कान्ती पाण्डेय 1730

पंजाब के कबिलाओं के परंपरागत व्यावसायों में बदलाव के साहित्य की समीक्षा–गगनदीप सिंह 1734

भारत मे विधिक सहायता एवं जागरूकता : मुद्दे और चुनौतियाँ–सर्वेश सोनी 1738

लैंगिक समानता न्यायिक दृष्टिकोण–सुषमा सिंह 1742

केंद्र-राज्य संबंध और सुशासन पर इसका प्रभाव–आनंद कुशवाह 1746

हिंदी साहित्य में किन्नरों की मानवीय संवेदना–डॉ० गायत्री 1750

भारतीय संदर्भ में जनहित याचिका पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० पूजा गुप्ता 1753

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में अद्‌भुत लेखनी–अनिल कुमार 1758

पीड़ित व्यक्ति के अधिकार विधि के परिपेक्ष में–गिरीश पाल 1762

भारत में बाल श्रम को रोकने पर शिक्षा का प्रभाव–पल्लवी वरैया 1767

समकालीन हिन्दी कहानियों में स्त्री जीवन और संघर्ष–डॉ० सियाराम शर्मा; डॉ० श्रद्धा चन्द्राकर; मीनाक्षी चतुर्वेदी 1771

भारतीय न्यायिक प्रणाली में लोक अदालतें: प्रासांगिकता ढाँचागत संरचना और चुनौतियाँ–मंकेश पाण्डेय 1774

गिरीश पंकज के व्यंगय - संग्रह 'ईश्वर की प्रतीक्षा' में सामाजिक यथार्थ का चित्रण–निगिता रामटेके; डॉ० शंकर मुनि राय 1778

दर्शन की दृष्टि में भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों का महत्व–डॉ० शिव शंकर प्रसाद 1780

हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'हंस' का योगदान–डॉ० रेनू दीक्षित; रोहिताश कुमार 1782

कोरोना महामारी और सेवानिवृत्त व्यक्ति–डॉ० रश्मि दत्त 1785

आंतरिक पीड़ा का मर्म और हिन्दी दलित आत्मकथा–डॉ० रेनू दीक्षित; आशीष कुमार 1787

वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में गांधी शिक्षा दर्शन की सार्थकता- एक अध्ययन–डॉ० नीलम श्रीवास्तव 1791

नई शिक्षा नीति, 2021 - एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० अलका सक्सेना 1795

साहित्य संस्कृति एवं मानव मूल्य–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 1798

ऋग्वैदिक परम्परा में विष्णु–डॉ० अमिय कृष्ण 1801

रतलाम जिले में रेशम तथा मक्का उत्पादन के लागत-लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण–दीपिका शर्मा; डॉ० लक्ष्मण परवाल 1803
मानव जीवन पर वायु प्रदूषण का प्रभाव एवं रोकथाम : एक विधिक अध्ययन–सुनीता कुमारी 1809
राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की भूमिका: एक विधिक अध्ययन–विवेक कुमार 1814
क्रांतिदूत नामक उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना–चैतराम यादव; डॉ. (श्रीमती) बी.एन. जागृत 1820
भारत में लोकतंत्र एवं महात्मा गांधी–डॉ0 अजय प्रताप सिंह 1823
विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर समय नियोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना–श्रीमती रूपा श्रीवास्तव 1827
वर्तमान परिवर्तित परिदृश्य में भारत नेपाल संबंध: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० धनंजय यादव 1830
कोविड-19 महामारी तथा पर्यावरण पर प्रभाव–डॉ० श्वेता मिश्रा 1833
भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका–दीपिका वशिष्ठ; डॉ० रेणू मित्तल 1836
संवाद योजना: लहरों के राजहंस–डॉ० सुनीता 1842
'स्वर - अभ्यास' में वाद्य का महत्व–पारुल शर्मा 1845
अनुसूचित जातियों में प्रमुख है, भारत का मूल "चमार वंश"–डॉ० सुरेश चन्द; डॉ० ओम प्रकाश सिंह 1848
पश्चिमी राजस्थान में भेड़पालन–डॉ० सुभाष 1852
महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता–रजनी 1857
आसपुर देवसरा ब्लाक के सरकारी और गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं का अध्ययन –बृजेन्द्र कुमार यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 1859
ब्रज लोकगीत और नारी जीवन–विकास कुमार 1866
डॉ० शेर सिंह बिष्ट कृत पुस्तक समीक्षाओं का एक मूल्यांकन–भवान सिंह 1869
आधुनिक हिंदी काव्य में पौराणिक स्त्री चरित्र–आयुषी राय 1872
भारतीय संस्कृत नाट्यपरम्परा-एक अवलोकन–मनोरमा कुमारी 1876
ब्रिटिश कालीन पुलिस व्यवस्था: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में–नरेश कुमार पटेल; डॉ० किशोर कुमार अग्रवाल 1879
हिन्दी कथा साहित्य में शिव प्रसाद सिंह का योगदान–शैलेश कुमार यादव 1885
समाजिक व धार्मिक पुनरूत्थान के प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज–श्रीमती अंगूरी सैनी 1889
रामानंदी द्वादश शिष्यों का परिचयात्मक विवेचन–डॉ० बंशीलाल 1893
डॉ० धर्मवीर भारती के गद्य सात्यि में परम्परा और आधुनिकता–उमेश चंद 1898
पोस्ट बॉक्स नं0 203 नाला सोपारा में चित्रित किन्नर समुदाय की पीड़ा–बबीता 1901
डिजिटल-मीडिया के दौर में गुरु नानक बाणी–सुनील 1904
एक विषय : राजनीति विज्ञान का अध्यापन–मोना वर्मा; डॉ० सत्यभामा सौरज 1907
स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य : एक वैचारिक नोट–जया भारती; हितैषी सिंह 1911
डुग्गर प्रदेश के लोकसंगीत में लोक वाद्यों का महत्व–डॉ० संजीत कुमार 1915
जैन धर्म में महिलाओं की प्रस्थिति–डॉ० सिंह अरूण कुमार लक्ष्मण; डॉ० प्रदीप नारायण डोंगरे 1918
उच्च शिक्षा में शिक्षक सक्षमता: एक विश्लेषण–मो० वकार रजा 1921
शिवमूर्ति की कहानियों में संघर्षरत स्त्री–सरिता 1924
भारत में दलित महिलाओं की स्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–बिष्णु रंजन कुमार 1926
बी०एड० प्रशिक्षुओं में सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० मंजूषा अवस्थी 1930
कुमाऊँ का भौगोलिक विस्तार–गजदीप कुमार आर्या; कमल सिंह कोरंगा 1933
भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली : चुनौतियां और सुझाव–मो० वकार रजा 1861

'वायरलेस डेटा संचार में लाई-फाई प्रौद्योगिकी का दायरा और चुनौतियां'–श्रीमती कल्पना शामराव सोनवणे 1940

पाकिस्तानी आण्विक क्षमता का भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव - एक अध्ययन–डॉ० राजु सिताराम पवार 1946

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन में सामाजिक समरसता का अध्ययन–कुलदीप गंगवार 1949

कठोपनिषद् के परिप्रेक्ष्य में आत्मानुचिंतन–किरण बाला 1953

जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणवाद–डॉ० अरविंद कुमार सिंह 1956

अवधी एवं भोजपुरी लोकनाट्यों में लोकचेतना–अनुपम यादव 1960

कोविड 19-"आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"–डॉ० अन्जू सिंह 1964

निरस्त्रीकरण पर संयुक्त राष्ट्र और विश्व शक्तियों का परिप्रेक्ष्य–गुरजीत सिंह 1967

भगवती चरण वोहरा और दुर्गा देवी वोहरा: भारतीय क्रांतिकारियों के बौद्धिक वक्ता–प्रदीप सिंह 1969

सत्कार्यऽस्तकार्यवादयो: स्वरूप विचार:–डॉ. दीपक कुमार पाण्डेय 1972

विजयसिंह पथिक: एक राष्ट्रीय पत्रकार–डॉ० किशोर कुमार; भूपेन्द्रसिंह 1976

समान नागरिक संहिता आधुनिक भारत की महती आवश्यकता : एक विधिक विश्लेषण–डॉ० कामेश्वर प्रसाद 1984

वैदिक पर्यावरणीय दर्शन एवं वर्तमान समय में उसकी उपादेयता–डॉ० पूनम पाण्डेय 1990

उच्च शिक्षण सस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में जनसंख्या गत्यात्मकता सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन–नेहा रावत 1998

तकनीकी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के छात्रों की जागरूकता का अध्ययन –प्रार्थना यादव; डॉ० अखिलेश कुमार श्रीवास्तव 2003

शिक्षा का बदलता परिदृश्य: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में–डॉ० मुकेश कुमार 2008

'ग्लोबल गाँव के देवता' : आदिवासी संघर्ष का यथार्थ दस्तावेज–प्रा० संतोष बबन पगार 2013

संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान, खोज प्रशिक्षण प्रतिमान और परम्परागत विधि द्वारा शिक्षण का माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की सापेक्ष प्रभावशीलता का अध्ययन–डॉ० बी० बी० सिंह 2016

आधुनिक काव्य में समाज और संस्कृति : एक अनुशीलन–डॉ० कल्पना सिंह 2019

शिवानी गौरा पंत और मन्नू भंडारी जी का राजनैतिक पक्ष–डॉ० नम्रता जैन 2027

प्राचार्यो की महाविद्यालयीन शिक्षा में जवाबदेही अथवा प्रतिबद्धता एवं अधिकारों को सौंपना–रत्नेश कुमार जैन 2029

काँग्रेस की उत्पत्ति - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रिया कुमारी; डॉ० अंजना पाठक 2034

प्रवासी साहित्य की पृष्ठभूमि और सुंदरता : स्त्री विषयक–डॉ० विद्या कुमारी चंद्रा 2037

मानवाधिकार और भारतीय लोकतंत्र–डॉ० संजय एस. धोटे 2040

ग्रामीण भारत में कौशल विकास के द्वारा रोजगार में वृद्धि की सम्भावना: एक दृष्टि–डॉ० शिखा 2044

कोविड-19 के बाद विश्व और भारत–डॉ० किरन सिंह; डॉ० अवधेश कुमार दूबे 2047

धर्मवीर भारती के काव्य 'अन्धायुग' में आधुनिकता–डॉ० नीलम तिवारी 2050

सूफी साहित्य की सामाजिक भूमिका–डॉ० ज्योति श्रीवास्तव 2053

भारतीय समाज में संस्कारप्रद शिक्षा: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–निकी कुमारी 2056

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम एवं सामाजिक सुरक्षा–ओंकार नाथ झा 2060

मानस का हंस : वस्तु विवेचन–डॉ अंबुजा एन् मलखेडकर 2064

जोसेफ बटलर के अन्तर्विवेक सिद्धांत की समीक्षा–नेदा परवीन 2068

अरस्तू के सद्गुण सम्बन्धी विचारों की समीक्षा–अंजली शर्मा 2072

'रोज' कहानी में चित्रित स्त्री जीवन–डॉ० नमिता जैसल; कु० वैभव 2076

भारतीय समाज में गैर-मुस्लिम तलाकशुदा महिलाओं की स्थिति–डॉ० नीशू कुमार 2081

समय के साथ सिनेमा ने बदला रुप और स्वरुप–संजय कुमार सिंह 2085

'समकालीन हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श'–डॉ. सुनील एम. पाटिल 2088
'मन्नू भण्डारी की कहानी में नारी सशक्तिकरण'–डॉ० रेखा वर्मा 2092
शिक्षा के क्षेत्र में शांतिनिकेतन के सामाजिक तथा मानवीय पक्ष की अवधारणा तथा आधुनिकता के साथ सामंजस्य का अध्ययन –अमिता कुमारी; निशि कुमारी 2094
तनाव प्रबन्धन पर संगीत का प्रभाव–विन्ध्या शुक्ला; डॉ० चारू व्यास 2099
भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति–डॉ० विनीता गुप्ता 2102
चित्रा मुद्गल के आवां उपन्यास में नारी-चेतना–कल्पना शर्मा; डॉ० चित्रा 2105
किशोरावस्था : एक तनाव एवं संघर्षमय स्थिति–शाजिया सुल्तान 2109
जीवन मुक्ति के उपासक: हिन्दी के संत कवि–डॉ० कल्पना दुबे; कांता देवी 2112
भारतीय लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप का एक अध्ययन–डॉ० अनुभा श्रीवास्तव 2115
ग्रामीण संरचना में जजमानी व्यवस्था के गुण एवं अवगुण–डॉ० राजेश कुमार 2119
समसामायिक जीवन में संत तुकाराम का योगदान–डॉ० भारती वलवी (वाघ) 2122
परमहंस स्वामी पूर्णानन्द यति कृत "षट्चक्रनिरुपणम्" में साधनागत तत्त्वों का दार्शनिक स्वरूप–डॉ० प्रदीप 2126
''छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा क्षेत्र में बालश्रमिकों की सामाजिक, शैक्षणिक, शारीरिक व मानसिक स्थिति-एक अध्ययन''–वैशाली प्रकाश ग्वारले 2130
विवेचित महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन यथार्थ (1990 से 2010 तक)–हवासिंह यादव 2134
माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतो एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन–प्रीति उपाध्याय 2139
नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा सम्बन्धी प्रयास–रंजीत कुमार सिंह; डॉ० इम्तेयाज आलम 2143
हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की समस्याएँ–अमित कुमार 2146
बिहार राज्य के ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक-सामाजिक विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान–काजल कुमारी; डॉ० मोहन कुमार लाल 2148
वैश्विक अवधि में कृषि विविधीकरण का कृषि उत्पादन पर प्रभाव: बिहार के संदर्भ में एक विशेष अध्ययन –रमण जी यादव; डॉ० मोहन कुमार लाल 2153
बिहार राज्य के ग्रामीण बेरोजगार युवकों को आर्थिक रूप से सबल बनाने में कौशल विकास योजना की भूमिका–मनोज कुमार साह 2157
दलित अस्मिता के कवि: कबीर–डॉ० अजायब सिंह 2160
यथार्थ के धरातल पर उभरती हुई अमरकांत की कहानियाँ–डॉ० यदुवीर सिह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई 2164
बौद्ध धर्म में निहित वैदिक दर्शन के तत्व–डॉ० ईशा शर्मा 2171
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य विद्यालयी सामाजिक समावेषण का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० पी०एस० त्यागी; सतीश बाबू 2174
मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री–डॉ० राम पाण्डेय 2183
बाल श्रम एवं कोविड-19–डॉ० रूपा यादव 2186
गालिबकाव्यम् में मदिरा और मधुशाला–शहनाज़ कुरैशी 2191
''जनजातीय क्षेत्र (उदयपुर संभाग) के जवाहर नवोदय विद्यालयों की अकादमिक स्थिति''–डॉ० सुयश चतुर्वेदी; ललिता कुँवर राठौड़ 2194
भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति–शिल्पा शाह 2200
सशक्तिकरण में छत्तीसगढ़ भवन एंव अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल रायपुर द्वारा संचालित योजनाओं का मूल्यांकन-एक अध्ययन –डॉ० के०एल० टाण्डेकर; श्रीमति अंकिता शर्मा 2203
ग्रामीण क्षेत्रों के बाल विकास में ई-लर्निंग तकनीक के महत्त्व का अध्ययन–डॉ० मनाली उपाध्याय 2207
दल–बदल की अवधारणा–डॉ० उमाकान्त पासवान 2212
पर्यावरण प्रदूषण के भौतिक एवं प्राकृतिक तत्वों का अध्ययन–डॉ० रविन्द्र कुमार 2216
21वीं सदी का शिक्षण और संचार तकनीक के साथ सीखना: एक महत्वपूर्ण टिप्पणी–नीरद राजा 2222

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता पर सोशल मीडिया का प्रभाव—शाहिना मतीन 2224
स्नातक स्तर पर अध्ययनरत मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन —वजीह अहमद खां 2227
पिछड़े बालकों की समस्यायें, शिक्षा एवं समायोजन—इशिता; डॉ० आदित्य नारायण चौधरी 2230
उत्तर-प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की उपादेयता—डॉ० चेतना पाण्डेय; संजय सिंह 2233
कानपुर देहात जनपद में कृषि में सिंचाई साधनों का योगदान: एक भौगोलिक अध्ययन—चन्द्रप्रभा 2236
आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानन्द जी का नव्य वेदान्त दर्शन—देश दीपक वर्मा; डॉ० श्रीप्रकाश मिश्र 2240
जनपद बागपत के ग्रामीण खेतीहर श्रमिकों का एक आर्थिक एवं सामाजिक विश्लेषण—पवन त्रिवेदी 2243
विज्ञान के युग में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता—डॉ० अंजू लता; श्रीमती प्रियंका साहू 2252
1857 के विद्रोह की वीरांगना: रानी अवंतीबाई—बबली कुमारी 2255
पूर्व मध्यकाल में बौद्ध शिक्षालयों एवं आचार्यों के अंतर्राष्ट्रीय संबंध—मनोज कुमार 2258
भारतीय राजनीतिक चुनावों में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन—वेंकटेश्वर; डॉ० खेमचंद महावर 2263
भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारकों का एक अनुभवजन्य अध्ययन—प्रताप सिंह; डॉ० खेमचंद महावर 2267
हिंद स्वराज और भूमंडलीकरण: एक गांधीवादी परिप्रेक्ष्य—डॉ० निधि रायजादा; रंजय प्रसाद 2270
वित्तीय ज्ञान के विकास में प्रधानमंत्री जनधन योजना की भूमिका सुपौल जिला के ग्रामीण इलाकों के संदर्भ में एक अध्ययन—संजीव कुमार 2272
योगाभ्यास का विद्यार्थियों के चिंता पर प्रभाव का अध्ययन—डॉ० रामा यादव; प्रियंका कुमारी 2278
विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन आदत एवं पालकीय प्रोत्साहन का तुलनात्मक अध्ययन—प्राची अनर्थ 2283
हिन्दी के आधुनिक कबीर 'नागार्जुन'—डॉ० रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 2287
अटल बिहारी की प्रासंगिकता—डॉ० सविता वर्मा; विरेन्द्र साहू 2289
रूस की विश्वव्यापी रणनीति: एक राजनीतिक विश्लेषण—शैलेन्द्र कुमार 2291
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में फाल्गुन मास का चित्रण—विद्या देवी; डॉ० बलराम गुप्ता 2295
बदलते भारतीय परिदृश्य में देशांतरण का दंश—डॉ० सुजाता चतुर्वेदी 2298
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य विद्यालयी सामाजिक समावेषण का तुलनात्मक अध्ययन —प्रो० पी०एस० त्यागी; सतीश बाबू 2302
इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की साहित्यिक विचारधारा—किरण कलिता 2307
इंटरनेट प्रभाव का अध्ययन संबंध में सामाजिक जागरूकता, कक्षा प्रेरणा और माध्यमिक—अतुल कुमार 2309
आदिवासी समाज में सामाजिक चेतना : संजीव के 'धार' उपन्यास के सन्दर्भ में—राजकुमार किशनराव 2314
भारत के सामरिक हित - तथा भारत चीन सीमा विवाद—डॉ० अंशु पांडे 2318
"गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों का विश्लेषण" (म.प्र. के रतलाम जिले के विशेष संदर्भ में) —डॉ० लक्ष्मण परवाल; डॉ० अरविंदर कौर गांधी 2322
सारस्वत राजशेखर:—डॉ० प्रकाश नारायन मिश्र 2329
वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - एक अवलोकन—श्रीमती सीमा नाईक 2336
आत्मनिर्भर भारत अभियान का विश्लेषण: सूक्ष्म व लघु उद्योगों के संदर्भ में—गुरचरण सिंह; डॉ० ओ०पी० सिंह 2338
अमृता प्रीतम के कथा साहित्य में नारी की सामाजिक समस्याएँ—ज्योति सक्सेना; डॉ० सविता वर्मा 2342
सोनपुर मेला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन—अमिताभ बच्चन 2346
सुशासन की राजनीति के जनक अटल बिहारी वाजपेयी—स्वदेश सिंह 2349
अखिलेश की कहानियों में उदारीकरण और सामाजिक परिवर्तन—सुनील यादव 2352
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० रोहित कुमार त्रिवेदी 2355

स्वच्छता के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–संतोष कुमार यादव; डॉ० शिवराज कुमार 2359
समाज पर मोबाइल फोन के प्रभाव का एक समाजिक कार्य अध्ययन–नीमा पाठक 2363
छत्तीसगढ़ में शिक्षित युवाओं पर बेरोजगारी का अध्ययन(कबीरधाम जिले के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० खोमन लाल साहु; प्रो० मुकेश कामले 2371
राग भैरवी की बन्दियों में कवित्त सौन्दर्य–प्रो० अन्जना गौतम; प्रीति शर्मा 2376
बिलासपुर जिले के अशासकीय पू.मा. शालाओं के छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० संजीत कुमार तिवारी; राजकुमार सिंह 2383
भारत रुस संबंध-एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० बिपिन दूबे 2386
भारतीय राष्ट्रवाद में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान–सुरेश चन्द्र शर्मा 2393
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन–श्रीमती रूपा श्रीवास्तव 2398
गीता में वर्णित कर्मयोग–डॉ० जेबा खान 2401
महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक कुरीतियों का अध्ययन–खेमबाई साहू; डॉ० सविता वर्मा 2404
खेल से बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व मुल्यों एवं समायोजन प्रक्रिया का अध्ययन–रामकुमार कुशवाहा; डॉ० ए० के० त्रिपाठी 2407
विभिन्न खेलकुदों में खिलाड़ियों के असरकारक निष्पादन में योग के प्रभाव का एक अनुभवात्मक अध्ययन–सरदार सिंह; डॉ० ए० के० त्रिपाठी 2412
चित्रकूट क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं धार्मिक विरासत और पर्यटन विकास का समीक्षात्मक अध्ययन–सुशील कुमार यादव 2417
हिन्दी साहित्य में छायावादी कवियों के काव्य में प्रकृति का रूप–दर्जी चन्द्रिका बहन छगनभाई 2422
मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन परंपरा एवं स्वरूप–डॉ० राघवेन्द्र यादव 2426
आदिवासी कविता में नारी की संवेदनाएँ–डॉ० एम यशोदा देवी; डॉ० के० चंद्रा 2430
जनपद आजमगढ़ में प्रमुख व्यवसायिक फसलों की उत्पादकता में दीर्घकालिक परिवर्तन (1997-98 से 2017-18) –सर्वज्ञ कुमार सिंह; विकास सिंह 2437
गाँधी और विनोबा की अहिंसा–डॉ० सितेश कुमार 2441
छत्तीसगढ में बुनियादी शिक्षा का ऐतिहासिक अनुशीलन (जेनसन मेमोरियल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जगदीशपुर के विशेष संदर्भ में)–डॉ० बन्सो नुरूटी; रणजीत कुमार 2444
स्वस्थ जीवन में मुद्रा चिकित्सा की भूमिका–श्रीमती बबीता 2450
पंजाबी सूफी काव्य में सौंदर्य-संवेदना–डॉ० कुलदीप कौर पाहवा 2460
मुगल हरम में स्त्रियों की स्थिति–डॉ० अंजना पाठक 2464
रंगकर्म द्वारा उत्कृष्ट नाटकों की समकालीन व्याख्या–आलोक मिश्र 2466
छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक और आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन–अनुराग यादव 2468
ग्रामीण विकास तथा विकेन्द्रित आयोजना के परिप्रेक्ष्य में बिहार के पंचायती राज संस्थाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन–रवि शंकर दयाल 2472
नक्सलवाद: भारतीय लोकतंत्र को चुनौती–रंजीत सिंह 2477
उच्च माध्यमिक स्तर के राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के शैक्षिक कार्यो के प्रति जागरूकता का अध्ययन –प्रो० कल्पना सैंगर; लक्ष्मी छीपा 2481
रोमेश चन्द्र दत्त के अकाल के सम्बन्ध में अर्थशास्त्रीय विचार–डॉ० तेजवीर सिंह; अजय यादव 2485
श्यामेश्वर महादेव मन्दिर छपकौली, जनपद हापुड़ (उत्तर प्रदेश)–डॉ० हरीश कुमार 2489
किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन–गौरी शंकर 2493
राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के अधिकारों और कार्यो का एक संक्षिप्त अध्ययन–निखिल कुमार 2500
संसदीय कार्यप्रणाली में छत्तीसगढ़ क्षेत्र की प्रथम महिला सांसद मिनीमाता की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ० अनामिका शर्मा 2502

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में गृह कलह की समस्याएं–डॉ० निकेता; नितिन कुमार 2509
सार्वजनिक पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण में आई0सी0टी0 (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) के अनुप्रयोगों का महत्व: एक अध्ययन –अजय कुमार मिश्र; कुँवर संजय भारती 2512
औरंगजेब की धार्मिक नीति एवं उसका प्रभाव–रविन्द्र प्रताप सिंह 2516
गुप्तकालीन मुद्राओं का संक्षिप्त अध्ययन–पल्लवी सक्सेना 2519
कला संकाय के महिला व पुरुष विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन–श्रवण कुमार यादव; डॉ० जय प्रकाश दूबे 2522
न्यायिक सक्रियता: अर्थ, प्रकृति एवं वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता–अनीता मीणा 2527
इलेक्टॉनिक माध्यम और रोजगार के अवसर–प्रा० डॉ० बेबी राघू कोलते 2533
जनमत निर्माण में नारों की भूमिका: एक अध्ययन (भारतीय चुनाव के विशेष संदर्भ में)–डॉ० शिवेन्द्र मिश्रा 2535
राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अवलोकन–राकेश कुमार; डॉ० आशा जायसवाल 2539
अमरकांत के साहित्य का अवदान–डॉ० अभिलाषा शुक्ला 2542
प्रधानमंत्री मोदी के शासनकाल में चीन और नेपाल संबंध–अवधेश प्रसाद 2544
हिंद महासागरीय क्षेत्र में भारत की स्थिति–अजय चौधरी 2547
बिहार विधानसभा चुनाव 2020 का चुनावी: प्रदर्शन एक संक्षिप्त अध्ययन–अजय कुमार ओझा 2550
गणित में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण विधि का परम्परागत शिक्षण विधि से तुलनात्मक अध्ययन–विभय कुमार सोनी 2553
वर्तमान युग में कर्म-नियम की प्रासंगिकता–डॉ० रीटा खन्ना 2558
महिला उद्यमिता के विकास में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) की भूमिका का अवलोकनात्मक अध्ययन–डॉ० विजय ग्रेवाल; नीलम कुशवाह 2561
पेंशनभोगी महिलाओं के अन्तःपारिवारिक सम्बन्ध एवं भूमिका संघर्ष (नैनीताल नगर की पेंशनभोगी महिलाओं पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)–डॉ० निर्दोषिता बिष्ट 2566
काशीनाथ सिंह की कहानियों में मनोवैज्ञानिक संवेदना–डॉ० जयप्रकाश यादव; देवब्रत यादव 2574
कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 2577
भारतीय इतिहास में शिक्षा का 'जेन्डरीकरण' और महिलाओं की दावेदारी- एक नारीवादी अवलोकन–डॉ० मनस्विनी श्रीवास्तव 2581
भोजपुरी लोकगीतों का काव्य-वैभव–डॉ० उत्तम कुमार शुक्ल 2585
पंचायती राज की आवश्यकता, समस्याएं एवं सुधार–इंजमाम उल अहमद अंसारी 2589
अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं विजय सिंह पथिक–प्रो० संजय सिंह; अमित कुमार 2592
रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक एवं दार्शनिक चिन्तन के आयामों का संक्षिप्त मूल्यांकन–कृष्ण सिंह अधिकारी; डॉ० मंजुला सिंह 2594
भारतीय राजनीति में जयप्रकाश नारायण का योगदान–रूबी कुमारी 2599
केदारनाथ सिंह के काव्य में लोक-संस्कृति की अवधारणा–सविता 2602
पाणिनि प्रोक्त 'आतोऽनुपसर्गे क:' कृत्प्रत्यय-विधायक सूत्र: एक विवेचन (विश्वेश्वरसूरि के आलोक में)–सुरेन्द्र सिंह 2606
नई शिक्षा नीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों का स्थान–डॉ० सुनीता 2609
भारतीय राष्ट्र दृष्टि–डॉ० संजय कुमार 2612
वेदों में वर्णित विद्या अलंकृता नारी के ऋषिकात्व की विवेचना–रोहणी तिवारी 2615
रतलाम जिले में स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के अंतर्गत गठित एवं विभिन्न ग्रेड उत्तीर्ण स्व-सहायता समूहों का विश्लेषण –डॉ० लक्ष्मण परवाल; डॉ० अरविंदर कौर गांधी 2620
1857 की क्रान्ति में बुन्देलखण्ड की भूमिका–राम सिंह वर्मा 2625

गृह निर्माणप्रारम्भहेतवे शुभाशुभमासा: तेषां परिणामश्च:–डॉ० ऋचा त्रिवेदी 2630
वाक्यपदीय विवेचित लक्षणा का स्वरूप–डॉ० पवन शर्मा 2633
भारत-नेपाल संबंध 2009 से अब तक–अनुराग यादव; डॉ० प्रेमचन्द्र यादव 2636
पंचायती राज में महिला सहभागिता–डॉ० वंदना जायसवाल; विनोद कुमार 2639
भारत-बांग्लादेश संबंध 2014 से अब तक–रामपत; डॉ० ममता यादव 2643
कोविड -19 में महिला स्वास्थ्य कर्मियों की भूमिका–डॉ० शिल्पा शाह 2646
'कोरोना काळात आर्थिक संकटात सापडलेल्या पालकांनाकुटुंब सावरण्यासाठी मदत करणाऱ्या विद्यार्थीनी : एक अवलोकन'
–डॉ० राजाराम रा० जाधव 2649
कोरोना काळात विविध क्षेत्रातील महिलांचे कार्य–डॉ रवींद्र कांबळे 2653
पंजाबी सूफी संगीत में प्रेम और सौंदर्य-संवेदना–विष्णु कुमार 2656
सूरदास का सौन्दर्य-बोध–डॉ० अनु शर्मा 2659
अस्पृश्यता निवारण एवं नारी जागरण में स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राधा बाई की भूमिका: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में
–विनोद कुमार जांगड़े; प्रो० आभा रूपेन्द्र पाल 2665
महिलाओं के अधिकार: एक विश्लेषण–डॉ० अलका 2669
हिन्दी आलोचकों की दृष्टि में छायावाद–अजय कुमार सिंह 2672
बौद्ध धर्म-दर्शन प्रभावित ऐतिहासिक हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-चेतना–जितेन्द्र सिंह 2675
सृष्टि के विकास क्रम का परिचय: सांख्य दर्शन–मोनिका प्रजापति 2678
जनपद जौनपुर (उ0प्र0) में कृषि गहनता के गत्यात्मकता का स्थानिक वितरण–राजेश कुमार पाल 2681
विद्यार्थियों के आक्रामकता का उनके समायोजन से संबंध का अध्ययन–हेमन्त कुमार साहू; डॉ० लक्ष्मी वर्मा; डॉ० एन०पापा 2687
गुटबंदी की अवधारणा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० मौ० उजैर; डॉ० आर०के० ठाकुर 2691
भारतीय सभ्यता, संस्कृति और कला का वर्तमान स्वरुप–डॉ० रश्मि शर्मा 2695
डॉ० अनन्त सदाशिव अल्तेकर के द्वारा बिहार में किए गए पुरातात्विक कार्य–अराधना झा; प्रो० (डॉ०) नवीन कुमार 2700
विनोबा भावे के विचारों का वर्तमान में प्रभाव–नागेश सिंह; डॉ० ममता यादव 2704
विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पर गीता अध्यापन का प्रभाव: तुलनात्मक अध्ययन–कविता सिंह; डॉ० चारु व्यास 2707
ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक अभिवृत्ति एवं आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन
–महेन्द्र कुमार पटेल; डॉ० रविन्द्र कुमार 2711
नर सिंहवर्मन प्रथम एवं उसकी स्थापत्य कला–प्रवीण कुमार तिवारी 2717
पूर्व माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पाठय पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन–देवेन्द्र कुमार; प्रोफेसर रामबली यादव 2721
ब्रिटिश भारत में बिहार में कृषि उद्योगों के विकास का मूल्यांकन–कुमार देवेश 2725
हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा में सौंदर्यानुभूति–अनुराधा शुक्ला; प्रो० नीलमणि दूबे 2728
''भारतीय समाज में मनुष्य की जातिगत स्थिति और दलित आत्मकथाएं''–मनीष कुमार महरा; डॉ० आरती झा 2732
स्वामी रामदेव के शैक्षिक विचार एवं, योगासन का अध्ययन–डॉ० हलधर यादव; ओमपाल सिंह 2736
हिंदी साहित्य में दलित चेतना की पृष्ठभूमि–राजेश कुमार गुप्ता 2741
भारतीय युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति–डॉ० दीपाली सक्सेना 2744
गाँधीवादी आर्थिक दर्शन के परिदृश्य में अम्बेडकर का आर्थिक चिंतन–डॉ० अनिल कुमार 2752

पाण्डुलिपि सरंक्षण: एक अभिगम–डॉ० अनीता; विजय कुमार भारती 2755

गद्दी जनजाति के लोकगीतों में विरहगान–भरत सिंह 2759

लिच्छवि-गुप्त सम्बन्धों का राजनीतिक विश्लेषण–डॉ० उमेश सिंह 2765

'मुर्दहिया' आत्मकथा में लोकविश्वास–डॉ० सचेन्द्र कुमार 2767

औपनिवेशिक उत्तराखण्ड में स्त्री शिक्षा एवं स्त्री चेतना का प्रसार–रोहित पाण्डेय; डॉ० शरद भट्ट 2770

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बहुविषयक शिक्षा: सरोकार और चुनौतियाँ–डॉ० नाहर सिंह 2773

भारतीय ग्रामीण समुदाय में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के मार्ग में बाधाएँ–प्रमोद वर्मा; डॉ० आर0के0 ठाकुर 2776

माध्यमिक स्तर के हिंदी माध्यम वाले विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण दक्षता का अध्ययन–दिव्यांशी आमेटा 2780

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो में ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां एवं संभावनाएँ–डॉ० सुनीता अग्रवाल 2785

भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता (21वीं सदी के विशेष संदर्भ में)–डॉ० अन्जू शर्मा 2789

पंचशील की प्राथमिक शिक्षा में अवधारणा–शिप्रा अग्रवाल; डॉ० हलधर यादव 2794

बसोहली चित्रकला में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन दर्शन–डॉ० ईश्वर चन्द गुप्ता 2798

योग दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० सुनीता भार्गव; डॉ० रीटा झाझडिया 2801

जे० कृष्णमूर्ति के शान्ति व नैतिक मूल्य का अध्ययन–दिलीप कुमार सिंह 2804

हरियाणा लोकसाहित्य में कामपरक मूल्यों की अभिव्यक्ति–पूनम रानी; डॉ० सुरेश कड़वासरा 2807

जैनेन्द्र कुमार की वृद्ध मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ एवं मानसिक दशाएँ–जयश्री काकति 2812

यमदीप किन्नर जीवन का खुला दस्तावेज–आर्या एम०वी० 2815

मिट्टी, जड़ों से जुड़ी हुई कविता–श्रीलेखा के०एन० 2817

महर्षि पतंजलि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–मनोज कुमार सकलानी; डॉ० हलधर यादव 2819

मूल्यों का दार्शनिक अर्थ एवं वर्गीकरण–गीता पांडे; डॉ० हलधर यादव 2823

कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन–ममता मेहरा; डॉ० मंजुला सिंह 2827

स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन–पूनम रानी; डॉ० हलधर यादव 2831

भारत में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक विषय के चयन का विधार्थियों की व्यावसायिक अभिवृति पर प्रभाव का एक अध्ययन –शशि शर्मा; डॉ० हलधर यादव 2835

कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक समायोजना का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–भूमिका मिश्रा; डॉ० विमला सिंह 2839

शिवमूर्ति की कहानियों का सामाजिक यथार्थ–कृष्ण देव 2843

खड़ी बोली गद्य के विकास में 'हिंदी प्रदीप' का योगदान–सुभाष 2846

'देश भीतर देश' उपन्यास और असम की राजनीति–संजीव मण्डल 2849

मधु कांकरिया के उपन्यासों की भाषा–दीपा कुमारी 2853

विभाजन और विस्थापन के बीच का संघर्ष बनाम 'सिक्का बदल गया' कहानी–गीतांजलि 2857

पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से महिला सशक्तिकरण–उषा कुमारी 2860

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का दलित चेतना एवं सामाजिक उत्थान में योगदान–बबीता मलिक; डॉ० राजीव कुमार 2864

हरियाणा राज्य में महिला राजनीतिक अधिकारों की स्थिति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० संगीता विजय; ऋतु शर्मा 2868

गुरु तेग बहादुर बाणी की विलक्षणता–डॉ० रविन्द्र कौर बेदी 2873

संत रविदास: अमृतवाणी–डॉ० दर्शन सिंह 2876

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के धर्म, राजनीति एवं नैतिकता सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० कुलदीप सिंह 2879

विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में परिलक्षित भाषा एवं शिल्प–अनीता; प्रो० प्रदीप के० शर्मा; प्रो० रामजन्म शर्मा 2883

दृष्टिकोण

प्रतिलिप्याधिकार एवं पुस्तकालय: एक अवलोकन–डॉ० चंद्रवीर सिंह 2886
'अंधेरे मे' 'मैं' और 'वह' के बीच खड़े मुक्तिबोध–डॉ० अंजू दुबे 2890
भारतीय राजनीति में जयप्रकाश नारायण का योगदान–रूबी कुमारी 2895
वंशवाद और भ्रष्टाचार: स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में–दीपक कुमार राय 2898
कालिदास-प्रणीत 'मेघदूत' में मानवीय मूल्यों की सर्जना–सुनीता सिंह; डॉ० शालिनी अग्रवाल 2901
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय तथा निजी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन का अध्ययन –वीरेन्द्र प्रताप यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 2904
हरियाणा लोकनाट्य में संस्कृति के नीतिगत पारिवारिक आयाम–ममता रानी; डॉ० शक्तिदान चारण 2910
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं में राष्ट्रीय उद्‌बोधन–सबिता पॉल 2916
मीडिया और महिला समाज : एक सर्वेक्षण–डॉ० मीना 2920
उच्च माध्यमिक स्तर के जनजाति विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता एवं गृह वातावरण का अध्ययन–डॉ० सावित्री देवी मीणा 2922
भारतीय समाज में लिंगानुपात की चुनौती–डॉ० मंजुला त्रिपाठी 2929
बौद्ध धर्म व पर्यावरणीय चेतना–डॉ० अनिता प्रकाश; कु० विक्टोरिया 2931
'गणेश शंकर विद्यार्थी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान'–डॉ० अनीता प्रकाश; सुशील कुमार 2937
गरीब की गाय - बकरी–डॉ० धर्मेन्द्र सिंह 2940
पंचायती राज में गांधी दर्शन का एक अवलोकन–डॉ० राकेश रंजन 2942
भारत में महिला सशक्तिकरण में नारी शिक्षा का महत्त्व–डॉ० शुचि संतोष बरबघर 2945
पूर्व प्राथमिक शिक्षा: समस्या एवं सामाधान–डॉ० अमित कुमार पाण्डेय 2951
उच्च शिक्षा की स्थिति व प्रभाव–अनिल कुमार यादव 2956
शिक्षण अधिगम के सिद्धांत एवं स्तर–अर्सलान अहमद 2959
स्वतंत्रोत्तर भारत में विभिन्न शिक्षा समितियाँ एवं उच्च शिक्षा का प्रसार–अरविन्द्र कुमार मिश्रा 2962
प्राथमिक शिक्षा का महत्व एवं उद्देश्य–अरविन्द कुमार यादव 2965
प्राथमिक शिक्षा एवं नए प्रयोग–अश्विनी कुमार 2969
भारत में मध्यकालीन शिक्षा का उद्‌भव एवं विकास–डॉ० नागेन्द्र राम 2972
भोजपुरी लोक गीतों में चित्रित ईश्वर का स्वरूप–डॉ० अभय नाथ सिंह 2976
तिब्बत की अर्थव्यवस्था एवं स्वायत्तता के लिए विमर्श–डॉ० अशोक कुमार सिंह 2979
भारतीय सुरक्षा के सन्दर्भ में नेपाल का महत्व–डॉ० अश्विनी कुमार पाण्डेय 2982
परिवार में रहने वाले सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध का एक अध्ययन–डॉ० बीना पाण्डेय 2985
गर्भकालीन विकास को प्रभावित करने वाले कारक–डॉ० भाग्यवंती चौहान 2988
समाजवाद और पूंजीवाद पर विचार–डॉ० गंगा राम पटेल 2992
भारतीय जनजाति और संस्कृति की अवधारणा–डॉ० राजीव कुमार सिंह 2995
भारतीय लोकतंत्र की सशक्त राजनैतिक महिलाएँ–डॉ० रूदल कुमार सिंह 2998
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का छुआछूत एवं जातिय भेदभाव उन्मूलन सम्बन्धी विचार–डॉ० शारदा यादव 3001
स्वच्छता जनआन्दोलन का समाज पर प्रभाव–डॉ० सुनीता गुप्ता 3003
शिक्षा एवं शिक्षा के कार्य–कुमारी सरिता 3006
शिक्षा में गुणात्मक सुधार–कुसुम देवी 3009
ब्रिटिश काल में भारतीय शिक्षा–राजेश कुमार यादव 3012
भारतीय शिक्षा का अर्थ: आदर्श व्यवहार एवं नैतिक शिक्षा–रजनीश कुमार शुक्ल 3015

शिक्षण अधिगम के सिद्धांत एवं अधिगम स्तर–राम विलास यादव 3019

पूर्वमध्यकालीन आर्थिक स्थिति, सामन्तवादी व्यवस्था के सन्दर्भ में–संजय कुमार शुक्ल 3023

शिक्षा, संस्कृति एवं समाज–संजीव कुमार चतुर्वेदी 3026

प्राथमिक शिक्षा का विकास एवं आदर्श व्यवहार–संतोष कुमार पाल 3029

मानव जीवन के व्यवहार में शिक्षा–सुबाष कुमार 3032

शिक्षा: सामाजिक कल्याण के साधन के रूप में–सुरेन्द्र कुमार रजक 3035

भारतीय शिक्षा की समस्याएँ–विजेन्द्र कुमार गुप्त 3040

भारत में उच्च शिक्षा का प्रसार तथा प्रभाव–विकास सिंह 3043

भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार पुरूषार्थ चतुष्क–डॉ० गिरीश गौरव; राजू रावत 3049

रायपुर के उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच शैक्षणिक चिंता, कारण और निवारक उपाय पर अध्ययन–अंकिता चन्द्राकर; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य 3057

छत्तीसगढ़ के रायपुर में प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों का एक अध्ययन–संजय कुमार साहू; डॉ० रजनी दिवाकरराव शिवनकर 3062

कमलेश्वर के उपन्यासों का विविध परिप्रेक्ष्य–सुरजीत कुमार 3066

बक्सर जिला में साक्षरता का परिवर्तित प्रतिरूप–राजु कुमार; प्रो० (डॉ०) नरेन्द्र सिंह 3069

राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य में आर्थिक स्वरूप–डॉ० दीपा त्यागी; आशु चौधरी 3073

मुद्रास्फीति का भारतीय अर्थव्यवस्था और जीडीपी पर प्रभाव: एक विश्लेषण–डॉ० शम्मी कुमारी 3078

अमृतलाल नागर की कृतियां: एक संक्षिप्त अवलोकन–पूनम त्यागी 3081

खेलो में नैतिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अंजू 3084

बौद्धकालीन सामाजिक व्यवस्था–नीरज कुमार भारती 3087

भारत-नेपाल संबंध–डॉ० आरती यादव 3089

पेसा कानुन, अनुसूचित क्षैत्र एवं कानुन व्यवस्था–डॉ० नितेश खाँट 3092

बदलते सुरक्षा वातारण में भारत-इजराइल सम्बंध–डॉ० विजय कुमार 3094

सरोकार केंद्रित पत्रकारिता और सकारात्मक खबरों का ताना-बाना (दैनिक जागरण के विशेष सन्दर्भ में) –डॉ० धीरज कुमार; डॉक्टर अरुण कुमार भगत 3099

रांगेय राघव की कहानियों में व्यक्त 'बँटवारे' की पीड़ा–अकरम ऐजाज 3106

राष्ट्रीयता के अमर गायक: मैथिलीशरण गुप्त–सुमैय्या 3109

महाराष्ट्र के उच्च शिक्षा व्यवस्था का चिंतन–डॉ० हेमचंद्र ससाने 3112

सोशल मीडिया एवं टेलीविजन पर प्रसारित जेंडर रूढ़िवादिता–डॉ० सुजान सिंह नेगी; डॉ० नदीम अख़्तर 3116

बिहार में सामाजिक आंदोलन का निहितार्थ–डॉ० राजीव कुमार 3120

संथाली समाज एवं संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० सुरेन्द्र कुमार 3125

सांख्य-योग के बीच घनिष्ठ संबंधों का दार्शनिक अध्ययन–डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर 3128

भारत-अफ्रीका संबंध: आर्थिक परिदृष्य (2010 से वर्तमान तक)–नितेश कुमार; डॉ० विनय सिंह यादव 3130

त्रिलोचन और उनके काव्य में प्रकृति के विभिन्न भाव–डॉ० बबलू कुमार 3133

राजस्थान राज्य के दौसा जिले में प्रारम्भिक शिक्षा की स्थिति: एक अध्ययन–डॉ० संगीता विजय; लक्ष्मी शर्मा 3138

संत साहित्य में सामाजिक चेतना–डॉ० ज्ञानोबा गादगे 3146

बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिले की थारू जनजाति में राजनीतिक जागरूकता: एक आनुभविक अध्ययन –डॉ० संगीता विजय; कुमुंदीनी रंजना खतईत 3149

राजनांदगाँव जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता तथा आक्रमकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन–समीना कुरैशी; डॉ० शितल अडगाँवकर 3158

कथाकार कुसुम अंसल - सृजन के विविध आयाम–नारायण रमण चौधरी; डॉ० रमेश जगताप 3163

दृष्टिकोण

भारत में ड्रोन तकनीक की चुनौतियां एवं सम्भावनायें–डॉ० संगीता चौधरी 3167

काव्यशास्त्र-परम्परा तथा आचार्य भानुदत्त का योगदान-समीक्षात्मक मूल्यांकन–डॉ० सुजाता चतुर्वेदी; विष्णुकान्त गुप्ता 3175

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में प्रेम और काम निरूपण–नन्दिनी सिंह; डॉ० अलका द्विवेदी 3177

संतोष चौबे की कहानियों में मानवीय संबंधों का चित्रण–मिताली खोड़ियार; डॉ० आंचल श्रीवास्तव 3179

भारत के विभाजन के दौरान साम्प्रदायिक दंगे एवं महात्मा गांधी की शांति स्थापना की नीति–सदीक 3182

महाभारत में दंड व्यवस्था: एक सूक्ष्म अध्ययन–मीनाक्षी सिंह 3185

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में संघर्षरत स्त्री–पारोमिता दास 3189

सूचना प्रौद्योगिकी से बदलता ग्रामीण जीवन–डॉ० दयाशंकर सिंह यादव 3192

पर्यावरण शिक्षा: पर्यावरण एवं जीवन की गुणवत्ता–डॉ० अजय कुमार सिंह 3196

सूचना प्रौद्योगिकी से बदलता ग्रामीण जीवन

डॉ० दयाशंकर सिंह यादव

एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र, सकलडीहा पी. जी. कालेज, सकलडीहा

औद्योगिकी क्रांति के इस दौर में हम एक बड़े परिवर्तन से गुजर रहे है कोई भी परिवर्तन तभी सार्थक और दीर्घस्थाई हो सकता है जब समाज के सभी तबकों तक उसका लाभ पहुंचे और अगर विकास की बात करे तो उसकी सार्थकता इसी बात में निहित है की हर नागरिक को किसी न किसी रूप में सशक्त बनाया जाए। संयोगवश भारत में सूचना और संचार की मौजूदा क्रांति को सुनियोजित दिशा देने की कोशिश की गए है जो डिजिटल इंडिया के रूप में फलीभूत होती दिखाई दे रही है। ग्रामीण विकास में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रमुख उद्देश्य लोगों द्वारा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के निर्माण और कार्यान्वयन से सहभागिता के साथ साथ दक्षता, खुलापन और अनुक्रियाशीलता लाना है। यह ग्रामीण जीवन-शैली में गुणात्मक और परिमात्रात्मक परिवर्तन लाता है। समाज के मूलभूत पक्षों को प्रभावित करने वाले आधुनिक अभिकरणों में दूरसंचार की भूमिका सबसे अधिक सशक्त रूप में स्वीकार की जाती है।जब दो व्यक्तियों या दो संस्थाओं या फिर एक संस्था और व्यक्तियों के समूह के बीच संवाद स्थापित किया जाता है तो उसे संप्रेषण या संचार की संज्ञा दी जाती है। संचार के लिए यह माध्यम अखवार, पत्रिका, किताब, रेडियो, टेलीविजन या फिर इण्टरनेट को सकता है। जब समाज के बड़े वर्ग को किसी संचार माध्यम से जानकारी प्रदान की जाती है तो वह जन संचार कहलाता है और माध्यम से जानकारी प्रदान की जाती है तो वह जनसंचार कहलाता है और माध्यम को जन संचार माध्यम कहा जाता है। जाहिर है यह किसी संवाद की तरह व्यक्तिगत न होकर यह एक सामाजिक, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लेता है। इसलिए इस माध्यम से जब ढेर सारे लोगों को एक ही बात सुनाई या पढ़ाई जाती है तो वह काफी दायित्व भरा काम हो जाता है क्योंकि गलत, भ्रामक या खतरनाक जानकारी, समाज में असंतुलन, असंतोष और आक्रोश उत्पन्न कर सकती है।

संचार माध्यम की अपनी विशेषता होती है। उदाहरण के लिए रेडियो सुनने और समझने के लिए केवल कानों की जरूरत होती है। साक्षर न होते हुए भी गांव और शहर के लोग इसे पूरी तरह से ग्रहण कर सकते है। यही कारण है कि रेडियो की पहुंच पूरे देश में शत-प्रतिशत है और विभिन्न टेलीविजन चौनलों तथा अखबारों के निकलने के बावजूद रेडियो का प्रभाव सबसे ज्यादा है। सरकार के हाथ में रेडियो एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके जरिये वह चुनाव के दिनों में खासकर और बाकी दिनों में आमतौर पर जनता तक अपनी उपलब्धियों और सफलताओं को पहुंचा सकती है। एक जमाने में दूरदर्शन पर भी यह बात लागू होती थी लेकिन अब प्राइवेट चौनलों के आने के बाद सरकारी टेलीविजन देश भर में पहुंचता तो जरूर है लेकिन उसका प्रभाव तेजी से घटता जा रहा है। रही बात अखबारों की तो उनकी प्रसार संख्या सौ करोड़ की आबादी वाले देश में एक करोड़ भी नहीं है। यह माना जाता है कि लगभग दस करोड़ लोग ही अखबारों को पढ़ते है। इस देश में साक्षरता का स्तर लगभग 75 प्रतिशत से थोड़ा ही ज्यादा है। इसका अर्थ यह हूआ कि साक्षर लोगों में भी अखबार पढ़ने की आदत उतनी ज्यादा प्रचलित नहीं है। कारण अखबार पढ़े के लिए पैसा खर्च करना पड़ता है और समझने के लिए थोड़ी कोशिश और मेहनत करनी पड़ती है। टेलीविजन ने एक ओर बच्चों में मानसिक विकार, महिलाओं में उपभोक्तावाद और पुरुषों में पलायनवादी मनोरंजन को जन्म दिया है वहीं सभी वर्गो के पढ़ने की आदत को भी घटाया है। आश्चर्य का विषय है कि रेडियो ज्यादा प्रभावशाली होने के बावजूद अखबारों का महत्व कम नहीं कर पाया था क्योंकि रेडियो केवल सुना जाने के कारण एक आयामी था। जबकि टेलीविजन में दृश्य ओर श्रव्य के अलावा रोमांचित करने वाली अनेक प्रवृत्तियां भी जुड़ी होती है।संचार माध्यम समाज को आईना दिखाने का काम करते है। उन्हें जानकारी देते है, शिक्षित करते है, मनोरंजन प्रदान करते है और उपयोगी चीजें बाते हैं।

जन संचार माध्यमों का विकास 1910 के करीब रेडियो शुरू हुआ। 1960 में टेलीविजन पहुंचा। 1990 में सेटेलाइट और केबल चौनल आए और अब इण्टरनेट घरों में वायरस की तरह घुस गया है। एक जमाने में समाचारों का उद्देश्य सूचना देना, प्रबुद्ध करना और मनोरंजन प्रदान करना माना जाता था। अखबारों ने अपनी भूमिका बदल ली है वे महज सूचना देने के लिए खबरों को नहीं छापाते। आजकल समाचारों का वर्गीकरण उपयोगी जानकारी और मनोरंजन ज्यादा होता जा रहा है। खरे वे छापी जाती है जो मानव की मूल प्रकृति या विकृति से सम्बन्ध रखती है। मसलन अपराध, सनसनीखेज घटनाएं और अधिक पैसा कमाने संबंधी समाचारों को प्रमुखता से छापा जाता है।

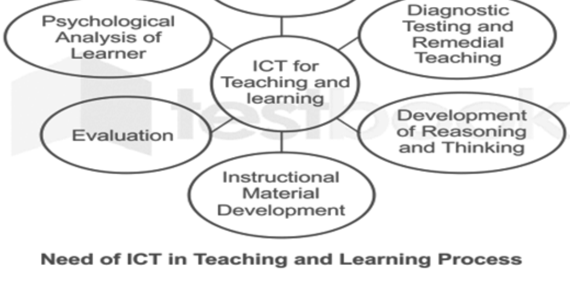

Need of ICT in Teaching and Learning Process

वर्तमान में विकास को सम्पूर्णता समग्रता से बहुत गहरे रूप में जोड़ा जाता है और माना जाता है कि विश्व और पर्यावरण का एक भी जीव विकास के परिणामों एवं उपलब्धियों से वंचित न रहे। विकास को वैश्विकीकरण की विचारधारा का कारक माना जाने लगा है। विकास के लिये अलंकरणों के साथ बात करने का हमारा मूल आशय विकास की भूमिका तैयार करने वाले उत्प्रेरक विकास संचार के महत्व को प्रस्तुत करना है। विकास मानवीय अस्तित्व से जुड़ी हुई प्रक्रिया है और इसके दौरान होने वाली घटनाओं का समानान्तर प्रभाव मानव के व्यवहार और विचारों पर पड़ता है। यह केवल एक व्यक्ति को प्रभावित नहीं करती है, वरन् यह समूह, संस्था और समाज को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया है। विकास का मूल उद्देश्य मानव में सकारात्मक परिपक्वता के गुण का समावेश करना है ताकि उसके जीवन स्तर में गुणात्मक वृद्धि आ सके और पर्यावरण में सुधार हो सके। विकास की सार्थकता के लिए उसमें प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता अति आवश्यक है। इसलिये विकास के लिये बनाये जाने वाली योजनाओं में उन्हें शामिल करना आवश्यक है। ताकि लोगों को समस्याओं के प्रति जागरूक और सक्षम बनाया जा सके। उपरोक्त विचार विकास की प्रक्रिया में संचार के महत्व को प्रतिबिम्बित करते है। संचार का सीधा अर्थ है समाज के सभी सदस्यों के बीच सूचनाओं, योजनाओं, तथ्यों, भावनाओं तथा ज्ञान का स्वतंत्र प्रवाह।

संचार वैज्ञानिक 'नीरा सी, क्यूबरेल' के अनुसार विकास संचार एक प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया वृत्तीय रूप में क्रियाशील होती है न कि रेखीय स्वरूप में। इस प्रक्रिया में उपभोक्ताकर्ता भी उतने ही सक्रिय रहते है, जितने कि स्रोत और संचार से प्राप्त होने वाले परिणाम। विकास संचार का उद्देश्य सूचनाओं और जानकारियों का केवल प्रसार ही नहीं है बल्कि मूल उद्देश्य है सूचनाओं की ग्राहता ओर समुचित उपभोग है। यह देखा गया है कि संचार माध्यमों के उपभोक्ताकर्ता संचार प्रक्रिया में एक निष्क्रिय स्रोता की अपेक्षा एक सक्रिय सहभागी की भूमिका निर्वाह करते है। विकास संचार किसी भी देश के त्वरित विकास और परिवर्तन के लिये एवं वहां की जनसंख्या को गरीबी से निकालकर एक सम्मानजक जीवन देने के लिये किया गया मानवीय संचार है।

सूचना क्रांति ने विकसित देशों का काम और आसान कर दिया। संचार को शोध के क्षेत्र में काफी हद तक एक ऐसी तकनीक माना गया जिसका प्रयोग युद्ध के दौरान प्रोपेगण्डा के रूप में किया जाता है। यह विचारधारा भी द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उस परिस्थिति में प्रेरित थी जिसमें अमेरिका ने विज्ञापन और जनसम्पर्क के माध्यम से उत्पादों और छवि को बेचने की परम्परा शुरू की थी। इसी दौर में संचार के यही सिद्धान्त और तकनीक अमेरिकन भूमि अनुदान महाविद्यालयों तक फैली जहां उन्हें शिक्षा प्रसार के सहायक के रूप में स्थापित किया गया यानि विज्ञापन, जनसम्पर्क और संचार माध्यमों का प्रयोग शिक्षा के प्रसार के लिये किया जाने लगा। रेडियो, टी0वी0, मुद्रित एवं दृश्य और श्रव्य माध्यमों ने समान रूप से कृषि एवं घरेलू जानकारियों के प्रसार की रीति अपनाई, जिसे जन माध्यम की विधि के रूप में जाने लगा। 1960 का दशक उन कारकों के संगम का दशक रहा जिन्होंने 'विकास' के सम्बन्ध में विश्व का ध्यान आकृष्ट किया, इस दौर में केवल आर्थिक विकास को विकास मानने की परम्परा टूटने लगी और बाद के दशकों में गरीबी, खाद्य समस्या, जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण जैसी तृतीय विश्व की समस्यायें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास के अंगों के रूप में स्वीकारी जाने लगी। इसी दौर में संचार माध्यमों का विकास हुआ और ये मुद्दे संचार से जुड़ गये। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज करने के लिये सूचना आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नई संचार प्रौद्योगिकी ने बहुत सहायता प्रदान की।इसके बाद अल्पविकास के लिये जिम्मेदार कारणों और बाधाओं का अवलोकन करने के साथ-साथ विकास हेतु संचार की उपयोगिता को पहचाना गया। जो दहेज प्रथा, अंधविश्वास जैसी सामाजिक कुप्रथाओं पर चोट करते थे।

विकास संचार सामाजिक और आर्थिक प्रगति के प्रयासों में लोगों की सहायता करने के लिये संचार माध्यमों का प्रयोग करने की एक प्रक्रिया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि विकास संचार की प्रक्रिया में सामाजिक आर्थिक विकास के साथ-साथ मानवीय उद्देश्यों को भी समान महत्व दिया जाता है और इस दृष्टि से विकास संचार लक्ष्य निष्ठ और मध्यस्थता दोनों तरह के गुणों को धारण करता है। विकास संचार, सिर्फ कृषि, परिवार नियोजन, पोषण, पर्यावरण या और ऐसे ही पहलूओं से संबंधित सूचनाओं के संचार से अधिक विस्तृत है। यह एक प्रकार की संचार नियोजन प्रणाली से सम्बद्ध हो चुका है जो कि चरणबद्ध और वित्तीय प्रक्रिया है, जिसके उद्देश्यों का निर्धारण उपभोगकर्ताओं की आवश्यकता के आधार पर होता है। इसका अर्थ यह है कि संचार की दृष्टि में व्यक्ति, समाज से भिन्न नहीं है, वह एक अुणु की भांति स्वतंत्र नहीं है, इसमें लोग एक दूसरे से जुड़े है, यह सम्बन्धों का एक नेटवर्क है जहां कई अच्छे निर्णय लोगों के समूह द्वारा संयुक्त रूप से लिये जाते है, कई संचार नीतियां, विशेष तौर पर ग्राम्य स्तर पर इसी आधार पर बनाई गई है। विकास संचार कई स्तरों पर जैसे सामुदायिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय विकास के लिये प्रेभावशील हो सकता है। इससे एक स्तर पर उत्पन्न हुई विचार या अन्तदृष्टि को बहुत सहजता से नई संरचना या स्तर के अनुरूप परिवर्तन करके दूसरे स्तर पर स्थानान्तरित किया जा सकता है। एक विस्तृत दृष्टिकोण के आधार पर विकास संचार विभिन्न स्तरों के बीच विद्यमान सूचना असंतुलन की समस्या का निदान करता है। संचार सामाजिक बदलाव के एजेन्ट की भूमिका निभाते है। संचार माध्यमों से यह अपेक्षा की जाती है कि सामाजिक बदलाव की दृष्टि से वे लोगों को नये तरीके अपनाने के लिये प्रेरित करें और विभिन्न वर्गो में आपसी तालमेल भी स्थापित करें। लोगों के व्यवहार में इस तरह का बदलाव आने के पहले उनकी प्रवृत्तियों, आस्था और विश्वास में भी बदलाव जरूरी होता है। आखिर यह बदलाव किस तरह होते है? आमतौर पर ऐसे परिवर्तनों की गति धमी होती है। जब समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग के लगातार सम्पर्क में आता है और दोनों एक दूसरे के रीति-रिवाजों और आस्था एवं विश्वास को अपनाने लगते है।

विकास संचार अल्पविकास के कारणों की खोज करता है जो कि वर्तमान में लोगों में ही विद्यमान है। इसके अलावा उनके पर्यावरण, समुदाय, राष्ट्र और उनके अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विद्यमान है इसलिये अल्प विकास की समस्या का हल ढूध्ढने के लिये न सिर्फ लोगों के ज्ञान, व्यवहार और क्रिया-कलाप में परिवर्तन आवश्यक है वरन् उनकी सामाजिक और आर्थिक संरचना, संगठनों और नीतियों में भी परिवर्तन आवश्यक है। यह परिवर्तन राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर जरूरी है। व्यवहारिक रूप से विकास संचार के उद्देश्यों को कृषि व पिछड़े क्षेत्रों के विकास पर केन्द्रित किया जाता है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि नगरीय क्षेत्रों के विकास को गौण कर दिया गया है। नगरीय क्षेत्रों के विकास के लिये विकास संचार की उपेक्षा दो कारणों से नहीं की जा सकती है, पहला कारण है नगरीय क्षेत्रों के गरीब वर्ग के लिये भी विकास संचार की आवश्यकता है और दूसरा कारण है कि शहरी विकास और ग्रामीण विकास को पृथक् रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह सही है कि वर्तमान में ग्रामीण विकास पर ही ज्यादा बल दिया जा रहा है क्योंकि ग्रामीण वातावरण में उपेक्षा के भाव ने जन्म ले लिया है, ग्रामीण अपने आप को शहरी की अपेक्षा हीन समझने लगा है इसलिये ग्रामीण विकास को प्राथमिकता दी जा रही है इस संदर्भ में विक्रम साराभाई को उद्धृत करना सार्थक होगा, उन्होंने कहा था कि यदि भारत में हम गांव के लोगों का

शहर की ओर पलायन और अत्यधिक आकर्षण रोकना चाहते है, यदि हम लोगों के सांस्कृतिक जीवन को और समृद्धि प्रदान करना चाहते हैं, हम देश के एक हिस्से की संस्कृति का परिचय दूसरे हिस्से में देना चाहते है और यदि हम ग्रामीण, आर्थिक, सामाजिक विकास में लोगों को सम्मिलित करना चाहते है तो उपग्रह के माध्यम से लोगों को टी.वी. की सुविधा उपलबध करायें। जनसंचार का अस्तित्व सामाजिक विकास के साथ-साथ ही हुआ है जैसे-जैसे भारतीय संस्कृति का विकास हुआ वैसे-वैसे जनसंचार का विकास हुआ। यह बात अलग है कि आधुनिक युग में इसका महत्व अधिक बढ़ जाने के कारण हमारे जीवन का आवश्यक अंग बन गये है। मनुष्य मूल रूप से सामाजिक प्राणी है इसलिये वह एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होना चाहता है इसीलिए जनसंचार की आवश्यकता होती है। जनसंचार माध्यमों का समुचित विकास नहीं हुआ था तब भी जनसंचार का अपना महत्व था लोग अपने मनोभावों को मौखिक रूप से और प्रतीकों के माध्यम से दूसरो तक पहुंचाते थे।

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ मनुष्य सामाजिक रूप से रहने लगा तो धीरे-धीरे जनसंचार का भी विकास होता गया। राजा महाराजा जब कोई आदेश जनता तक पहुंचाना चाहते थे तो गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा देते थे जिससे लोगों को राजा के आदेशों की जानकारी हो जाती थी। गांवों में त्यौहार, मेले, मेल-मिलाप व जनसंचार के केन्द्र होते थे। इसी प्रकार गांवों में अलाव जलाने की एक अच्छी परम्परा रही है जिसमें आस-पास के लोग रात-भर आग तापते रहते थे और अपने सुख-दुख की बातें करते रहते थे। इन अलावों में लम्बे-लम्बे कथानक मौखिक परमपरा में गद्य एवं पद्य शैली में गाये जाते थे जिसे लोग रात-रात भर सुनते रहते थे। अतः अलाव भी प्राचीन काल के अनौपचारिक जनसंचार केन्द्र कहे जा सकते है।इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में नदी, तालाब, कुँओं के घाट महिलाओं के जनसंचार के केन्द्र कहे जा सकते है, नहाते हुए पानी भरते हुए महिलायें अपने सुख-दुःख की बातें एक दूसरे से बताने से नहीं चूकती है।

भारत में समाचार पत्रों की शुरूआत 1780 के उत्तरार्द्ध में हुई जिसने जनसंचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। पहले जनसंचार के केवल मौखिक माध्यम होते थे लिपिबद्ध जनसंचार के रूप में समाचार पत्र जनता के सामने आया। तो दिन प्रतिदिन विकास की ओर बढ़ता ही चला गया। आज देश में समाचार मुद्रण में अति आधुनिक तकनीक का प्रयोग लिया जा रहा है। कम्प्यूटर और सेटेलाइट के प्रयोग से आज हजारो मील दूर छपा अखबार आसानी से पढ़ने को मिल सकता है जिससे हम देश-विदेश की संस्कृति से भी परिचित होने लगे।इलेक्ट्रानिक मीडिया में फिल्म, रेडियो, दूरदर्शन तीन प्रमुख माध्यम है। भारत में 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर में सर्वप्रथम फिल्मों की शुरूआत हुई जो जनसंचार की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हुई फिल्मों के आकर्षण के कारण एक ओर जहां मनोरंजन प्रधान व्यवसायिक फिल्में बड़ी तेजी से बनी, वहीं शिक्षाप्रद वृत्तचित्र भी सरकारी गैरसकारी स्तर पर बने जिन्होंने जनसंचार की दिशा में क्रांति ला दी। फिल्मों के प्रारम्भिक दौर में अधिकतर भारतीय संस्कृति राष्ट्रीय चेतना और नैतिक विषयों को प्रमुखता प्रदान की जाती थी।

इलेक्ट्रानिक मीडिया से भी पहले भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले विषय ही चयन किये जाते थे जिनमें अब हिंसा, बलात्कार अपराध विषयक फिल्में ही अधिक बन रही है जिनका समाज पर विशेषकर युवा पीढ़ी पर भारतीय संस्कृति के विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। सन् 1927 में इण्डियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी नामक एक निजी संस्था ने भारत में सर्वप्रथम रेडियो को प्रसारण किया बाद में सन् 1935 में आल इण्डिया रेडियो की स्थापना हुई। रेडियो के विकास ने जन संचार को वास्तव में जन-जन तक पहुंचाया जो आज भी जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है। आज चाहे फिल्म हो, रेडियो हो, दूरदर्शन हो या समाचार पत्र, सभी में विदेशी मानसिकता भारी पड़ रही है फिल्मों और दूरदर्शन के 90 प्रतिशत कार्यक्रम विदेशी नकल पर बन रहे है। प्रिन्ट मीडिया में भी विदेशी मानसिकता बढ़ रही है। बहुत से विदेशी अखबार भी भारत में प्रवेश के लिये प्रयत्नशील है।

भारतीय संस्कृति और भारतीय पृष्ठभूमि को विकृतम करने का कार्य केवल विदेशी चौनल, विदेशी अखबार ही नहीं कर रहे है बल्कि अधकचरे ज्ञान और पहुंचा वाले निर्माता निर्देशक भी इसे विकृत करने में लगे हैं। लोक संस्कृति और भारतीय संस्कृति को संरक्षण देने के नाम पर ऐसे भद्दे कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा रहे थे जिनमें न तो लोकसंस्कृति का समावेश है और न उस संस्कृति से जुड़े कलाकारों की पहुंच लोग अपनी पहुंच और सम्बन्धों के बल पर वास्तविक कार्यक्रमों और कलाकारों के स्थान पर स्थानीय कलाकारों को लेकर विकृत कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम कह सकते है कि एक तरफ जहां हम सूचना क्रांति के युग में जी रहे है पूरा विश्व एक गांव के रूप में परिवर्तित हो गया है, वहीं हम अपने संस्कृति के अस्तित्व संकट से भी गुजर रहे हैं।

संचार क्रांति के चलते पिछले 40 वर्षो में दुनिया जितनी तेजी से परिवर्तित हो रही है उतना पांच हजार के इतिहास में भी नहीं हुआ है। देश के अधि कतर हर राज्यों में ग्रामीण इलाकों में समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपनी जगह बना ली है। टेलीविजन, रेडियो, इण्टरनेट, मोबाईल फोन और संचार के कई साधन हमारे गांव की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। इन साधनों का उपभोग आज हर एक व्यक्ति कर रहा है। समाचार पत्रों और चौनलों ने कई ऐसे लक्षित समूहों को ध्यान में रखकर नये कार्यक्रम शुरू किये हैं। भारत जैसे विशाल आबादी के देश में संचार माध्यमों की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं सजगता को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

ग्रामीण समाज में लागू प्रौद्योगिकियां

रेडियो और टेलीविजन - कई ग्रामीण किसानों की संचार तकनीकों तक सीमित पहुंच है, जबकि 70 प्रतिशत ग्रामीण घरों में रेडियो की पहुंच है इसका एक कारण यह भी है की छोटे पैमाने पर किसान अक्सर दूर दर्ज के ग्रामीण इलाकों में स्थित होते है ऐसे इलाको में रेडियो अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचने का एक महत्वपूर्ण साधन है. कृषि विस्तार में रेडियो और टेलीविजन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो आज सतत जारी है इन मुख्य सेवाओं के संपर्क से किसानों को कई लाभ भी मिल रहे है। कृषि और खेती से जुड़े रेडियो चौनल के विभिन्न प्रसारणों ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है किसान रेडियो प्रशनोत्तरी और में भाग लेके और अन्य सहभागिता रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि उत्पादन से जुड़े नए पहलुओं की आवश्यक जानकारी भी प्राप्त कर सकता है।

मोबाइल - दुनिया के मोबाइल फोन उपभोक्ताओं में से लगभग 70 प्रतिशत विकासशील दुनिया में हैं। यह संचार के एक किफायती और सुलभ माध्यम हैं ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करने के साथ यह कृषि से सम्बंधित जानकारी लेने का माध्यम भी बन रहा है। मोबाइल टेलीफोन अब सिर्फ

एक ऑडियो सूचनाएं देने तक सिमित नहीं रह गया ह अपितु इससे विडिओ मैसेज भी प्राप्त होते है। मोबाइल टेलीफोन कुछ अद्वितीय अवसर प्रदान करता है, जिनमें निम्न शामिल हैंः-

ग्रामीण समुदायों को प्रत्यक्ष वैश्विक संचार चौनल प्रदान करना। ग्रामीण रेडियो जैसे स्थापित ग्रामीण मीडिया के प्रभाव को विस्तारित करना। स्थानीय सामग्री उपलब्ध करा रही है। ग्रामीण सेवाओं को और अधिक कुशल बनाना।

इंटरएक्टिव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग - सम्बंधित वैज्ञानिक से सूचना लेने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सेवा का उपयोग किया जाता है किसान कृषि से सम्बंधित परेशानियों को विस्तार से समझाकर इसका उपाय प्राप्त कर सकता है इंटरएक्टिव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सेवा की सुविधा गांव के कृषि विज्ञानं केंद्र पर उपलब्ध है।

मोबाइल इंटरनेट - स्मार्ट फोन सेवा के माध्यम से जानकारी प्राप्त एवं दी जाती है जैसे कृषि व्यवसाय मूल्य जानकारी, ई-समाचार आदि।

वेब पोर्टल - वेब पोर्टल प्रासंगिक वेबसाइटों का संग्रह होस्ट करने वाला मंच है। यह एक महत्वपूर्ण और तेज सूचना प्रसार चौनल है। प्रत्येक क्षेत्र में बड़ी संख्या में वेबसाइटें विकसित की जाती हैं। वेब पोर्टल बड़ी संख्या में लिंक की गई साइटों के साथ बनाया गया है। सभी वेबसाइटें एकीकृत शैलियों, मानकों और विनियमों का पालन करती हैं। वेब पोर्टलों की स्थापना सूचना संसाधनों के साझाकरण और उपयोग को बढ़ावा देती है, समग्र निवेश और रखरखाव लागत को कम करती है, और सेवा कवरेज और साइट विजिट में वृद्धि करती है।

वास्तव में संचार माध्यम का मुख्य केन्द्र महानगर और नगर ही है। ऐसे में ग्रामीण की बहुत अधिक उपेक्षा की जा रही है। भारत में शहरी आबादी 27. 15 करोड़ की तुलना में ग्रामीणों की आबादी 75.05 करोड़ है। पर विशुद्ध व्यवसायिक नजरिये की वजह से खासकर बड़े अखबार गांव की जितनी उपेक्षा कर सकते हैं, कर रहे है। इनमें कोई संदेह नहीं है कि ग्रामीण विकास में संचार माध्यम बहुत कारगर साबित हो सकता है। पर यह दुःख की बात है कि हाल के सालों में काफी साधन सम्पन्न और विकसित हुए, कई अखबार और चौनल अपनी इस भूमिका के प्रति बहुत उदासीन है। ग्रामीण विकास का सबसे अहम पक्ष दसवीं योजना में कृषि की उत्पादकता बढ़ाने को उच्च प्राथमिकता दी गयी है ताकि कृषि क्षेत्र वार्षिक चार प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल कर सके। पर अभी तक जो स्पष्ट है वह बहुत आशाजनक नहीं है। कृषि की विकास दर लगातार झटके खा रही है। भूमण्डलीकरण के इस दौर ने भारत के किसानों को दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा में लाकर खड़ा कर दिया है जिसके लिये वे मानसिक तौर पर तेयार नहीं थे। यही कारण हे कि कई प्रान्तों में किसानों ने बड़ी संख्या में आत्महत्यायें तक की है। गांव समाज का ताना-बाना आज भी बहुत मजबूत है। भारत जैसे गरीब एवं विकासशील देश में लोगों तक ज्ञान, सूचना और जानकारी पहुंचाने का रेडियो सबसे सरल कारगर और शक्तिशाली साधन है। रेडियो के आविष्कार के बाद दूरदराज क्षेत्रों सहित देश में सर्वत्र फैल गया है। कोई भी सूचना एवं सन्देश रेडियों के द्वारा जनसंख्या के काफी बड़े भाग्र तक एक ही समय में कम खर्च में प्रभावी तरीके से पहुंचाया जा सकता है। दूर-दराज के जिन गांवों एवं दुर्गम स्थानों पर परिवहन एवं संचार की सुविधाएं सीमित हैं वहां भी रेडियो की पहुंच है। आकाशवाणी के लगभग सभी केन्द्रों से ग्रामीण लोगों के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते है। हालांकि रेडियो के अनेक कार्यक्रमों ने ग्रामीण जनता तक नई जानकारी पहुंचाने में उपयोगी भूमिका निभाई है।

संदर्भ सूची

1. भानावत, डॉ . संजीव, विकास एवं विज्ञान संचार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. -160, 2010
2. वही, विज्ञान संचार, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
3. पटैरिया, मनोज, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ . -19-20, 2010
4. यादव, रामजी, ग्रामीण विकास, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ . -7, 2003
5. सिंह, कटार, ग्रामीण विकास सिद्धान्त, नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
6. कटारिया,सुरेन्द्र एवं तैद गुडजन,भारत में ग्रामीण विकास रणनीतियाँ एवं चुनौतियाँ,मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर, 2008
7. सिंह, कटार, ग्रामीण विकास सिद्धान्त नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
8. बालेंदू शर्मा दाधीच कुरुक्षेत्र मई 2018 पृष्ट 21-24

OUR PUBLICATIONS

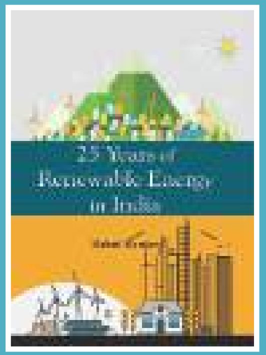

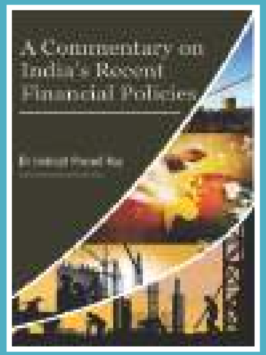

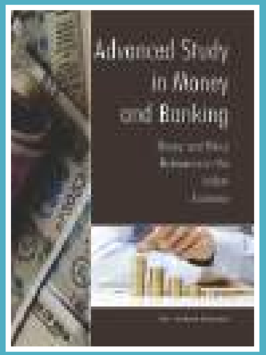

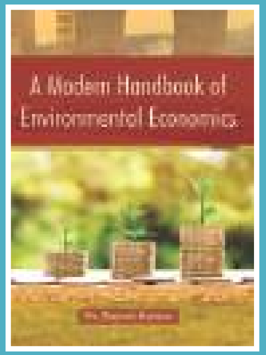

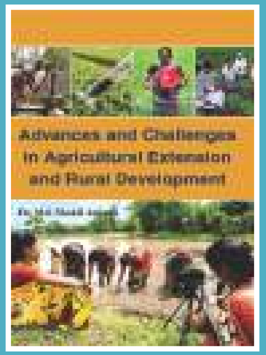

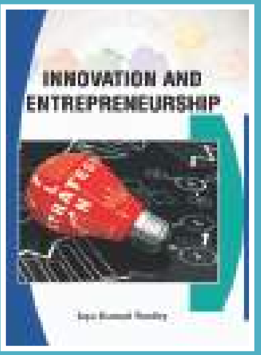

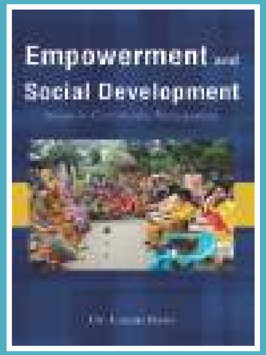

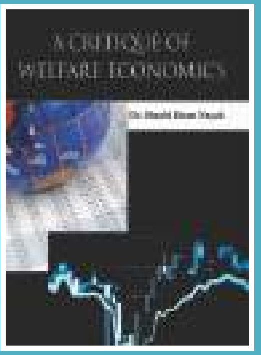

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

पूरे देश की निगाहें एक फरवरी 2021 को संसद में पेश होने वाले बजट पर लगी हैं। यूं तो बजट के बारे में हर बार ही उत्सुकता होती है, कि वित्तमंत्री के पिटारे में विभिन्न वर्गों के लिए क्या योजनाएं हैं? क्या सरकार आयकर में कोई छूट देगी? कारपोरेट टैक्स के बारे में सरकार का क्या नजरिया रहेगा? देशी और विदेशी निवेशकों पर क्या कर प्रावधान होंगे? बजट का शेयर बाजारों पर क्या असर पड़ेगा? शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बैंकिंग आदि के बारे में क्या नजरिया होगा? कौन सी नई जनकल्याणकारी योजनाएं होंगी?

लेकिन हमें समझना होगा कि इस बार का बजट एक महामारी के बाद का बजट है। पिछली एक सदी के बाद पहली बार ऐसी महामारी आई, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। हालांकि भारत में इस बाबत हालात (केरल और महाराष्ट्र को छोड़कर) सुधरे हुए दिखाई देते हैं, लेकिन इस महामारी के कारण हुए नुकसानों की भरपाई बहुत जल्द होने वाली नहीं है। पिछले वर्ष हमने देखा कि कैसे महामारी के कारण आवाजाही बाधित हुई, जिसके कारण न केवल मांग बाधित हुई, काम-धंधों पर भी जैसे ब्रेक लग गया। कुछ व्यवसायों में घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) थोड़ी-बहुत मात्रा में चला, लेकिन अधिकांश मामलों में आर्थिक गतिविधियां पूरे या अधूरे तौर पर बाधित रही। मजदूरों का बड़े शहरों से पलायन, कामगारों का काम से निष्कासन या उनके वेतन में भारी कटौती, इस महामारी के कालखंड में सामान्य बात बन गई। ऐसे में जीडीपी के प्रभावित होने के साथ-साथ, सरकार का राजस्व भी प्रभावित हुआ।

महामारी से पूर्व भी अर्थव्यवस्था कई कारणों से मंदी की मार झेल रही थी। पूर्व में बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की वापसी नहीं होने के कारण, बैंकों के बढ़ते एनपीए के चलते बैंकों का मनोबल ही नहीं गिरा था, लोगों का बैंकों पर विश्वास भी घटने लगा था। उसके साथ ही साथ आईएलएफएस सरीखे गैरबैंकीय वित्तीय संस्थानों में घोटालों के कारण वित्तीय क्षेत्र के संकट और अधिक बढ़ गए थे। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों पर नकेल कसने के प्रयासों में बैंकों द्वारा कार्य निष्पादन भी प्रभावित हो रहा था और व्यवसाय भी। बैंकों द्वारा ऋण भी कम मात्रा में दिए जा रहे थे। कुल मिलाकर नए निवेश भी घटे और चालू आर्थिक गतिविधियां भी। कठिन परिस्थितियों में जब पिछले साल वित्तमंत्री ने बजट पेश किया था, वर्ष 2019-20 में राजस्व उम्मीद से कम दिखाई दिया था लेकिन यह अपेक्षा जरूर थी कि इसकी भरपाई 2020-21 में हो सकेगी।

लेकिन उसके पश्चात वर्ष 2020-21 में भी महामारी के प्रकोप ने राजस्व में सुधार की सभी अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 9 महीनों में जीएसटी से कुल राजस्व 7,79,884 करोड़ रूपए ही प्राप्त हुआ है, जबकि इस कालखंड में अपेक्षा न्यूनतम 10 लाख करोड़ रूपए की थी। जीएसटी में इस कमी का असर हालांकि केन्द्र और राज्य, दोनों के राजस्व पर पड़ा है, लेकिन राज्यों के हिस्से की भरपाई (14 प्रतिशत वृद्धि के साथ) देर-सबेर केन्द्र सरकार को नियमानुसार करनी ही पड़ेगी। इस कारण केन्द्र को इसका नुकसान राज्यों से कहीं ज्यादा होगा। दूसरे इस वर्ष वैयक्तिक आयकर और निगम (कारपोरेट) कर भी उम्मीद से कम रहने वाला है। सरकार के इस वर्ष का विनिवेश का लक्ष्य भी पूरा होने की दूर-दूर तक कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

एक तरफ जहां महामारी के चलते सरकारी राजस्व में भारी नुकसान हो रहा था, रोजगार खोने के कारण भारी संकट से गुजर रहे मजदूरों और अन्य प्रभावित वर्गों के जीवनयापन की कठिनाईयों के कारण उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु सरकार का दायित्व तो था ही, गांवों में लौट रहे मजदूरों को रोजगार दिलाने का भी दबाव था। 80 करोड़ लोगों को लगभग 9 महीने तक मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया गया। महामारी से निपटने हेतु सरकार का स्वास्थ्य पर खर्च भी बढ़ चुका था। महामारी से पार पाने हेतु कोरोना योद्धाओं, शिक्षकों एवं अन्य वर्गों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की भी आवश्यकता है।

महामारी के कारण बाधित गतिविधियों को दुबारा शुरू करने की भी जरूरत थी। यह सरकार की मदद के बिना नहीं हो सकता था। पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हुई आर्थिक गतिविधियों को पुन: पटरी पर लाना, महामारी की मार झेल रही आम जनता को राहत देना, रोजगार खोने वालों के लिए राहत और रोजगार की व्यवस्था करना, पहले से ही मंदी की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना, यह सरकार का दायित्व भी है और प्राथमिकता भी।

दुनिया भर में सरकारों ने इस महामारी से निपटने के लिए राहत पैकेजों की व्यवस्था की है। उसी क्रम में भारत सरकार ने भी अपने सभी राहत उपायों की घोषणा की है। ये सभी राहत उपाय कुल मिलाकर देश की जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर बताए जा रहे हैं। इन राहत अथवा प्रोत्साहन पैकेजों में सरकार ने लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहन, प्रवासी मजदूरों एवं किसानों के लिए राहत पैकेज, कृषि विकास, स्वास्थ्य उपायों, व्यवसायों को अतिरिक्त ऋणों की व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस समेत कई उपायों की घोषणा की गई है। सरकार ने हाल ही में रियल ईस्टेट क्षेत्र को राहत एवं प्रोत्साहन देने, इलैक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, मोबाईल फोन और एक्टिव फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रोडक्शन लिंक्ड' प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है।

दृष्टिकोण

पिछले साल का बजट प्रस्तुत करते हुए, वित्तमंत्री ने वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी को 3.5 प्रतिशत रखा था। लेकिन बदले हालातों में घटे सरकारी राजस्व और बजट अनुमानों से कहीं ज्यादा खर्च के दबाव के चलते इस वर्ष का राजकोषीय घाटा अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकता है। माना जा रहा है कि इस महामारी का बड़ा असर राजकोषीय घाटे पर पड़ सकता है। माना जा रहा है कि वर्ष 2020-21 के लिए यह राजकोषीय घाटा जीडीपी के 8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

महामारी से निपटने हेतु राहत के प्रयासों की अभी शुरूआत भर हुई है। आगामी वर्ष में इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की जरूरत होगी। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता के संकल्प और अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तमाम प्रयासों के चलते अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी इस वर्ष भारत की जीडीपी में 11.5 प्रतिशत संवृद्धि का अनुमान दिया है। इसके चलते राजस्व में वृद्धि तो होगी, लेकिन सरकार को जीडीपी ग्रोथ की इस गति को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत होगी। ऐसे में केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक रहेगा। लेकिन इसके साथ ही साथ केन्द्र सरकार ने कोरोना से उपजी समस्याओं से निपटने हेतु राज्य सरकारों को भी अतिरिक्त ऋण लेने के लिए अनुमति दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष राज्यों के बजट में भी राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4 से 5 प्रतिशत के बीच रह सकता है। ऐसे में देश में कुल राजकोषीय घाटा 10 से 11 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

लेकिन समय की मांग है कि अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु सभी प्रकार के प्रयास किए जाएं। कुछ समय तक एफआरबीएम एक्ट को स्थगित रखते हुए देश की अर्थव्यवस्था को गति देना जरूरी होगा। वित्तमंत्री इस बात को समझती हैं और आशा की जा सकती है कि जहां महामारी से प्रभावित वर्गों को सरकारी बजट का समर्थन मिलेगा, अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु प्रयासों में कोई कंजूसी नहीं की जाएगी। वर्षों से चीन से सस्ते आयातों की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और 'वोकल फॉर लोकल' का संकल्प एक नई दिशा और ऊर्जा देगा और यह बजट उस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वामी विवेकानंद का व्यंजन प्रेम–डॉ० अमरेन्द्र कुमार 1

महात्मा गाँधी के भारत में शुरूआती दौर के आन्दोलन (1917-1918)–मोहन लाल 4

अमरकांत का उपन्यास साहित्य : अभिव्यक्ति कौशल संबंधी परम्परागत एवं नवीन प्रयोगों की अवधारणा –डॉ० यदुवीर सिंह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई 8

नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की उपादेयता–डॉ० उषा नागर 13

पुलिस प्रशासन-संगठन, समस्या और सुझाव–डॉ० शेषाराम मीणा 18

वैदिक वाङ्मय में अर्थचिन्तन–डॉ० आशा सिंह रावत 23

नाटककार भवभूति की कृतियों में पर्यावरण चिन्तन–डॉ० बाबूलाल मीना 30

गाँधी के सर्वोदय दर्शन में विकेन्द्रीकरण की अवधारणा–आशीष कुमार सिंह 36

राजनीतिक सामाजीकरण एवं विकास : एक अध्ययन–कृष्णा बैठा 39

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक वातावरण का छात्रों की अध्ययन आदतों के संबंध का अध्ययन–मनु सिंह; डॉ० मंजू शर्मा 44

ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता की समीक्षा–किरण कुमारी; डॉ० संजय बुंदेला 48

महिलाओं द्वारा अपने प्रति होने वाले अपराधों के प्रतिकार की स्थिति–श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ० श्रीमती रीना तिवारी 51

बौद्धिक सम्पदा का अधिकार और इसके संरक्षण के प्रयास–जितेन्द्र भारती 55

वेदों में ज्योतिर्विज्ञान–डॉ० भगवानदास जोशी 58

नई शिक्षा नीति में गृह विज्ञान शिक्षा का भविष्य–डॉ० आभा रानी 63

शैक्षिक नीतिशास्त्र का स्वरूप और विचार–अजय कुमार पटेल 66

अमरकंटक अंचल में पर्यटन की संभावना एवं विकास–निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल 69

बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास–शशि शेखर द्विवेदी; मनीष कांत 78

मुगलकालीन विदेशी यात्रियों की दृष्टि में भारतीय महिलाओं की स्थिति–आशु त्यागी 84

स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 88

मुक्ति प्राप्ति का भक्ति-मार्ग–डॉ० सुनील कुमार शुक्ल 90

विश्वशान्ति: स्वधर्म एक माध्यम–डॉ० क्षमा तिवारी 93

उ०प्र० में बौद्ध स्थलों पर पर्यटन प्रतिरूप का एक प्रतीक अध्ययन–डॉ० अनूप कुमार सिंह 97

संयुक्त राष्ट्रसंघ और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० लवलेश कुमार 101

हिन्दी उपन्यासों में चित्रित जनजातीय जीवन में बंधुआ मजदूरी एवं बेगारी की समस्या–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 103

प्राथमिक शिक्षक एवं कक्षा-कक्ष : एक चुनौती–डॉ० राकेश कुमार डेविड; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० शोभना झा 106

कोरोना वैश्विक महामारी के काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–अर्चना कुमारी 109

'समकालीन सामाजिक परिदृष्य में प्रत्ययवाद का महत्व'–डॉ० ब्रिजेन्द्र कुमार त्रिपाठी 112

आधुनिक समाज में माता-पिता की महत्वाकांक्षा और बच्चों की मानसिक स्थिति: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० रूमा कुमारी सिन्हा 114

लाल शकरकंद : अनाज का विकल्प–डॉ० शिखा चौधरी 116

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न–डॉ० ज्योति गौतम 119

बौद्ध वाङ्मय और बुद्ध की प्रासंगिकता–अर्चना 122

लोक साहित्य में विरहाभिव्यक्ति–श्रीमती अर्चना वर्मा; श्रीमती लक्ष्मी देवी 125

इतिहास के आइने में स्त्री विमर्श–डॉ० शैलेन्द्र सिंह 129

स्वयंभू रचित पउमचरिउ में स्त्री चेतना–कुमकुम पाण्डेय 132

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और दलितों की भागीदारी–लाल चन्द पाल 135

शोषण मुक्ति हेतु संघर्षरत : स्त्री जीवन (दलित आत्मकथाओं के संदर्भ में)–आशीष खरे; डॉ० ज्योति गौतम 139

सोनांचल की जनजातीय संस्कृति : समस्याएँ एवं समाधान–अवन्तिका 143

वैदिक भूगोल के आलोक में संसाधन संरक्षण की संकल्पना की विवेचना–डॉ० रत्लेश शुक्ल; रोहणी तिवारी 147

वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक संघर्ष–डॉ० शाद अहमद 152

हिन्दी आलोचना में डॉ. देवीशंकर अवस्थी का कथा क्षेत्र में योगदान–पवन कुमार वर्मा 155

प्रेमचन्द की पत्रकारिता और जीवन दृष्टि–डॉ० नलिनी सिंह 158

उदयपुर जिले की देवास परियोजना का जनजातिय जनसंख्या के सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन–रणवीर ठौलिया 161

पश्चिमी राजस्थान के आदिमवर्गों के आर्थिक विकास में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना का योगदान (विशेष संदर्भ : भील)
–डॉ० अश्वनी आर्य; गजेन्द्र शेखावत 166

भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 171

70 वर्षों में मानव अधिकार की उपलब्धियां एवं चुनौतियां–डॉ० ऋतेश भारद्वाज 176

शिक्षा और समाज का अन्त:सम्बंध–डॉ० निशा वालिया 181

बिहार में सामाजिक आन्दोलन के उभरते लहर (1960-2015) : एक अध्ययन–विजया वैजयंती 184

स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 188

कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 190

भारत एवं हिन्द महासागर की भू-राजनीति–सत्येन्द्र सिंह 194

भारतीय संस्कृति और तुलसीदास–डॉ० संजय कुमार; डॉ० सरिता 198

भवानी प्रसाद मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं में गाँधी-दर्शन–डॉ० (श्रीमती) सविता मिश्रा; अंतिमा गुप्ता 201

वर्तमान परिदृष्य में हरियाणा के परम्परागत माध्यमों के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया–डॉ० दिलावर सिंह 205

कोरोना संकट में सेक्स वर्कर्स के मानवाधिकार–डॉ० पिंकी पुनिया 209

रायपुर संभाग में कृषि उपज मंडियों की कार्य प्रणाली का अवलोकन–डॉ० गिरजा शंकर गुप्ता 214

श्रीमद्भागवत के अनुसार ऋषियों की कथाओं का अध्ययन–सीमा चिनप्पा; डॉ० वेदप्रकाश मिश्र 217

देश के युवाओं के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठ्यक्रमों का महत्व–शिवानी सिंह 222

नारी शोषण के विविध आयाम: संदर्भ गुनाह बेगुनाह–काजल 225

मध्य प्रदेश की गोड़ जनजाति चित्रकला में सूर्योपासना–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 227

कुषाण काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी–डॉ० प्रदीप कुमार 229

भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरा : पेड न्यूज–अनिल कुमार यादव 233

21वीं सदी के नवगीतकारों में सामाजिक चेतना : वीरेन्द्र आस्तिक, रामनारायण रमण एवं रमाकांत के संदर्भ में–डॉ० रामरती; ममता 237

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता–मिथिलेश 242

भारत में नगरीय जीवन एवं सांस्कृतिक चुनौतियां : एक भौगोलिक अध्ययन–गोविन्द सिंह 244

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन–डॉ० निशा जम्वाल 250

पंचायती राज में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता–एक विमर्श : समस्या, समाधान–अनिता कंवर 252

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में)
–प्रतिभा सिंह; डॉ० पी० एन० मिश्र 257

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन
–वैशाली उनियाल; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी 260

राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों की मानवीय चेतना–अनिकेत पीयुष सिंह 266

औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण (अलवर जिले के संदर्भ में)–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 269

पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार पर हिंदू महिलाओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–आभा मिश्रा; डॉ० विजय कुमार वर्मा 272

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण पर शिक्षण रूचि के प्रभाव का अध्ययन
–ज्योत्सना रमोला; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी 278

बिहार के राजनीतिक इतिहास में सत्येन्द्र नारायण सिंह का योगदान–डॉ० संदीप कुमार 285

अखिलेश कृत 'निर्वासन' उपन्यास में विस्थापन की समस्या–सपना रानी 289

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त सामयिक प्रश्न–चेतन कुमार 291

बाल-मनोविज्ञान और विज्ञापन : व्यावहारिक अंत: संबंध–शुभांगी 293

मंज़ूर एहतेशाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता–सुमन देवी 302

कोविड़ 19 के दौरान मोहल्ला क्लास के प्रति प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण–डॉ० चन्द्रा चौधरी 305

हिन्दी व्यंग्य और आधुनिक व्यंग्यकार–बिन्दु डनसेना; डॉ० बी० एन० जागृत 308

गुणात्मक शिक्षा के उन्नयन में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका–सुदर्शन सिंह; डॉ० स्वीटी श्रीवास्तव 310

लोक अदालत का गठन एवं कार्यकरण : एक विश्लेषण–वकील शर्मा 314

पुरुषार्थ अर्थ का स्वरूप और महत्त्व–डॉ० योगिता मकवाना 319

अपराध भूगोल के अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग–राजकिरण चौधरी 322

भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर 326

सामाजिक उपन्यासकार के रूप में : नागार्जुन–डॉ० रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 330

जलियांवाला बाग हत्याकांड के विविध आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ० कुमारी ज्योति 332

चौरी चौरा जनज्वार का राष्ट्रीय आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ० सर्वेश चंद्र शुक्ल 335

चौरी चौरा जनक्रांति में स्थानीय जनता तथा स्वयं सेवकों की भूमिका–अभिषेक कुमार तिवारी 339

पर्यावरण दर्शन और नैतिकता–मुकेश कुमार 342

गांधीवादी दृष्टि और आधुनिक राज्य की अवधारणा : एक अनुशीलन–डॉ० अभय कुमार सिंह 346

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की चुनौतियां–सुनीता जांगिड 350

बुक्सा जनजाति और उनके असंतोष के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अवधेश कुमार; किन्नर विमर्श; सनोज पी आर 357

मुगलकाल में कार्यरत महिला शिल्पी वर्ग : कतनी/कत्तिनों के विशेष संदर्भ में–मनीषा मिश्रा; डॉ० अमिता शुक्ला 359

सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता–ललिता देवी 363

मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कारों का मूल्यांकन–आलोक कुमार तिवारी 366

नागार्जुन के रचना संसार में सौंदर्यबोध की प्रासंगिकता–संदीप कुमार 369

मानवता का उद्घोष और छायावादी रचना संसार–संजीव कुमार पाण्डेय 371

रमेशचन्द्र शाह का सबद निरंतर में आलोचनात्मक दृष्टि का मूल्यांकन–कृपा शंकर 374

महिला सशक्तिकरण मे राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ० अजित कुमार पाठक 376

स्त्री विमर्श: अर्थ एवं अर्थव्याप्ति–कुमारी अंजना 379

भारत में मानवाधिकार और लोकतंत्र: एक राजनीतिक विश्लेषण–फरीद आलम 381

संत कवि रैदास की वाणी में मानवतावाद–डॉ० मुकेश कुमार 385

प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री कथाकारों की मानवीय चेतना–प्रो० रमेश के० पर्वती 389

छत्तीसगढ़ के श्रमिकों में कोविड माहामारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)
–संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी 391

राम की शक्ति-पूजा : निराला व राम के संघर्ष की गाथा–प्रो० मन्जुनाथ एन० अंविग 397

कोरोना काल में उत्पन्न तनाव को दूर करने में योग करने की भूमिका–तिलकराज गौड़; डॉ० शालीनी यादव 400

भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में : एक अनुशीलन–मो० जाहिद शरीफ 405

भारतीय समाज में वृद्ध लोगों की दशा–घनश्याम 408

पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय दर्शन–मयंक भारती 411

दक्षेस : महत्वपूर्ण पड़ाव व वर्तमान प्रासंगिकता–संजय कुमार 414

प्राणायाम : सर्वांगीण विकास का आधार–सुशील कुमार 418

ओटीटी प्लेटफॉर्म का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन: दिल्ली के विशेष संदर्भ में)–हर्षवर्धन 422

भूमण्डलीकरण के दौर में लोकधर्मी कविता का संघर्ष–रंजना कुमारी गुप्ता 426

समाज सुधार की दृष्टि से तंज कसती भारतेंदु युगीन व्यंग्य–काजल कुमारी सिंह 431

संस्कृतसाहित्ये व्यक्तिविवेकस्य स्थानम्–डॉ० सुमन कुमारी; डॉ० रामजी मेहता 434

आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद–मन्नु कुमार शर्मा 437
पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन–अभिषेक दुबे; डॉ० (श्रीमती) स्मिता मिश्रा 441
भारत की संसद और राष्ट्रपति मिलकर क्या धारा 370 और आर्टिकल 35A को हटाने की शक्ति रखते हैं?–डॉ० रीता कुमारी 444
काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा का अध्ययन–डॉ० हेमन्त सिंह कंवर 448
लोक व मिथकीय संरचना में गिरीश करनाड का नाटक हयवदन–सुनील कुमार 451
छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा में वीरांगना बिलासा केंवटिन–श्री मिथलेश सिंह राजपूत; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 455
सामाजिक न्याय : अवधारणा एवं सिद्धान्त–डॉ० पूरण मल बैरवा; महेन्द्र प्रताप बाँयला 460
प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक)–सीमा जांगिड़ 468
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत लोकप्रिय एवं एकाकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन–प्रमोद कुमार वर्मा; डॉ० मृदुला भदौरिया 476
हास्य एवं व्यंग्य का प्रतिरूप सिरमौरी लोक गायन शैली शिटणा–प्रो० पी०एन० बंसल; विनोद कुमार 482
भारत में आत्मनिर्भरता से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उन्नयन–डॉ० सौरभ मालवीय 487
वैश्वीकरण एवं बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ० मंजु नावरिया 491
सिद्धरामेश्वर : वीरशैव आंदोलन के प्रभावी शिवशरण–डॉ० अंबादास केत 496
हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन–डॉ० रमेश एस० जगताप 500
बाल श्रम-एक विश्लेषण–सतीश कुमार 503
भूमण्डीलकरण और जल, जंगल, जमीन का प्रश्न–डॉ० विनोद मीना 512
आधुनिक वैश्विक परिस्थितियों में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० हरदीप सिंह 516
एम.एन. राय का नव मानववाद: एक विश्लेषण–सोनी कुमारी 520
नारी-स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर की कहानियाँ–सुधा कनकानवर; डा० श्रीनिवास मूर्ति 523
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० सुषमा सिंह; राजपाल सिंह यादव 526
मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास शिल्प : यथार्थवादी बिम्ब का जादुई-अवबोध–डॉ० संजय कुमार लक्की; रमेश चन्द सैनी 531
लोकपाल की भ्रष्टाचार निवारण में सार्थकता–डॉ० योगेन्द्र कुमार धुर्वे 535
दलितों के शैक्षिक उत्थान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अवदान–सरिता; प्रो० बी०एल० जैन 538
गाँधीवादी दर्शन में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का स्थान–सोमेश गुंजन 541
आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा प्रतिपादित औचित्य विमर्श–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; गुंजन 543
आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन-अहिंसा एवं विश्व शांति और लोकतंत्र सुधार–डॉ० इन्दु तिवारी 547
पंडित विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में ग्रामीण संस्कृति–अनिरुद्ध कुमार 550
ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बदलता परिदृश्य का एक अध्ययन: आलीराजपुर जिले के सन्दर्भ में –डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 553
जूनियर हाईस्कूल में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रशान्त शुक्ला 563
हिदी कथा साहित्य में अभिव्यंजित दिव्यांग या विकलांग पात्रों की समस्याओं का विश्लेषण–डॉ० प्रेरणा गौड़ 568
हेमचंद्राचार्य कृत योग-शास्त्र में आसन विमर्श–डॉ० धीरज प्रकाश जोशी 571
प्राकृतिक आपदाओं का कृषकों के जीवन पर प्रभाव : मनरेगा एक विकल्प – समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सौम्या शंकर; सुनील कुमार 573
शैक्षिक उपलब्धि परसंवेगात्मक बुद्धिका प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० वन्दना चतुर्वेदी; शिव नारायण 584
भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-व्यवसाय की भूमिका एवं प्रभावशीलता का अध्ययन–पूजा जैन 588
मालती जोशी की कहानियों में नारी चित्रण–डायमंड साहू; डॉ० रमणी चंद्राकर 591
युवाओं में नए मीडिया की भूमिका का अध्ययन–डॉ० मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबडा 594
किशोर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याओं पर एक अध्ययन–डॉ० रिया तिवारी; श्री डोमार यादव 600
वैश्वीकरण और इलैक्ट्रानिक बैंकिंग सेवाओं की उपयोगिता–डॉ० संजय खत्री 606
छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा–डॉ० आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी 608

तुलसीदास की समन्वय भावना–डॉ० राजमोहिनी सागर 613
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ० चन्द्र कान्त पांडा 617
वैयक्तिक अनन्यता की समस्या (Problem of Personal Identity)–ऋषिकेश चौहान 626
वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन पर प्रभाव–चन्दना शर्मा 629
वाल्मीकि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृष्य; हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 632
आज की आलोचना के समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० आस्था दीवान 638
जम्मू - कश्मीर के क्षेत्र के लिए विकास की संभावनाएं–डॉ० अभिषेक आनन्द 640
संस्कृत साहित्य में वर्णित मानव चक्र–डॉ० दीप्ति बाजपेयी; कु० संजू नागर 644
हिन्दी काव्य और उत्तरआधुनिकता–डॉ० तारु एस० पवार 647
शिक्षा के क्षेत्र में न्यू मीडिया का उपयोग: एक अध्ययन (सिरसा के महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के सन्दर्भ)
–डॉ० अमित सांगवान; विनोद कुमार 650
काव्य प्रक्रिया में दिवास्वप्न से गुजरता हुआ कवि नरेंद्र मोहन–डॉ० सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी' 655
भारतीय जीवनाधार: कर्मवाद:–डॉ० हिमा गुप्ता 657
आई०एम० क्रौम्बी के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरुप : एक विश्लेषण–डॉ० स्मिता सिंह 660
हिमालय के खस : उत्तराखंड में आर्य जातियों में समाहित होते खस इतिहास के पन्नों में हाशिए पर–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 665
स्वच्छ भारत अभियान के प्रचार प्रसार में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक अध्ययन–डॉ० अनिल कुमार 668
आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य–डॉ० युवराज कुमार 672
आरटीआई: प्रभावी शासन का एक औजार–डॉ० ऋचा सिंह 679
"..किसी के जाने के बाद, करे फिर उसकी याद, छोटी-छोटी सी बात" (फिल्मकार बासु चटर्जी से गोकुल क्षीरसागर की बातचीत)
–डॉ० गोकुल क्षीरसागर 684
करोना महामारी और प्रसाद के काव्य की मानवतावादी भावना–डॉ० बिजेंद्र कुमार 687
गंगाराम राजी के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार–सुनीता; डॉ० रामरती 692
गोंड जनजाति के प्रमुख संस्कार–डॉ० पियुष कुमार सिंह 695
जयश्री रॉय के उपन्यासों में नारी शोषण–भावना देवी 697
पुरुष की संक्रीण मानसिकता के कारण विवाहोपरांत दाम्पत्य-संबंधों में बिखराव को मार्मिक ढ़ंग से चित्रित करता
सुनीता जैन का उपन्यास "बिंदु"–नीलम देवी 699
बाल धरोहर एवं समाज कल्याण–डॉ० शिवसिंह बघेल; डॉ० के० बालराजु 703
गीतांजलि श्री के माई उपन्यास में चित्रित समस्याएँ–वीना 707
जिला रीवा के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक प्रेरकों एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
–राजेश कुमार यादव; डॉ० पतंजलि मिश्र 709
नई कविता में सौंदर्य-चेतना–डॉ० संतोष धोत्रे 713
भारत - राष्ट्र राज्य बनाम सभ्यतामूलक राज्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० जय प्रकाश खरे 717
मध्य एशिया में चीन-रूस संबंध: सहयोग और अविश्वास–गुरदीप सिंह 720
मानवाधिकार और आदिवासी–प्रो० प्रशांत देशपांडे 724
महाविद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा संतुष्टि की भूमिका–अश्वनी कुमार मिश्र; डॉ० सुनील कुमार सेन 729
रीवा जिले में बी०एड० एवं डी०एल०एड० प्रशिक्षुओं की मानवाधिकार जागरूकता का उनकी जीवन शैली से सम्बन्ध का अध्ययन
–अरूण कुमार; डॉ० पतंजलि मिश्र 732
भारतीय बैंकिंग में ग्राहक शिकायत निवारण नीति–रमनदीप कौर 736
विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्त्व–डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 740
वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण–सुनील कुमार 743
जूड़ो में स्थिर संतुलन पर वजन वर्ग का प्रभाव–चन्द्रशेखर बांधें; डॉ० राजीव चौधरी 749
बंगला काव्य और गांधी जी–डॉ० राम बिनोद रे 754

मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 760
वैदिक काल में स्थानीय - प्रशासन का विकास–डॉ० रितु तिवारी 764
साहित्य में थर्ड जेंडर: हाशिये की दुनिया–कृष्णा कुमारी 767
निराश्रित एवं पारिवारिक किशोर विद्यार्थियों में "आत्मविश्वास"–श्रीकृष्ण जांगिड़; डॉ० अखिलेश जोशी 770
सांसद निधि के उपयोग में पारदर्शिता का अध्ययन–यशोदा पटेल; डॉ० आयशा अहमद 774
मन्नू भंडारी की कहानियों में नए जीवन मूल्यों का चित्रण–प्रा० डॉ० दिग्विजय टेंगसे 777
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ० चंद्रकांत पंडा 780
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का अनुशीलन–अजय कुमार 788
हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की मौलिकता–प्रदीप कुमार तिवारी 792
घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य–डॉ० तृप्ता 795
भारत में सु-शासन और उसके समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० सुरेन्द्र मिश्र 798
आर्थिक विकास बनाम संस्कृति और पर्यावरण : भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–एन राजेन्द्र सिंह 804
महात्मा गांधी की ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा : एक अध्ययन–मोनिका भाटी 808
समकालीन काव्य सृष्टि में पर्यावरण दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ० श्रद्धा हिरकने 811
योग-शिक्षा की अभिनव विधियाँ: हिंदी-भाषी यौगिक-वर्णमाला-चार्ट की रचना एवं परिवर्धन–मनीष कुमार; पूनम पंवार; परन गौड़ा 816
जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में समाज में नारी का महत्व–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 826
बेरोजगारी की राजनीतिक-यथार्थ (अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास के संदर्भ में)–बर्नाली नाथ 829
भारतीय उपभोक्ता और उत्पाद एवं सेवा प्रदाता कंपनियों के अंर्तसंबंधों में डिजिटल मीडिया की भूमिका–डॉ० आदित्य कुमार मिश्रा 832
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर 836
उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास एवं क्षमता संवर्धन- वर्तमान परिदृश्य, भावी चुनौतियां एवं अवसर –डॉ० संजय सिंह महर; डॉ० हेमंत बिष्ट 840
छत्रपति शिवाजी महाराज के दृष्टिकोण से स्त्री–डॉ० हेमलता काटे 854
भ्रष्टाचार से लड़ाई और अन्ना हजारे का नेतृत्व–आलोक तिर्की 857
राजनीतिक-जागरुकता की शक्ति एवं महत्त्व–हामिद अली 860
भारतीय लोकतंत्र में मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन–डॉ० जोनी इम्मानुएल तिरकी 863
बिहार की राजनीति में बदलाव की अपेक्षाएँ: एक अध्ययन–कृष्णदेव राय 866
बिहार में सुशासन और दलित सशक्तिकरण : एक अध्ययन–प्रभात आनन्द 868
केन्द्र - राज्य सम्बंध : बदलते परिदृश्य–चन्द्रभान सिंह 872
विमर्श एवं विद्या केंद्रित आलोचना–श्रीमति मीतू बरसैंया; डॉ० श्रीमती आँचल श्रीवास्तव 878
विकसित और विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की देखभाल: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य–डॉ० स्मिता राय; डॉ० भूपेन्द्र बहादुर सिंह 881
भिण्ड अंचल की सामाजिक व्यवस्था का इतिहास : एक अध्ययन–डॉ० शालिनी गुप्ता 886
जनजातीय समुदाय में तीज त्यौहार एवं परिवर्तन का विश्लेषण (छ.ग. राज्य की मुरिया जनजाति के विशेष संर्दभ में)–डॉ० ममता रात्रे 890
स्वामी विवेकानन्द : सामाजिक विचारक के रूप में–प्रेमलता 893
संस्कृत नाट्यशास्त्र पर कालिदास की शैली का प्रभाव–डॉ० अवधेश कुमार यादव 895
पितृसत्तात्मक व्यवस्था और नारी : अप्प दीपो भव–डॉ० जागीर नागर 898
समाज में निरन्तर दोयम दर्जे की अनुभूति–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 903
पंजाब नाटशाला : नाट्य मंचन का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रंगमंच–डॉ० सुनीता शर्मा 909
विद्यार्थियों में परीक्षा दबाव को कम करने में योग व ध्यान की भूमिका–शैली गुप्ता; डॉ० मंजू शर्मा 914
शोभाकरेण अलङ्कारसर्वस्वखण्डनं जयरथमतमण्डनञ्च–डॉ० प्रीतम रुज 916
हिंदी आलोचना का समकालीन परिदृश्य–अमित डोगरा 921
प्रेमचंद पूर्व कहानियों की परम्परा–डॉ० नारायण 924
स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का अवदान–डॉ० आरती कुमारी 929

भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं की भूमिका–डॉ० गीता सहाय 932
नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० गवित माधव हरि; गोपाले यशवंत काशीनाथ 934
नई शिक्षा नीति और प्रक्रिया उम्मीद : चिकित्सक अध्ययन–डॉ० कविता सालुंके 936
नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० बबीता बी० शुक्ला 939
शिक्षा पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बुनियादी विचार–डॉ० नागोराव शालिग्राम डोंगरे 943
नए श्रम कानून का सामाजिक प्रभाव–डॉ० माधव के० वाघमारे 946
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक दृष्टिक्षेप–श्रीमती थोरात अनिता भास्कर 949
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020–डॉ० रंजना राजेश सोनावने 952
चिकित्सकों के बीच भावनात्मक बुद्धि में लिंगभेद का अध्ययन–डॉ० साहेबराव यू० अहिरे; डॉ० जी० बी० चौधरी 955
नई शिक्षा नीति - 2020 और नए श्रमिक कानून: नई शिक्षा नीति 2020 का डी. एड्. व बी. एड्. कोर्सेस पर प्रभाव: एक अनुशीलन–डॉ० अमोल शिवाजी चव्हाण 959
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का शिक्षको को सक्षम बनाने मे योगदान–प्रताप भाऊसाहेब आत्रे 964
चित्रा मुद्गल कृत उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी जीवन (विज्ञापन जगत के सन्दर्भ में)–डॉ० शशी पालीवाल 967
भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव–अनूप कुमार सिंह 971
श्रीलाल शुक्ल कृत उपन्यास अज्ञातवास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन : एक अध्ययन–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 974
परमार अभिलेखों में संदर्भित स्थलाकृतियों से सम्बन्धित स्थलनाम एवं उनका अभिधान–डॉ० रागिनी राय 977
मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि–डॉ० शिवा श्रीवास्तव 981
वित्तीय समावेशन की ग्रामीण रोजगार में भूमिका : एक दृष्टि–उज्ज्वल चतुर्वेदी 985
न्यू मीडिया की नजर से कोविड-19 से जूझते परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य–डॉ० शैलेश शुक्ला 988
चार्वाक दर्शन–डॉ० सरोज राम 993
असगर वजाहत व्यक्तित्व-कृतित्व–रमेश नारायण; डॉ० सविता तिवारी 997
श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति का स्थाई अस्तित्व–डॉ० मधु दीप सिंह; जितेंद्र सिंह 1002
भारत में अपार्टमेन्ट संस्कृति की यात्रा : समाजशास्त्रीय पाठ–डॉ० विमल कुमार लहरी 1010
आदिवासी विमर्श–डॉ० नसरीन जान 1014
राजस्थान मे बढ़ती किसान आत्महत्या के कारण व निवारण: एक अध्ययन–डॉ० मंजु यादव; राजेन्द्र कुमार मीणा 1016
राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवाधिकार–डॉ० मौहम्मद अबीर उद्दीन 1019
स्ववित्तपोशित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन –अखिलेश कुमार मौर्य 1022
निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में नौकरी संतुष्टि और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव के प्रभाव –अलका तिवारी; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1026
ब्रज चौरासी कोस यात्रा : आधुनिक परिपेक्ष में–डॉ० अम्बिका उपाध्याय 1029
आदिवासी देवी अंगारमोती : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में–कु० शोभना देवी सेन; डॉ० बन्सो नुरूटी 1033
हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श–डॉ० भगत गोकुल महादेव 1039
भारत की जनजातियों मे जीवन साथी चुनने की विधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० हरिचरण मीना 1041
स्ववित्तपोशित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कृपा शंकर यादव 1044
उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन–कुसुम देवी 1050
भारत और नेपाल संबंध–डॉ० वंदना वाजपेयी 1053
महाभोज : परत दर परत टूटता विश्वास–विनोद कुमार; प्रो० डॉ० मिन्तु 1057
अरुण कमल की कविताओं में नव युगबोध–मिथिलेश कुमार मिश्र 1060
अनाथ व सनाथ छात्रों के मनोवैज्ञानिक-सामाजिक समस्याओं और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन –कुलदीप; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1063
पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक चेतना–मुरली सिंह ठाकुर; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1068

उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० मंजू शर्मा; मधु देवी 1072
वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन–प्रो० देवेंद्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी 1078
हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह 1081
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति–अच्युत कुमार यादव 1086
असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)–दिगंत बोरा 1090
असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ–डॉ० आकाश वर्मा 1094
कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयों में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग–डॉ० संजय डी० रायबोले 1098
असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य–डॉ० परिस्मिता बरदलै 1101
भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–डॉ० आकाश वर्मा 1104
"स्माल सिनेमा" बनाम "मालेगांव का सिनेमा"–डॉ० मनीष कुमार मिश्रा 1110
विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मो की भूमिका–डॉ० सुनिता कुमारी 1115
दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन–बबली कुमारी 1118
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका–देवेन्दु आलोक 1122
चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन–धीरज कुमार 1126
रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव–गुड्डू कुमार सिंह; डॉ० अलका कुमारी 1131
भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक–डॉ० श्री कमलजी 1138
बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह 1140
नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व–प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल 1146
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना–डॉ० महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी 1151
बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान–डॉ० मनोज कुमार 1154
गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरूद्व निर्णायक शस्त्र–निवेदिता कुमारी 1158
मुगल काल में इतिहास लेखन–डॉ० राघवेन्द्र यादव 1162
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन–राहुल कुमार झा 1165
बिहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि–सचिन कुमार 1169
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां-संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय 1173
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–तौकीर आलम 1177
प्राचीन बिहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ–डॉ० संजीव 1181
''जनहित याचिका'' मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन–दीपक कुमार कोठरीवाल 1183
प्रगतिशील आंदोलन की जागृति–डॉ० आशा तिवारी ओझा 1186
भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान–डॉ० सीमा सहदेव 1189
भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस का (कोविद-19) प्रभाव–श्रीमती मीनाक्षी 1195
रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण–अक्षय राज 1201
जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी–डॉ० अनामिका तिवारी; डॉ० संजय कुमार सिंह 1205
छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण–आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ० (प्रो०) जे० के० पटेल 1210
अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष सन्दर्भ में–प्रो० प्रभात कुमार; कल्पना देवी 1216
पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन–डॉ० प्रशान्त कुमार; डॉ० दुर्वेश कुमार 1221
रीति काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास–सोमबीर 1227
कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सुशीला; कु० आरती 1230
भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता–डॉ० जगबीर सिंह 1238
भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या–मुकेश देशवाल 1241
भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना–सूर्यभान सिंह 1244
अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)–जितेश कुमार घोरेठा; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1250

भारत में संसदीय गरिमा का अवमूल्यन–महेश कुमार 1256
प्रधानमंत्री मोदी के तहत भारतीय विदेश नीति: निरंतरता और परिवर्तन–डॉ० जय कुमार झा 1259
मानव जीवन में भावनात्मक और संवेगात्मक मनोविज्ञान से जुड़े तथ्यों एवं सिद्धांतो की महत्ता: समीक्षा
–डॉ० जया भारती; डॉ० संदीप कुमार वर्मा 1262
भारत में जल संसाधन एवं जल संरक्षण की परम्परागत विधियों का शोधपरक अध्ययन–कविता 1266
मानवाधिकार : साहित्य की समग्र दृष्टि–डॉ० रूपेश कुमार चौहान 1271
निधर्नता उन्मूलन में मनरेगा कार्यक्रम की भूमिका : अनुसूचित जातियों के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० प्रियंका एन० रूवाली; उपमा द्विवेदी 1275
''उच्च शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयी शिक्षा में ई-लर्निंग की प्रभावशीलता का अध्ययन''–प्रीति शर्मा; डॉ० मंजू शर्मा 1279
युवा एवं पंचायती राज संस्थाओं का शिक्षा और महिलाओं के सामाजिक विकास में भूमिका–श्वेता पांडेय; डॉ० मंजू शर्मा 1283
भारतीय राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान–विकास 1287
आजादी के बाद के भारत में महिलाओं की स्थिति–डॉ० अनिल कुमार तेवतिया 1290
टेलीविजन संस्कृति और सामाजिक प्रतिबद्धता के अंतर्विरोध–डॉ० मधु लोमेश 1295
प्रगतिशील समाज में अवरोधित महिला शिक्षा–प्रो० (डॉ०) मंजू शर्मा; रुकमणी हसवाल 1298
विवेकी राय कृत उपन्यास शवेत-पत्र: एक ऐतिहासिक दस्तावेज–विभा रीन 1303
हिन्दी गद्य साहित्य में महिला लेखन का महत्त्व–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मंडल 1306
सुशासन की अवधारणा एवं व्यवहार : भारतीय शासन व्यवस्था के विशेष संदर्भ में–डॉ० सत्येन्द्र कुमार 1309
ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में पंचायतराज की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 1312
प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का महत्व–डॉ० विनय कुमार मिश्र 1317
अनामिका के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अभिव्यक्ति–स्वर्णिम शिप्रा 1322
पूर्वमध्यकाल में जातीय प्रगुणन–प्रवीण पाण्डेय 1326
पश्चिमी राजस्थान की हस्तशिल्प कला का संग्रहालयों में योगदान–अजीत राम चौधारी; डॉ० महेन्द्र चौधरी 1329
भारत में सामाजिक न्याय के निर्वचनकर्ता के रूप में मानव जीवन के विकासात्मक पहलुओं पर सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका
–असीम कुमार शर्मा 1332
भारतीय साहित्य की एकता में बाधक तत्व–डॉ० नवनाथ सर्जेराव शिंदे 1336
पं. दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ० हरबंस सिंह 1339
क्षेत्रीय विकास, सतत विकास एवं राजनीति - उत्तराखण्ड के लोगो के जनजीवन के विशेष संदर्भ में–सुनील सिंह 1341
किशोर छात्र-छात्राओं की चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
–महेन्द्र कुमार; डॉ० जीतेन्द्र प्रताप 1346
पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं–डॉ० पूर्णिमा आर 1352
सतनामी संप्रदाय और बाबा जगजीवन दास–डॉ० अनिता सिंह 1356
ऑनलाइन एवं ऑफलाइन खरीददारी में उपभोक्ता संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन
(बिलासपुर शहर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में)–डॉ० अनामिका तिवारी; अंकिता पाण्डेय 1360
समकालीन विमर्शो के समक्ष चुनौतियाँ–संजय सिंह यादव; डॉ० विनोद कुमार 1374
स्वामी सुन्दरानन्द जी : निम के प्रथम विद्यार्थी–गीता आर्या 1377
दार्शनिक चिन्तन की प्रक्रिया – मूल्यान्वेषण या सत्यान्वेषण–डॉ० रेखा ओझा 1381
इच्छाशक्ति और संघर्ष की दास्तान ('मुर्दहिया' के संदर्भ में)–डॉ० विलास अंबादास सालुंके 1386
हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श–डॉ० दायक राम 1388
भारत में मातृभाषा का महत्व एवं चुनौती : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० सोनू कुमार 1392
भारत में किसानों का दशा एवं दिशा : एक अध्ययन–डॉ० राकेश रंजन 1396
छत्तीसगढ़, पर्यटन और नक्सलवाद–डॉ० काजल मोइत्रा; डॉ० रत्नेश कुमार खन्ना; रेखा शुक्ला 1401
दलित महिलाओं के शोषण के विभिन्न आयाम : एक ऐतिहासिक अध्ययन–कुमारी संगीता कुशवाहा 1405
भारत में महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार (सैद्धांतिक व व्यावहारिक विश्लेषण)–आशा नागर 1408

पूर्वमध्यकालीन समाज का सामाजिक एवं आर्थिक आधार–डॉ० मनोज सिंह यादव 1414
ज्ञान के विकास के नवाचार का महत्त्व–रजनी कुमारी 1417
न्यायवैशेषिकदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूपविमर्श (कौण्डभट्ट विरचित पदार्थदीपिका के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० विश्वेश 'वाग्मी' 1419
सिक्ख दार्शनिक : डॉ. वजीर सिंह का जीवन तथा उनका शैक्षणिक कार्य–हरदीप कौर 1423
संजीव की कहानियों में समकालीन परिदृश्य–डॉ० मधुलता बारा; हेमलता पटेल 1425
शिक्षा के बुनियादी सरोकार और गाँधी-दर्शन–डॉ० किरण कुमारी 1428
अमीरी और गरीबी सैद्धान्तिक प्रक्रिया मानने वाले प्रज्ञा श्री के धनी श्री श्रीलाल शुक्ल–डॉ० मुक्ति मिश्रा 1432
वैश्वीकरण से भारत के चुनावी प्रक्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव–विकास रंजन 1439
विज्ञान एवं अध्यात्म–डॉ० रमाकान्त पाण्डेय 1443
फनिश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल' उपन्यास का नया परिदृश्य–डॉ० हरिकिशोर यादव 1447
भारत का कपड़ा उद्योग: एक अवलोकन एवं स्वास्थ्य समस्याये–डॉ० हितैषी सिंह 1453
भारत में शिक्षक शिक्षा का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–विक्रम बहादुर नाग; डॉ० अज़ीज़ुर्रहमान खान 1456
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में उत्पादन तकनीकी विशिष्टता की महत्ता–अश्वनी कुमार; किशोर कुमार 1460
भारत में दलीय लोकतन्त्र की बदलती भूमिका–डॉ० ब्रह्म प्रकाश 1465
परसाई के साहित्य में भाषा का सौन्दर्य–अजय कुमार मिश्र 1468
बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में कौशाम्बी : एक पुनरीक्षण–अनामिका मौर्या 1471
गोदान - कृषक-वेदना का दस्तावेज–डॉ० सुरजीत कौर 1474
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श–डॉ० कविता मीणा 1477
भारतीय युवाओं में बढ़ती आपराधिक वृत्तियाँ- एक बहुआयामी विश्लेषणात्मक अध्ययन–रजनी रंजन सिंह; त्रिलोकी सिंह 1480
ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–विपिन सहरावत 1491
ऊना के लोकगीतों में वैज्ञानिक व विद्युत वाद्य यंत्र उपकरणों की भूमिका–ममल धीमान; डॉ० परमानन्द बंसल 1494
आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा का महत्व–डॉ० गुलाब फलाहारी 1497
इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी ई-संसाधन, सूचना स्रोत एवं उपकरण: एक सूचनात्मक अध्ययन–डॉ० गौतम सोनी 1499
शहीद भगतसिंह–कुसम राय 1504
जीवन कौशल शिक्षा: एक नया दृष्टिकोण–डॉ० कविता सालुंके; प्रा० ज्योति लष्करी 1506
आधुनिक इतिहास में पुतर्गाल का सागरीय नियंत्रण : राजनैतिक व आर्थिक परिणाम–डॉ० नीलम 1509
मानव जीवन में योग–डॉ० पूजा कुमारी 1514
भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता निवारण-एक जटिल प्रक्रिया–डॉ० अशोक कुमार मिश्र 1517
अवसाद व रोग प्रतिरोध का हथियार है योग–डॉ० सीमा सिंह 1519
स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ–डॉ० अपराजिता जॉय नंदी 1525
उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में मूल्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन–डॉ० विष्णु कुमार 1527
भगवद्गीता का दर्शन और महात्मा गाँधी–डॉ० स्मिता कुमारी 1532
शिक्षा में कंप्यूटर का महत्व–आलोक तुली 1537
सामाजिक कार्य व्यवसाय में लोक-जीवन एवं उनकी विधियों की प्रासंगिकता–अमित कुमार 1541
आर० के० अर्चना सदा सुमन टुदी–डॉ० रविन्द्रनाथ शर्मा 1541
चौरी चौरा जनक्रांति और ब्रिटिश साम्राज्य की द्वेशपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया–डॉ० अजय कुमार सिंह 1545
21वीं शताब्दी भारतीय परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता अभियान–डॉ० गरिमा सक्सेना 1548
बस्तर संभाग में विद्युत उत्पादन के पारंपरिक स्त्रोतों की संभावना–जितेन्द्र कुमार बेदी; डॉ० काजल मोईत्रा 1551
भारत में विदेशी व्यापार की प्रवृत्ति, संरचना एवं दिशा का अध्ययन–डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल 1554
प्राचीन भारतीय वेशभूषा (प्रारम्भ से गुप्तकाल तक)–पीयूष पाण्डेय 1558
विचित्र नाटक में छंद योजना–मनिंदर जीत कौर 1562

समकालीन भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० हेमलता बोरकर वासनिक 1565
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारी पात्रों में निहित लोककल्याण की भावना–प्रतिभा झा 1572
हरियाणा की चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का निर्धारण–राजीव वर्मा; डॉ० तिलक राज आहुजा 1575
कबीर की विचारधारा और उनकी जन-पक्षधरता–डॉ० धनंजय कुमार दुबे 1580
श्रीमद्भगवद्गीता तथा मनुस्मृति में सदाचार अनुशीलन–प्रवीण कुमार 1586
सगुण कवि तुलसीदास के काव्य - सिद्धान्त–मधु अरोड़ा; अर्चना कुमारी 1590
महावीरचरिते तात्कालिक – समाजसंस्कृती–अनिता कौशिक: 1594
गरुड पुराणे कुष्ठ रोग: एकं विवेचनम्–संजय: कुमार: 1599
सिक्कों की उत्पत्ति, विकास एवं उनका महत्त्व–अंजू मलिक 1602
शक्तिपात विद्या की दार्शनिक रूपरेखा–मनीष कुमार; डॉ० बिमान पॉल 1605
स्मृति विकास में योग दर्शन की भूमिका–प्रमोद कुमार; डॉ० पारन गौड़ा 1609
पं. बस्तीराम के काव्य में मानवतावाद–पूनम 1612
हरियाणवी लोकगीतों में यथार्थ-चित्रण–सुमन 1616
प्रवासी महाकवि हरिशंकर 'आदेश' के महाकाव्यों में सौंदर्य-चित्रण–डॉ० मनोज कुमार; डॉ० विकास कुमार 1619
प्राचीन भारत में 'युद्ध एवम् शांति' नैतिकता या अनैतिकता के संदर्भ में–डॉ० आरती यादव 1622
शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : कुमाऊं क्षेत्र के जनजातीय तथा शहरी छात्रों के सन्दर्भ में–डॉ० रश्मि पंत 1625
सोशल मीडिया और फेक न्यूज का जम्मू के युवाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अरविंद 1630
कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन–संतोष कुमार साह 1634
राजस्थान के लोकजीवन में लोकनृत्य की परंपरा एवं स्वरूप–नारायण सिंह 1637
साठोत्तरी हिन्दी प्रमुख ऐतिहासिक एकांकीयाँ–रमेश चौहान; डॉ० एस०के० पवार 1641
मिथिला की लोक कला 'सिक्की' एक परिचय–शंभू कुमार गुप्ता 1645
भारतीय आर्थिक नियोजन में उपेक्षित किंतु प्रासंगिक : एकात्म अर्थचिंतन–धीरज कुमार पारीक 1647
मीरा कांत के नाटक : द्वन्द्व के संदर्भ में–गुरप्रीत कौर 1651
यात्रा साहित्य में हिमाचल : संदर्भ और प्रवृत्ति–डॉ० सुनीता शर्मा; श्वेता शर्मा 1653
कुण्ठा : बद्री सिंह भाटिया के कथा-साहित्य के संदर्भ में–सुषमा देवी 1658
प्रयाग, कुंभ एवं भारतीय समाज–पूजा 1661
तीन एकांत : कहानी और नाट्य रूपांतरण–चन्दन कुमार 1664
मानवीय संघर्ष की महागाथा ...रंगभूमि–डॉ० अमिता तिवारी 1668
राजस्थान मे जनशिकायत निवारण-तंत्र और ई-गवर्नेंस–विनोद कुमार 1671
पूर्वोत्तर का यथार्थ : वह भी कोई देश है महाराज–स्वाति चौधरी 1680
योगोपनिषदों में उद्धत प्रणव: एक विवेचन–नम्रता चौहान; डॉ० शाम गणपत तिखे 1682
मासिक धर्म के पूर्व योगाभ्यास का महत्व: एक अध्ययन–नेहा सैनी; डॉ० शाम गनपत तीखे 1688
स्वप्रबन्धन में चित्तशुद्धि की भूमिका: महर्षि पतंजलि एवं महत्मा बुद्ध के संदर्भ में–अखिलेश कुमार विश्वकर्मा 1693
चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी-जीवन : स्वरूप, संघर्ष और अस्मिता की खोज–दीक्षा कोंवर 1697
भाषाविज्ञान का अन्य ज्ञान- विज्ञान से संबंध–डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० वीरेंद्र सिंह 1700
कश्मीरी विद्वानों का संस्कृत साहित्य को योगदान–मीना देवी 1703
कृषि-क्षेत्र में तकनीकी परिवर्त्तन हेतु विभिन्न समस्याओं का अध्ययन–अरुण कुमार 1706
राष्ट्र निर्माण में भारतीय संसद की भूमिका: एक अवलोकन–डॉ० सुनीता मंगला; डॉ० निवेदिता गिरि 1709
राहुल का बौद्ध दर्शन और मानवतावादी सन्दर्भ–सत्य प्रकाश पाण्डेय 1715
प्रवासी मजदूरों का अपने घर की ओर हो रहा पलायन: इससे निर्मित चुनौतियां एवं अवसरों का अध्ययन–डॉ० लक्ष्मीकांत शिवदास हुरणे 1719
भारत में प्रवासी श्रमिकों का वैश्विक महामारी के दौरान पलायन : चुनौतियाँ एवं रणनीति–डॉ० संजू चलाना बजाज 1723
सार्वभौमिक शिक्षा दर्शन : श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन–डॉ० अनिता जोशी; सुनीता जोशी 1727

छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतो में राजनीतिक विडम्बनाएँ–डॉ० स्वामीराम बंजारे; शैलेन्द्र कुमार साहू 1732
बौद्ध दर्शन में ध्यान का स्वरूप–धनंजय कुमार जैन; डॉ० संतोष प्रियदर्शी 1736
भविष्य के भारत में प्राचीन भारतीय विज्ञान की भूमिका–डॉ० विजय कुमार 1741
भारत में कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन–चिरन्जी लाल रैगर 1745
भारतीय हिंदी साहित्य में किसानों की त्रासदी–होशियार सिंह 1750
इन्टरनेट और मोबाइल के व्यसन से मुक्ति में योग की उपयोगिता–कृष्णाबेन संजयकुमार ब्रह्मभट्ट; डॉ० बिमान पॉल 1753
1857 की क्रांति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अमित कुमार; राजेश कुमार 1757
'भोलाराम का जीव' व्यंग्य-रचना में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ–चुन्नीलाल 1761
चंद्रकांता उपन्यास ''कथा सतीसर'' में कश्मीर समस्या के विविध आयाम–सुखबीर कौर 1764
बिहार का कृषि रोड मैप: किसानों के समग्र विकास का प्रतीक–दीपक कुमार झा 1766
मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन में संगीत की भूमिका: शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन–अलका सिंह 1772
किसान अस्मिता का संकट और 'फाँस'–डॉ० बिजेन्द्र कुमार 1777
ध्रुवस्वामिनी: प्रसाद की नयी संकल्पना–डॉ० बिजय रवानी 1781
आर्थिक विकास और पर्यावरण–श्रीमती कविता 1785
नई शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर उच्च शिक्षा में परिवर्तन–डॉ० रवींद्र कांबले 1789
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन–श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर; डॉ० संजीवनी राजेश महाले 1792
नई शिक्षा नीती 2020 के साथ पढेगा भारत–डॉ० दयाराम दुधाराम पवार 1798
वंचना से विकास की ओर शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अध्ययन : एक नीतिगत समझ–मांडवी दीक्षित 1801
प्राचीन मूर्तिशिल्प में पार्वती: विश्लेषणात्मक अध्ययन–राजेश कुमार जाट 1805
गरासिया जनजाति की धार्मिक अलौकिक शक्तियाँ: एक विवेचन–गोगराज चौधरी 1810
लोक-नीति और राष्ट्र निर्माण: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल्यांकन–मोहम्मद राशिद खान 1814
वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण- बाधाएँ एवं सुझाव–डॉ० उमाशंकर त्रिपाठी 1819
संस्कृत नाट्य शास्त्र में वर्णित नायक-नायिका और महाकवि कालिदास की रचनाओं पर उसका प्रभाव–तरूण कुमार सिंह 1822
भारत में चुनाव, लोकतंत्र और मीडिया–प्रतिभा सिंह 1825
मानवता के सरोकार और अज्ञेय का काव्य–माधुरी शर्मा 1827
भारतीय योग परम्परा एवं नाथपंथ : एक तुलनात्मक अध्ययन–कुँवर रणंजय सिंह 1833
छत्तीसगढ़ के लोक गीत और नारी सशक्तिकरण–डॉ० तृषा शर्मा; डॉ० सुधीर शर्मा 1836
कुलिश की दृष्टि में राजनीति और पत्रकारिता–डॉ० जितेन्द्र द्विवेदी 1839
हिंदी साहित्य में काल क्रमानुसार अभिजात्य एवं लोक का संबंध–सचीन्द्र नाथ 1842
नाट्यशास्त्र में वर्णित संगीत का स्वरूप–अशोक बैरागी; डॉ० दीपिका श्रीवास्तव 1845
मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में नारी जीवन–राधा शर्मा; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1848
हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रधर्म: एक विमर्श–सूर्य प्रकाश मिश्र 1852
कोविड-19 संक्रमण एवं संतुलित आहार–डॉ० स्नेह लता 1854
महिलाएँ एवं सामाजिक न्याय - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० दिलीप कुमार सोनी 1858
माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन–विमला कुर्रे; डॉ० सुनील कुमार सेन 1862
इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित वर्त्तमान परिदृश्य–डॉ० पठान रहीम खान 1869
राजस्थान में पशुपालन का महत्व: एक भौगोलिक मूल्यांकन व विश्लेषण–नीलू चतुर्वेदी 1873
हिन्दी लघुकथा में वृद्ध संवेदना का चित्रण–सरिता कुमावत 1878
रीवा सम्भाग में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों में पर्यावरण चेतना: एक भौगोलिक अध्ययन–अरूणेन्द्र बहादुर सिंह; सितेश भारती 1882
मानव जीवन मे आकांक्षा एवं आकांक्षा स्तर की उपदेयता–विनोद कुमार; डॉ० कुमुद त्रिपाठी 1886

प्रवासी जीवन की अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में परम्परा और प्रगति का अध्ययन–सोनी यादव 1890
नरेश मेहता द्वारा रचित धूमकेतु और अरण्या का विवेचनात्मक अध्ययन–अशोक कुमार यादव 1893
''वर्तमान सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता''–डॉ० बन्दना सिंह 1896
काशीनाथ सिंह की कहानियों में यथार्थवाद का चित्रण–देवव्रत यादव 1899
उच्च शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–डॉ० ममता मणि त्रिपाठी 1902
नैषधीयचरितम् महाकाव्य में नल के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० अमृत कौशल 1905
मीनाक्षी स्वामी के उपन्यास 'भूभल' में स्त्री चेतना–विजय कुमार पाल 1909
डॉ० नगेन्द्र द्वारा रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में मौलिक विचारों का अध्ययन–विशाल मिश्र 1913
हिंदी साहित्य में स्त्री -विमर्श–डॉ० दिनेश श्रीवास 1916
राजस्थान के बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु प्रदेश में फसल प्रतिरूप परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन–अमिता बाई यादव 1919
जैन-तीर्थ-स्थलों से जुड़े प्रबन्धन में स्वार्थ-परक राजनीति का प्रवेश–पवन कुमार जैन 1926
कुसुम अंसल साहित्य में पारिवारिक रिश्तों का बदलता स्वरूप–डॉ० विक्रम सिंह; डॉ० सुनीता 1928
"मुरैना जनपद के मन्दिरों में प्रतिबिम्बित प्राचीन भारतीय मन्दिर स्थापत्य का विकासक्रम"–प्रो० प्रभात कुमार; गौरव सिंह 1930
कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव–डॉ० संतोष कुमार लाल 1934
सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध और आधुनिकता के व्यंग्यात्मक पहलू–नरेंद्र कुमार स्वर्णकार 1937
अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में 'जेण्डर पाठ्यक्रम' की आवश्यकता क्यों–वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय सुराणा 1940
व्याकरण शास्त्रे प्रमाणम्–डॉ० सुभाषचन्द्र मीणा 1943
एक राष्ट्र एक चुनाव: एक विश्लेषण–गुलशन कुमार; डॉ० मानसी सिन्हा 1947
आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन–डॉ० सुशील कुमार सिंह 1950
तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल–डॉ० राम टहल दास 1954
हठयोग: आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता–ज्योति शर्मा; प्रो० गणेश शंकर गिरि 1959
कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना': विश्लेषणात्मक अध्ययन–पूजा मिश्रा 1962
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्या–सूर्यकांत एम०बी० 1966
हरियाणा की प्रतिनिधि हिंदी कहानियां–डॉ० ओम प्रकाश सैनी 1969
भारतीय संदर्भ में आतंकवाद के कारण: एक अध्ययन–सुरेन्द्र प्रसाद 1973
योगिता यादव की कहानियों 'अनहोनी' तथा 'भेड़िया' मे नारी अस्मिता का मुद्दा–प्रेम सिंह 1977
आनंदमठ उपन्यास की समीक्षा–डॉ० प्रीति राय 1980
मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में यथार्थबोध–डॉ० प्रीति राय; हरकेश कुमार 1983
सामाजिक परिवर्तन के वाहक बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर एक अवलोकन–सुरेन्द्र सिंह 1988
डॉ० भीमराव आम्बेडकर का राष्ट्रवाद–डॉ० चन्द्रशेखर आजाद 1992
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संग्रहण की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन–हरिओम; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा 1995
योगिता यादव के कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति–सुमन 1997
हरियाणा पर्यटन:- चुनौतियां एवं सुझाव–राजेश कुमार; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा 2000
नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019–डॉ० अविनाश कुमार लाल; श्रीमती अविंदना जॉन 2005
"वैदिक मनोविज्ञान"–अनामिका वर्मा 2010
गोंड जनजातीय महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण (कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)–डॉ० बन्सो नुरूटी 2013
देवेन्द्र कुमार बंगाली की कविताओं में जनपक्षधरता–डॉ० राम पाण्डेय 2019
गदल का प्रासंगिक-विमर्श–डॉ० रमेशकुमार टण्डन 2022
भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का अवदान–डॉ० विजय कुमार 2025
दलित स्त्री-अस्मिता का कोरस : सुशीला टाकभौरे की कविताएं–कार्तिक राय 2029
कविता के आइने में थर्ड जेंडर–डॉ० शबाना हबीब 2032
उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिला सहभागिता–डॉ० प्रमिला यादव 2038

दलित-विमर्श और रामचरितमानस–प्रो० प्रदीप श्रीधर 2042
लैंगिक (जेण्डर) परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण–जयंती; डॉ० ज्योति कुमारी 2047
आयु वर्ग एवं लैंगिक भेद का इन्सेफ्लाइटिस से सम्बन्ध : उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में –अमरनाथ जायसवाल; डॉ० साधना श्रीवास्तव 2058
भारतीय विदेश नीति में बदलाव व उभरती चुनौतियाँ–चेतन बहोत 2062
विश्व में बढ़ता प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान–डॉ० सुमन फुलारा 2066
अवध की प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप (19वीं शताब्दी)–गणेश कुमार 2068
विभाजन के केंद्र में गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान–निधि वर्मा 2071
पंजाब में विधायी नेतृत्व के राजनीतिक लक्ष्य (1997-2017)–डॉ० सुनीता रानी 2074
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा–रक्षा सिंह; प्रो० अमिता सिंह 2079
मनरेगा: गाँवों में रोजगार सृजन का सुलभ साधन–राकेश कुमार वर्मा; डॉ० राम सेवक सिंह यादव 2084
संस्कृति, परंपरा और लोक: समकालीन अर्थगत विश्लेषण–प्रवीण कुमार जोशी 2088
हरियाणा की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी व शैक्षणिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन –सुरेन्द्र; डॉ० तिलक राज आहुजा 2091
प्रशासन, शहरीकरण और प्रदूषण–रामावतार आर्य 2098
पूर्वी उत्तर प्रदेश तराई में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की आर्थिक संरचना–डॉ० संजीव कुमार सिंह; सीमा सिंह; डॉ० अभिषेक सिंह 2100
इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का कथात्मक वैविध्य–दीप्ति यादव 2107
बिहार में महिलाओं की प्रशासनिक भागीदारी का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० अनिल झा 2111
शिक्षकों में हास्यवृत्ति और उनकी शिक्षण प्रभावकता–प्रो० वन्दना गोस्वामी; रेखा बागड़ा 2115
दीनदयाल उपाध्याय और मीडिया माध्यम–राजकुमार भारद्वाज 2117
जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षकों, छात्रों तथा समाज के प्रति विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन–डॉ० चन्द्रावती जोशी 2121
भारतीय नारी मुक्ति के संदर्भ में महात्मा गाँधी का योगदान–सुनिता कुमारी 2126
'मोरचे' का समीक्षात्मक अध्ययन (सुषम बेदी के विशेष संदर्भ में)–संगीता यादव 2129
शिक्षक और मूल्य शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–रफत फातिमा; डॉ० नलिनी मिश्रा 2132
यशपाल का स्त्री चिंतन–डॉ० अभिषेक मिश्र 2136
समाज के सजग साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम–श्रीमती पंकज यादव 2140
शिवपुराण में अरण्यवासी एक विवेचना–डॉ० गोपेश कुमार तिवारी 2142
छतीसगढ के कुष्ठ आश्रम और इसकी पुनर्वास योजना का ऐतिहासिक विश्लेषण (धमतरी जिले की शांतिपुर कुष्ठ आश्रम के विशेष संदर्भ में)–रणजीत कुमार; डॉ० बन्सो नुरूटी 2145
छत्तीसगढ़ में बैंको द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में वितरित ऋणों का विश्लेषण: "कृषि ऋणों" के विशेष संदर्भ में –श्रीमती भूमिका शर्मा; डॉ० अर्चना सेठी 2150
करोना काल में बालकों के सामाजिक व शैक्षणिक कौशल विकास में ऑनलाइन कक्षाओं के दुष्प्रभावों का मनोसामाजिक अध्ययन (रीवा जिले के शहरी बालक-बालिकाओं के संदर्भ में)–डॉ० सुनीत कुमार तिवारी; श्रीमती निर्मला तिवारी 2155
कुँवर नारायण की कविताओं में जीवन-बोध–कुमार सौरभ 2161
राजा राम मोहन राय के धार्मिक, सामाजिक सुधार एवं वर्तमान में हिन्दुत्व की अवधारणा : एक समीक्षात्मक अध्ययन –डॉ० श्याम शंकर प्रसाद गुप्ता 2165
मोती लाल साकी का कश्मीर साहित्य को योगदान–परवेजा अखतर 2170
शिक्षक ही समाज का शिल्पकार और मार्गदर्शक–डॉ० कल्पना जैन; डॉ० रत्नेश कुमार जैन 2173
हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार –डॉ० ममता 2178
रामायण में प्रकृति–डॉ० मौमिता भट्टाचार्य 2182
''जनपद चम्पावत में ग्रामीण व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन''–सन्तोष कुमार सिंह 2185
हिन्दी व्यंग्यालोचन की परंपरा और डॉ. सुरेश माहेश्वरी का योगदान–श्रीमती आँचल श्रीवास्तव; श्रीमती मीतू बरसैंयाँ 2189
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परम्परागत बिरसू का अध्ययन–गोपाल शर्मा 2192

बक्सर से प्राप्त प्राक् मौर्यकालीन मृण्मूर्त्ति कला–मंदीप कुमार चौरसिया 2196
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राचीन भारतीय शिक्षा की चौसठ कलाओं का समावेश–डॉ० श्री प्रकाश मिश्र 2200
'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' में चित्रित जीवन-संघर्ष–डॉ० राम किशोर यादव 2205
हिन्दी सिनेमा के गीतों में सावन और बारिश–डॉ० अनुपमा श्रीवास्तव 2209
पटना महानगर के पूर्वी भाग में आवासीय भूमि उपयोग की गतिशीलता: एक भौगोलिक विश्लेषण–नीता कुमारी झा 2217
कला में अमूर्तन की सीमा: बनारस के सन्दर्भ में विजय सिंह के चित्र का संक्षिप्त अवलोकन–शशि कला सिंह 2223
प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं भारतीय विदेश नीति: एक अवलोकन–डॉ० अलका चतुर्वेदी 2227
अज्ञेय के उपन्यासों में व्यक्तिवादी पात्रों की भाषा शैली–डॉ० रानी बाला गौड़; गरिमा वर्मा 2229
'शिवमूर्ति के कथा साहित्य में बदलते समकालीन ग्राम्य जीवन का परिदृश्य'–डॉ० रानी बाला गौड़; मनीष कुमार 2232
मध्यकालीन भारत में भक्ति का वास्तविक और व्यावहारिक पथ और आधुनिक समाज में इसकी प्रकृति और प्रभाव –मिथिलेश कुमार मौर्य; डॉ० अजीत कुमार मिश्रा 2234
सुल्तानपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन –शशि मिश्रा; डॉ० अखिलेष कुमार श्रीवास्तव 2237
फर्रुखाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० रमाशंकर 2241
समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध–सोवनी मईड़ा 2244
मधु काँकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास में अभिव्यक्त वेश्या जीवन–कुमारी पूनम चौहान 2249
अहिंसा एवम् सत्याग्रह का गांधीवादी दर्शन और युवा–डॉ० अरविंद कुमार 2252
रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन–डॉ० विजय कुमार 2255
छत्तीसगढ़ी कविता की आलोचना में डॉ. बलदेव का प्रदेय–श्रीमती वंदना जायसवाल; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 2258
हल्बा जनजाति के जन्म संस्कार में गतिशीलता एवं परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ के उत्तर बस्तर कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)–डॉ० प्रीति शर्मा; दूजराम टण्डन 2265
स्त्री "मुक्ति" की अवधारणा, "झूला नट" उपन्यास के संदर्भ में–प्रीति 2269
'पिंजरे की मैना' आत्मकथा में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ–डॉ० निशा मुरलीधरन 2275
वर्तमान भारत में मानवाधिकारों का नारी संदर्भ (उत्पीड़न एवं विधिक संरक्षण)–रजनीकांत दीक्षित 2278
हिंदू मंदिर : अंग, संरचना तथा कार्य प्रणाली–आशुतोष पाण्डेय 2282
हिन्दी कविता में अभिव्यक्त गांधी दर्शन के विविध आयाम–डॉ० वीरेन्द्र सिंह 2285
पटना में बाल श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अवलोकन: एक भौगोलिक अध्ययन–रंजीता कुमारी 2292
बलराम अग्रवाल की लघुकथाओं में कथ्य की विविधता एवं शिल्पगत नवीनता–चन्द्रेश साहू; डॉ० प्रभात रंजन 2299
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीखने का समग्र वातावरण–डॉ० अर्चना मिश्रा 2302
ग्राम सभा एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण–डॉ० क्रान्ति प्रकाश 2306
भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा की नई नीति 2020–डॉ० प्रिया सोनी खरे; सुनन्दा सिंह 2308
परिवार समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री शिक्षा की उपादेयता–डॉ० नम्रता जैन; डॉ० सुगंधा जैन 2312
पर्यावरणीय पर्यटन: सिद्धांत और अभ्यास–ईरा भारद्वाज 2316
गाँधी चिन्तन में सामाजिक रूपान्तरण का नैतिक आधार–महेन्द्र सिंह 2320
भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य रूप–डॉ० राजेश कुमार गर्ग 2325
आदिवासी साहित्य में नारी अस्मिता–गौरव सिंह 2328
बौद्धकालीन शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि–सरोज कुमारी 2333
मोदी काल में भारत का विदेश नीति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–सरिता कुमारी 2339
नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षक शिक्षा के लिए एक चुनौती–शाजिया सुल्तान; पायल शर्मा 2343
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की बुनियादी या बेसिक शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता–विनय कुमार; धर्मेंद्र सिंह 2347
भरतपुर रियासत की जनजागृति में यातायात साधनों की भूमिका–नीतू जेवरिया 2351

स्त्री विमर्श के संदर्भ में प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता'–सरिता कुमारी 2355

विन्ध्याचल के पण्डे: व्यावसायिक एवं धार्मिक पक्ष–प्रिया चौरसिया 2359

महात्मा गांधी की ग्राम विकास दृष्टि–डॉ० विकास यादव 2363

ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका - महिलाओं के उत्थान के सन्दर्भ में–डॉ० कृष्णदेव कुमार भारती 2366

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में डॉ० रमाकांत सोनी के साहित्यों का अध्ययन–सरोजनी डडसेना; डॉ० रेखा दुबे 2369

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन–डॉ० समर बहादुर सिंह 2376

कुसुम अंसल के उपन्यासों में विविध विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त नारी चरित्र का विश्लेषण–नारायण रमण चौधरी 2379

हठयोग परम्परा में वर्णित चारित्रिक तथा व्यवहारिक उत्कर्ष के साधन (वशिष्ठ संहिता तथा घेरण्ड संहिता के विशेष सन्दर्भ में)–पवित्रा देवी; डॉ० गोविन्द प्रसाद मिश्र; डॉ० सुखबीर सिंह 2382

हिंदी समाचार पत्रों के संपादकीय विषय वस्तु का विश्लेषण (दैनिक जागरण एवं नवभारत टाइम्स दिल्ली के विशेष संदर्भ में) –बिमलेश कुमार 2386

पारिजात उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्य–डॉ० दीपिका विजयवर्गीय 2391

विवादों को कम करने के लिए तनाव मुक्त कार्य संस्कृति की आवश्यकता–सुश्री कंचन शेखावत 2393

कैदियों की चिन्ता स्तर पर प्रेक्षाध्यान के प्रभाव का अध्ययन–डॉ० निर्मला भास्कर; राजेश भयाना; डॉ० अशोक भास्कर 2395

राष्ट्रीय राजनीति में पर्यावरणीय मुद्दों पर बदलती विश्व सहमति–डॉ० नलिनी लता सचान 2398

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मानवाधिकार–डॉ० पुष्कर पाण्डेय 2401

ग्रामीण युवाओं पर वैश्वीकृत जनसंचार माध्यमों का प्रभाव–विमला देवी 2404

भारतीय संस्कृति और योग–डॉ० सितेश कुमार 2408

भारत-इजरायल : कृषि सहयोग–मनीष कुमार सिंह; डॉ० रामकृष्ण सिंह 2412

भारतीय समाज में नारी की भूमिका–डॉ० स्मिता जायसवाल; डॉ० आर० के० पाण्डेय 2416

अध्यापक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 2418

बाबा रामदेव जी का योग एवं दर्शन–डॉ० प्रियंका शुक्ला 2421

वायुपुराण में दर्शन-तत्त्व–डॉ० गंगेश गुंजन 2424

भारतीय समाज - विकलांगता के परिप्रेक्ष्य में–सुमित्रा महरोल 2427

प्राच्य एवं पाश्चात्य शिक्षण पद्धतियों में समन्वय की आवश्यकता–सुनील कुमार उपाध्याय 2429

मौर्य काल से गुप्तकाल तक परिवर्तित होती न्याय व्यवस्था–डॉ० शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी 2431

समग्र ग्रामीण विकास की अवधारणा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–विवेकानन्द सिंह; प्रोफेसर राम गणेश यादव 2434

सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति के विविध रूप का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० श्रवण राम 2437

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का निरीश्वरवाद–डॉ० संजय कुमार मिश्र 2441

शाक्त तंत्र की दृष्टि में ध्यान और उसके सहायक अंग–ममता चौधरी; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 2444

भारतीय शिक्षा में एनी बेसेण्ट का अवदान–डॉ० के०डी० तिवारी 2447

बिलासपुर शहर के झुग्गी झोपड़ी निवासरत् लोगों को मिलने वाले शासकीय योजनाओं का अध्ययन–कु० आरती तिर्की; डॉ० ऋचा यादव 2452

'चाक' उपन्यास में नारी विमर्श–श्रीमती गीता सतीश पोस्ते; डॉ० सन्मुख नागनाथ मुच्छटे 2457

शिक्षण के विकास मे तकनीकी और संचार का योगदान–डॉ० दिनेश कुमार 2460

सिद्धियों की वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० मनोज कुमार टाक 2463

संत आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में संत रैदास–राजेश कुमार यादव 2466

गांधी के राजनैतिक विचार–माया यादव; डॉ० संध्या जायसवाल 2470
मानवीय उत्कर्ष निमित्त योगासन शिक्षण/प्रशिक्षण की अवधारणा (हठयोग परम्परा के विशेष सन्दर्भ में)–जयदेव 2474
स्मार्टफोन के उपयोग का किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव–तुलसी राम; डॉ० चंद्रकांत शर्मा 2477
सोशल मीडिया की तर्कसंगिकता का एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन–डॉ० सेवा सिंह बाजवा 2482
मॉरीशस में हिंदी व गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति–अमित कुमार गुप्ता; प्रो० कनुभाई निनामा 2486
भारतीय समाज और राजनीति में महिलाओं की स्थिति–डॉ० सुषमा कुमारी 2489
औपनिवेशिक बिहार में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा–रश्मि कुमारी 2491
समासे पूर्वनिपाततत्त्वम्–डॉ० अनुप कुमार रानो 2496
बाबासाहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं मानवाधिकार–कन्हैया प्रसाद 2501
कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में सामर्थ्यवान नारी–प्रोफेसर (डॉ०) राजिन्द्र पाल सिंह जोश; अनुराधा कुमारी 2504
बाल साहित्य में कहानी -उपन्यास का योगदान–डॉ० सुषमा कुमारी 2507
समाधि सिद्धि निमित्त प्राणायाम की उपादेयता - एक समीक्षा–मोहित आर्य 2510
हिंदी साहित्य में छायावाद काव्य: प्रकृति का काल्पनिक एवं प्रेमपूर्ण चित्र–अरविन्द कुमार दीक्षित 2513
भारतीय दर्शन में योग का महत्त्व–संजय कुमार 2517
उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–अमिता शुक्ला; डॉ० ममता पंत 2520
अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व–डॉ० नवल किशोर बैठा 2524
डिजिटल मार्केटिंग: व्यापार और मार्केटिंग का बदलता स्वरुप–डॉ० साद बिन हामीद; डॉ० तनवीर अहसन निज़ामी 2527
दर्शनभेदा:–प्रो० प्रसून दत्त सिंह 2529
पण्डिताक्षमारावमहोदयाया: कथामुक्तावल्या: समाजिकविश्लेषणम्–श्री० विश्वजित् वर्मन 2531
मलयालम के लोक गीत और केरल की संस्कृति–डॉ० सीमा चन्द्रन 2535
दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रयोग कौशल–डॉ० सविता राय 2538
वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा की प्रासङ्गिकता–डॉ० श्याम कुमार झा 2544
स्थानीय दलों में महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व–अभिषेक कुमार 2548
श्री नरेश मेहता के खण्डकाव्यों में चेतना–श्रीमती सुमित्रा यादव 2551
ग्वालियर घराने के प्रमुख स्तम्भ: पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी का व्यक्तित्व व कृतित्व–चाँदनी; डॉ० लोकेश शर्मा 2556
'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में सामाजिक चित्रण–किरण देवी 2561
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला मानवाधिकार एवं उनकी स्थिति–पूनम यादव; प्रो० रणबीर सिंह गुलिया 2565
हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी चंद्रलाल भाट की गुरु शिष्य परंपरा–रेखा; डॉ० मुकेश कुमार 2568
प्रो० अभय मोर्य कृत 'त्रासदी' उपन्यास में चित्रित समाज–रीतू; डॉ० सुमन राठी 2572
हरियाणा की सांग कला में श्री खीमचन्द स्वामी का अवदान–योगेश कुमार 2575
कौटिल्य अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर याज्ञवल्क्यस्मृति का प्रभाव–डॉ० इशरत सुल्ताना 2579
अयोध्या सिंह उपाध्याय का भाषायी चिन्तन–डॉ० अनिल कुमार 2584
पर्णशबरी : प्रकृति का चिकित्सकीय स्वरूप–पूजा सिंह 2588
आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श–निशु सिंहा; प्रो० अजय कुमार 2593
समाज में लैंगिक असमानता का स्वरूप एवं महिलाओं के सामने आनें वाली चुनौतियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
–सीमा सिंह; प्रो० बन्दना गौड़ 2595

कवि अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रयुक्त विविध काव्य रूप—जसप्रीत कौर चावला—डॉ० राजेन्द्र सिंह 'साहिल' 2603
जनसंख्या का भू-जोतों के आकार एवं संख्या पर प्रभाव: प्रयागराज जनपद का एक प्रतीक अध्ययन—वेद प्रकाश वेदी 2609
इलाहाबाद जनपद में गंगा और यमुना नदी में प्रदूषण का स्तर: एक भौगोलिक अध्ययन—वृजेश कुमार 2615
स्वतंत्रतापूर्व आदिवासी उन्नति के लिए ईसाई मिशनरियों का कार्य—डॉ० शशिकांत गोकुळ साबळे 2619
मुगलकालीन समाज और राजस्व व्यवस्था के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी: जमींदार वर्ग—रंजु कुमारी 2622
भारतीय संस्कृति और नई शिक्षा नीति—अशोक कुमार वर्मा 2625
सर्वोदय: महात्मा गांधी—के० एम० छाया 2628
अथर्ववेद में जादू, टोना और टोटका मंत्र—डॉ० राजकुमार 2631
महात्मा गाँधी और स्वदेशी आन्दोलन—रितेश कुमार 2636
हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी अस्मिता विशेषकर महाश्वेता देवी का उपन्यास—समीर कुमार 2639
अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन—शक्ति सिंह 2643
मायानन्द मिश्रक काव्यमे चित्रित समाज—पुष्पम ज्योति 2646
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का विलय : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—नंदिता राय 2650
गृहविज्ञान विषय की छात्राओं का दृश्य विज्ञापनों के प्रति विचारों का अध्ययन—डॉ० प्रतिभा पाल 2654
भारत की आंतरिक सुरक्षा - समस्याएं और समाधान—डॉ० हिमांशु यादव 2656
हिंदी मीडिया का समाजिक सरोकार: एक भाषिक विश्लेषण—डॉ० राकेश कुमार दुबे 2660
वेद एवं चार्वाक दर्शन : आधुनिक जीवन शैली के सन्दर्भ में—डॉ० विद्यापति गौतम 2664
संप्रेषण के लिए शब्द ही माध्यम—डॉ० माला मिश्र 2667
पुराणोल्लिखत दशावतार वर्णन में मानव के आनुवांशिक विकास की प्रतीकात्मकता एवं वैज्ञानिकता—डॉ० अनीता 2670
काश्मीर शैवदर्शन में सृष्टिप्रक्रिया : तत्त्वमीमांसीय दृष्टिकोण—डॉ० प्रदीप 2674
भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप—डॉ० श्रीप्रकाश तिवारी 2678
महादेवी की विराट प्रेमानुभूति—डॉ० वर्षा अग्रवाल 2681
साम्प्रदायिकता और साहित्य—बृजेश कुमार 2684
छात्राध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन—प्रज्ञा सिंह 2686
भारत में सुशासन: पहल, चुनौतियाँ एवं सुझाव—डॉ० शैलेश कुमार राम 2691
इतिहास-लेखन और राजेन्द्र प्रसाद का दृष्टिकोण: एक अध्ययन—डॉ० माया नन्द
चक्रवर्ती का वैभव—डॉ० समणी संगीतप्रज्ञा 2702
उत्तराखण्ड, हिमांचल व जम्मू कश्मीर राज्य के गूजर पशुचारकों का राजनैतिक क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन—गौरव कुमार 2709
भारतेन्दु और उनके मण्डल के नाटककार—डॉ० राजेश कुमार; डॉ० गिरीश चन्द्र जोशी 2713
हिंदी नाट्य-साहित्य का इतिहास—डॉ० गिरीश चंद्र जोशी 2716
चंद्रकांता के उपन्यासो में नारी चित्रण—पूजा सिंह 2720
बौद्ध परम्परा में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा-विज्ञान—डा० पार्थ सारथी 2723
खाने की विकार में मीडिया की भूमिका महिलाओं के संदर्भ में—डाँ० सरिता कुमारी 2728
युग प्रवर्तक मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन—डॉ० हेमन्त सिंह कंवर 2732
नगा समस्या: आंतरिक सुरक्षा के विशेष संदर्भ में—डॉ० मनीष कुमार साव 2737
मानव अधिकार और भारतीय प्रजातंत्र—डॉ० आशुतोष पाण्डेय; संदीप कुमार सोनी 2740

कुरान में निहित शैक्षिक विचार एवं मूल्यों का अध्ययन–प्रभु दयाल 2743

माता-पिता के पालन-पोषण शैलियों के प्रभावों का अध्ययन, परिणाम और निष्कर्ष–मो० सैफ 2746

भारत में केन्द्र-राज्य संबंध: एक विश्लेषण–कुमार राजीव रंजन 2751

कौटिल्य अर्थशास्त्र: नीतिशास्त्र के संदर्भ में–इन्द्र जीत; डॉ० मो० मेराज अहमद 2754

बिहार में आंदोलन एवं दलित महिलाएं–श्वेता कुमारी 2757

दलित विमर्श: साहित्यिक परम्परा की प्रासंगिकता–डॉ० साधना 2760

समकालीन हिन्दी कविता: संवेदना और शिल्प की कसौटी पर–डॉ० आर०पी० वर्मा 2763

स्वतंत्रतापूर्व महात्मा गाँधी एवं अन्य पुरुष समाजसुधारकों का महिलोत्थान एवं स्त्रीवादी आंदोलनों पर प्रभाव एवं परिणाम: एक विवेचना–डॉ० प्रशांत द्विवेदी 2766

भारत में श्रमिक सुरक्षा और प्रमुख श्रम अधिनियम : एक विश्लेषण–डॉ० पुष्पराज गौतम 2769

उत्तराखण्ड में जाति व्यवस्था का विकास व वितरण–कु० बबीता आर्या 2773

"सद्गुणाधारित नैतिक चिन्तन की धारा में अरस्तू के सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का उद्भव एवं विकास"–अपर्णा शुक्ला 2776

'अथश्री प्रयाग कथा-युवाओं की व्यथा-कथा'–डॉ० जयश्री भण्डारी; कु० मीना 2780

औपनिषद परम्परा में ब्रह्म का स्वरूप तथा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति में उपमान प्रमाण की उपादेयता (महर्षि दयानन्द सरस्वती के विशेष सन्दर्भ में) –उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 2782

भारत के नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के वैश्विक प्रभाव–डॉ० पूजा गुप्ता 2790

भारत में मीडिया परीक्षण पर न्यायिक दृष्टिकोण–भारतेन्दु चौधरी; सर्वेश सोनी 2794

सूचना का अधिकार: वर्तमान परिदृश्य एवं न्यायिक दृष्टिकोण–डी. डी. मिश्रा 2798

राही मासूम रजा के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना–डॉ० रेनू दीक्षित; प्रदीप कुमार 2801

'अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में लोकगीत'–डॉ० रेनू दीक्षित; ईश्वर चन्द्र 2805

जनसंख्या के भौगोलिक वितरण में समरेखा जनसंख्या विभव मानचित्रण पद्धति का अनुप्रयोग–नरेन्द्र कुमार; ऋचा; पृथ्वीराज मीणा; एल.पी. लखेडा 2810

न्यायिक दार्शनिकता में लोक अदालतें–मंकेश पाण्डेय 2818

भारत में प्रेस और मीडिया की स्वतंत्रता के संबंध में संवैधानिक दृष्टिकोण–डॉ० अमित बंसल; गिरीश पाल 2821

भक्ति साहित्य का प्रादुर्भाव–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 2825

स्त्री मन के विश्लेषक: गिरीश कारनाड–डॉ० नमस्या 2828

मोदी सरकार की विदेशनीति का रिपोर्ट कार्ड–डॉ० अरविन्द नेत्र पाण्डेय 2832

भारत और नयी वैश्विक व्यवस्था रूस के संदर्भ में–डॉ० धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय 2834

अशोक कुमार के कहानी संग्रह 'खाकी में इंसान' में आतंकवाद–पिंकी देवी 2837

'भाग्य पर नहीं परिश्रम पर विश्वास करें' पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं–प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना 2839

बुद्धकालीन समाज में क्षत्रियों की स्थिति–अर्चना वत्स 2842

राजा मानसिंह (आमेर) के सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन–भगवान सिंह शेखावत 2845

कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी चित्रण–रितु रानी 2848

निरूपमा सेवती के साहित्य में मध्यवर्गीय नारी पात्रों की संघर्षशीलता–डॉ० नम्रता जैन 2850

भारतीय सामाजिक संरचना में नैतिक शिक्षा का महत्त्व–निकी कुमारी 2852

भारत में मनरेगा कार्यक्रम की सामाजिक सुरक्षा योजना–ओंकार नाथ झा 2856

कामाग्नि में दहकती मित्रो–रचना तनवर 2862

भारत में न्यायिक सक्रियतावाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० शकुन्तला 2867

दृष्टिकोण

प्रतापकुंवरिबाई की भक्ति भावना–नवनीत आचार्य 2870

भारतीय आधुनिक चित्रकला में अवनीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान–प्रवीण कुमार 2873

उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी बाल-साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा विकास का अध्ययन –डॉ० धर्मेन्द्र कुमार; डॉ० निदा खान 2876

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना एवं वर्तमान कार्य-एक आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ० सोनिका 2881

सुशासन एवं ई-गवर्नेस–मूर्ति देवी 2884

भारतीय आदिम जनजातियो के संरक्षण में मानवाधिकार विधायन का एक अध्ययन–डाँ० विनोद कुमार मीना 2886

मानव अधिकारों का एक विशलेषाणात्मक अध्ययन: भारत के संदर्भ में–डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार मुसा 2890

आर्यासम्राट डॉ. जगन्नाथ पाठक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–शहनाज कुरैशी 2896

भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख चुनौतियां–डॉ० प्रमोद कुमार त्रिपाठी 2899

बुद्धकालीन राजगृह के पुरास्थल का अध्ययन–किशोर कुमार 2901

लोक-मिथकों में रामकाव्य का स्वरूप–वीरेन्द्र 2905

छत्तीसगढ़ी का अनूदित साहित्य–श्रीमती अलका यादव; डॉ० (श्रीमती) रेखा दुबे 2908

नरेश मेहता के काव्य में आधुनिक चेतना-'शबरी' के विशेष संदर्भ में–मधु सिंह; दामोदर मिश्र 2913

साम्प्रदायिकता का प्रश्न और हिंदी कथा साहित्य–डॉ० राकेश कुमार सिंह 2918

वैदिक साहित्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति–डॉ० हनुमत लाल मीना 2924

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श–रीना 2927

बदलते परिपेक्ष्य में महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता–स्वदेश सिंह 2931

पारिभाषिको बलाबलत्वविमर्श:–ज्वलन्तकुमार: 2934

वाक्यपदीयकाराभिमतो वाग्विज्ञानविमर्श:–सचिन: 2937

पत्रकार प्रेमचंद : भारतीय साहित्य का मुखपत्र 'हंस'–अहमद रजा 2941

मुर्दहिया: दलित जीवन की गाथा–ज्योति 2946

विकास भट्टाचार्य के चित्रों पर यथार्थवादी एवं अति यथार्थवादी प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन–शोभना 2949

पंचायती राज में महिलाओं की दशा एवं दिशा–डॉ० के०एल० टाण्डेकर; डॉ० प्रदीप कुमार जाम्बुलकर; डॉ० आशा चौधारी 2952

पंचायती राज व्यवस्था एवं सहकारिता में समन्वय से ग्रामीण विकास–अंकित कुमार गुप्ता 2955

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में मधुबनी नदियों का अभिशाप एवं वरदान–श्वेता 2958

डॉ० जगन्नाथ मिश्र का शैक्षणिक चिंतन व कार्य: एक संक्षिप्त अवलोकन–नीतू कुमारी 2963

बिहार कांग्रेस में श्री रामलखन सिंह यादव की भूमिका–सिकन्दर कुमार 2967

गणित, विज्ञान और तकनीकी के विकास एवं संचार में प्राचीन भारत का योगदान–संघर्ष मिश्र 2975

बिहार में डॉ० अल्तेकर एवं उनके कार्यक्षेत्र से संबंधित अन्य पुरातत्वविद्–अराधना झा; प्रो. (डॉ०) नवीन कुमार 2978

भारत में पंचायती राज का इतिहास: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० मौ० उजैर; डॉ० आर० के० ठाकुर 2981

अष्टाध्यायीसंरचनायां योगविभागप्रक्रियाया उपादेयता–प्रभातकुमार: 2986

अष्टाध्याय्यां विभक्तिविपरिणाम:–दिव्यरंजन: 2990

मधुसूदनमहाभागानां छन्दशास्त्रप्रयोजनविमर्श:–मनीष: 2992

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के संदर्भ में डिजिटल प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय–विजय कुमार भारती 2994

उत्तराखण्ड में औपनिवेशिक राज्य की स्थापना एवं प्रभाव–डॉ० शरद भट्ट; रोहित पाण्डेय 2998

'लोहित' उपन्यास और असम का राजनीतिक जीवन–संजीव मण्डल 3000

भ्रमर गीत का काव्य सौष्ठव एवं विप्रलंभ श्रृंगार–डॉ० एम यशोदा देवी; पी० सोमा शेखर 3006

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 और बहु -विषयक पाठ्यक्रम की उपयोगिता–डॉ० नाहर सिंह; डॉ० नविन्द्रा बाई 3008

भारतीय शिक्षा तंत्र एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–डॉ० रश्मि शर्मा 3012

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी विमर्श–महेन्द्र कौर 3016

राजेंद्र अवस्थी के उपन्यासों में राजनीतिक परिवेश–नीतू कुमारी; डॉ० जयकरण यादव 3019

हिंदी साहित्य का विश्व में प्रचार-प्रसार–डॉ० प्रवेश कुमारी 3022

'चाक' उपन्यास के ग्रामीण जीवन में नारी का संघर्ष–सुमन कुमारी 3025

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की दशा–कलवीर कौर 3027

केशर कस्तूरी: ग्रामीण स्त्री-अस्मिता का सशक्त स्वर–किरन मिश्रा 3030

बिहार में पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरण–उषा कुमारी 3036

इन्हीं हथियारों से उपन्यास में लोक जीवन के दृश्य–डॉ० विजय बहादुर त्रिपाठी; कृष्ण कुमार 3040

विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य के राजनीतिक सरोकार–अनीता; प्रो० प्रदीप के० शर्मा; प्रो० रामजन्म शर्मा 3044

हिन्दी एवं कन्नड अनुवाद का परस्पर सम्बन्ध की दशा दिशा–डॉ० श्रीधर हेगडे 3046

जनवादी आन्दोलन में जनकवि नागार्जुन की भूमिका–डॉ० अंबुजा एन् मलखेडकर 3050

भारत में खाप पंचायतें - एक सामाजिक अवलोकन–डॉ० जितेन्द्र कुमार 3053

काका कालेलकर: जीवन दर्शन–डॉ० विशेष कुमार राय 3058

पिछड़े वर्ग के सामाजिक उत्थान में काका कालेलकर का योगदान–डॉ० हरेन्द्र कुमार 3062

हिमाचल प्रदेश, उत्तर पश्चिम हिमालय के आदिवासी क्षेत्रों में भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के खतरों जैसी आपदाओं के साथ रहना –राजेन्द्र कुमार; प्रोफेसर संजीव कुमार महाजन 3068

भारत में ऑटोमेशन और महिला रोजगार–डॉ० शम्मी कुमारी 3072

प्रेमचंद के साहित्य में नवजागृति का संदेश ('कर्मभूमि उपन्यास' के विशेष संदर्भ में)–जयश्री काकति 3075

आचार्य भानुदत्त एक परिचय–डॉ० सुजाता चतुर्वेदी; विष्णुकान्त गुप्ता 3077

धर्मवीर भारती के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना–सरोज देवी 3079

संगीत सीखने वाले व न सीखने वाले विद्यार्थियों मे तनाव : तुलनात्मक अध्ययन–विन्ध्या शुक्ला; डॉ० चारू व्यास 3083

मध्ययुगीयासमप्रान्तेषु संस्कृतचर्चा–डॉ० सुबोध कुमार मिश्र भागवती 3088

भारतीय जीवन बीमा निगम की विनियोग नीति का मूल्यांकन–नितेश ग्रेवाल 3092

वर्तमान परिवेश में महिला श्रम की बदलती भूमिका–अनिल 3095

ब्रिटिश भारत का प्रथम लिखित संविधान: रेगुलेटिंग एक्ट दोष एवं महत्त्व–रवि 3101

पंचायती राज संस्थाओं की महिला सशक्तिकरण में भूमिका: आलोचनात्मक मूल्यांकन–सचिन 3104

सूरदास का 'भ्रमरगीत' विरह में प्रेम की चरम उत्कृष्टता है–डॉ० संजय नारायण दास 3110

संगीत में स्वर, लय, ताल और रस का सम्बन्ध: एक विवेचन–डॉ० प्रेम चन्द्र कुशवाहा 3112

स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भूमिका–डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रहरि 3117

गाँधी और अम्बेदकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन (दलित समस्या के संदर्भ में)–डॉ० विजय कुमार 3120

भारत में पंचायती राज-व्यवस्था का ऐतिहासिक अवलोकन–मदेश कुमार तिवारी 3123

शिवानी के उपन्यास में स्त्री विमर्श–डॉ० श्रवसुमी कुमारी 3126

कोरोना संक्रमण: एशिया में शक्ति ध्रुवीकरण की नई प्रवृत्तियाँ–डॉ० आर०बी०सिंह बघेल 3129

महिला सशक्तीकरण में केन्द्रीय योजनाओं की भूमिका–डॉ० पुष्पा मद्धेशिया 3132

शुंगकालीन कला में कमल–राकेश कुमार गुप्त 3135

मजबूत भारत के मजबूर किसान–डॉ० दयाशंकर सिंह यादव 3138

मजबूत भारत के मजबूर किसान

डॉ० दयाशंकर सिंह यादव

एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र, सकलडीहा पी जी कालेज सकलडीहा

प्रस्तावना भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही है अथवा दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि किसानों पर देश की अर्थव्यवस्था की प्रमुख जिम्मेदारी है। भारतीय कृषि को जीवन जीने का तरीका माना जाता था वही आज किसान को आत्महत्या तक पर मजबूर कर रहा है। किसान आत्महत्या आज भारतीय समाज के लिए एक अभिशाप बन गया है।ऐसे में भारतीय किसान के लिए "अन्नदाता" की उपमा कितनी सार्थक रह जाती है इस पर भी विचार करने की जरुरत है। आज अन्नदाता दुखी और बेबस है।

इमाईल दुर्खीम आत्महत्या को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, "आत्महत्या वह स्थिति है जिसमे व्यक्ति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जानता है कि वह अपना शरीर नष्ट करने जा रहा है।" बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि आये दिन अखबार किसानों की आत्महत्या की खबरों से पटे पड़े रहते हैं। अर्थशास्त्री फैन, हैजेल और थोरट के अनुसार कृषिगत शोध और विकास पर खर्च किए गए हर 10 लाख रुपये से 85 लोग गरीबी के मकड़जाल से बाहर निकल जाते हैं। शोध और विकास की देश की प्रगति में बड़ी भूमिका है और यह आज के बोझ को कल की संपदा में तबदील कर डालता है। भारत की मजबूत ग्रामीण संरचना ने कई बार आर्थिक संकटों से उबरा है जिस वैश्विक मंदी ने पूरे विश्व को चपेट में ले रखा है उससे भारत अपने ग्रामीण बाजार की ताकत के कारण बच सका। ग्रामीण भारत के भीतर उपभोक्ता बनने की अकूत संभावनाएं हैं लेकिन देश अभी इन संभावनाओं को साकार करने के आसपास भी नहीं पहुंचा है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार एक तिहाई किसानों को खेती नापसंद है और 40 फीसदी का कहना है कि अगर उनका बस चले तो वे खेती को छोड़ जीविका का कोई और ही रास्ता ढूंढ लें। किसानों के गिरते जीवन-स्तर का सबसे दर्दनाक बयान उनके कैलोरी-उपभोग के आंकड़ें करते हैं।साल 1983 में ग्रामीण आबादी में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन कैलोरी-उपभोग की मात्रा 2309 किलो कैलोरी थी जो 1998 में घटकर 2011 किलो कैलोरी हो गई।

मुख्य शब्दः किसान भूस्वामित्व वर्षाजल आत्महत्या बिचौलिया

ग्रामीण भारत में प्रति व्यक्ति भूस्वामित्व की ईकाई का आकार भी घट रहा है। साल 1960 में प्रति किसान भूस्वामित्व की ईकाई का आकार 2.6 हेक्टेयर था जो बांट-बखरे के कारण साल 2000 में घटकर 1.4 हेक्टेयर रह गया। खेती लगातार घाटे का सौदा बनते जा रही है। भारत में कृषि-योग्य भमि का 60 फीसदी हिस्सा सिंचाई के लिए वर्षा जल पर निर्भर है और इस जमीन पर अभी हरित क्रांति नहीं हो पाई हरित क्रांति ने देशवासियों में भरोसा जगाया कि पेट भरने के लिए विदेशों का मुंह देखने की जरुरत नहीं है परन्तु ये बात सिंचाई की सुविधा है और आकार के हिसाब से देखें तो हरित क्रांति के हिस्से में देश की कुल कृषि-योग्य भूमि का लगभग एक तिहाई हिस्सा आता है।हरित क्रांति वाले इलाकों में भी खेतिहर संकट पाँव पसार चुका है क्योंकि खेती में लागत ज्यादा है,भूजल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है, जमीन की उर्वरा शक्ति छीज रही है और खेतिहर ऊपज का मोल भी कुछ खास उत्साहित करने वाला नहीं है। नतीजतन खाद्यान्न उत्पादन की जो वृद्धिदर अस्सी के दशक में 3.5 फीसदी थी वह घटकर नब्बे के दशक में 1.8 फीसदी रह गई। गरीब और सिंचाई के लिए वर्षाजल पर निर्भर रहने वाले किसानों का फायदा और भी कम हो गया है। खेतिहर लागत लगातार बढ़ते जा रही है भारत में किसानों को सब्सिडी दी जाती है लेकिन ऑर्गनाइजेशन फॉर योरोपीयन इकॉनॉमिक को-ऑपरेशन के देशों में किसानों को जितनी सब्सिडी हासिल है उससे तुलना करें तो भारत के किसान को मिलने वाली सब्सिडी इन देशों के किसानों को मिलने वाली सब्सिडी के शतांश भी नहीं है।भारत में प्रति किसान सब्सिडी 66 डॉलर है जबकि जापान में 26 हजार डॉलर, अमेरिका में 21 हजार डॉलर और ऑर्गनाइजेशन फॉर योरोपीयन इकॉनॉमिक को-ऑपरेशन के देशों में 11 हजार डॉलर। भारत में हर दिन 28 से ज्यादा किसान और खेतिहर मजदूर आत्महत्या करते हैं। भारत में किसान आत्महत्या 1990 के बाद पैदा हुई स्थिति है जिसमें प्रतिवर्ष दस हजार से अधिक किसानों के द्वारा आत्महत्या की रपटें दर्ज की गई है। भारतीय कृषि बहुत हद तक मानसून पर निर्भर है तथा मानसून की असफलता के कारण नकदी फसलें नष्ट होना किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओं का मुख्य कारण माना जाता रहा है। मानसून की विफलता, सूखा, कीमतों में वृद्धि, ऋण का अत्यधिक बोझ आदि परिस्तिथियाँ, समस्याओं के एक चक्र की शुरुआत करती हैं। बैंकों, महाजनों, बिचौलियों आदि के चक्र में फँसकर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्महत्याएँ की है। 1995 से 2011 के बीच 17 वर्ष में 7 लाख, 50 हजार, 860 किसानों ने आत्महत्या की है 2001 की जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि पिछले दस वर्षों में 70 लाख किसानों ने खेती करना बंद कर दिया। सरकार की तमाम कोशिशों और दावों के बावजूद कर्ज के बोझ तले दबे किसानों की आत्महत्या का सिलसिला नहीं रूक रहा देश में हर महीने 70 से अधिक किसान आत्महत्या कर रहे हैं। आंकड़े बताते हैंकि 1995 से 31 मार्च 2013 तक 2,96,438 किसानों ने आत्महत्या की है 30 दिसंबर 2016 को जारी नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के रिपोर्ट 'एक्सिडेंटल डेथ्स एंड सुसाइड इन इंडिया 2015' आंकड़ों के अनुसार सन 2015 में कुल 12602 किसानों और खेती से जुड़े मजदूरों ने आत्महत्या की, जिसमें से 8007 किसानों ने आत्महत्या की जबकि 4595 खेती से जुड़े मजदूरों ने आत्महत्या की थी। साल 2014 में आत्महत्या करने वालों में किसानों की संख्या 5650 तथा खेती से जुड़े मजदूरों की संख्या 6710 थी। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि किसानों की आत्महत्या के इन आंकड़ों में छोटे और सीमांत किसानों की आत्महत्या मध्यम और बड़े किसानों की आत्महत्या से ज्यादा थी।एनसीआरबी के रिपोर्ट के अनुसार किसानों और कृषि मजदूरों की आत्महत्या का कारण कर्ज,

कंगाली, और खेती से जुड़ी दिक्कतें हैं। आंकड़ों के अनुसार आत्महत्या करने वाले 73 फीसदी किसानों के पास दो एकड़ या उससे कम जमीन थी।कोरोना के प्रकोप के दौरान भले ही कृषि क्षेत्र ने सकारात्मक बढ़त हासिल की हो, लेकिन साल 2019 की अपेक्षा साल 2020 में किसानों की आत्महत्या के मामले भी बढ़े हैं। एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक, किसानों की आत्महत्या के मामले 18 फीसदी बढ़े हैं। महाराष्ट्र में सुसाइड के मामले सबसे ज्यादा हैं। यहां कृषि क्षेत्र से जुड़े 4006 लोगों ने सुसाइड की है। वहीं कर्नाटक में 2016, आंध्र प्रदेश में 889, मध्य प्रदेश में 735, छत्तीसगढ़ में 537 लोगों ने सुसाइड की। साल 2020 में कुल 10,677 लोगों ने सुसाइड की है। साल 2019 में भी महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश सुसाइड करने के मामले में टॉप 4 पर थे। किसानों को आत्महत्या की दशा तक पहुँचा देने के मुख्य कारणों में खेती का आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक होना तथा किसानों के भरण-पोषण में असमर्थ होना है। कृषि की अनुपयोगिता के मुख्य कारण हैं-कृषि जोतों का छोटा होते जाना 1960-61 ई. में भूस्वामित्व की इकाई का औसत आकार 2. 3 हेक्टेयर था जो 2002-03 ई. में घटकर 1.06 हेक्टेयर रह गया।

भारत में आत्महत्याएँ

	वर्ष	आत्महत्या
1	2008	16196
2	2009	17368
3	2010	15964
4	2011	14027
5	2012	13754
6	2013	11772
7	2014	12360
8	2015	11584
9	2016	11,379
10	2017	10,655
11	2018	10,349
12	2019	10281
13	2020	10,677

स्रोत राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी)

भारत में उदारीकरण की नीतियों के बाद नकदी खेती करने का तरीका बदल चुका है। सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के कारण किसानों के पास नकदी फसल उगाने लायक तकनीकी जानकारी का अक्सर अभाव होता है।भारत में वर्ष 2020 में आत्महत्या के 1,53,052 मामले यानी रोजाना औसतन 418 मामले दर्ज किए गए, इनमें से 10,677 मामले कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों के हैं. केंद्र सरकार के ताजा आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने अपनी एक वार्षिक रिपोर्ट में बताया कि 2020 में 2019 की तुलना में आत्महत्या के मामलों में बढ़ोतरी हुई है।वर्ष 2019 में इनकी संख्या 1,39,123 थी केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाले एनसीआरबी ने बताया कि (प्रति लाख जनसंख्या) आत्महत्या दर में भी बढ़ोतरी हुई है। यह 2019 में 10.4 थी, लेकिन पिछले साल यह 11.3 रही.। रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2020 के दौरान कृषि क्षेत्र के 10,677 लोगों (5,579 किसानों और 5,098 कृषि मजदूरों) ने आत्महत्या की,जो देश में आत्महत्या करने वालों (1,53,052) का सात प्रतिशत है. रिपोर्ट के अनुसार 5,579 किसान आत्महत्या मामलों में से कुल 5,335 पुरुष और 244 महिलाएं थीं। इसमें कहा गया है कि 2020 के दौरान खेतिहर मजदूरों द्वारा की गई 5,098 आत्महत्याओं में से 4,621 पुरुष और 477 महिलाएं थीं। आत्महत्या के सर्वाधिक मामले महाराष्ट्र में सामने आए. महाराष्ट्र में कुल 19,909 मामले दर्ज किए गए जो कुल मामलों का 13 प्रतिशत हैं. उसके बाद तमिलनाडु में 16,883, मध्य प्रदेश में 14,578, पश्चिम बंगाल में 13,103 और कर्नाटक में 12,259 मामले दर्ज किए गए। तमिलनाडु में देशभर में आत्महत्या के कुल मामलों के 11 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 9.5 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में 8.6 प्रतिशत और कर्नाटक में आठ प्रतिशत मामले दर्ज किए गए।

आज भी हमारे देश के अधिकांश किसान निर्धनता की रेखा के नीचे तंगहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं।आर्थिक सर्वेक्षण 2013-14 की रिपोर्ट के अनुसार जनगणना 2011 के में लगभग 54.6 प्रतिशत लोग कृषि व्यवसाय में संलग्न थे। वर्तमान समय में देखें तो काश्तकारों की संख्या में अभूतपूर्व कमी आई हैद्य जनगणना 2001 में जहाँ इनकी संख्या 127 लाख थी वहीं 2011 में घटकर 118.7 लाख ही रह गई है।इस सर्वे के आंकलन के अनुसार कृषि क्षेत्र में उत्पादन की विकास दर अंतर्राष्ट्रीय मानकों से काफी कम होने के साथ ही चावल और गेहू का उत्पादन, वर्ष 1980 से हरित क्रांति के उपरांत लगातार घटा है।जिस देश में 1.25 अरब के लगभग आबादी निवास करती होउस देश में कृषि की गुणवत्ता तथा विकास के लिए कृषि शिक्षा के विश्वविद्यालय और कॉलेज नाममात्र के हैं।

भारतीय कृषि मानसून का जुआ है।यही कारण है कि किसानों की मेहनत का प्रतिफल हमेशा असमंजसता की स्थिति में होता है। किसान बाढ़, सूखा, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं को झेलते हुए किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक किसान की मेहनत हमेशा मानसून के अध

ीन होती है जिसके सामने वहबेबस और लाचार नजर आता है। भारतीय किसानों का अगर हम वर्गीकरण करें तो पाते हैं कि बड़ा, मध्यम, लघु, और सीमांत किसानों में लघु और सीमांत किसानों की संख्या काफी अधिक है। इन किसानों की भूमि की जोत का आकार काफी छोटा होने के कारण इसमें कृषि यंत्रों का सही इस्तेमाल नहीं हो पाता जिसके उत्पादकता काफी घट जाती है।कृषि गणना 2010-11 के अनुसार जोत का औसत आकार 1.15 हेक्टेयर रहने का अनुमान लगाया गया है। जोत का औसत आकार 1970-71 के बाद से ही विभिन्न कृषि गणनाओं की तुलना में निरंतर कमी आई है।

आखिर ऐसे क्या कारण हैं जो किसान को 'आत्महत्या' जैसी स्थिति में लाने पर मजबूर कर देता है? अगर हम भारतीय समाज की संरचना के अंतर्गत किसानों की आर्थिक और राजनितिक परिदृश्य की बात करें तो पाते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतया कृषि पर आधारित है या यूं कहें कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है तो यह अतिश्योक्ति न होगी। प्रत्येक सरकार चाहे वो केंद्र में हो या राज्य, कृषि हमेशा उनकी प्राथमिकता में शामिल होती है बजाय उसके आज कृषि क्षेत्र सर्वथा उपेक्षित है।किसानों की प्रमुख समस्याओं में शामिल करीब पांच साल पहले कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) ने पंजाब में किसान आत्महत्याओं की वजह जानने की कोशिश की थी। इसमें सबसे बड़ी वजह किसानों पर बढ़ता कर्ज और उनकी छोटी होती जोत बताई गई। इसके साथ ही मंडियों में बैठे साहूकारों द्वारा वसूली जाने वाली ब्याज की ऊंची दरें बताई गई थीं। लेकिन यह रिपोर्ट भी सरकारी दफ्तरों में दबकर रह गई है। असल में खेती की बढ़ती लागत और कृषि उत्पादों की गिरती कीमत किसानों की निराशा की सबसे बड़ी वजह है।फसल की बर्बादी और ऋणों का बोझ किसानों को आत्महत्या के दहलीज पर पहुंचा देते हैं। 2015 में जितने किसानों ने आत्महत्या की उनमें से अधिकतर मामलों में कर्ज ना चुका पाना प्रमुख कारण था। मैग्सेसे अवार्ड विजेता पी. साईनाथ का कहना है कि मौसम की मार, ऋणों के बोझ सहित कई अन्य कारणों से देश में किसान आत्महत्या करते हैं।

स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट मुख्यत: खाद्यान्न की आपूर्ति और किसान की आर्थिक हालत को बेहतर करने के दो मकसदों को लेकर सन् 2004 में केंद्र सरकार ने डाक्टर एमएस स्वामीनाथन की अध्यक्षता में नेशनल कमीशन ऑन फार्मर्स का गठन किया। इसे आम लोग स्वामीनाथन आयोग कहते हैं। इस आयोग ने अपनी पांच रिपोर्टें सौंपी। अंतिम व पांचवीं रिपोर्ट 4 अक्तूबर, 2006 में सौंपी गयी। सबको अच्छा भोजन उपलब्ध हो, उत्पादकता बढ़े, खेती से किसान को पर्याप्त लाभ हो, खेती में सतत विकास की विधियां अपनाई जाएं, किसानों को आसान व पर्याप्त ऋण मिले, सूखे, तटवर्ती एवं पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि की विशेष प्रोत्साहन योजनाएं लागू हों, कृषि लागत घटे और उत्पादन की क्वालिटी बढ़े, कृषि पदार्थों के आयात की दशा में किसान को सरकारी संरक्षण मिले तथा पर्यावरण संरक्षण के मकसद को पंचायतों के माध्यम से हासिल किया जाए- उक्त सभी उद्देश्यों के साथ इस आयोग का गठन किया गया था। कृषि ज्ञान व क्षमता को बढ़ाना, तकनीकी का खेती में ज्यादा इस्तेमाल व विपणन की सुविधाएं बढ़ाना भी आयोग की प्राथमिकतों में शुमार था। पानी की कमी दूर करने संबंधी योजनाओं को बढ़ावा देना भी उक्त कमीशन की मंशा थी। एमएस स्वामीनाथन को भारत की हरित क्रांति का जनक माना जाता है जिसके जरिये बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त अन्न मुहैया करवाना संभव हुआ। उनका लक्ष्य पूरी दुनिया को भूख से निजात दिलाने के साथ ही खेती को पर्यावरण मित्र बनाना भी था।भूमि सुधारों की गति को बढ़ाने पर आयोग की रपट में खास जोर है। सरप्लस व बेकार जमीन को भूमिहीनों में बांटना, आदिवासी क्षेत्रों में पशु चराने के हक यकीनी बनाना व राष्ट्रीय भूमि उपयोग सलाह सेवा सुधारों के विशेष अंग हैं। सिंचाई के लिए सभी को पानी की सही मात्रा मिले, इसके लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग व वाटर शेड परियोजनाओं को बढ़ावा देने की बात रिपोर्ट में वर्णित है।

किसानों की बदहाली और आत्महत्याओं के लिए सरकारों की दोषपूर्ण नीतियां जिम्मेदार हैं। कृषि अर्थव्यवस्था के जानकारों का कहना है कि हालात ऐसे भी बुरे नहीं है कि सरकार इसे नियंत्रित ना कर पाए। लेकिन सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव है। किसानों के लिए जो सुविधाएं या सब्सिडी मिलती है वह काफी नहीं है। साख व्यवस्था में किसान को दो तरह के ऋण प्राप्त होते हैं। पहला अल्पकालिक और दूसरा दीर्घकालीन। अल्पकालीन व्यवस्था के अंतर्गत सरकार का विशेष ध्यान रहता है परंतु दीर्घकालीन ऋणों में किसान की आवश्यकता पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। दीर्घकालीन ऋणों की ब्याज दरें अल्पकालीन ऋण की तुलना में अधिक हैं। किसान की अन्य आवश्यकताओं के लिए ऋणों का कोई प्रावधान दीर्घकालीन व्यवस्था में नहीं है जिससे एक ही किसान को दोहरे मापदण्डों का सामना करना पड़ता है। इस व्यवस्था में बेहद सुधार की आवश्यकता है। परियोजना आधारित ऋण वितरण को समाप्त कर ऋण सीमा स्वीकृत करते हुए सस्ती ब्याज दरों पर ऋण तथा किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराए जाने चाहिए। अक्सर सरकारी सुविधाओं का लाभ सिर्फ बड़े किसानों को मिलता है। समृद्ध किसानों की सब्सिडियों को रोक कर छोटे, मझोले किसानों को मदद देना होगा। 'बेहतर ऋण व्यवस्था', दोष मुक्त फसल बीमा और 'सिंचाई प्रणाली में सुधार' लाकर सरकार किसानों की स्थिति में सुधार ला सकती है। किसानों के लिए खेती का खर्च लगातार बढ़ रहा है और आमदनी कम हुई है। छोटे किसान आर्थिक तंगहाली की सूरत में कर्ज के दुष्चक्र में पड़े है। जब किसान की फसलें तैयार हो जाती हैं उन्हें अपने अनाज व् अन्य उत्पाद की वास्तविक कीमतें नहीं मिलती।

भारतीय कृषि की सबसे बड़ी विडंबना है कि जब भी किसान का कृषि उत्पाद बाजार में आता है उसका मूल्य निरंतर गिरने लगता हैं। मध्यस्थ सस्ती दरों पर किसान का उत्पाद खरीद लेते हैं जिससे कृषि अभी तक घाटे का व्यवसाय बना हुआ है। दुर्भाग्य है कि संबंधित लोग औद्योगिक क्षेत्रों के उत्पादन की दरें लागत, मांग और पूर्ति को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करते हैं किंतु किसान की फसलों तथा उत्पादों का मूल्य या तो सरकार या क्रेता द्वारा निर्धारित किया जाता है उसमें भी तत्काल नष्ट होने वाले उत्पाद की बिक्री के समय किसान असहाय दिखाई देता है। हाल ही ऐसी घटनाएँ ज्ञातव्य हुई हैं जब मध्य प्रदेश में किसानों ने अपनी प्याज और टमाटर सड़कों पर फेंक दिए क्योंकि उनकी इन फसलों की लागत तक नहीं मिल पा रही थी। ऐसी ही स्थिति महाराष्ट्र में हुई जब किसानों ने विरोध स्वरुप अपने दूध के टैंक सड़कों पर बहा दिए। ऐसी दशा में क्रय-विक्रय व्यवस्था को मजबूत और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए और उसके उत्पाद का मूल्य भी मांग, पूर्ति और लागत के आधार पर किसान को निर्धारित कर लेने देना चाहिए। सर्वविदित है कि किसानों का कहीं उत्पाद इतना अच्छा होने के बावजूद उसका उचित मूल्य न मिलने पर और लागत तक नहीं प्राप्त होने पर किसान उसे फेंकने को मजबूर हो जाता है और कभी कभी उत्पाद इतना कम होता है कि उसे मध्यस्थ सस्ती दरों पर क्रय कर उच्च दरों पर बिक्री कर बीच का मुनाफा ले लेता है और किसान ठगा सा रह जाता है।

निष्कर्ष

भारतीय किसानों की दशा व दिशा सुधारने के लिए उनकी आय बढ़ाने हेतु कारगर व प्रभावशाली कदम उठाने की जरुरत है। ग्रामीण रोजगार क्रांति की पहल करनी होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग धंधों की स्थापना की जानी चाहिए जिनमें न्यूनतम प्रशिक्षण से स्थानीय आबादी के व्यक्तियों को रोजगार मिल सके तथा किसानों के उत्पाद की उसमें खपत हो सके ग्रामीण बेरोजगारों को ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए वहां के स्थानीय उत्पाद को ध्यान में रखते हुए लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना भी की जानी चाहिए।

बाजार में अनिश्चितता की स्थिति को समाप्त करने तथा एक राष्ट्रीय कृषि बाजार के निर्माण की दिशा में सार्थक प्रयास करने होंगें, ताकि किसानों को बाजारों में उचित मूल्य मिल सकें। एक सामान्य राष्ट्रीय बाजार की स्थापना के लिए आर्थिक सर्वेक्षण में एपीएमसी अधिनियम, भूमि किराएदारी अधिनियम, मुक्त व्यापार के लिए रूकावटों को दूर करना, सीधे विपणन, वैकल्पिक मार्केटिंग पहल जैसे उपायों के सुझाव दिए गए हैं। स्थायी व्यापार नीति की स्थापना जिसमें टैरिफ आधारित तथा गैर-टैरिफ व्यापार प्रतिबंधों का उल्लेख किया गया है। पर्याप्त कृषि उत्पादन तथा भंडारों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सरकार को खाद्यान उत्पादन तथा इसके वितरण के सभी पहलुओं पर गंभीरता के साथ विचार करना होगा।किसानों की आत्महत्या रोकने का कार्य सरकार कई किसान कल्याण एवं कृषि विकास की योजनाओं द्वारा कर सकती है। साथ ही सरकार को फसल बीमा एवं कई अन्य प्रकार की सहायता जैसे सहकारी बैंकों से कम ब्याज दर पर ऋण की उपलब्धता कराना एवं उच्च गुणवत्ता वाले बीज, उच्च स्तर के खाद, कीटनाशक, उत्तम कृषि यंत्र प्रदान करना एवं भूमिहीन किसानों को भूमि उपलब्ध कराना आदि उपायों के द्वारा सरकार किसानों की आत्महत्या को रोकने में कामयाब हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सन्दर्भडाउन टू अर्थ मैगजीन और सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट
2. भारतीय किसान और उनकी मूलभूत समस्याएं: नवल किशोर, कुरुक्षेत्र, दिसंबर 2011.
3. घनश्याम कुशवाहा सहायक प्राध्यापक राजकीय डिग्री कॉलेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
4. Cobrapost.com-January3,2017esal A.R., Rural Sociology in India, Popular Prakashan,1994.
5. Durkhelm, Emile, Suicide, translated, Pard, 1942.
6. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी)

सांस्कृतिक विरासतों का संरक्षण में शिक्षा का योगदान

[105]★ डॉ0 दयाशंकर सिंह यादव

सांस्कृतिक विरासत का तात्पर्य हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा प्राचीन परम्पराओं से जो आदर्श हमें प्राप्त हुए हैं, जिनको आज भी हम उन्हीं रूपों में थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ अपनाते चले आ रहे हैं।हमारी भारतीय संस्कृति विश्व की एकमात्र ऐसी संस्कृति रही है जोकि लोक कल्याण मानकर व्यक्ति एवं समाज का कल्याण करती रही है। पुरुषार्थ भारतीय जीवन एवं हिन्दी दर्शन का एक अति प्रमुख तत्व सदैव से रहा है। भारतीय दर्शन ने चार पुरुषार्थो–धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का वर्णन किया है। कर्म का सिद्धान्त, आध्यात्मिक आचरण, संयुक्त परिवार, अतिथि सात्कार, त्याग संयम, प्राचीन रीति–रिवाज तथा परम्पराएँ, खान–पान, बोली भाषा, ऐतिहासिक धरोहरें आदि हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं।

शिक्षा तथा संस्कृति का अटूट सम्बन्ध है। हमारी संस्कृति तथा उसकी विरासत को पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ाने तथा उसका संरक्षण करने का कार्य शिक्षा के द्वारा ही किया जाता रहा है। हमारे शिक्षा के केन्द्र अर्थात् विद्यालय स्वयं सांस्कृतिक विरासत का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यद्यपि आधुनिकता के कारण तथा पाश्चात्य प्रभाव के कारण हमने अपने शिक्षा केन्द्रों के प्राचीनतम स्वरूप में आमूल–चूल परिवर्तन कर लिया है तथापि शिक्षा की प्रक्रिया के महत्वपूण अंग के रूप में आज भी गुरु तथा शिष्य की उपस्थिति अनिवार्य बनी हुई है।

- शिक्षा ही सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करती है।
- शिक्षा के कारण ही हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजे हुए है।
- हमारी सांस्कृतिक विरासत का प्रभाव व्यक्तित्व निर्माण पर भी पड़ सकता है।
- शिक्षा ही सांस्कृति की मूल भावना को समृद्धि प्रदान कर रही है।

सांस्कृतिक विरासतों का संरक्षण करने के लिए उन सभी तरीकों का उपयोग किया जाता है जो उस संपत्ति को यथासंभव उसकी मूल स्थिति के करीब रखने में प्रभावी साबित होता है।" सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण अक्सर कला संग्रह और संग्रहालयों से जुड़ा होता है और इसके देखभाल और प्रबंधन में ,जाँच करना , परीक्षण करना, प्रलेखन, प्रदर्शन,आदि सम्लित है । भारत देश एक बहु–सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ बना एक ऐसा राष्ट्र है जो दो महान नदी प्रणालियों, सिंधु तथा गंगा, की घाटियों में विकसित हुई सभ्यता है, किसी भी दृष्टि से अलग–थलग सभ्यता नहीं रही। भारतीय सभ्यता हमेशा से ही स्थिर न होकर विकासोन्मुख एवं गत्यात्मक रही है। भारत में स्थल और समुद्र के रास्ते व्यापारी और उपनिवेशी आए। अधिकांश प्राचीन समय से ही भारत कभी भी विश्व से अलग–थलग नहीं रहा। सके परिणामस्वरूप, भारत में विविध संस्कृति वाली सभ्यता विकसित होगी जो प्राचीन भारत से आधुनिक भारत तक की अमूर्त कला और सांस्कृतिक परंपराओं से सहज ही परिलक्षित होता है, चाहे वह गंधर्व कला विद्यालय का बौद्ध नृत्य, जो यूनानियों के द्वारा प्रभावित हुआ था, हो या उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के मंदिरों में विद्यमान अमूर्त सांस्कृतिक विरासत हो। भारत का इतिहास पांच हजार से अधिक वर्षों को अपने सांस्कृतिक खंड में समेटे हुए अनेक सभ्यताओं के पोषक के रूप में विश्व के अध्ययन के लिए उपस्थित है। यहां के निवासी और उनकी जीवनशैलियां, उनके नृत्य और संगीत शैलियां, कला और हस्तकला जैसे अन्य अनेक तत्व भारतीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न वर्ण हैं, जो देश की राष्ट्रीयता का सच्चा चित्र प्रस्तुत करते हैं।

डॉ. ए एल बाशम ने अपने लेख श्भारत का सांस्कृतिक इतिहासश में यह उल्लेख किया है, जबकि सभ्यता के चार मुख्य उद्‌गम केंद्र पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने पर, चीन, भारत, फर्टाइल क्रीसेंट तथा भूमध्य सागरीय प्रदेश, विशेषकर यूनान और रोम हैं, भारत को इसका सर्वाधिक श्रेय जाता है, क्योंकि इसने एशिया महादेश के अधिकांश प्रदेशों के सांस्कृतिक जीवन पर अपना गहरा प्रभाव डाला है। इसने प्रत्यक्ष ओर अप्रत्यक्ष रूप से विश्व के अन्य भागों पर भी अपनी संस्कृति की गहरी छाप छोड़ी है। संस्कृति से अर्थ होता है कि किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप जैसे जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है।

पृथ्वी ब्रह्मांड एक मात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है और इस पृथ्वी पर बहुत सारे लघुतम व विशालतम आकार के जीव रहते है। मनुष्य भी इस पृथ्वी पर अन्य प्राणियों की तरह एक प्राणी है किन्तु अन्य प्राणी से यह बिल्कुल भिन्न है। मनुष्य जिस स्थिति में हजार वर्ष पहले था उस स्थिति में आज नहीं है। रचनात्मक

★ एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, सकलडीहा पी0जी0 कॉलेज, चंदौली।

मस्तिष्क से मनुष्य प्रत्येक क्षण रचनाशील रहता है और अपना जीवन व्यतीत करने के लिए नये–नये भौतिक पर्यावरणों का निर्माण करता रहता है। पर्यावरण की नित नवीन सृष्टि के द्वारा मनुष्य जिन तत्वों के कारण अन्य प्राणियों से बिल्कुल पृथक हो जाता है, उसी को संस्कृति कहते है। संस्कृति मनुष्य को अन्य प्राणियों से उच्च श्रेणी में खड़ा कर देता है। मनुष्य स्वंय अपने संस्कृत का निर्माता है। जहां एक ओर मनुष्य संस्कृति का निर्माण करता है वहीं संस्कृति भी मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। हमारे चारो तरफ जो भी चीजे है। वे ही हमारा पर्यावरण है। जैसे हवा, पानी, वस्त्र, मकान, सड़क, पेड़, कुर्सी इत्यादि इन चीजों जो मनुष्य द्वारा निर्मित है वह संस्कृति है। परन्तु पर्यावरण का वह भाग जिसका निर्माण मनुष्य ने नहीं किया है जैसे नदी का पानी या हवा वह संस्कृति नहीं है। मनुष्य को जीवित रहने के लिए उसकी जैविकीय आवश्यकताओं की पूर्ति अनिवार्य होती है। इन जैविक आवश्यकताओं के अतिरिक्त बहुत सारी अन्य आवश्यकताएं भी होती है जो सिर्फ भौतिक ही नही बल्कि कलात्मक एंव अध्यात्मिक भी होती है। मानव इन आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए रचनात्मक कियाएं करता रहता है। जिसका उत्पादन केवल भैतिक ही नही होता है बल्कि अभौतिक भी होता है। चूंकि संस्कृति मनुष्य के रचनात्मक मष्तिक की उपज होती है इसलिए भिन्न–भिन्न जगहो पर भिन्न–भिन्न प्रकार की संस्कृति पाई जाती है। संस्कृति को हम मनुष्य का अभिभावक भी मान सकते है क्योंकि मनुष्य चाहे भीड़ में हो अथवा विरान जगह पर संस्कृति हर जगह मानव व्यवहार कों नियंत्रित एवं निर्देशित करती रहती है। संस्कृति को परिभाषित करते हुए टायलर महोदय ने कहा है कि – ''संस्कृति में समस्त सीखा हुआ ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, आचार, विचार, प्रथा, विधि तथा अन्य क्षमताए एवं आदतें, जो व्यक्ति किसी समाज के सदस्य होने के नाते अर्जित करता है, सम्मिलित हैं।''

प्रत्येक संस्कृति का विकास एक भौगोलिक तथा वंशीय वातावरण में सम्पन्न होता हैं इसलिए अलग–अलग संस्कृतियो का दृष्टिकोण भी भिन्न–भिन्न होता है। वस्तुतः संस्कृति को अपनाने व ग्रहण करने वाले विभिन्न मानव वंशों के समूह की विशिष्ट मौलिक शक्ति ही संस्कृतियों के विभिन्न स्वरूपों के निर्माण का मूल कारण है। यह देखा जाता है कि प्राकृतिक विविधता संस्कृति के संवर्धन तथा विकास को पर्याप्त रूप से प्रभावित करती है। ठंडी जलवायु वाले क्षेत्रों तथा गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों की संस्कृतियों में पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इस अन्तर को दोनो प्रदेशों के निवासियों के रहन–सहन की आदतों, उनके वस्त्रों, मकानों के वास्तु शिल्पों तथा पविहन के साधनों के प्रयोग के रूप में सहज ही देखा जा सकता है। भारत जैसे देश में जहां पर्याप्त प्राकृतिक विविधता पायी जाती है, तद्नुरूप सांस्कृतिक विविधता भी पाई जाती है। विभिन्न क्षेत्रों में आंचलिक संस्कृतियां भी विद्यमान हैं और इन्हीं आंचलिक संस्कृतियों के सम्मिलन और सांमजस्य से ही भारतीय संस्कृति का स्वरूप निर्मित होता है। यदि संस्कृति की अवधारणा पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर सामने आते हैं। जैसे–संस्कृति मानव समाज की अनिवार्य विशेषता होती है। मानव समाज चाहे परम्परागत प्रकृति का हो अथवा उत्तर आधुनिक प्रकृति का हो, प्रत्येक समाज की कोई न कोई संस्कृति अवश्य होती हैं। प्रत्येक संस्कृति समाज विशेष के सदस्यों के लिए आदर्श होती है। कोई भी संस्कृति श्रेष्ठ अथवा हीन नहीं होती है वरन लोगों का पूर्वाग्रह ही किसी संस्कृति को श्रेष्ठ अथवा हीन बनाता है। प्रत्येक संस्कृति में गतिशीलता तथा अनुकूलनशीलता भी पाई जाती है। संस्कृति की गतिशीलता ही उसे जीवन्त बनाये रखती है। संस्कृति की अनुकूलनशीलता ही किसी संस्कृति को दीर्घकाल तक स्वीकार्य बनाये रखने में प्रभावी रूप में योगदान देती है ।

वर्तमान समय में किसी भी संस्कृति के विशुद्ध स्वरूप की कल्पना भी नहीं जा सकती क्योंकि आज का युग ग्लोबलाइजेशन का युग है। जब भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के लोग एक दूसरे से मिलते–जुलते है और साथ–साथ रहते हैं तो निश्चित रूप से ही एक दुसरे की संस्कृति से परिचित होते है और जाने–अनजाने एक दूसरे की संस्कृति के तत्वों को ग्रहण भी करते हैं। जिस प्रकार संस्कृति मानव जीवन से अनिवार्य रूप से जुड़ी होती है ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी मानव जीवन से अनिवार्य रूप से संबंधित है। शिक्षा मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को स्पर्श करती है। जब मानव शिशु जन्म लेता तो जन्म के समय वह एक असहाय प्राणी होता हैं लेकिन उसमें विकास की अनन्त सम्भावनाएं बीज रूप में विद्यमान रहती हैं। शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं का समुचित रूप से विकास करती है और उसे अनुपम व्यक्तित्व का स्वामी बनाती हैं। शिक्षा बालक को समाज की संस्कृति, सामाजिक मूल्यों, परम्पराओं, प्रथाओं, कला, नैतिकता एवं जीवन पद्धति से परिचित कराती है और सामाजीकरण की प्रकिया द्वारा विभिन्न सामाजिक गुणों को बालक के व्यवहार का अंग बनाती हैं।

शिक्षा तथा संस्कृति परस्पर अन्तर्संबधित अवधारणाएं हैं क्योंकि शिक्षा और संस्कृति दोनों का संबध मानव जीवन से है। शिक्षा और संस्कृति के परस्पर संबधों को समझने के क्रम में सर्वप्रथम संस्कृति के शिक्षा पर प्रभाव पर प्रकाश डालना समीचीन होगा। किसी देश अथवा समाज की संस्कृति उसके शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निधार्रित करती है। संस्कृति शिक्षा को उद्देश्य एवं लक्ष्य प्रदान करती है और शिक्षा द्वारा इन्हें उद्देश्यों एवं आदर्शो की

प्राप्ति हेतु प्रयास किया जाता हैं। समाज की संस्कृति ही शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं और परिणामों में प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए यदि किसी समाज की संस्कृति में भौतिकवादी तत्वों की प्रधानता है तो उस समाज की शिक्षा के उद्देश्यो में उन्हीं भौतिक आदर्शो का समावेश होगा और शिक्षा के समस्त अभिकरणों और उपकरणों द्वारा भौतिक आदर्शो की प्राप्ति के लिए प्रयास किया जायेगा, किन्तु यदि समाज की संस्कृति अध्यात्म प्रधान है तो वहां प्रचलित शिक्षा की व्यवस्था द्वारा अध्यात्मिक उद्देश्यों प्राप्ति अभीष्ट होगी। यदि कोई समाज रूढ़िवादी यथा स्थितिवादी है तो उस समाज की शिक्षा व्यवस्था द्वारा प्रचलित नियमों, परम्पराओं, प्रथाओं, कानूनों, के यथा सम्भव पालन पर बल दिया जायेगा। यदि समाज प्रगतिशील है और नवीन परिवर्तनों को ग्रहण करने वाला है तब उस समाज में सांस्कृतिक परिर्वतन हेतु शिक्षा का आग्रह अधिक होगा। यदि कोई समाज अल्पविकसित है और लोगों की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी ठीक ढ़ंग से नही पाती है तो उस समाज की शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप भी अधिक औपचरिक न होकर अनौपचारिक ही होगा। यदि कोई समाज उच्च विकसित और जटिल है तो वहां की शैक्षिक व्यवस्था भी अधिक औपचारिक और जटिल होगी। केवल संस्कृति ही शिक्षा को प्रभावित नहीं करती बल्कि शिक्षा भी संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन, प्रसार, विकास के लिए महत्वूपर्ण है। संस्कृति का चाहे भौतिक पक्ष हो अथवा अभौतिक पक्ष हो, शिक्षा दोनो पक्षों के संरक्षण में अद्वितीय भूमिका का निर्वहन करती है। शिक्षा ज्ञान–विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत, धर्म–दर्शन की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करती हैं। चूकि प्रत्येक संस्कृति की अपनी सांस्कृतिक विशिष्टताएं होती है, सांस्कृतिक प्रेरणाएं होती है इसलिए शिक्षा द्वारा इनका यदि समुचित ढ़ंग से संरक्षण नहीं किया जायेगा तो उस संस्कृति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। शिक्षा संस्कृति के संरक्षण के साथ–साथ उसके हस्तान्तरण में भी महत्वूपर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी समाज अपने भावी पीढ़ी को अपनी संस्कृति से न केवल सुपरिचित कराता है बल्कि उसे उनके जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा भी बनाता है। संस्कृति के हस्तान्तरण का यह महत्वपूर्ण कार्य विभिन्न संस्थाओं द्वारा किया जाता है, जिसमें परिवार, शिक्षण संस्थाएं और विभिन्न जनसंचार माध्यमों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है इसलिए परिवार ही बालक को रहन–सहन के तरीके, बोल–चाल के तरीके, अभिवादन के तरीके सिखलाता है तथा समाज स्वीकृत मूल्यों, शिष्टाचार, सदाचार आदि का प्राथमिक ज्ञान भी कराता है। जब बालक विद्यालय में जाना प्रारम्भ करता है तो संस्कृति के हस्तान्तरण का यही महत्वूपर्ण कार्य शिक्षण संस्थाओं द्वारा अधिक औपचारिक, सुनियोजित तथा सुव्यवस्थित ढ़ंग से किया जाता है। शिक्षा, संस्कृति का विकास और प्रसार भी करती है। शिक्षा ही बालक में नवीन ढ़ंग से सोचने की योग्यता और उसमें आलोचनात्मक विश्लेषण की योग्यता भी विकसित करती है। शिक्षा ही किसी भी संस्कृति में आवश्यक संशोधन और परिष्करण का मार्ग प्रशस्त करती है और उसकी उपादेयता को नवीन परिस्थितियों में पुनः परिभाषित करती है।

lUnHk& lwph

1. M,- vi.k tu 'vfopy' cc nfu;k [krj e g Hkkjr dh lkL–frd v[kMrk vkj fojklr
2.],u-,u-] Hkkjrh; fojklr ,o lLdfr] uk,Mk % dkfudy ifCydsku ikOfyO
3. >k] ek[ku ,o flg] Hkkyk ilkn ¼2001½-ekuo foKku] iVuk % Hkkjrh Hkou ifCyskl ,o fMLVh0;Vl A
4. ikBd] ih-Mh- ¼1996½ f'k{kk d fl)kUr] vkxjk% foukn iLrd efUnjA
5. ekFkj] ,l-,l- ¼2010&11½ f'k{kk d nk'kfud rFkk lkekftd vk/kkj] vkxjk% vxoky ifCyd'kuA

पर्यावरण-संरक्षण भारत के सांस्कृतिक मूल्य में है

[31]★ डॉ0 दयाशंकर सिंह यादव

मानव सभ्यता के विकास में पर्यावरण द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है। मानव का पर्यावरण के साथ सामन्जस्य का प्रारम्भ ही सभ्यता के विकास की जननी रही है। सभ्यता का प्रारम्भिक चरण सामन्जस्य के साथ ही उद्भूत हुआ। सभ्यता के विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई जैसे–जैसे मानव प्रकृति में परिवर्तन करने का सफल प्रयास करता गया। मानव अपने पर्यावरण में प्राप्त होने वाले प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता रहा। मानव अपनी बुद्धि, विवेक एवं तकनीकी के उपयोग से पर्यावरण को सजाता संवारता है तथा उसे नष्ट भी करता है और उससे स्वयं भी प्रभावित होता है।पर्यावरण और हमारी सृष्टि अभिन्न है। सृष्टि निर्माण के साथ ही एक ऐसे पर्यावरण का निर्माण हुआ जो इस सृष्टि के समस्त चर–अचर जीवधारियों और वनस्पतियों के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। औद्योगिक विकास के साथ ही विज्ञान के महायज्ञ से मानव ने प्रकृति के रहस्यों की खोज भी की है। मानव–सभ्यता के विकास में प्रकृति का बहुत बड़ा योगदान रहा है। जैसे–जैसे मनुष्य ने भौतिक उन्नति की और उन्नति होती गई वैसे–वैसे पर्यावरण का सन्तुलन भी बिगड़ता गया। प्रारम्भ में मनुष्य के पर्यावरण की रचना इस ग्रहीय पृथ्वी के भौतिक पक्षों (स्थल, वायु एवं जल) तथा जैविक समुदायों द्वारा होती है। परन्तु समय के परिवर्तन के साथ मानव समाज के विकास के द्वारा वह अपने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कार्यों के माध्यम से अपने पर्यावरण को विस्तृत करता गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पर्यावरण के अन्तर्गत भौतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक पर्यावरण इसमें शामिल होता गया। समान्यतः पर्यावरण की तुलना प्रकृति से किया जाता है जिसके अन्तर्गत ग्रहीय पृथ्वी के ऐसे घटक (वायु, जल, स्थल, मृदा) को शामिल किया जाता है। जो जीव मण्डल में विभिन्न जीवों को अधार से आश्रय देते हैं। उनके विकास और संवर्धन के लिए आवश्यक दशाएं उपलब्ध करते हैं और प्रभावित करते हैं। मानव और पर्यावरण सम्बन्ध एक दूसरे के पूरक है क्योंकि पर्यावरण से मानव जीवन हैं। पर्यावरण के अनुकुल मानव ने अपने को ढाल कर जीवन क्रम को आगे बढ़ाया है। क्योंक प्रकृति से हमें जो कुछ भी परिलक्षित होता है वायु, जल, मृदा तथा प्राणी सम्मलित रूप से पर्यावरण संरचना करते हैं और मानव इनका उपयोग करता है।

पर्यावरण संरक्षण में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश आदि पंचतत्वों का विशेष योगदान है। पृथ्वी जगत की पर्यावरण रूप परिधि है, जिसमें सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश आता है एवं यज्ञादि सम्पन्न होते हैं।[1] अथवर्वेद[2] से ही स्पष्ट होता है कि पृथ्वी, जल, अग्नि आदि सम्पदाएँ देकर हमें जीवन प्रदान करती है तथा इसे रत्नगर्भा, आनन्ददा, आश्रयदाता कहा गया है। अथवर्वेद[3] के पृथ्वीसूक्त में कहा गया है कि पृथ्वी हमारी माता है, हम इसके पुत्र हैं, जो माता की सुरक्षा, संरक्षा, शुचिता तथा स्वाभिमान के प्रति सर्वथा समर्पित हो, उससे उत्कृष्ट कौन हो सकता है? हमें पृथ्वी माता के पर्यावरण को इसलिए स्वच्छ रखना चाहिए क्योंकि भोजन और स्वास्थ्य देने वाली सभी वनस्पतियाँ इस भूमि पर ही उत्पन्न होती है।

पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता और मेघ पिता है, क्योंकि वर्षा के रूप में पानी देकर यह पृथ्वी में गर्भाधान करता है[4]। अथवर्वेद[5] के एक मंत्र में भूमि को विश्व का भरण–पोषण करने वाली, धनों की खान, सबकी प्रतिष्ठा, सुवर्ण से युक्त तथा जगत को बसाने वाली बताया गया है। पृथ्वी के ये विशेषण पर्यावरण की दृष्टि से भी सार्थक कहे जा सकते हैं, क्योंकि विश्व का भरण–पोषण पर्यावरण की अनुकुलता पर ही निर्भर है। साथ ही प्रदूषण–निवारण तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सर्वाधिक उपयोगी वृक्षों, वनस्पतियों एवं औषधियों को उत्पन्न करने वाली पृथ्वी ही है। इसलिए वेद में उसे औषधियों की माता कहा गया है[6]। पर्यावरण की दृष्टि से पृथ्वी की इस उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए ही यजुर्वेद के एक मंत्र में आदेश दिया गया है कि पृथ्वी को दृढ़ करो तथा पृथ्वी की हिंसा मत करो[7]। यदि हम पृथ्वी को माता के समान पूज्य मानते हैं तो यह हमारे ऊपर मातृ ऋण है, उससे उऋण होने के लिए हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम यह प्रयास करें कि उसका विचारहीन दोहन न हो।

जल को जीवन का पर्याय माना गया है। पर्यावरण की शुद्धि के लिए जल अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि शुद्ध जल में अमृत और औषधि का निवास रहता है[8]। ऋग्वेद[9] के ही एक मंत्र में जल द्वारा शरीर के मलों की शुद्धि का उल्लेख है। इसलिए अथवर्वेद[10] में कामना की गई है कि हमारे लिए शुद्ध जल प्रवाहित हो। ऋग्वेद[11] में वर्णन है कि जल (आपः) हमारी माता के समान है, वे हमें पवित्र करें। समस्त प्रदूषण को जल बाहर ले जाते है और उनसे पवित्र होकर मनुष्य गतिशील हो जाता है। ऋग्वेद[12] के एक मंत्र में पार्थिव जल के तीन विभाग किए गये हैं– एक जल नदी में बहने वाला, दूसरा गढ्ढा खोदने से निकलने वाला और तीसरा अपने आप भूमि से निकलने वाला, जैसा कि पर्वत में कई जगह देखा जाता है। इसी प्रकार अथवर्वेद[13] में आठ

★ एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, सकलडीहा (पी0जी0 कॉलेज सकलडीहा, वाराणसी)

प्रकार के जलों का वर्णन है। अथवर्वेद के मंत्रों में यह कामना की गई है कि ये आठों प्रकार के जल सबके लिए सुखदायक हों। इन मंत्रों में वर्णित है– हिमालय पर बर्फ के रूप में, स्रोतों के रूप में, सदा बहने वाले, बरसने वाले, मरूस्थल में, जलाशय में रहने वाले, भूमि खोदकर प्राप्त तथा घड़े में भरकर रखे हुए जल। ऋग्वेद[14] के एक सूक्त में यह भी वर्णन है कि नदियों में विष उत्पन्न हो गया हो तो देवजन उसे मिलकर दूर कर लें और इस प्रकार सभी नदियाँ प्रदूषण रहित हो जायें।

जीवन की अनिवार्यताओं में जल एक महत्वपूर्ण तत्व रूप है[15]। जल समस्त दुखों, रोगों को नष्ट करने वाला है[16]। यह सर्वोत्तम वैद्य रूप तत्व है। जल को मातृरूप संरक्षण देने वाला प्रतिपादित किया गया है। जल के लिए ऋग्वेद में प्रार्थना की गई है कि दिव्य जल हमें सुख दें और ईष्ट प्राप्ति के लिए एवं पीने के लिए हो, हम पर शान्ति का स्रोत बहावे अर्थात् जल हम पर सुख–समृद्धि की वर्षा करे[17]। जल मंगलमय और घी के समान पुष्टिदाता है तथा भोजन के पचाने में उपयोगी तीव्र रस है। जल प्राण और शक्ति, बल तथा पौरूष देने वाला एवं अमरता की ओर ले जाने वाला मूल तत्व है। कृषि के लिए भी जल अतिआवश्यक है। ऋग्वेद की एक ऋचा में कहा गया है कि हे जल! तुम अन्न की प्राप्ति के लिए उपयोगी हो। तुम पर जीवन तथा नाना प्रकार की औषधियाँ, वनस्पतियाँ एवं अन्न आदि पदार्थ निर्भर है,तुम औषधि रूप हो[18]। यजुर्वेद में जल को अशुद्ध करने का निषेध किया गया है[19]।

भारतीय चिन्तकों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए प्रारम्भ से ही मर्यादाएँ बनायी थी। मनुस्मृति में पवित्र और स्वच्छ जलों में मल–मूत्र, थूक, रक्त, विषयुक्त तथा अन्य अपवित्र वस्तुओं का निस्तारण निषिद्ध किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीयों को पर्यावरण के लिए जल के महत्व का ज्ञान था तथा उन्होंने जल प्रदूषण के निवारण का उपाय खोजने का प्रयास किया था।ऋग्वेद में तेज के रूप में सूर्य तथा अग्नि को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वेदों में अग्नि के महत्व को प्रतिपादित करने वाले लगभग दो सौ सूक्त मिलते हैं। सूर्य को वेदों में सवितृ देव के रूप में उपासना की गयी है और पर्यावरण की शुद्धि करने वाला माना गया है।

वेदों में उल्लेख आता है कि यदि अग्नि को जलाकर उसमें उत्तम आरोग्यदायक पदार्थों की हवि दी जाये तो उससे वायु में स्थित रोगाणु जल जाते हैं और वायु शुद्ध होकर निरोगता फैलाती है। इसी कारण अग्नि को पावक (पवित्र करने वाला) एवं रक्षसः दहः विशेषणों से सम्बोधित किया गया है। सूर्य के प्रकाश के विषय में ऋग्वेद में लिखा गया है कि सूर्य का तेज बहुत हितकारी है, इसके प्रकाश में रोगों को दूर करने की शक्ति है। सूर्य का प्रकाश सेवन करने से हृदय के सभी रोग मिट जाते हैं।

अथवर्वेद[20] में सूर्य के दूषण–निवारक गुण का वर्णन है। सूर्य की बाल रश्मियाँ जीवों के समस्त रोगों को दूर करती हैं और प्रखर रश्मियाँ पृथ्वी, जल आदि के प्रदूषण को हटाती है। इस प्रकार सूर्य दृष्ट–अदृष्ट समस्त पर्यावरण– रक्षक तत्वों के प्रदूषण को नष्ट करने का महाऔषध है।ऋग्वेद[21] में अग्नि को पर्यावरण शुद्धि का महत्वपूर्ण साधन बताया गया है। अग्नि समस्त प्रकार के दोषों एवं अशुद्धियों को नष्ट करता है। अग्नि के वन्य, सामुद्रीय, यज्ञीय, गार्हस्थ्य तथा जाठर आदि कई भेद हैं।

ऋग्वेद में उल्लेख है कि अग्नि में डाली गयी आहुति सूर्य को प्राप्त होती है। जैसी भी आहुति सूर्य को प्राप्त होगी, उससे वैसे ही बादल बनेगें तथा वैसी ही वृष्टि होगी। यज्ञ की हवि से भावित शुद्ध वायु से बादल भी शुद्ध बनेंगे तथा उनसे वर्षा भी शुद्ध होगी। उस वर्षा से जीवनदायिनी कृषि वनस्पति आदि भी शुद्ध होगी।

पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में अग्नि यज्ञ के माध्यम से प्रदूषण–निवारण एवं पर्यावरण–शोधन का एक सशक्त माध्यम है। यज्ञ भूमि, जल, वायु, ध्वनि और मनुष्य आदि जीवों के प्रदूषणों को दूर करने में पूर्ण सक्षम है। यज्ञ में डाला हुआ घृत, समिधायें तथा सुगन्धित मिष्ट, पुष्टिकारक एवं रोगनाशक डाले हुए कस्तूरी आदि पदार्थ भूमिदोष, वायुदोष और मेघादि के निर्माण में सहायक होकर जल–दोष एवं प्राणियों के शारीरिक दोषों को दूर करता है। यज्ञ में सस्वर मन्त्रपाठ ध्वनि–दोष के प्रदूषण को दूर करता है। सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक दुर्बलताओं, दुर्वासनाओं, आत्महत्या आदि दुर्विचारों को दूर करता है।

वायु मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष आदि जड़–चेतन जगत का जीवन स्रोत है। यह पृथ्वी, जल आदि की अपेक्षा सुक्ष्म होने से अति शक्तिशाली है। इसी के द्वारा सबकी प्रतिष्ठा है, सभी रक्षित है। प्राणी जगत के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी के चारों ओर वायु का सागर है। ऋग्वेद में वायु के गुण को बताते हुए कहा गया है कि 'शुद्ध ताजी वायु अमूल्य औषधि है, जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी है, आनन्ददायक है। वह उसे प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ाता है।' ऋग्वेद का यह कथन है 'शुद्ध ताजी वायु तपेदिक जैसे घातक रोगों के लिए औषधि रूप है। हे रोगी मनुष्य! मैं वैद्य तेरे पास सुखकर और अहिंसा कर रक्षण में आया हूँ। तेरे लिए कल्याणकारक बल को शुद्ध वायु के द्वारा लाता हूँ और तेरे जीर्ण रोगों को दूर करता हूँ।' वायु जीवित प्राणी के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वायु का सागर जीवित प्राणी का रक्षा करता है। वायु में शुद्ध तथा अशुद्ध दोनों की प्रकार की गैसे पायी जाती हैं। वायु में पायी जाने वाली गैसों में गुण तथा अवगुण दोनों ही पाये जाते हैं। इनमें जीवित प्राणी के लिए शुद्ध अर्थात् आक्सीजन ही जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक है। ऋग्वेद में भी बताया गया है कि 'इस वायु के गृह में जो यह अमरत्व की धरोहर स्थापित है, वह हमारे जीवन के लिए आवश्यक है।'

ऋग्वेद के एक मंत्र में वायु को विश्वभेषज कहा गया है । वैदिक युग के ऋषि इस रहस्य को भी जानते थे कि शुद्ध वायु हृदय के लिए शान्तिदायक एवं सुखकारक होती है और आयु को भी बढ़ाती है। ऋग्वेद में 'ओजोन' परत के लिए 'उल्ब' शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों का 99% अवशोषण करके गरम परत् का निर्माण करती है और पृथ्वी की वनस्पतियों व जीव–जन्तुओं को भष्म होने से बचाती है। वैदिक मंत्रों में उल्लेख है कि वायु का मूल स्रोत वृक्ष एवं वन है। वैदिक ऋषि पर्यावरण की रक्षा के लिए वनस्पति एवं वृक्षारोपण को आवश्यक मानते थे। ऋग्वेद के मंत्र में वन में वनस्पति–आरोपण का स्पष्ट आदेश दिया गया है तथा ऋग्वेद के एक सम्पूर्ण सूक्त में वन की देवी 'अरण्यानी' का वर्णन है, जहाँ उसे बहुत अन्नों वाली, सबसे महान तथा समस्त वन्य जन्तुओं की माता कहा गया है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्षों के महत्व को वैदिक–द्रष्टा भलीभाँति जानते थे। उन्हें यह भी ज्ञान था कि पीपल व ढाक जैसे कतिपय वृक्ष वातावरण की शुद्धि के लिए सर्वाधिक उपयोगी है।प्रकृति और ईश्वर को भारतीय संस्कृति में एक ही माना गया है और इसी कारण दोनों पूजनीय हैं और प्रकृति के स्वरूप को किसी भी प्रकार क्षति पहुँचाना ईश्वर को क्षति पहुँचाने जैसा माना गया है।

पाश्चात्य संस्कृति में जहाँ प्रकृति के संसाधनों को मनुष्य मात्र के उपयोग की वस्तु माना गया है, वहीं भारतीय संस्कृति में प्रकृति को सर्वशक्तिमान और पूजनीय माना गया है,क्योंकि प्रकृति के तत्वों के संतुलन पर ही प्राणियों का जीवन निर्भर है। प्रकृति के प्रति श्रद्धा की पराकाष्ठा ही है कि पृथ्वी को माँ का स्थान दिया गया, पर्वतों को देव स्वरूप माना गया और वृक्षों को पूजनीय स्थान मिला। ऋग्वेद का एक मंत्र दृष्टव्य है जिसमें आकाश को पिता और प्राणियों को आश्रय देने वाली पृथ्वी को मातृरूपा माना गया है। यजुर्वेद के एक मंत्र में कामना की गयी है कि पृथ्वी औषधियाँ, द्यौलोक तथा अन्तरिक्ष लोक और दिशायें ये सभी अमृत रूप पयः देने वाले हैं, रस से संरक्षण करने वाले हैं, वे सभी हमें रस को प्राप्त करावें। ऋग्वेद यह आदेश देता है कि द्यावापृथिवी (सूर्य, अन्तरिक्ष और पृथ्वी) को पिता–माता समझो। यजुर्वेद आदेश देता है कि पृथ्वी को माता समझो और द्युलोक को पिता समझो। अर्थर्वेद आदेश देता है कि पृथ्वी माता है, अन्तरिक्ष भाई है और द्युलोक पिता है। अतः जिस प्रकार माता–पिता की सेवा करना, उनको कष्ट से बचाना और उनकी रक्षा करना पुत्र का कर्तव्य है, उसी प्रकार प्रकृति की रक्षा करना, उसको प्रदूषण से बचाना और उनके उपहारों का सदुपयोग करना हमारा कर्तव्य है। ऋग्वेद के पुरूषसूक्त से स्पष्ट होता है कि पृथ्वी का दस गुना जल है। जल का दस गुना तेज है। तेज का दस गुना वायु है। वायु से दस गुना आकाश है। जो माप की परिधि से सर्वथा बाहर है। ये घटक एक दूसरे से सम्बद्ध है। एक का विकार दूसरे आवरण को प्रभावित करता है। गूढ़ता से विचार करने पर ज्ञात होता है कि चैतन्य का आवरण अविद्या, अज्ञान या माया है; जीव का आवरण पुरूष है, पुरूष का आवरण शरीर है, शरीर का आवरण पृथ्वी, पृथ्वी का आवरण जल, जल का आवरण अग्नि, अग्नि का आवरण वायु, वायु का आवरण आकाश है। इस प्रकार आवरण परम्परा को ही पर्यावरण कहा जा सकता है। आज पृथ्वी तथा जल तत्व की भाँति अन्तरिक्ष भी पूर्णतः दूषित है। सृष्टि के पंचतत्वों को प्रदूषण से मुक्त रखें।

संदर्भ–सूची :

1. अथवर्वेद– 13.1.46
2. वहीं– 12.1.3
3. वहीं– 12.1.12
4. वहीं– 12.1.42
5. वहीं– 12.1.6
6. वहीं– 12.1.7
7. यजुर्वेद– 13.18
8. ऋग्वेद– 1.30.19
9. वहीं– 1.23.22
10. अथर्ववेद– 12.130
11. ऋग्वेद– 10.17.10
12. वहीं– 7.49.2
13. अथर्ववेद– 19.2.1–2
14. ऋग्वेद– 7.50.3
15. अथर्ववेद– 3.7.5
16. ऋग्वेद– 10.17.10
17. वहीं– 10.9.4
18. वहीं– 10.9.3
19. यजुर्वेद– 6.22
20. अथर्ववेद– 6.52.21
21. ऋग्वेद– 1.191.10

★

OUR PUBLICATIONS

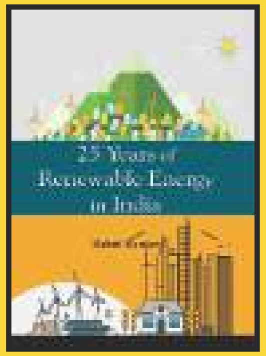

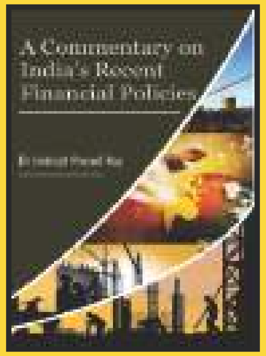

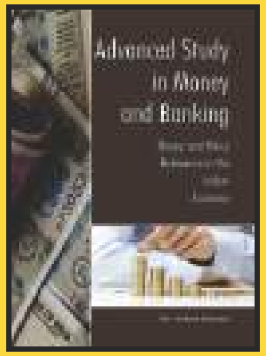

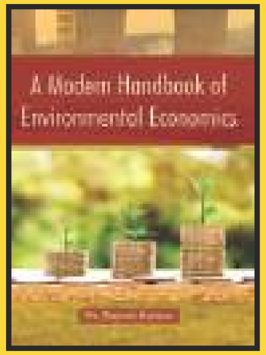

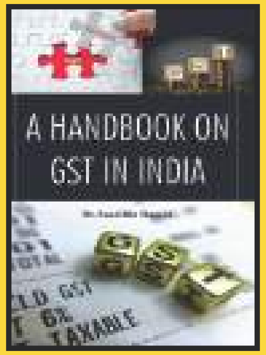

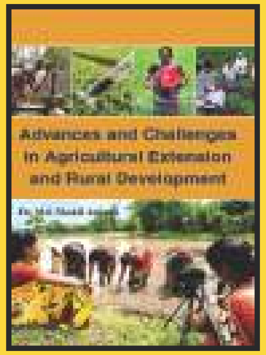

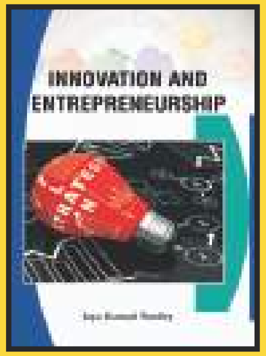

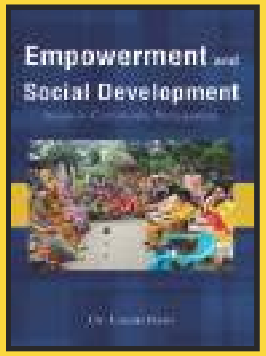

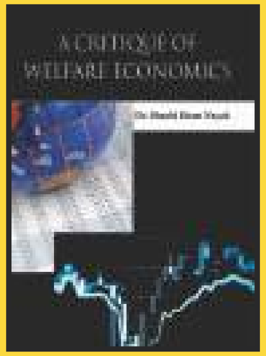

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 12 अंक : 6 ❑ नवम्बर–दिसम्बर, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

सोशल मीडिया कंपनियों का राजनीति में बढ़ता दखल

कुछ समय पूर्व यह विषय प्रकाश में आया कि कैम्ब्रिज एनालेटिका नाम की एक डाटा कंपनी ने 8.7 करोड़ लोगों के फेसबुक डाटा के आधार पर अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के चुनाव अभियान में काम किया और ट्रंप की विजय में इस कंपनी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रश्न यह है कि कैम्ब्रिज एनालेटिका को फेसबुक का डाटा कहां से मिला, तो यह बात स्पष्ट है कि वो फेसबुक कंपनी से ही प्राप्त किया गया। यूं तो फेसबुक कंपनी द्वारा अपने डाटा बेचने के कई साक्ष्य मिलते हैं, और फेसबुक के मालिक मार्क जुकेरबर्ग ने इस संबंध में माफी भी मांगी थी, लेकिन भविष्य में इस प्रकार के कृत्य की पुनरावृति नहीं होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

वर्ष 2018 में यह बात सामने आई कि इसी कैम्ब्रिज एनालेटिका कंपनी ने भारत की कांग्रेस पार्टी के लिए फेसबुक और ट्विटर के डाटा का उपयोग कर 2019 के चुनावों के लिए मतदाताओं के रूझान को बदलने के लिए कार्य करने का प्रस्ताव रखा। इस कंपनी की बेवसाईट पर यह दावा भी किया गया था कि वर्ष 2010 के चुनावों में उसने बिहार चुनावों में विजयी दल के लिए काम किया था। राजनीतिक दलों के लिए चुनावों की दृष्टि से सोशल मीडिया कंपनियों के डाटा का दुरूपयोग एक सामान्य बात मानी जाने लगी है।

लेकिन हालिया अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव में इन सोशल मीडिया कंपनियों का दखल और अधिक सामने दिखाई देने लगा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की लगभग सभी ट्वीटों पर ट्विटर कंपनी की टिप्पणी आ रही थी। इससे स्वभाविक तौर पर राष्ट्रपति ट्रंप के सभी बयानों को संदेहास्पद बनाने में इस कंपनी की खासी भूमिका रही। हाल ही में अमरीका में हुए हिंसक प्रदर्शनों के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर एकाउंट सस्पेंड कर दिए जाने के कारण ट्विटर कंपनी बड़े विवाद का केन्द्र बन गई है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि इन सोशल मीडिया कंपनियों के पास इन प्लेटफार्मों को इस्तेमाल करने वाले ग्राहकों की निजी जानकारियां काफी बड़ी मात्रा में होती हैं। ये कंपनियां उनके सामाजिक रिश्तों, जात-बिरादरी, आर्थिक स्थिति, उनकी आवाजाही, उनकी खरीदारियों समेत तमाम प्रकार के डाटा पर अधिकार रखती हैं और इस डाटा का उपयोग वे राजनीतिक दलों के हितसाधन में भी कर सकती हैं। ऐसे में वे प्रजातंत्र को गलत तरीके से प्रभावित कर सकती हैं। हालांकि यदि सोशल मीडिया का उपयोग ईमानदारी से किया जाए तो उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन यदि ये सोशल मीडिया कंपनियां राजनीति को प्रभावित करने का व्यवसाय करने लगे, तो दुनिया में लोकतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं ही नहीं बल्कि सामाजिक तानाबाना भी खतरे में पड़ जाएगा।

हालांकि ट्विटर कंपनी द्वारा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एकाउंट को सस्पेंड करने के पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि डोनाल्ड ट्रंप के बयान अमरीका में शांतिपूर्वक सत्ता हस्तांतरण के लिए खतरा हैं, लेकिन कुछ समय पूर्व फ्रांस में एक समूह द्वारा हिंसक गतिविधियों को औचित्यपूर्ण ठहराने वाली मलेशिया के प्रधानमंत्री मोहातिर मोहम्मद की ट्वीट के बावजूद उनके ट्विटर एकाउंट को सस्पेंड न किया जाना दुनिया में लोगों को काफी अखर रहा है।

अत्यंत ताकतवर हैं ये टेक कंपनियां

गौरतलब है कि अकेले भारत में ही फेसबुक के 33.6 करोड़ से ज्यादा एकाउंट हैं, जबकि इस कंपनी द्वारा चलाई जा रही मैसेजिंग, वायस एवं वीडियो कॉल एप्लीकेशन के 40 करोड़ से ज्यादा ग्राहक हैं। इसी प्रकार फेसबुक इंस्टाग्राम एप की भी मालिक है, जो फोटो और विडियो साझा करने की एक लोकप्रिय एप्लीकेशन है। इससे सीधा-सीधा अंदाज लगाया जा सकता है कि भारत की एक बड़ी जनसंख्या का निजी, आर्थिक एवं सामाजिक डाटा इस कंपनी के पास है। इसी प्रकार भारत में ट्विटर के लगभग 7 करोड़ और दुनिया में 33 करोड़ एकाउंट हैं। फेसबुक, व्हाट्एप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंकेडिन आदि सोशल मीडिया ऐप्स हालांकि मुफ्त में अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं, लेकिन अपने बड़े डाटाबेस का उपयोग वे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए करती हैं। इसी प्रकार सर्च इंजन चलाने वाली गूगल कंपनी भी अनेकों बार अपने लॉगरिथम का गलत इस्तेमाल करने की दोषी पाई गई है। आज भारत में विज्ञापन की दृष्टि से गूगल और फेसबुक सर्वाधिक आमदनी कमाने वाली कंपनियां बन चुकी है। इसी प्रकार अन्य कंपनियों के भी अपने-अपने बिजनेस मॉडल हैं। ये कंपनियां उपभोक्ताओं को काफी संतुष्टि भी प्रदान कर रही हैं, जिसके कारण उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है।

लेकिन इनकी बढ़ती लोकप्रियता और इन कंपनियों पर किसी भी प्रकार के अंकुश के अभाव में इन कंपनियों से समाज के तानेबाने को बिगाड़ने और लाभ के लिए कार्य करते हुए प्रजातंत्र को प्रभावित करने की केवल आशंकाएं ही नहीं बल्कि वास्तविक खतरे भी बढ़ते जा रहे हैं। गौरतलब है कि इन कंपनियों के कार्यकलापों और लॉगरिथम में पारदर्शिता का पूर्णतया अभाव है। और यह बात भी स्पष्ट है कि ये कंपनियां लाभ के उद्देश्य से काम करती हैं और अपने शेयर होल्डरों के लिए अधिकतम लाभ कमाने के लिए अग्रसर रहती हैं। इसलिए स्वभाविकतौर पर, चाहे कानून के दायरे में ही रहकर, ये कंपनियां लाभ

कमाने के लिए कुछ भी कर सकती हैं। चूंकि इलैक्ट्रॉनिक सोशल मीडिया हाल ही में आस्तित्व में आया है, इसलिए विभिन्न देशों के कानून उनको नियंत्रित करने में स्वयं को अक्षम महसूस कर रहे हैं। ऐसे में किसी भी कानूनी बाध्यता के अभाव में ये कंपनियां सामाजिक और राजनीतिक तानेबाने और लोकतंत्र की भावनाओं पर चोट कर सकती हैं।

हाल ही में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा ध्यान में आया जब चीन की कुछ मोबाईल एप्स अमानवीय एवं असमाजिक कृत्यों में संलग्न थी, तो भी उन्हें प्रतिबंधित करने में सरकार को कानून के अनुसार निर्णय लेने में लंबा समय लगा। हालांकि जनता में चीन के प्रति बढ़ते आक्रोश के चलते बड़ी मात्रा में ऐसी एप्स प्रतिबंधित कर दी गई हैं, लेकिन फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, ट्विटर इत्यादि एप्स पर अंकुश लगाना आसान कार्य नहीं होगा। ऐसे में इन कंपनियों द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को प्रभावित करने का खतरा हमेशा रहेगा।

क्या हो सकता है समाधान?

इन कंपनियों के संभावित खतरों के मद्देनजर चीन ने प्रारंभ से ही इन एप्स को अपने देश में प्रतिबंधित किया हुआ है और इन एप्स के मुकाबले में चीनी एप्स को विकसित किया गया है। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर इत्यादि के उनके अपने ही विकल्प हैं। भारत भी ऐसा प्रयास कर सकता है कि चाहे इन सोशल मीडिया एप्स को जारी भी रखा जाए, लेकिन साथ ही साथ उनके विकल्प भी उपलब्ध हों। बड़ी संख्या में चीनी एप्स को प्रतिबंधित करने के बाद देश में भारत के ही स्टार्टअप्स के द्वारा अनेकों प्रकार के एप्स विकसित किए भी गए हैं।

इसी प्रकार सरकार सोशल मीडिया एप्स के द्वारा उनके डाटा के दुरूपयोग को रोकने के लिए डाटा संप्रभुता हेतु कानून बनाकर इन कंपनियों को पारदर्शी तरीके से अपने डाटा को भारत में ही रखने के लिए बाध्य कर सकती है। इन कंपनियों द्वारा डाटा माइनिंग को हतोत्साहित करते हुए भी लोगों के निजी डाटा के दुरूपयोग को कम किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी विकास के इस युग में उपभोक्ता संतुष्टि के साथ-साथ देश की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को सुरक्षित रखना और सामाजिक तानेबाने को नष्ट करने के प्रयासों को रोकना यह सरकार की जिम्मेवारी है। इसके लिए इन सोशल मीडिया कंपनियों के प्रभावी नियंत्रण हेतु कानून बनाने के दायित्व से सरकारें विमुख नहीं रह सकती।

संपादक

इस अंक में

महिलाओं के मानवाधिकारों का सशक्तिकरण : संयुक्त राष्ट्र संघ के अभिसमयों का विवेचन–कुमारी वन्दना 1

स्वातंत्र्योत्तर नेहरूवादी राजनीति में पत्रकारिता का स्वरूप–निधि सिंह 4

जिला सरकार की परिकल्पना व अनुप्रयोग : एक विमर्श–राजू कुमार पाण्डेय 6

भारत में कोरोना संक्रमण काल के पर्यावरण पर प्रभाव एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० विजय कुमार वर्मा 9

पर्यावरण पर आधुनिक कृषि के प्रभावों का भौगोलिक विश्लेषण–हरि शंकर गुप्ता 16

धौलपुर में डांग क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम का मूल्यांकन–संजय सिंह राघव 20

वायु प्रदूषण का प्रभाव एवं संरक्षण एक भौगोलिक अध्ययन–महेश चन्द मीना 26

भारत में खाद्यान्न स्थिति एवं खाद्य सुरक्षा का भौगोलिक अध्ययन–डॉ० रितेश कुमार अग्रवाल 31

आओ पेपे घर चले: वैश्विक परिवेश में नारी–डॉ० अर्चना मिश्रा 36

गुरु नानक वाणी में प्रस्तुत पंजाबी संस्कृति : एक अध्ययन–अमृतपाल कौर 38

हिन्दी साहित्य एवं अनुवाद : अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में–डॉ० (श्रीमती) कंचना सक्सेना; ऋतु वर्मा 41

कक्षा-कक्ष में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) (सम्भावनाऐं एवं चुनौतियां)–डॉ० कैलाश पारीक 44

मध्यकालीन भारत की शिक्षा व्यवस्था (1206-1707) एक ऐतिहासिक अध्ययन–प्रो० कार्तिक प्रसाद यादव 48

हरदोई जनपद के बिलग्राम तहसील का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण–डॉ० श्याम प्रकाश 53

जनप्रतिनिधियों का राजनीति संस्कृति स्वरूप संबंधी विचार विमर्ष–डॉ० जितेन्द्र पाटीदार 61

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी साहित्य–डॉ० दिनेश्वर कुमार महतो 64

वर्तमान समय में ई-गवर्नेंस के माध्यम से ग्रामीण परिवेश का चहुमुखी विकास 'एक अध्ययन'–डॉ. कविता अग्रवाल; चन्दना शर्मा 66

सरोज स्मृति पर सम्यक् दृष्टि–डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रहरि 69

हवेली संगीत एवं पंडित जसराज का अंत: संबंध–स्नेहा कुमारी 72

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में वी-चित्रण (Vee Diagram) विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन–लालजी यादव; डॉ० सुधांशु सिन्हा 75

भारत में कुपोषण एवं स्वास्थ्य - एक अध्ययन–डॉ० मनोज कुमार 81

ग्राम एवं किसान जीवन का यथार्थ : 'अकाल में उत्सव' उपन्यास के सन्दर्भ में–मन्नू देवी 85

मोहन सपरा की कहन-भंगिमा–प्रो० सुधा जितेन्द्र; आत्मा राम 88

महिलाओं के कौशल विकास में एन.जी.ओ. की भूमिका (झारखंड के बगोदर-सरिया अनुमंडल के संदर्भ में)–अरुण कुमार 93

स्वतंत्रता से पूर्व बद्री-केदार यात्रा मार्ग पर स्थित चट्टियाँ एवं उनका सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से ऐतिहासिक अध्ययन–ओम प्रकाश मनोड़ी 96

रमेश उपाध्याय की कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में नारी की स्थिति–मीनाक्षी; डॉ० सुमन राठी 101

गलवान के संदर्भ में भारत चीन सीमा पर गतिरोध एवं भारतीय सुरक्षा–डॉ० मनीष लाल श्रीवास्तव 104

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857 ईस्वी) एवं अवध की रियासतें–डॉ० राजकुमार वर्मा 109

भाषा विकास–रवीन्द्र कुमार मिश्र 112

मध्य हिमालय के पशुचारण विवादों में लोकदेवताओं एवं खून्दों की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन –डॉ० सुभाष चन्द्र; डॉ० राजपाल सिंह नेगी 115

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक व रोजगार के अधिकार का विश्लेषण–डॉ० ममता यादव; शिव प्रताप यादव 129

स्त्री विमर्श के विशेष सन्दर्भ में उपन्यास 'दुक्खम-सुक्खम'–सुरजीत कौर 133

रीवा संभाग मे कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण–प्रो० शिव कुमार दुबे; सितेश भारती 136

शिक्षण के निमित्त अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान पर आधारित अनुदेशन सामग्री का महत्व–अनुपम अग्रवाल; डॉ० बाबूलाल तिवारी 143

शुक्रनीति में सप्ताङ्ग् सिद्धान्त–डॉ० अनुजा सिंह 147

हिंदी साहित्य में मुशर्रफ आलम जौकी का योगदान–गुलशन समीना रियाज 151

गढ़वाल लोक देवताओ के प्रतीक चिन्हो का अध्यन: एक प्रारंभिक विवेचन–डॉ० सपना 154

व्यक्तित्व विकास और बालमनोविज्ञान: हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में–डॉ० अमिता तिवारी 157

असमिया साहित्य की एक कालजयी रचना 'संस्कार': एक विवेचन–कुल प्रसाद उपाध्याय 161

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिंतन का विश्लेषण व वर्तमान प्रासंगिकता–डॉ० अनिता जोशी; डॉ० चन्द्रावती जोशी 164

मीराबाई की रचनाओं में प्रेम भावना–डॉ० जी० पद्मावती 169

आदिवासी बहुल क्षेत्र में उच्च शिक्षा की स्थिति (राजस्थान के डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ जिलों का अध्ययन)–डॉ० मुख्त्यार अली 173

न्यायपालिका का एक नवीन दृष्टिकोण : न्यायिक-सक्रियता एवं जनहित-वाद–चन्द्रभान सिंह 184

कोरोना से क्वॉरन्टीन् होती 'शिक्षा-व्यवस्था'–खुशबू साव 190

भारत में नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन: एक भौगोलिक विवेचन–अशोक कुमार; डॉ० सुधीर मलिक 193

भारत से पलायन: एक संक्षिप्त परिचय–किशलय कीर्ति; चन्दन कुमार 198

मध्यवर्ग का आत्मसंघर्ष और मोहन राकेश का साहित्य–डॉ० रतन कुमार 201

उपेक्षित जीवन की त्रासद गाथा :'मुरदा-घर'–गंगा कोइरी 206

मूल्य और शिक्षा–रवि कान्त 209

राष्ट्रीय काव्यधारा में मैथिली शरण गुप्त का स्थान–डॉ० भगत गोकुल महादेव 213

वैदिक वाङमय में वर्णित विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० सन्जू नागर 216

हिन्दी और लोकभाषाओं में लोकजीवन–डॉ० आस्था तिवारी 220

समकालीन उपन्यासों में व्यक्त थर्ड जेंडर का त्रासद जीवन–राज कुमार शर्मा 224

विजय जोशी के कथा साहित्य में बाल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण–डॉ० गीता सक्सेना; श्रीमती सुमन डागर 228

रामचरितमानस का लोकपक्ष–डॉ० राजेश कुमार शर्मा 231

कालिदासस्य मालविकाग्निमित्रम्–डॉ० सुमन कुमारी 237

गिरीश पंकज का रचना संसार–अमनदीप कौर; डॉ० सुनील कुमार 241

गीतांजलि श्री के कहानी-संग्रह 'अनुगूँज' का अनुशीलन–बंधना सलारिया; डॉ० सुनील कुमार 248

लीलाधर मंडलोई का रचना-संसार–तजिंदर कौर; डॉ० सुनील कुमार 254

अध्यापक शिक्षा में रचनावादी सिद्धांत और व्यवहार का अध्ययन–नगनारायण उपाध्याय 262

प्राचीन भारतीय कला एवं साहित्य में योग : एक विश्लेषण–डॉ० मोहन लाल चढ़ार 266

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में विसंगति निरूपण–चुन्नीलाल 273

21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आर्थिक पक्ष : 'आदिवासी समाज' के विशेष संदर्भ में–अनिल कुमार; डॉ० रीता सिंह 276

गुरु नानक बाणी जपु तथा योग दर्शन : जीवन दर्शन के संदर्भ में–दविन्द्र सिंह 279

महिला खिलाड़ियों के बीच प्रतिस्पर्धी व्यवहार और नेतृत्व व्यवहार की तुलना–डॉ० विकास प्रजापति; डॉ० अकांक्षा प्रजापति; डॉ० कपिल दवे 284

प्रातिशाख्य परम्परा में वाजसनेयी-प्रातिशाख्य का महत्त्व एवं वैशिष्ट्य–डॉ० बाबूलाल मीना 287

संस्कृत के प्रमुख पुराणों में पर्यावरण चेतना–डॉ० आशा सिंह रावत 290

स्वातंत्रोत्तर भारत की सामाजिक समरसता की चुनौतियाँ एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन–डॉ० हरबंस सिंह 296

ऑन लाईन शिक्षण एवं प्रभाव–डॉ० महेश कुमार शर्मा; डॉ० श्याम सुन्दर कौशिक 300

तुलसीदास के जीवन संबंधी विवादित विविध दृष्टिकोण (जन्म संबंधित विवादित मुद्दे)–डॉ० मंजुला 304

सन साठ के बाद की हिन्दी कविता में भाषा और संवेदना की अन्त: संगति–डॉ० रंजीत सिंह 308

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में सामाजिक आदर्श–डॉ० उमेश कुमार शर्मा 312

मोक्ष : मानव जीवन का परम लक्ष्य–डॉ० प्रिय रंजन 318

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का अभिभावकों के दृष्टिकोण से सर्वेक्षणात्मक अध्ययन (प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में) –डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 321

अलवर जिले में भूमि उपयोग एवं फ़सल प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन–राजेन्द्र परेवा; डॉ० विजय कुमार वर्मा 326

भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण : एक अध्ययन–नागेश्वर कुमार 331

सवाईमाधोपुर ज़िले में जल संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन–अंकुश मीना; डॉ० जगफूल मीना 337

प्राचीन नगरी मल्हार के स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं मृणमूर्तियों का ऐतिहासिक विश्लेषण–मंजू साहू; डॉ० रामरतन साहू 346

संत साहित्य पर आचार्य रजनीश (ओशो) की अभिनव दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 350

भारतीय समाज में बढ़ती आर्थिक व सामाजिक विषमताओं के परिणामों एवम चुनौतियों के परिपेक्ष्य में एक अध्ययन–शुभ सेजवार 354

लॉक डाउन में भिवाड़ी के वायु प्रदूषण स्तर का भौगोलिक विश्लेषण–सत्यदेव 360

कोरोना महामारी से उपजी इंफोडेमिक में आरोग्य सेतु की भूमिका एवं स्थिति का अध्ययन–डॉ० अमरेन्द्र कुमार 364

"अंधा युग" में प्रतीकात्मकता–डॉ० राजेश्वरी सिंह तोमर 368

मानव तस्करी (बाल श्रम) से सम्बन्धित केसों का अध्ययन–सतीश कुमार 371

नवीन शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालयों की भूमिका–डॉ० अर्चना शुक्ला 375

अमेरिका में नस्लीय भेदभाव का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–योगेन्द्र प्रसाद शर्मा 379

बच्चों एवं महिलाओं के विकास में आंगनबाड़ी केंद्र की भूमिका–स्मिता कुमारी 382

बदलते नामो का स्वरूप (इतिहास एवं वर्तमान संदर्भ में)–किसलय कुमार शुक्ल 384

प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार विक्रमशिला : एक संक्षिप्त अवलोकन–राहुल कुमार झा 386

रमेशचन्द्र शाह की कहानियों में समाज के पारम्परिक मूल्यों की प्रासंगिकता–कृपा शंकर 389

कमजोर होती कांग्रेस–अजय कुमार; अरबिंद कुमार 394

जयशंकर प्रसाद के आधुनिकता और दृष्टि निर्माण में नवजागरण की प्रासंगिकता–अखिलेश यादव 397

मौर्य काल में विभिन्न आक्रमणों के ऐतिहासिक प्रभाव का अनुशीलन–शारदा प्रसाद सिंह 400

चम्पूकाव्यस्य परिभाषा रम्यत्वं महत्वम्–दीपक कुमार महतो 402

विभिन्न स्कूल वातावरण में बच्चों में भाषायी अधिग्रहण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–ज्योतिमा पाण्डेय 407

नामघर: असमिया जाति की एकता व समता का प्रतीक–बिद्या दास 411

राष्ट्रीय एकता के लिए अनुवाद साहित्य का महत्व–डॉ० (श्रीमती) रेखा दुबे; श्रीमती अलका यादव 414

उत्तरी बिहार में कौशल विकास: दृष्टि और रणनीति–आलोक कुमार 417

विद्यालय शिक्षा में विद्यार्थियों की विज्ञान अभिरुचि विकसित करने की नव-प्रवृत्तियां–डॉ० महेश्वर गंगाधर कत्त्लावे 419

गांधी जी : एक दर्शन (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)–डॉ० सोनी यादव 423

'जूठन' - दलित जीवन का महाकाव्य–दिलना के 427

राजस्थानी समकालीन चित्रकार रामेश्वर सिंह का कला संसार–डॉ० इन्दु जोशी; कमल किशोर कश्यप 429
समकालीन ख़ौफ़ की सजीव अभिव्यक्ति : 'खुद पर निगरानी का वक़्त'–डॉ० नवनाथ शिंदे 433
मुगल शासकों के अधीन चीन, नेपाल, भूटान, बर्मा, श्रीलंका तथा अफगानिस्तान के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध –प्रो० (डॉ०) रामानन्द राम 438
सूचना क्रांति और बाजारवाद से बदल गई संसदीय पत्रकारिता–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 442
शासन का नवीन स्वरूप : ई-शासन और सुशासन–डॉ० अशोक कुमार 446
आचार्य गौडपाद की द्वन्द्व–न्यायात्मक तर्कणा-पद्धति–डॉ० सुमित कुमार 450
याज्ञवल्क्य-गार्गी-संवाद का दार्शनिक पक्ष–अभिलाशा कुमारी 453
लेखांकन अनुपात की परिकल्पना तथा वाणिज्य–रंजीत कुमार तिवारी 456
जयपुर के पर्यटन विकास एवं संरक्षण का भौगोलिक अध्ययन–शोभा शर्मा 458
हरियाणा के गुरुग्राम ज़िले में लैंगिक असमानता एवं खांप पंचायतों की भूमिका–इन्दु 464
सत्याग्रह का गांधीवादी परिप्रेक्ष्य और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता–डॉ० आशुतोष पांडेय 469
कश्मीर विलय के प्रश्न का कश्मीर समस्या में रुपान्तरण : एक पुनर्दृष्टि–अनुतोष कुमार 472
रामधारी सिंह दिनकर के कथा साहित्य में जीवन मूल्यों का महत्व–प्रदीप कुमार गुप्ता 476
समकालीन समय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की भूमिका–डॉ. अश्वनी चौधरी 479
समकालीन स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श: मन्नू भण्डारी और प्रभा खेतान के विशेष संदर्भ में–रजनी जोशी 482
आदिवासियों के आर्थिक शोषण की समस्या और हिन्दी उपन्यास–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 484
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक व राजभाषा हिंदी : नीति एवं प्रयोग–आरती शर्मा 487
तत्वों के आधार पर उपन्यास 'पुनर्नवा' का तात्विक विश्लेषण–डॉ. एस. प्रीति 495
अनुभव से अर्जित भावभूमि के कवि : संतोस श्रेयांस–डॉ० एस० रजिया बेगम 503
बिलासपुर जिले का ऐतिहासिक अध्ययन (बिलासपुर रेलवे जोन आंदोलन के विशेष संदर्भ में) –श्रीमती हंसा तिवारी; डॉ. अंजू तिवारी 505
नव सहस्राब्दि में हिंदी तथा राजभाषा के रूप में उसकी स्वीकृति–हेमंत कुमार यादव 508
गुरु नानक साहिब जी का जीवन-वित्तांत: कवि वीर सिंह बल रचित ग्रंथ 'गुरकीरत प्रकाश' के विशेष संदर्भ में–गुरमिंदर सिंह 511
दलित आंदोलन: राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ में गांधी और अम्बेडकर का दृष्टिकोण–काजल 516
अलवर ज़िले में ग्रामीण विकास योजनाओं का अध्ययन–प्रदीप कुमार; डॉ० अनीता माथुर 518
राजस्थान के बाड़मेर जिले में ग्रामीण मानव अधिवासों का वितरण–जसराज 522
शानी के उपन्यासों में नारी चेतना–सोनिका कौशल 527
लोहिया और आर्थिक दशर्न–डॉ० मोहित कुमार लाल 529
कर्ण सिंह 'कर्ण' की काव्य शैली और काव्य सौन्दर्य–डॉ० जे० आत्माराम 532
दलित उत्पीडन का दस्तावेज–डॉ० रतिका पंचारपोयिल कोट्टायी 536
वर्तमान समय में आपदा चुनौतियों के प्रबंधन में समाजकार्य क्षेत्र की प्रासंगिकता–डॉ० शिवसिंह बघेल; डॉ० सुशील कुमार पाण्डेय 538
सामाजिक न्याय एवं वाल्मीकि जाति : हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 541
स्वामी महावीर के शिक्षाओं की वर्तमान में प्रासंगिता–प्रो० रश्मि मेहरोत्रा; ऊषा यादव 546
हिन्दी उपन्यास की सुदीर्घ परम्परा और स्त्री लेखिकाएँ–डॉ० सुरेन्द्र सिंह; डॉ० यदुवीर सिंह खिरवार 549

'मृदुला गर्ग की कहानियों में समकालीन नारी' ''समकालीन कहानी का अस्तित्व''–मंजू कुमारी 552
बहुजन उपन्यास में बदलता परिवेश–डॉ० राजेंद्र घोडे 554
अनामिका : व्यक्तित्व और कृतित्व–स्वर्णिम शिप्रा 556
नेपाल में चीन के बढ़ते कदम: भारत के परिपेक्ष्य में–आशुतोष कुमार 559
मनुस्मृति के परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श–डॉ० ईशरत सुल्तान 563
हिन्दी कथा साहित्य में पूंजीवादी व्यवस्था एवं पृष्ठभूमि–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 566
मार्गदर्शक तुलसीदास–रघुनन्दन हजाम 580
भारत में नव-उदारवादी आर्थिक नीतियों का उद्भव एवं विकास–डॉ० राहुल देव 583
संत सुंदरदास और उनका 'सुन्दरविलास'–वीरेश कुमार 588
आचार्य राम चंद्र शुक्ल का हिंदी में विज्ञान सम्बन्धी चिंतन में योगदान (विश्व प्रपंच की भूमिका के सन्दर्भ में)
–सुजीत कुमार त्रिपाठी 'पुरकैफ' 590
बिहार में राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक महत्व के कारण पर्यटन स्थलों का विकास–मनु कुमार; डॉ० राधेश्याम सिंह 593
वैश्विक एकता और अखंडता की अभिलाशी प्रवासी कविताएं (सुरेशचन्द्र शुक्ल के 'गंगा से ग्लोमा तक' का संदर्भ)
–प्रो० (डॉ.) सुधा जितेन्द्र; रमनदीप कौर 597
असम में कोरोना महामारी : साहित्य और सोशल मीडिया–मिजानुर हुसैन मण्डल 603
जम्मू कश्मीर के पुराणों का महात्म्य–मीना कुमारी 606
रहस्यवादी कवि नुन्द ऋषि के श्रुकों का भाषावैज्ञानिक परिचय–परवेजा अखतर 611
सामाजिक अनुसंधान तथा तकनीकी विकास–डॉ० अनुराग कुमार पाण्डेय 615
दक्षिण एशिया क्षेत्र में ड्रग्स और छोटे हथियारों की तस्करी–मिथिलेश; डॉ० शकील हुसैन 619
मौर्य काल से वर्तमान काल तक यक्ष पूजा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रो० देवेन्द्र कुमार गुप्ता; अवधेश कुमार 623
बूंदी जिले के बरड़ क्षेत्र में खनन उद्योग का आर्थिक-सामाजिक पर्यावरण पर प्रभाव–जुगराज मीना 626
गोलमेज सम्मेलन : दलित सामाजिक समस्या एंव राजनीतिक अधिकारों का एक अध्ययन–सुरेन्द्र 631
भारत छोड़ो आंदोलन में छत्तीसगढ़ के सतनामी समाज की भूमिका–श्रीमती अनिता बरगाह; डॉ० राजीव शर्मा 634
हरियाणा के सिरसा जिला में भूमि किराया अधिनियम एवं कृषि परिवर्तन (1803-1900)–सुरेन्द्र सिंह 638
शाही नौसैनिक विद्रोह (1946) व उच्चवर्गीय भारतीय नेताओं का रवैया–मोहन लाल 642
भारत -रूस संबध : सामरिक संबंधो का 21 वीं शताब्दी के संदर्भ में एक अध्ययन–डॉ० रणबीर गुलिया; अमित कुमार 646
संपोशणीयता की दृष्टि का भारतीय आधुनिक दृष्य कला में प्रयोग: एक विवेचन–अर्जुन कुमार सिंह; अमित कुमार दास 650
भारत के मुकाबले चीन का नेपाल में बढ़ता प्रभाव : एक अध्ययन–सत्येन्द्र कुमार 657
महिला सशक्तिकरण में लोकनीति का योगदान–सीमा 660
पर्यावरण-संरक्षणम्–डॉ० मधु बाला मीना 663
अलवर मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र का विकास एवं सम्भावनाएँ–प्रतिभा बैरवा 667
भारत में मेक इन इण्डिया की अवधारणा और आर्थिक विकास का सन्दर्भ–प्रोफेसर (डॉ०) संजय कुमार झा 672
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नये दिशा निर्देश पी.एच.डी. शाोध उपाधि के सन्दर्भ में–डॉ० संजीत कुमार साहू;
डॉ० राकेश कुमार डेविड; डॉ० शोभना झा 676
राष्ट्रीय आन्दोलन में सुभाष चन्द्र बोस की भूमिका–संतोष कुमार शर्मा 680
ब्रिटिश कालीन भारत में कृषक समस्या (चंपारण के विशेष संदर्भ में)–प्रभाव और परिणाम–धीरज कुमार 684
वैश्विक महामारी एवं मानसिक स्वास्थ्य संकट मनोविज्ञान की भूमिका एवं मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता–डॉ० रश्मि पंत 689

नीमराना में ठोस अपशिष्टों का भौगोलिक अध्ययन—अरविन्द शुक्ला; डॉ० खेमचन्द शर्मा 693

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् (शि.पु. को. रू. सं. के संदर्भ में)—डॉ० गोपेश कुमार तिवारी 698

महिला रोजगार पर शिक्षा का प्रभाव: एक प्राथमिक विश्लेषण—डॉ० अरविन्द कुमार 701

यौगन्धरायण में सांस्कृतिक दर्शन—डॉ० वेद प्रकाश मिश्र; श्रीमति नगीता सोनी 705

भारत में जनसंख्या नियंत्रण नीति : एक सामाजिक-विधिक अध्ययन—रमेश कुमार प्रजापति 709

'हिन्द स्वराज' में वर्णित विचारों का आज के भारत के लिए प्रासंगिकता—राजेश कुमार 714

राजस्थान में राजनीतिक दलों की सहभागिता एवं प्रदर्शन—डॉ० जनक सिंह मीना 717

भारत-मालदीव समकालीन द्विपक्षीय संबंध—विजय शंकर चौधरी 724

स्वतन्त्रता के बाद गोरखपुर में हिंदुत्व का प्रसार और सहायक संस्थाए—प्रमोद कुमार पाण्डेय 728

कामा तहसील में अवैध खनन एवं पर्यावरण पर प्रभाव—चन्द्र शेखर; डॉ० गायत्री यादव 732

प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता मिशन का ग्रामीणों के उत्थान में योगदान—डॉ० पंकज मिश्र 737

छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना—डॉ० आलोक प्रभात 740

भारतीय लोकतंत्र में सोशल मीडिया का प्रभाव: गैर-हिंदी भाषी राज्यों के विशेष संदर्भ में—डॉ० संजय सिंह बघेल 743

सार्वजनिक वितरण प्रणाली, चुनौतियों और समाधान—जलेंद्र कुमार शर्मा 752

यज्ञानुष्ठान में वेदांगों की उपादेयता—कुमुद कुमार पाण्डेय 759

पहाड़ी अंचल में बसी काँगड़ा चित्र शैली का विकासक्रम—डॉ. निशा गुप्ता 765

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में पाठ्यक्रम व्यवस्था—डॉ० सुनीता 769

श्रीमद्भागवद्गीता में वर्णित नैतिक शिक्षा—डॉ० सरोज कुमार जायसवाल 774

ज्योतिबा फुले के कार्यों में मानवतावादी चिंतन—डॉ० अजय बहादुर सिंह 777

उत्तर आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में अलका सरावगी का उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद'—निशा रानी 781

भारत में कोरोना और स्वदेशी संकल्प—डॉ० युवराज कुमार 784

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में नारी (आधुनिकता के विशेष संदर्भ में)—संगीता कुमारी पासी 790

विकास के क्रम में भारतीय समाजशाास्त्र—डॉ० दिनेश व्यास; डॉ० गौरव गोठवाल 793

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन—प्रेरणा सेमवाल 798

सभ्य समाज की असभ्य सोच-चीफ की दावत—मीनाक्षी शर्मा 805

मकराना शहर में खनन एवं औद्योगिक गतिविधियों से बढता ध्वनि प्रदूषण: एक चुनौती—निशा चौधरी; डॉ० रश्मि शर्मा 807

वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण—सुनील कुमार 813

वैश्विक महामारी : समावेशी विकासीय परिप्रेक्ष्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन (अनुसूचित जातियों के विशेष संदर्भ में)—डॉ० चन्द्रा चौधरी 818

सार्त्र और मार्क्सवाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन—श्याम रंजन पाण्डेय 823

अश्विनीकुमार : एक कथा—डॉ० नीलम सिंह 826

कोविड-19 और भारतीय शिक्षण प्रणाली में बदलाव-एक अध्ययन—डॉ० राजेश्वर दिनकर रहांगडाले 828

ग्रहण का वैज्ञानिक स्वरूप—डॉ० भगवानदास जोशी 831

राहुल सांकृत्यायन की कहानियों में अभिव्यक्त समाज : एक विश्लेषण—डॉ० कश्मीरी लाल 836

सामाजिक अवमूल्यन में पत्रकारिता की भूमिका—प्रो० (डॉ०) अरुण कुमार भगत; प्रो० अमिताभ श्रीवास्तव 839

सूफी काव्य में सृष्टि का सौंदर्य और प्रेम चित्रण—डॉ० दिलीप कुमार कसबे 843

भारत-पाकिस्तान संबंध एवं आतंकवाद—डॉ० सुरेन्द्र सिंह 846

बुद्धिमता के खोखले अहं में पनपते विमोह का यथार्थ चित्रण : आपका बंटी–डॉ० लवलीन कौर 852
कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय क्षेत्रों में प्रवासी श्रमशक्ति की व्यवसायिक गतिविधियां (एक सामाजिक विश्लेषण)–विजेता पवार 857
आधुनिक दलित साहित्य की चेतना और प्रेमचंद के साहित्य में निहित दलित चेतना : एक तुलनात्मक अध्ययन–प्रांजल कुमार नाथ 861
मिथकीय चेतना : अर्थ, परिभाषा और अवधारणा–सचिन मदन जाधव 865
क्षेत्रीय भू-राजनीति एवं भू-आर्थिक आयाम का सैद्धांतिकीय विश्लेषण–रत्नेश कुमार यादव 869
भरतपुर ज़िले में जल जनित रोगों में मलेरिया का तुलनात्मक अध्ययन–देवेन्द्र कुमार शर्मा 874
समकालीन भारत के संदर्भ में एकात्म मानववाद–मुनमुन 881
रचनात्मक अभिव्यक्ति और जैनी मेहरबान सिंह–डॉ० राम बिनोद रे 885
कोशी अंचल की लोक कथाओं का विश्लेषण–विनय कुमार चौधरी 888
अन्य पिछड़ा वर्ग के सर्वांगीड विकास हेतु किए गए सरकारी प्रयासों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन–मनोज कुमार वर्मा 892
मासिक धर्म से संबंधित समस्याओं का यौगिक चिकित्सा व प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा प्रबंधन–डॉ० राधिका चन्द्राकर; डॉ० सावित्री साहू; श्री आशीष धार दीवान; सुश्री मालती बाग 895
राजेंद्र यादव का आत्मकथ्यांश 'मुड-मुड़के देखता हूँ...': वैचारिक पक्ष–डॉ० साताप्पा लहू चव्हाण 901
कालिदास के रूपकों में प्रमुख पुरुष-पात्रों की विनियोजना का वैशिष्ट्य–सुस्मिता रानी 904
राही मासूम रज़ा के हिन्दी उपन्यासों में लोकजीवन–ईश्वर चन्द्र 908
भारत छोड़ो आंदोलन एक जन-विद्रोह–लव कुमार 912
संयुक्त प्रान्त में रेलवे के विकास के सामाजिक प्रभाव (1860-1914)–रमेश कुमार 916
कैमूर जिला में सरकारी योजनाओं का महिला साक्षरता पर प्रभाव–रीता कुमारी 920
राष्ट्रीय आंदोलन में सत्य अंहिसा के पुजारी महात्मा गाँधी: एक अध्ययन–डॉ० संजीव 924
सुभाषचन्द्र बोस के राजनीतिक विचारधारा पर महात्मा गाँधी के प्रभाव का ऐतिहासिक अध्ययन–तौकीर आलम 926
राजनीतिक दलों का लोकतांत्रिक व्यवस्था में समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० लवलेश कुमार 930
भारत में हरित क्रांति का एक संक्षिप्त मूल्यांकन–अनूप कुमार सिंह 932
गाँधी : मनुष्य से महात्मा–डॉ० दिग्विजय नाथ चौबे 936
वैश्वीकरण एवं भारत की पर्यावरण नीति: एक अनुशीलन–सुनीता महतो 939
अहिंसा......... एक दृष्टि–डॉ० मोनिका गर्ग; डॉ० हिमानी भाटिया 944
अठारह सौ सत्तावन की क्रांति में दलित महिलाओं की सक्रिय भूमिका- एक ऐतिहासिक अध्ययन–बबली कुमारी 947
स्वतंत्रता संग्राम में मौलाना आजाद की पत्रकारिता की भूमिका : 'अल-हिलाल' के विशेष संदर्भ में–रूखसाना बानो 951
उस्ता कला (16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य)–मरियम बानो 955
दरोगा प्रसाद राय एवं बिहार का नेतृत्त्व–दिवा कान्त किरण 957
आदिवासी बहुल क्षेत्र में उच्च शिक्षा की स्थिति (राजस्थान के डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ जिलों का अध्ययन)–डॉ० मुख्त्यार अली 960
वर्तमान परिवेश में निर्देशन की आवश्यकता–सरोज कंवर राठौड; प्रो० मंजू शर्मा 971
दर्शन शास्त्र के स्तम्भत्रय (ज्ञानयोग तथा ज्ञानोपलब्धि के विशेष सन्दर्भ में)–उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 976
ज़िन्दगी 50-50 : अपूर्णता से पूर्णता की तलाश–डॉ० निशा जम्वाल 981
आर्थिक विकास की गांधीवादी परिकल्पना और लघु कुटीर उद्योग–डॉ० राजेश कुमार 983
स्वच्छंदतावाद का सैद्धान्तिक विवेचन–डॉ० सरिता 985
हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित पूर्वोत्तर का राजनीतिक जीवन–संजीव मण्डल 988

बाल अपराध के निवारण में बाल संप्रेक्षण गृह की भूमिका (बिलासपुर जिले के संदर्भ में)–विकास मरकाम; डॉ० रीना तिवारी 997
कोरबा जिले के आदिवासियों द्वारा विभिन्न लघु-वनोपज के संग्रहण करने एवं विक्रय की प्रक्रिया का अध्ययन
–प्रिंस कुमार मिश्रा; प्रो० प्रभाकर पाण्डेय 1003
ज्योतिष के वैज्ञानिक तत्व की प्रमाणिकता : एक अध्ययन–गणेश प्रसाद तिवारी; प्रो० वेद प्रकाश मिश्र 1008
ग्रामीण स्वास्थ्य: सुविधाएं, समस्याएं एंव चुनौतीयों का एक अध्ययन (ग्राम चिनौरी कांकेर जिले के संदर्भ में)
–मंजरी ग्वाले–डॉ० रीना तिवारी 1014
अनुसूचित जनजातियों में रोजगार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की स्थिति का आंकलन–डॉ० सरला चतुर्वेदी; इम्तियाज खाँन 1039
अनुसूचित क्षेत्रों के विकास में पेसा की भूमिका अलोचनात्मक अध्ययन (नारायणपुर जिले के संदर्भ में)
–डॉ० ऋचा यादव; सुदर्शन कुमार मण्डल 1044
कोरोना ने भारतीय अर्थव्यवस्था को दिया झटका–डॉ० अनामिका तिवारी 1049
पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में भारत छोड़ो आन्दोलन–डॉ० रितेश्वर नाथ तिवारी 1054
मनोविज्ञान पर दर्शनशास्त्र का प्रभाव–मनीष कांत; शशि शेखर द्विवेदी 1058
महिला सशक्तिकरण: आर्थिक सशक्तिकरण–डॉ० समरेंद्र शर्मा 1062
वेदों में विश्वबंधुत्व की भावना–तरूण कुमार सिंह 1065
विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी का स्वरूप–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 1068
जलवायु परिवर्तन का कृषि पर का प्रभाव–प्रविण कुमार एम. लोणारे 1071
भारतीय राजनीति में महिलाओं की सहभागिता : एक अध्ययन–प्रा० एच० पी० पारधी 1074
महर्षि दयानन्द सरस्वती और दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन में समरूपता का अध्ययन–डॉ० संजय कुमार; डॉ० प्रमोद कुमार 1076
महिला सशक्तीकरण में उच्च शिक्षा का योगदान–श्वेता पांडे 1084
वर्तमान सामाजिक गतिशीलता में व्यक्ति तथा समाज के अंतरसंबंधों का एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० विधान चन्द्र भारती 1090
कन्या भ्रूण हत्या : भारत की एक गम्भीर समस्या–भूपेन्द्र प्रताप सिंह 1095
निजी विद्यालयों पर वैश्विक महामारी के (कोविड-19) प्रभाव का अध्ययन: सरदारपुर तहसील के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 1103
प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विवाह पद्धति एवं वैवाहिक विधि-विधानों का एक ऐतिहासिक अध्ययन–सम्पत्ति; प्रो० डी०पी० सकलानी 1110
अमरकंटक परिक्षेत्र के विकास में कृषि का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन–निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल 1115
अल्पसंख्यक समुदाय का मतदान व्यवहार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में–रेणु सिंग; डॉ० संगीता घई; डॉ० अजय चंद्राकर 1122
कश्मीरी आदि कवयित्री ललद्यद और उनका रहस्यवाद–दीपिका शर्मा 1126
पर्यावरण संरक्षण की वैदिक दृष्टि–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 1129
भारतीय नागरिकों के मूल अधिकार, निदेशक तत्त्व और मूल कर्तव्य–प्रतिभा सिंह 1133
गाजीपुर जनपद में प्राकृतिक आपदाओं का सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर प्रभाव–कौसर नाजमी 1136
छत्तीसगढ़ के लोक-जीवन में राम–डॉ० राजेश दुबे; डॉ० (श्रीमती) शैल शर्मा; ज्योतिबाला साहू 1139
भारतेंदुयुगीन साहित्य पर भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रभाव–डॉ० अपराजिता जॉय नंदी 1142
उपभोक्तावाद, आर्थिक विकास से उत्पन्न होने वाली एक सामाजिक समस्या–डॉ० जयराम बैरवा 1145
उपसंहार : अंत ही मानवता का आरंभ–प्रीति पाण्डेय 1150
हिंदी के आदिवासी केंद्रित उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन–डॉ० मालोजी अर्जुन जगताप 1155
"ग्रामीण महिलाओं की पंचायती राज में भूमिका"–डॉ० संजय बुदेला; किरण कुमारी 1158
छात्रों की अध्ययन संबंधी आदतों पर पारिवारिक व सामाजिक वातावरण का प्रभाव–डॉ० मंजू शर्मा; मनु सिंह 1161
"एक राष्ट्र, एक चुनाव": विश्लेषणात्मक अध्ययन–खुशबू गोस्वामी; प्राफेसर (डॉ०) सपना गहलोत 1166

बालिका शिक्षा के विकास में आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका–प्रो० (डॉ०) मंजू शर्मा; टीना चौधरी 1173

भारत में थर्ड जेंडर स्थिति : बेहतर और बदत्तर?–दिव्या 1179

स्वच्छता पर गाँधीवादी दृष्टिकोण–गुलशन कुमार 1183

मानवाधिकार एवं महिलाऐं : राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में–समिधा सिंह 1186

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों का परीक्षण–फरीद आलम 1189

समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में अनु मेहता की कविताएँ–डॉ० अरविन्द कुमार यादव 1192

स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की सहभागिता–डॉ० संध्या जायसवाल; विनीता गुप्ता 1197

भारतीय नयी शिक्षा नीति (2020) में गांधी–देवेन्द्र कुमार 1203

लैंगिक असमानता की समस्या और मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ–डॉ० गुलाम फरीद साबरी 1205

द्वारिका प्रसाद तिवारी "विप्र" के काव्य में गांधीवाद का प्रभाव–डॉ० गौकरण प्रसाद जायसवाल 1208

वर्तमान व्यावसायिक परिदृष्य में ई-कामर्स की उपयोगिता–डॉ० दिलीप कुमार गुप्ता 1213

असहयोग आंदोलन में डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की भूमिका–मो० फिरोज अंसारी 1218

भारतीय संस्कृति एवं एकात्म अर्थ चिंतन–प्रो० शिवदयाल सिंह; धीरज कुमार पारीक 1220

विद्यार्थियों के लक्ष्य निर्धारण में आकांक्षा स्तर की उपादेयता–मधु गुप्ता; डॉ० रेखा शुक्ला 1223

छिन्नमस्ता: अस्तित्व एवं अस्मिता की तलाश–नम्रता; डॉ० प्रभात रंजन 1228

भूमण्डलीकरण के दौर में गाँव : 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास के संदर्भ में–डॉ० रम्या बालन० के 1231

शेखावाटी के पर्यटक स्थल एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० विनोद कुमार सैनी 1235

हरियाणा में प्राथमिक कार्यों में लैंगिक विषमता: एक प्रादेशिक विश्लेषण–डॉ० विजय प्रकाश 1239

इतिहास के दृष्टिकोण से साहित्य, मनोविज्ञान और वाणिज्य का अवलोकन–डॉ० स्नेहलता सिंह 1245

भूमंडलीकरण और नई कहानीकार–अनवर खान; डॉ० बी०एन० जागृत 1248

गांधीवादी राज्य : भारत में एक विकल्प–सुभाष चन्द उपाध्याय 1250

नई शिक्षा नीति 2020 और दिव्यागंता–डॉ० रितेश सोलंकी 1254

वर्तमान संदर्भ में बच्चे के पालन-पोषण में माता-पिता की भूमिका : एक सामान्य विश्लेषण–संजीव कुमार 1261

झुग्गी झोपड़ियों में शैक्षिक समस्याएं एवं चुनौतियाँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० मानस उपाध्याय 1264

जैनेन्द्र के उपन्यासों में जीवन दर्शन एवं उसका महत्व–आशीष यादव 1269

मरिआई : महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० अतुल अर्जुन ओहाल 1271

हिन्दी साहित्य में मीडिया का बदलता स्वरूप–मीनाक्षी सिंह 1273

रहीम और तुलसी रचित नीति के दोहों की प्रासंगिकता–डॉ० निर्मल चक्रधर 1276

भारतीय जीवन – मूल्य : विदेशियों की दृष्टि–डॉ० सुप्रिया पी० 1280

यात्रा-वृत्तान्त में पाकिस्तान का साक्ष्य (चयनित यात्रा-वृत्तान्तों के संदर्भ में)–स्मृतिरेखा नायक 1282

विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी का स्वरूप–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 1287

मोहन राकेश के नाटकों के नायक–प्रा० डॉ० विजया जगन्नाथ पिंजारी शिंदे 1290

विशिष्ट भौतिक विकास और व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए विशेष योजनाओं में छात्रों के लिए खेल–डॉ० मंजू शर्मा; आरती गुप्ता 1294

भारतीय खेल प्रबन्ध - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० अमित कुमार सिंह 1300

अभिनय प्रस्तुतिकरण में सात्विक भावों का विश्लेषण–डॉ० आदीश कुमार वर्मा 1303

नरेंद्र वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० सविता मिश्रा; चंचल बाला 1305

राजस्थान में पर्यटन विकास : उदयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में–भूमिका मेघवाल; डॉ० वन्दना वर्मा 1308
भारत में ब्रिटिश कालीन न्याय व्यवस्था : ऐतिहासिक परिचय–सौरभ कुमार जैन 1314
विकास की वर्तमान अवधारणा और गांधीवाद–डॉ० पिंकी पुनिया 1317
सीकर जिले में भूमिगत जल स्तर : श्रीमाधोपुर तहसील का एक विश्लेषण–दिलभाग; डॉ० मोनिका रोत 1322
राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-साहित्य में ग्रामीण लोकजीवन एवं सांस्कृतिक परिदृश्य–निशा चौहान 1325
गांधीवादी दृष्टिकोण में कल्याणकारी राज्य का सिद्धांत–रेखा सक्सेना; ऋतेश भारद्वाज 1329
इतिहास भर में अफ्रीका–प्रशांत कुमार वशिष्ठ 1335
बांग्लादेश में बदलती दलीय प्रणाली की रूपरेखा–वीना कुकरेजा 1339
भारतीय राष्ट्रवादी विचार की विभिन्न धाराएँ–डॉ० प्रशांत देशपांडे 1344
भारत में कारावास की नैतिकता: एक अध्ययन–डॉ० रेखा ओझा 1347
भारत में बाजारीकरण की उत्पत्ति व आहत मुद्राओं का बाजार मूल्य–डॉ० प्रीति सिंह 1350
जैन धर्म और उसकी तत्त्वमीमांसा–डॉ० सरोज राम 1352
संस्कृत भाषा का इतिहास और पुनरुत्थान–डॉ० योगिता मकवाना 1354
भूगोल का सामाजिक विज्ञानों से संबंध और प्रयुक्त अध्ययन तकनीकें–डॉ० राजेंद्र प्रसाद 1356
'जाति विषमता एक अभिशाप' डॉ. लाल के नाटकों के विशेष संदर्भ में....–डॉ० नानासाहेब जावले 1359
महाभारत के राक्षसों की कथाएँ–प्रवीण मिश्रा; डॉ० वेदप्रकाश मिश्र; डॉ० रेनू शुक्ला 1362
राजस्थान में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम : एक अध्ययन–डॉ० बलबीर सिंह 1366
सरकारी योजनाओं में महिलाओं का सशक्त योगदान–श्रीमती गायत्री तिवारी; डॉ० अंजू तिवारी 1368
शेखावाटी के पर्यटक स्थल एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० विनोद कुमार सैनी 1371
संस्कृत-सृजन : अपेक्षा एवं उपलब्धि–ऊषा नागर 1375
भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा–डॉ० रूपेश कुमार चौहान 1379
मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 1383
'तोपो गोनअ' नामक गालो लोक गाथा में वर्णित भाई-बहन संबंध–जुमनू कामदाक 1387
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार में पिछड़ी जातियों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का विकास–राजेन्द्र कुमार 1392
नेहरू के समाजवाद एवं अंतर्राष्ट्रीयवाद की अवधारणा–मो० जाहिद शरीफ 1395
कृष्ण लीलागान की मनौवैज्ञानिक पृष्ठभूमि–डॉ० मृत्युंजय सिंह 1399
जनसंख्या वृद्धि की समस्या- कारण एवं निदान–नेहा रावत 1404
रायका समुदाय की मौसमी प्रवास के दौरान समस्याएँ : सिरोही जिले का एक भौगोलिक अध्ययन
–प्रो० पी० आर० व्यास; ललित कुमार मोबारसा 1410
राजस्थान एवं गुजरात के जनजाति समुदाय के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, समायोजन एवं आकांक्षा का अध्ययन
–संजय कुमार मीना 1415
मादक द्रव्य व्यसन एवं सद्वृत–अंकित तिवारी; प्रो० चंद्र शेखर पांडेय 1424
व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के बीच संघर्ष का समाधान : प्रस्तावना में है निदान–प्रो० पवन कुमार 1427
भोटिया जनजाति का ऋतु प्रवास तहसील मुनस्यारी के सन्दर्भ में–डी० एस० परिहार, दीपक 1430
कश्मीर समस्या की उत्पत्ति एवं समाधान–जितेन्द्र भारती 1440
भारत में संघवाद एंव राज्यों की स्वायत्तता: एक अध्ययन–आशीष कुमार सिंह 1447

छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की उपयोगिता–डॉ० जयपाल सिंह प्रजापति; श्री बीरू लाल बरगाह 1450

संस्थागत मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व–डॉ० पूनम भूषण 1455

ब्लेंडेड लर्निंग-एक नवाचार–डॉ० प्रगति भटनागर; डॉ० मनीष भटनागर 1458

पुनरूत्थान का खतरा और साहित्य–अभिषेक चारण 1464

महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों के नये स्वरूप–श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ० श्रीमती रीना तिवारी 1468

राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य–शुचिस्मिता मिश्रा 1472

अमित अम्बालाल के चित्रों में 'यू टर्न'–डॉ० शाहिद परवेज 1474

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का शैक्षिक चिन्तन–सरिता; प्रो० बी०एल० जैन 1478

तुलसीदास के साहित्य में आदर्श परिवार की संकल्पना–रामयश पाल 1481

बिहार में च्डम्ळच योजना : एक अध्ययन–राकेश कुमार; प्रो० हिमांशु शेखर 1484

आत्मनिर्भरता एवं नैतिक मूल्य–डॉ० पूजा कुमारी 1489

वैश्वीकरण और ग्रामीण भारत पर इसका प्रभाव–डॉ० राज कुमार प्रसाद 1492

प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री चेतना, स्त्री विमर्श–प्रिया सिंह 1495

आत्म निर्भर भारत : प्राचीन काल से आधुनिक काल तक COVID-19 के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० भारत भूषण 1498

समाजोत्थान में हरियाणवी सन्त-काव्य का योगदान–शीला देवी 1501

प्रधानमंत्री जनधन योजना एक तथ्यात्मक अध्ययन–(प्रोफेसर) डॉ० हिमांशु शेखर; संजीव कुमार 1504

स्वच्छ भारत अभियान : पर्यावरण संरक्षण के लिए सकारात्मक कदम–डॉ० विकास शर्मा 1509

पहाड़ की स्त्रियों का पहाड़ भर दु:ख–शालिनी देवी 1513

राजनीतिक सहभागिता के विभिन्न स्वरूप का अध्ययन–कृष्णा बैठा 1517

'पाश': क्रांति का अग्रदूत–इन्दरप्रीत कौर 1519

कोरोना काल में विद्यार्थियों पर ई-लर्निंग का प्रभाव–डॉ० आभा रानी 1522

बेहतर भविष्य के लिये ठोस अपशिष्ट निपटान के नवीन आयम–मोहिनी सरन एवं डॉ. सलाहउद्दीन मोहम्मद 1525

उच्च शिक्षा हेतु अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रति मुस्लिम महिलाओं की जागरूकता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
–डॉ० सौम्या शंकर; नसीम अख्तर 1531

समकालीन भारतीय चित्रकला में चित्रकार एस०एच० रज़ा की कलाकृतियों में रंगों का प्रतीकात्मक अध्ययन–निशा माहौर 1534

शिवाद्वयवादी नेत्रतन्त्र में सृष्टिप्रक्रिया एवं साधना के संदर्भ में शिवतत्त्व विमर्श–डॉ० प्रदीप 1538

मॉरीशस में श्रीराम कथा एवं भारतीय संस्कृति–उमेश कुमार सिंह 1542

बच्चों का पालन पोषण और अभिभावक–डॉ० अलका 1546

बच्चों के विकास में प्री-प्राइमरी शिक्षा और किंडरगार्टन की भूमिका–डॉ० शंकर जी 1549

बीड़ झुंझुनू कंजर्वेशन रिजर्व का पारिस्थितिकीय अध्ययन–डॉ० मन्जू चौधरी 1551

छत्तीसगढ़ के श्रमिको मे कोविड माहमारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)
–संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी 1555

जीवनसाथी चयन में कामकाजी महिलाओं की भूमिका का सामाजिक विश्लेषण–डॉ० अर्चना सिंह; शैलजा वर्मा 1560

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों में प्रेम संवेदना–मोहन पुरी 1564

क्षेत्रीय विकास, विशमताएँ व पलायन, मुद्दे एवं चुनौतियां-उत्तराखण्ड के तीन मैदानी जनपदों का एक विश्लेषण–सुनील सिंह 1568

वर्तमान भारतीय विधिक शिक्षा के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ–अरविन्द कुमार गुप्ता1 1576

भारतीय राजनीति के मुखौटे को बेनकाब करती धूमिल की कवितायें–डॉ० शंकर शर्मा 1580

दृष्टिकोण

गोंड राजाओं के शासन का प्रतीक : देवगढ़ का किला–प्रो० बिंदिया महोबिया 1584

प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में स्त्री सार्वभौमिकता–नीलम सागर 1589

हिमाचल के कुल्लू जनपद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि–हेम राज 1592

हिंदी के प्रमुख दलित आत्मकथाओं का परिदृश्य–सिद्धलिंग गंगु; डॉ० सविता तिवारी 1594

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में चित्रित पारिवारिक सद्‌भाव–डॉ० बिजेंद्र कुमार 1597

सूर्यबाला जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–प्रकाश मानू जाधव; डॉ० सविता तिवारी 1602

मुगल काल में फारसी साहित्य-संस्कृति–डॉ० मो० मोतिउर रहमान खान 1606

डाक टिकट पर पानी–विनय पटेल 1610

छत्तीसगढ़ में ई-गवर्नेस से प्रशासनिक विकास पर प्रभाव व चुनौतियां (गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में)
–अदिति तलवरे; डॉ० प्रमोद यादव 1614

आदर्श मित्र और मित्रता के सन्दर्भ में रहीम–प्रो० मन्जुनाथ एन० अंबिग 1617

हिन्दी कविता में यायावर 'श्री गुरु नानक देव'–डॉ० सुनीता शर्मा 1621

जनपद अल्मोड़ा में पर्यटन का विकास, सम्भावनाएं तथा समस्याएं, कुमाऊँ हिमालय, उत्तराखण्ड–महेन्द्र सिंह; डॉ० दीपक 1627

लोक साहित्य का स्वरूप एवं वर्गीकरण : एक विश्लेषण–ममता कुमारी 1637

भूमि उपयोग का मानव जीवन पर प्रभाव : - उदयपुर जिले का एक भौगोलिक अध्ययन–कैलाश चन्द्र मीणा 1642

भारतीय इतिहास में व्यापारिक संघर्ष विशेष संदर्भ :- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार विस्तार–डॉ० (श्रीमती) अंजू कुमारी 1645

भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 1650

भारत-मध्य एशिया गणराज्य: चुनौतियाँ और संभावनाएँ–गुरदीप सिंह 1655

ब्रिटिश प्रशासन और भारतीय राष्ट्रवाद : एक अध्ययन–रितेश कुमार 1659

छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन–प्रज्ञा सिंह 1661

भारत में कृषि के विकास में कृषि प्रबंधन की भूमिका–प्रियंका 1666

सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में व्यक्त दलित स्त्री चेतना–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 1669

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: सक्षमता का सबल साधन–डॉ० अनिल कुमार पाण्डेय 1672

उत्तराखण्ड में सड़क-पुल आन्दोलन में गढ़वाली पत्र की भूमिका–डॉ. मनोज सिंह बाफिला 1675

मान्यवर कांशीराम की विचारधारा का दलित कविता पर प्रभाव–मुकेश कुमार भारतीय 1680

गाँधी दर्शन में ब्रह्मचर्य की अवधारणा–दीक्षा 1686

भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक शिक्षा के अधिकार की ऐतिहासिक समीक्षा–डॉ० शिखा चतुर्वेदी 1688

'हंस' सम्पादकीय दृष्टि और हाशिए का समाज–ममता यादव; डॉ० यशवन्त वीरोदय 1691

औपनिषदिक साहित्य में कर्म चिन्तन–डॉ० श्रीमती अर्चना 1694

कार्यस्थल पर कामकाजी महिलाओं की स्थिति का अध्ययन–प्रियंका दीक्षित; डॉ० राकेश प्रताप सिंह 1697

दलित साहित्य और प्रेमचन्द–विजय प्रकाश 1700

नव-उपनिवेशवाद एवं सांस्कृतिक विमर्श (1990 के बाद)–योगेन्द्र कुमार सिंह 1702

भारत में उच्च शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी–डॉ. श्वेता रस्तोगी 1706

पंथनिरपेक्षता की भारतीय अवधारणा–डॉ० दीपशिखा चतुर्वेदी 1709

पर्यावरणीय संचेतना एवं नैतिक-मूल्यों का आव्यूहन–डॉ० माया शंकर 1712

परम्परा एक दृष्टि: रामविलास शर्मा–डॉ० शिवाजी 1716

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवम् छात्राओं का शिक्षा में नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन
–सरस्वती देवी; डॉ० बिहारी सिंह 1719

क्रांति के अमर गायक माखनलाल चतुर्वेदी का हिन्दी साहित्य में योगदान–डॉ० आर०पी० वर्मा 1722

विघटित जीवन मूल्य और साहित्य–डॉ० साधना 1725

औपनिवेशिक भारत में सिक्के तथा मुद्रा व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० आशा रानी 1728

प्रगतिवादी चेतना के कवि निराला–डॉ० रश्मि कुमारी 1732

हिंदी कहानियों में स्त्री अधिकारों की चुनौतियां और जाति का सवाल–पूनम गुप्ता 1735

प्राचीन भारत में सामाजिक परिवर्तन के तत्व: वर्ण व्यवस्था का विशेष संदर्भ–डॉ० राधेश्याम सिंह 1738

समावेशी शिक्षा व्यबस्था आवश्यकता एवं चुनौतियाँ : एक अध्ययन–रत्नेश कुमार जैन; डॉ० कल्पना जैन 1742

बाजारवाद और भूमंडलीकरण का अन्तर्सम्बन्ध–सरिता भारती 1748

चित्तौड़गढ़ नगर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त का भौगोलिक परिदृश्य–प्रो० पी० आर० व्यास; मनोज जाँगिड़ 1751

आधुनिकता की कसौटी में वैदिक नैतिकता–डॉ० चारू मिश्रा 1756

व्याकरण शास्त्र का दार्शनिक पक्ष-वाक्यपदीय की दृष्टि में–डॉ० जयन्ती सिंह 1759

हमीरपुर जनपद में सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं हिन्दी पत्रकारिता–डॉ० शोभा सक्सेना 1762

नगरीयकरण और बाल-अपराध में सम्बन्ध : एक विश्लेषण–डॉ० विवेक कुमार सिंह; कान्ती पाण्डेय 1765

रायपुर जिले के विद्यार्थियों में सूचना संचार प्रौद्योगिकी का उनके आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –खुशबू दीवान; डॉ० संजीत कुमार साहू 1769

मध्यकालीन नाटक-कला–डॉ० रियाजुल हसन 1773

बौद्ध धर्म में पर्यावरण और उसके संरक्षण की वर्तमान प्रासंगिकता–दिनेश कुमार 1775

भारत में महिला शिक्षा: दशा एवं दिशा–श्रीमती बबीता खाती 1778

नीर-क्षीर विवेकी रचना–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 1782

महिला कथाकार मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी जीवन–डॉ० सुधा 1784

भारत में वृद्ध जनसमूह की समस्या: एक विश्लेषण–डॉ0 अरविन्द कुमार वर्मा 1787

समकालीन हिन्दी कविताओं में अभिव्यक्त 'स्त्री इच्छाओं की दमन' प्रवृत्ति–डॉ० प्रभुसेन 1790

घरेलू हिंसा की रोकथाम के उपाय एवं महिला कल्याण कार्यक्रम–सुबोध कुमार 1793

ग्रामीण विकास में महिलाओं की सहभागिता–डॉ० किरन सिंह 1797

अज्ञेय के उपन्यास में पात्र चरित्रांकन: एक दृष्टि–डॉ० मनोज कुमार पाण्डेय 1800

झीनी-झीनी बीनी चदरिया: बुनकरों के शोषण एवं संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज–डॉ० नीलम तिवारी 1803

मानवतावाद में शेख मुहम्मद अब्दुह का योगदान: एक अध्ययन–नुरुल हसन 1806

कोविड-19: पर्यावरण के लिये संजीवनी–डॉ० अंजू सिंह 1811

कथाकार शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण स्त्री शोषण की समस्यायें एवं संघर्ष–कृष्ण देव 1813

स्वामी विवेकानंद के सामाजिक व राजनीतिक विचारोंका का अध्ययन–प्रो० डॉ० वाय० एम० साळुंके 1817

पाली एवं सिरोही जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयो में ऑनलाईन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन –कैलाश परिहार; डॉ० दीपक पंचोली 1820

अथर्ववेद में प्रकृति पूजा–डॉ० जेबा खान 1824

कला तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–राजेश कुमार; डॉ० आसिफ कमाल 1826

कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता का भक्ति योग अध्याय–डॉ० श्वेता मिश्रा 1831

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन–रामप्रवेश यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 1833

गुरु तेग बहादुर जी की शहादत यात्रा : (हरियाणा के ऐतिहासिक स्थान)–सुनील 1840
पन्ना जिले की प्रागैतिहासिक शैलचित्र कला–देवीदीन पटेल 1844
छायावाद: भारतीय साहित्यिक चिन्तन धारा का स्वाभाविक विकास–अजय कुमार सिंह 1847
एक एक्टिविस्ट की कविताओं के मायने (सुधा अरोड़ा की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में)–कु० आशा मिश्रा; डॉ० जनार्दन 1851
भोजपुरी लोकनाट्यों में सामाजिक पक्ष–अनुपम यादव 1855
जनजातीय विकास के नवीन आयाम: एक अध्ययन–डॉ० सुधांशु वर्मा 1858
भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली : चुनौतियां और सुझाव–मो० वकार रजा 1861
21वी सदी का परिदृश्य और वृद्ध जीवन–अमिता सिंह; डॉ० परेश कुमार पाण्डेय 1864
अखंड भारत एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक विवेचना–कुलदीप गंगवार 1867
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दुर्गा भाभी वोहरा की भूमिका–प्रदीप सिंह 1871
मालती जोशी व मन्नू भंडारी के द्वारा चित्रित नारी की दशा–डॉ० नम्रता जैन 1873
उपनिवेशवाद के दौर में भारतीय कृषि का रूपान्तरण एवं उसके सामाजिक परिणाम–डॉ० राम सुन्दर यादव 1875
अज्ञेय के काव्य में दलित-चेतना–रचना तनवर 1878
कानपुर में धर्म सुधार आन्दोलन की प्रतिध्वनि–डॉ० प्रीती त्रिवेदी 1881
महिला सशक्तिकरण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण–शाजिया सुल्तान 1884
भारत में मतदान व्यवहार–डॉ० विनीता गुप्ता 1887
बुन्देलखण्ड एवं बुन्देला: एक संक्षिप्त अध्ययन–रविन्द्र प्रताप सिंह 1890
आधुनिक संप्रेषण माध्यमों के बीच 'संवदिया' की प्रासंगिकता–डॉ० अमिता यादव 1894
प्राचीन भारत की कुछ प्रमुख क्रीड़ाएँ–डॉ० अनिल कुमार सिंह 1897
बिहार के नक्सल आन्दोलन में दलित महिलाओं की सहभागिता–श्वेता कुमारी 1900
मोदी सरकार II: अंत्योदय, सुरक्षा और राष्ट्र साधना का एक वर्ष–स्वदेश सिंह 1905
मुगल चित्रकला: अकबर काल के चित्र एवं चित्रकारों के सन्दर्भ में–रघु यादव 1908
व्याकरणिक दक्षता के उन्नयन में आगमन-निगमन विधि की प्रभाविता का अध्ययन–डॉ० प्रियंका रावल 1911
नई शिक्षा नीति 2020 का उच्च शिक्षा पर प्रभाव: एक समाजशास्त्री अध्ययन–ओम प्रकाश 1918
लिंगानुपात: फर्रुखाबाद जनपद का जनांकिकीय विश्लेषण–डॉ० प्रभात सिंह 1921
स्वामी विवेकानन्द के मानवतावादी चिंतन व कर्मशीलता की शिक्षक-शिक्षा के नीति-निर्माण में प्रासंगिकता–डॉ० अजय कुमार सिंह 1927
रोजगार सृजन में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० विजय ग्रेवाल; नीलम कुशवाह 1932
वृधावस्था की अवस्था: समस्याए एवं सुरक्षा–डॉ० जया भारती 1936
अर्वाचीन संस्कृत काव्य भाति में भारतम् में राष्ट्रीय भावना–डॉ० मीना गुप्ता 1940
डाकघर द्वारा संचालित सुकन्या समृद्धि खाता योजना में निवेश निष्पादन का अवलोकन–डॉ० विजय ग्रेवाल 1944
हिन्दी उपन्यास साहित्य में दस्तक देता वृद्ध विमर्श–डॉ० निम्मी ए. ए. 1949
ग्रामीण विकास और मनरेगा–डॉ० मिथिलेश पासवान 1951
अनुसूचित जनजाति महिला का प्राथमिक शिक्षा में सहभागिता - धुले (महाराष्ट्र) जनपद एक भौगोलिक विश्लेषण–संजय बी० घोडसे 1956
साहित्य में विचारधारा–डॉ० कुलदीप कौर पाहवा 1959
मधुबनी की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि–श्वेता 1963
रोमेश चन्द्र दत्त-एक महान् बंगाली साहित्यकार–डॉ० तेजवीर सिंह; अजय यादव 1968

संवैधानिक प्रमुख के रूप में राज्यपाल–निखिल कुमार 1972

दूधनाथ सिंह कृत उपन्यास: 'आखिरी कलाम' में राजनीतिक यथार्थ–डॉ० निकेता; दीक्षित कुमार 1976

भारतीय विधि में महिलाओं के मानवाधिकार–डॉ० अनुभा श्रीवास्तव 1980

गणित में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण विधि का परम्परागत शिक्षण विधि से तुलनात्मक अध्ययन –विभय कुमार सोनी; डॉ० अंजनी कुमार मिश्र 1984

'धूमिल' की कविता में सामाजिक संवेदना–डॉ० रेखा वर्मा 1989

उपनिषदों में भक्ति–डॉ० रीटा खन्ना 1993

राजनीति में जाति की भूमिका (बिहार विशेष)–कुमार मंगलम पाण्डेय 1995

नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का भारतीय उच्च शिक्षा पर भविष्यगामी प्रभाव–डॉ० तेलानी मीना होरो 1998

रामविलास शर्मा का धर्म चिंतन–आलोक कुमार सिंह 2001

रतलाम जिले में स्वर्णजंयती ग्राम स्वरोजगार योजना के अंतर्गत गठित एवं विभिन्न ग्रेड उत्तीर्ण स्व-सहायता समूहों का विश्लेषण –डॉ० लक्ष्मण परवाल; डॉ० अरविंदर कौर 2004

सामान्य आवास योजना का हितग्राहियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान (छत्तीसगढ़ के राजनांदगाँव नगर निगम क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)–रागिनी; डॉ० टाण्डेकर के० एल०; डॉ० भाटिया एच० एस०; श्रीमती झा स्वयं सिद्धा 2009

गीता मे श्रीकृष्ण का भक्तियोग:–डॉ० पवन शर्मा 2015

वर्तमान समय में संगीत का महत्त्व–विष्णु कुमार 2018

भारत में प्रारंभिक बचपन की शिक्षा : रुझान, मुद्दे और उपलब्धियां–शिवानी 2021

'रजपूत रासो' में 'चित्तौड़' व 'मीराबाई'–डॉ० अनु शर्मा 2026

सरकारी नीतियों में महिला सशक्तिकरण कितना सार्थक?–डॉ० सुशीला; कु० आरती 2029

जनसंख्या वृद्धि की समस्या- कारण एवं निदान–नेहा रावत 2038

खुली श्रेणी की महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी का विश्लेषण- धुले (महाराष्ट्र) जनपद एक भौगोलिक अध्ययन–संजय बी. घोडसे 2044

विद्यालयी शिक्षा और बहुभाषिकता : शिक्षक की भूमिका पर विश्लेषण–डॉ० नाहर सिंह 2048

विधवा: व्यक्तित्व, प्रेम और पुनर्विवाह–डॉ० वाचस्पति यादव 2052

विज्ञान एवं शिक्षा के संचार एवं लोकप्रियकरण का नया आयाम: साइनटुन अधिगम–संघर्ष मिश्र; मनीष मिश्र 2056

मुगलकालीन जनसंख्यात्मक आंकड़ों का विश्लेषण–अमित कुमार 2060

आयुर्वेद की सामाजिक नैतिकता–रंजना यादव 2062

लोक लेखा समिति की भूमिका एवम् उसके कामकाज का विश्लेषण–रजनी; प्रो० (डॉ०) अंजना गर्ग 2066

उत्तरवर्ती विट्गेन्सटाइन के भाषायी विश्लेषण की समालोचना–प्रियान्शु अग्रवाल 2071

हिन्दी साहित्य में कृषक जीवन–महेन्द्र कौर 2076

राजेन्द्र अवस्थी के उपन्यासों में सांस्कृतिक दृष्टिकोण–नीतू कुमारी; डॉ० जयकरण यादव 2080

मौर्य युगीन कला पर यूनानी प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन–प्रो० राकेश कुमार शर्मा; आकाश वालिया 2084

हबीब तनवीर का रंगकर्म–डॉ० मनीषा साव 2087

रोहतक के उभारदार शिल्प का इतिहास व सांस्कृतिक परम्परा–पवन; डॉ० सुषमा सिंह 2089

विश्व बाजारवाद और हिंदी–सरोज देवी 2091

संपादन कला में संपादकीय गरिमा की प्रासंगिकता–नरेन्द्र कुमार 2094

नासिरा शर्मा की रचना संसार का परिचयात्मक स्वरूप–संजीत कुमार; डॉ० प्रवीन कुमार यादव 2097

महात्मा ज्योतिराव फुले एवं स्त्री शिक्षा–सदीक 2099

आधा गांव: विभाजन और राष्ट्रीय एकता–प्रीति देवी मौर्या; डॉ० अचला पांडेय 2102

दृष्टिकोण

नई शिक्षा नीति (N. E. P.) के संदर्भ में गांधी शिक्षानीति–डॉ० सुनील ब० भोईटे 2104
स्वस्थ शरीर के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता–अंजू 2108
आर्थिक सुरक्षा एवं बचत को प्रोत्साहित करने में भारतीय जीवन बीमा निगम का योगदान–नितेश ग्रेवाल 2111
तकनीक, कार्य व्यवहार और सामाजिक सम्बन्ध–डॉ० प्रेमलता 2114
स्थाई बंदोबस्त महत्त्वपूर्ण पहलू, दोष एवं प्रभाव–रवि 2117
हरियाणा हिसार जिले में पंचायती राज व्यवस्था के विकास के लिए विकेन्द्रीकरण–सचिन 2121
खयाल गायन शैली और संगीत घरानों की गायन पद्धतियां: भारतीय संगीत के सन्दर्भ में–डॉ० प्रेम चन्द्र कुशवाहा 2128
सामुदायिक रेडियो और ग्रामीण विकास–हर्षवर्धन पाण्डे 2132
भारत में बालिका शिक्षा का महत्व–रंजु प्रजापति; डॉ० रजनी दीवाकरराव शिवनकर 2137
संगीत का राष्ट्रीय एकता एंव अखण्डता के प्रति योगदान–डॉ० संगीता गोरंग 2140
भारत के स्वतंत्रतता संघर्ष में महिलाओं की भूमिका–डॉ० राकेश कुमार यादव 2143
भारतीय विदेश नीति में निरंतरता एवं परिवर्तन–अभिषेक कुमार 2146
भारत में सामाजिक न्याय तथा नरेन्द्र मोदी सरकार की शासकीय नीति एवं कार्यक्रम: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अजीत कुमार शर्मा 2150
बौद्धदर्शन में अन्तर्निहित उपदेशों का समाज पर प्रभाव (सौन्दरनन्द के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० वन्दना रूहेला; योगेन्द्र सिंह सैनी 2155
साहित्य और समाज: वर्तमान काल में प्रासंगिकता–डॉ० श्रवसुमी कुमारी 2159
आधुनिक चित्रकला में सामाजिक न्याय का विशयांकन–डॉ० ईश्वर चन्द्र गुप्ता 2162
ग्रामीण विकास का गांधीवादी दृष्टिकोण: भारत की आत्मा की खोज–अम्बुज मिश्र 2164
जनपद अमरोहा (ज्योतिबा फुले नगर) का भौगोलिक विश्लेषण–डॉ० रमेश चन्द्र 2168
भारतीय पूंजी बाजार की स्थिरता–डॉ० मनन कौशल 2174
महिला सशक्तिकरण: दशा एवं दिशा–डॉ० विशेष कुमार राय 2181
भारत की विदेश नीति के बदलते आयाम: एक सिंहावलोकन–डॉ0 आर0 बी0 सिंह बघेल 2185
जल संरक्षण के क्षेत्र में जल लेखा परीक्षा एक आवश्यक कदम–प्रीती रावत 2188
भारतीय पुलिस प्रणाली: शंका, समस्या और समाधान–अनसुईया राजपूत 2192
पितृसत्तात्मक समाज में लोक संस्कृति का प्रकार्यवादी दृष्टिकोण–डॉ० दयाशंकर सिंह यादव 2197

पितृसत्तात्मक समाज में लोक संस्कृति का प्रकार्यवादी दृष्टिकोण

डॉ० दयाशंकर सिंह यादव

एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र, सकलडीहा पी जी कालेज सकलडीहा

प्रस्तावना –

लोक संस्कृति की अवधारणा के प्रवर्तक और समर्थक राबर्ट रेडफील्ड माने जाते है।लोक संस्कृति निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है। लोक का अर्थ ऐसे लोगों से है जो प्रायः असभ्य तथा अशिक्षित है। लोक संस्कृति का वास्तविक अर्थ उस संस्कृति से है जो ग्रामीण और विशेषकर कृषक समाज मे उदय होती है और उसी समाज मे विकसित होती है। रेडफील्ड के अनुसार,'' यह एक ऐसा समाज है जिसका आकार छोटा होता है तथा जिसमें अकेलापन, अशिक्षा, समानता, समूह दृढ़ता की भावना एवं जीवन का रूढिग्घत ढंग पाया जाता है। ''डॉ.सम्पूर्णानन्द के अनुसार,'' लोक संस्कृति वह जीती-जागती वस्तु जिसके द्वारा लोक की संस्कृति बोलती है। 'सरलता मुखिक संस्कृति परंपरा सामूहिकता की भावना पिछड़े हुए समाज की संपत्ति कृषि पर आधारित व्यवसायीकरण का अभाव कलात्मक क्रियाओं मे सभी का सहभाग स्थानीय स्वरूप परिवार और समुदाय लोक संस्कृति संरक्षक बौद्धिक, धार्मिक एवं नैतिक जीवन की दृष्टि से पूर्णता का अभाव लोक संस्कृति का अभिजात संस्कृति से आदान-प्रदान होता हैं

भारतीय समाज में लोक संस्कृति का सार्वजनिक ज्ञान एवं अनुभव की परंपरा अलिखित होकर भी सर्वाधिक व्यापक एवं सशक्त है। लोक संस्कृति में समूचा ज्ञान व्यवहार, सांस्कृतिक तत्व, कौशल और धार्मिक विश्वास व मान्यताएं सभी मौखिक परंपरा में ही हैं। इस मौखिक परंपरा के मूल्यों को जाने, समझे बिना लोक के यथार्थ को नहीं समझा जा सकता है। लोक में सारा ज्ञान, व्यवहार, भाषा साहित्य, कौशल, सांस्कृतिक-रचना के विविध रूप, आध्यात्मिक विश्वास व शक्तियों के प्रतीक सभी वाचिक हैं। इस परंपरा का आधार जीवन की वास्तविक शिक्षा है- जीवन जो सिखाता है, उसकी पाठशाला में जीवन के ज्ञान, रचना और विमर्श के पीछे सैकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान संरक्षित है। वह प्रत्येक पीढ़ी तक आता है उसके उत्तराधिकारी की तरह, और प्रत्येक पीढ़ी जीवन के अनुमान और अनुभूति को एक नवाचार के साथ उसमें जोड़ती है, विरासत को अधिक समृद्ध, जीवंत और प्रासंगिक बनाती चलती है। यही लोक की जीवन परम्परा है, जिसमें जीवन का ज्ञान और मनुष्य के रचना सामर्थ्य से जीवन का संस्कृतिकरण होता है।" लोक साहित्य की मौखिक परंपरा के सर्जक प्रायः गुमनाम रहते हैं। लोक में समूह द्वारा संचित ज्ञान और अनुभव का संचरण पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहता है, और लोक साहित्य की मौखिक परंपरा में परिवर्तनशीलता और स्थायित्व के बीच जो द्वंद्वात्मक रिश्ता कायम होता है वह सामाजिक जीवन में सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी प्रेरित करता है।

मुख्य शब्द- पितृसत्तात्मक लोक संस्कृति प्रकार्यवादी पदानुक्रम

इस संदर्भ में लोक का महिमा मंडन सामाजिक सांस्कृतिक सद्भावना के साथ किया गया है, जबकि सामाजिक-आर्थिक धरातल पर यह संभव नहीं है। इतिहास की भौतिक अवधारणा के अनुसार-वास्तविक जीवन में उत्पादन और पुनरुत्पादन ही अतत: इतिहास के निर्णायक तत्व हैं जो समाज के भौतिक आध ार में हुए परिवर्तनों को आर्थिक इतिहासज्ञ पदार्थ विज्ञान की भांति सही-सही जांच सकता है, किन्तु इसके ऊपरी सामाजिक तथा आध्यात्मिक ढांचे में हो रहे परिवर्तनों की ऐसी कोई वैज्ञानिक नापतौल नहीं की जा सकती। परिवर्तन होते हैं, लोगों को उनका बोध होता है, नये और पुराने के बीच द्वंद्व का वे अपने दिमागों में 'निबटारा' करते हैं। परिवर्तन का यह बोध जीवन के भौतिक साधनों के उत्पादन के तरीके सामाजिक, राजनैतिक और बौद्धिक जीवन की समूची प्रक्रिया को निर्धारित करते हैं। लोगों की चेतना उनके समूचे अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती है, बल्कि इसके विपरीत सामाजिक अस्तित्व ही उनकी चेतना को निर्धारित करता है। और यही चेतना सत्ता की नियंता है। और ये सारे तत्व लोक साहित्य को निर्धारित करते हैं। कबीलाई समाज के बाद जब निजी संपत्ति का प्रभाव बढ़ने लगा और वर्गहीन समाज वर्ग में तब्दील होता गया तो इसके एवज में जिस लोक का जन्म हुआ वह वर्गहीन नहीं था। लोक संस्कृति का प्रकार्यवादी दृष्टिकोण गल्प नहीं है और न ही पारंपरिक समाजों में आंतरिक रूप से सद्भावना रही हो, जैसा कि हमेशा से माना गया है। उन समाजों में जिन्हें हम वर्ग समाज नहीं कह सकते, वहाँ भी समुदाय व नातेदारी के रूप में विभाजित थी। इन समूहों में पदानुक्रमणिक संबंध था, जिसमें अधीन व प्रभावशाली दोनों थे। वर्तमान समय में भी इस प्रकार के समुदाय मौखिक परंपरा के रूप में अभी भी अस्तित्व में हैं। इस विश्लेषण से हम यह मान सकते हैं कि लोक प्रभावशाली लोगों के लिए, अधीन लोगों के अर्थ से अलग होता है। इस तरह लोक साहित्य वाद विवाद का एक उपकरण है जो सत्ताधारियों के खिलाफ उन पर प्रश्न करने व सवाल उठाने, उपहास बनाने में अहम भूमिका निभाता है। इस तरह लोक का संघर्ष हर उस जगह होता है जहाँ प्रभुत्व का संबंध होता है।

इस संबंध में लम्बार्ड ने लिखा है-महिलाएं स्पष्ट रूप से निम्न प्राणी की भूमिका में रहती हैं। स्त्रियों में यह हीनता भाव पितृसत्तात्मक विचारधारा के प्रभावी होने की वजह से है। स्त्रियों के संदर्भ में वर्गीय संरचना का दूसरा पक्ष पुरुषों को संस्कृति का रक्षक मानने से है जहाँ स्त्रियां स्वयं सर्वहारा वर्ग का

निर्माण कर ऐतिहासिक रूप से शोषित वर्ग में आ जाती हैं। लेकिन इस प्रभुत्व संबंध के बावजूद लोक में विरोध स्पष्ट प्रतिविम्बित होता है। लोक के इस संरचना में स्त्री-पुरुष संबंधों पर ऐली निनोला कहती हैं- अधिकांशतः पुरुष, महिलाओं को लोक मूल्यों का प्रतिविम्बन मानते हैं, जोकि पितृसत्तात्मक विचारधारा का एक सामान्य दृष्टिकोण है। इस संदर्भ में वह प्रश्न करती हैं कि लोक में महिलाओं की संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से क्यों नहीं दिखती वे प्रभुत्व व अधीनता के किन संबंधों में जीती हैं। कोई यह मान सकता है कि विरोध भी लोक के प्रयोग की संभाव्यता रोजमर्रा के जीवन में दिखाने वाली प्रभुत्वशाली एवं अधीनता के मध्य दिखने वाली दूरी के अनुपातिक होती है और यह अनुपात लोक जीवन में भी बरकरार है।

प्रभुत्व एवं वर्चस्व की राजीनीति के प्रति लोक में कोई जागरूकता नहीं है, बल्कि इसके प्रति जागरूकता को देखे तो यह पाएंगे कि अधीनों का जो भी है लोक है उसमें भी पुरुषों का ही वर्चस्व है। स्त्रियां इसके प्रभुत्व को नहीं पहचान पाती हैं, क्योंकि वे इसे परंपरा और संस्कृति से जोड़कर देखती हैं और ईश्वर का दिया हुआ मानती हैं। अगर कोई स्त्री वर्गीय, जातीय एवं पितृसत्ता के इस सत्ता-संरचना को समझ जाती है तो भी उसके लिए पुरुषों के खिलाफ खड़ा होना मुस्किल होता है। लोक संस्कृति जीवन के विविध रूपों को जाना समझा जा सकता है। इसी संदर्भ में लोक संस्कृति में स्त्रियों की अभिव्यक्ति को देखा गया है। लोक के इस ज्ञान में जाति, वर्ग की संरचना भी अहम भूमिका निभाती है। स्त्री-पुरुष के समाजीकरण व पितृसत्ता के संबंधों का अंतर है। लिखित ज्ञान परंपरा न होने के बावजूद लोक में स्त्री, पुरुष के अभिव्यक्ति में पदानुक्रम है। यह पदानुक्रम पितृसत्ता से निर्मित हुआ है। इसलिए पितृसत्तात्मक लोक स्त्रियों की अभिव्यक्ति को कमतर आकता है। यह इसलिए भी है कि पुरुष अपने आप को संस्कृति का वाहक समझता है। पुरुषों को सांस्कृति का रक्षक मानने से स्त्रियां स्वयं सर्वहारा वर्ग का निर्माण कर ऐतिहासिक रूप से शोषित वर्ग में आ जाती हैं। इस प्रभुत्व संबंध के बावजूद लोक में विरोध स्पष्ट रूप से प्रतिविम्बित होता है, लेकिन यह दुर्लभ रूप में ही दिखता है। लॉम्बार्डी के अनुसार- "ऐसा बहुत कम होता है कि हम जब भी देखते हैं शोषकों के मूल्य को लोक में पाते हैं। संघर्ष का लोक तो हर जगह है, लेकिन इस लोक-संघर्ष में शोषितों व स्त्रियों का मूल्य बहुत कम है। लोक अपने पूरे क्रिया-कलाप में प्रभुत्व का संबंध स्थापित करता है।

लोक में स्त्री अभिव्यक्ति के लिए अनेक बाधाएं हैं जो हमें सामान्यतः नहीं दिखाई देती, बल्कि प्रच्छन्न रूप से इसकी अवस्थिति रहती है। एली नेनोला के मतानुसार -अधिकांशतः महिलाओं को लोक का प्रतिविम्बन माना जाता हैं, जो पुरुषों का एक सामान्य दृष्टिकोण है। वह कहती हैं कि लोक में महिलाओं की संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखती है। वे प्रभुत्व व अधीनता के किन संबंधों में जीती हैं। कोई यह मान सकता है कि विरोध भी लोक के प्रयोग की संभाव्यता रोजमर्रा के जीवन में दिखाने वाली प्रभुत्वशाली एवं अधीन के मध्य दिखने वाली दूरी के अनुपातिक होती है। इसके साथ ही यह सवाल उभरता है किय लोक का यह ज्ञान किसका विमर्श और विवेचना करता है। क्या यह किसी एक खास समुदाय, जाति, वर्ग या वर्चस्व को ही तो नहीं स्थापित करता। लोक-ज्ञान का शास्त्र-विधान बनाते हुए किन परंपराओं, मूल्यों, विश्व दृष्टियों को शामिल किया जाता है और किसे खारिज, यह भी देखना लाजमी है। समाज में जैसा भी अच्छा-बुरा, सुंदर-असुंदर रहा है उसके प्रति साधारण जनमानस की भावनाएं ही लोक संस्कृति में दिखती हैं। लेकिन यह भी लोक का एक ही पक्ष है। स्त्री जीवन-मूल्य पर लोक मौन ही दीखता है। इसके साथ ही पितृसत्ता का जोर, जातीय संरचना व वर्गीय भाव भी लोक में खूब दिखते हैं। लोक मंगल की कामना इसका प्रस्थान विंदु है, लेकिन इस लोक मंगल की कमाना से स्त्रियां दूर हैं। स्त्रियां दूसरों के लिए लोक मंगल की कामना करती हैं, लेकिन स्त्री के लिए लोक मंगल की कामना करता लोक का कोई हिस्सा नहीं दीखता है। पितृसत्ता 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' वाला कथित समाज बेटियों के जन्म को अच्छा नहीं मानता है। बेटियों को 'पराया धन' मानकर 'कन्यादान' का विधान तैयार करता है। धार्मिक नियमों एवं पारंपरिक विधि-निषेधों में स्त्री को उपेक्षिता एवं अस्तित्वहीन बनाता है। चूँकि भारतीय समाज अपने प्रारम्भिक चरण से ही पितृसत्तात्मक रहा है, इसलिए समाज का यह ढांचा स्त्री को पुरुष से कमतर मानता है। पितृसत्तात्मक समाज की अनेक मान्यताएं स्त्रियों में भी रूढ़ हो गयी है। स्त्रियां इसे अपनी नियत मान ली हैंय और इसे जीवन-रूप के स्तर पर स्वीकार भी कर ली हैं, सायद इसीलिए इसका प्रतिकार, प्रतिरोध नहीं दिखाई देता है।

लोक समाज की स्त्री-मन के विविध भावोच्छ्वास अपनी संपूर्ण तरलता और उद्दाम वेदना के साथ प्रकट हुए हैं। बेटी के जन्म पर परिवार की उपेक्षित प्रतिक्रिया पर स्त्री का गुस्सा, गुबार जो कि पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्रियों पर लादा है लोक संस्कृति में स्पष्ट दिखता है, जहां वह कहती है कि यदि उसे पता होता कि उसके गर्भ में लड़की है तो वह उसे जन्म ही न देती यह कैसा समाज है जिसमें एक मां अपनी संतान को कोख में ही मार देना चाहती है? चूँकि यह समाज स्त्री द्वेषी समाज है, पितृसत्ता के विचार व सिद्धांत इस कदर हावी है कि एक स्त्री बेटी को जन्म ही नहीं देना चाहती। यहां मां का अपने नवजात शिशु के लिए मृत्यु की कामना इसलिए करती है कि वह कन्या है, जो समाज के विकृत रूप को सामने लाता है। वर्तमान समाज में भी स्त्री का सम्मान उसके पुत्र पैदा करने से होता है। पुत्र को जन्म देने वाली स्त्री का महत्व बढ़ जाता है, जबकि पुत्री को जन्म देने वाली स्त्री को परिवार में उपेक्षा और तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। पुत्री जन्म के बाद उसका आदर सम्मान कम हो जाता है उसके साथ तमाम तरह के दुर्व्यवहार किए जाते हैं। पितृसत्तात्मक समाज में निःसंतान स्त्री-पुरुष दोनों की भर्त्सना की गई है, लेकिन निःसंतान स्त्री ही सर्वाधिक उपेक्षा की पात्र रही है। जहाँ बाँझ स्त्री को उसका पति उसे घर से निकाल देता है। वही धरती उसे 'ऊसर' होने के भय से शरण नहीं देती। संतानहीन स्त्री की पीड़ा सामाजिक तिरस्कार और अन्याय एक संतानहीन स्त्री को किस तरह का दुःख उठाना पड़ता है । पुत्र कमाना छठ व्रत पर गाये जाने वाले गीतों में भी दीखता है। छठ व्रत में निःसंतान स्त्री और जिन स्त्रियों को बेटियां होती हैं, लेकिन बेटे नहीं है, वे स्त्रियां इस व्रत को विशेष रूप से रखती हैं। वे आदिती देव से पुत्र की ही कमाना करती हैं।

इस तरह से हम पाते हैं कि सोहर व छठ के गीतों में स्त्रियों के भोगे हुए यथार्थ और परिस्थितियों को उद्घाटित किया गया है। सामान्य स्त्रियां इसके प्रतिकार में नहीं खड़ी होती हैं। यह चेतना ही स्त्री प्रतिकार में बाधक है, जो यह मनाने के लिए विवश करता है कि यही स्त्रियों की नियति है। पुत्र-जन्म न देने वाली स्त्री को व्यर्थ समझा जाता हैय स्त्री जीवन को इस तरह से अभिशापित किया जाता है कि सारे सामाजिक, धार्मिक आदर्श पुत्र-जन्म न देने से टूट जाएंगे। सारे सामाजिक ताने बाने फेल हो जाएंगे जिसे पितृसत्ता ने स्त्री के लिए बनाया है। पुत्र के अभाव में पुरुष पितृऋण से उऋण हीं हो पाता और इसकी जिम्मेदारी स्त्री को ही है। स्त्री को अपने पति को इस ऋण से मुक्त कराने और उसे मोक्ष प्राप्त करने में अहम् भूमिका निभानी पड़ती है। और अपनी इस भूमिका को पूर्ण करने के लिए उसे पुत्र को जन्म देने की अनिवार्यता है। और यदि स्त्री ऐसा करने में असफल रही तो उसके पारिवारिक-सामाजिक

मान-सम्मान में कमी आ जाती है। स्त्रियां इस तरह के सामाजिक अपमान के दंश से बचने के लिए हर उपाय, हर प्रयास करती हैं। पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, टोटके सभी प्रकार के प्रयास पुत्र प्राप्ति के लिए किया जाता है। पुत्र को समाज में सबसे बड़ा रत्न के रूप में प्रचारित किया गया है, ऐसा रत्न जो मोक्ष दिलवाने में सहायक है। पितृसत्ता स्त्री को दोयम दर्जे का नागरिक मानता है, इसलिए स्त्री की स्वतंत्र छवि को सहन नहीं कर पाता उसके प्रति दुराग्रह की भावना काम करती है।

लोक संस्कृति में कई ऐसे गीत हैं जिसमें सामाजिक मूल्य व मर्यादाओं का अतिक्रमण करती दिखाती है। परसेदी पति के संदर्भ में वियोगिनी स्त्री की कल्पनाओं व स्वप्नलोक को देखा जा सकता है। यह लोक गीतों में परिलक्षित होता है, जरूरी नहीं कि यथार्थ भी बिलकुल वैसा ही हो। स्त्री का कल्पनालोक वह समाज रचता है जो यथार्थ में नहीं है। अपने स्वप्न लोक के लिए वह 'सामाजिक मर्यादाओं' का अतिक्रमण करती है और इसके लिए सार्वजनिक परिक्षेत्र में कदम रखती है। महज स्वप्न और इच्छाओं की ही अभिव्यक्ति नहीं करती है, वरन इच्छाओं और सपनों को मूर्त रूप देने के लिए परिवार और समाज जैसे संस्थाओं के मूल्यों-मान्यताओं से सामना करना पड़ता है। स्वप्न और यथार्थ की टकराहट जीवन-आख्यान के जरिए गीतों में पहुँचती है, क्योंकि यह यथार्थ रूम में फलीभूत नहीं हो पाता।लोकगीतों की पूरी रचना प्रक्रिया व गायन से स्त्रियां यह जानती हैं कि उनके प्रति होने वाला उत्पीड़न पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों की वजह से और वे इसको सहने के लिए विवश हैं। उनका पति भी न चाहते हुए सामाजिक मर्यादाओं यानी पितृसत्तात्मक सिद्धांत व विचार उसे इस तरह के कठोर व्यवहार करने के लिए मजबूर करते हैं।

निष्कर्ष -

सामंतवाद और पितृसत्ता को समझे बिना लोक संस्कृति में स्त्री की प्रतिरोधात्मक छवि को नहीं समझा जा सकता। कृषि आधारित सामन्ती समाजों में बड़े भू स्वामी अभिजात बन जाते हैं और समाज के शेष हिस्से से अपने को अलग कर लेते हैं जो वंशानुगत चलता रहता है। इस तरह शोषितों के श्रम पर परजीवी यह समाज कुलीन बन जाता है और अन्य की तुलना में पुरुष श्रेष्टता और वर्चस्व को जन्म देती है जिसका सीधा संबंध पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था है। इन सभी को सत्य एवं स्थापित करने के लिए मिथकों का सहारा लिया जाता है। मिथक यह बताने के लिए कि प्राचीन समाज में भी महिलाओं द्वारा शोषण नहीं होता था। पार्वती, राधा, सीता आादि मिथकिय पात्रों के माध्यम से इसे स्थापीत किया जाता रहा है। पितृसत्ता का उदय विवाह नामक संस्था के साथ यौनिक संबंधों में शुद्धता बोध के एवज में हुआ। हांलाकि मातृवंशीय समाज में स्त्री का अधिकार प्राकृतिक नियम पर आधारित था। इस अधिकार में न केवल नातेदारी व संपत्ति का हस्तांतरण था, बल्कि परिवारों की प्रमुख भी स्त्री थी। नीजी संपत्ति के उदय के फलस्वरूप पितृत्व पर बल दिया गया जो मातृवंश के विरोध में था। अमानवीय सामाजिक नियम व परंपरा पहली नजर में एक स्त्री को दूसरी स्त्री के बरक्स दुश्मन की तरह दिखाती है। यानी स्त्री ही स्त्री का शोषण करती है, लेकिन पितृसत्ता के विश्लेषण के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री के दुखों व सामाजिक बंधनों के लिए पितृसत्तात्मक विचारधारा जिम्मेदार है। और यह लोक में अपने पूरे वजूद के साथ हमेशा मौजूद रहा है।यह समाज की जड़ता ही है जहाँ स्त्रियों के लिए अलग नैतिक मापदंड हैं और पुरुषों के लिए अलग। पुरुषों के लिए जो सहज एवं सुलभ है, वही स्त्री के लिए मुश्किल, कठिन, दुर्लभ व अपराध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. हेमंत कुकरेती भारत की लोक संस्कृति
2. रैल्फ, फॉक्स. (2008). उपन्यास नीजि संपत्ति और लोक जीवन. दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस. पृष्ठ 19
3. पांडेय, नीलिमा.(2013) इतिहास में स्त्री अस्मिता की तलाश. अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.पृष्ठ 149
4. तिवारी, कपिल. लोक और शास्त्र: अन्वय और समन्वय दयानिधि मिश्र, आलेख, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015. पृष्ठ 36
5. Jordan Rosan A and Kalcik Susan 1985 Womens Folklore Womens Culture- Philadelphia-
6. Lombardi Satriani Luigi 1974 Folklore as Culture of ContestationIn Journal of the Folklore Institute Vol- XI Number The Hague 99&121- P-156
7. LewisMary Ellen B- 1974 The Feminists have done Applied Folklorein Journal of American Folklore Vol- 87 No- 343